धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
हाज़िर नाज़िर ज़िंदाराम तेरा ही आसरा

पूज्य संत शाह मस्ताना बलूचिस्तानी

आमुख

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ पुण्यात्मा महात्मा रोशन जी की प्रेरणा से उन्हीं की सरपरस्ती में लिखा गया है। वास्तव में महात्मा रोशन जी की बहुत ही सीधी-सादी ज़िंदगी में लगभग पिछले पचास-पचपन वर्ष से उनके दो ही मक़सद ख़ास रहे हैं। आपका पहला मक़सद अपने पूज्य मुर्शिद शाह मस्ताना बलूचिस्तानी के जन्म स्थान को रूहानी धाम की सूरत में आबाद करना रहा है। महात्मा जी ने स्वास्थ्य, उम्रदराज़ी और रास्ते में आने वाली अन्य कई मुश्किलात की परवाह न करते हुए अपने इस मक़सद ख़ास को अमली जामा पहनाकर सर अंजाम तक पहुँचा दिया है।

आपके दूसरे मक़सद विशेष में आप अपने साँई शाह मस्ताना बल. ूचिस्तानी के आध्यात्मिक सफ़र को काव्यबद्ध करना चाहते थे, ताकि बेपरवाह शहनशाह मस्ताना जी की नूरी रसना से उच्चरित एक-एक अनामी शब्द सिमरन के रास्ते रूह की गहराईयों तक उतर जाये। मौज़ूदा काव्य ग्रंथ इसके अनुरूप ही स्वरूप विशेष दिए जाने का एक प्रयास है। इस सूरत आपका दूसरा चिर स्वपन भी सम्पूरित हो गया।

यह काव्य ग्रंथ शहनशाह मस्ताना जी के आध्यात्मिक प्रयाण के लंबे अंतराल में उनके द्वारा दी गयी बेशुमार सत्संगों, प्रवचनों, ईलाही हुक्मों, फ़क्कड़ता में कही गई गहरी बातों, साख़ियों, मीठी झिड़कियों, वरदान

सी लगने वाली गारियों, उपदेशों और चेतावानियों तथा समय-समय पर घटित होने वाले चमत्कारों और जीवन प्रसंगों को अपने में समाहित किये है। इसके अलावा जीवों के प्रति उनके अगाध प्रेम, तत्कालीन समाज की संकीर्ण सोच की शिकार तथाकथित दीन-हीन वंचित व ग़रीब जातियों के लोगों के प्रति उनके विशिष्ट प्रेम व झुकाव को भी विशेष रूप से काव्यबद्ध करने का प्रयास किया गया है।

महात्मा रोशन जी की रहबरी के आलोक में इस काव्य ग्रंथ में बहुत सी ऐसी अनछुई घटनाओं और जानकारियों को स्थान दिया गया है, जो इससे पूर्व जानकारी में न आ सकी। ये जानकारियां वास्तव में वो घटनाएँ हैं, जो मौलिक और अक्षरसः सत्य हैं। ये सारी सामग्री सच्चा सौदा ध ाम में शहनशाह मस्ताना जी की सोहबत में और उनके अति निकट रहने वाले प्रमुख सेवादारों और विशिष्ट प्रेमियों के श्रीमुख से प्राप्त हो सकी। इसके अतिरिक्त वे प्रतिष्ठित वा अति अजीज़ साधु जो मस्ताना जी की नूरी निगाह में खासा स्थान रखते थे, मगर बेपरवाह के हुक्मे अनाम से डेरा से तनिक दूरी पर सेवारत रहे, उनका भी इस सामग्री संकलन में अति विशेष योगदान रहा है। सौभाग्य से उन गणमान्य साधुओं में से आज भी कुछ एक शाह मस्ताना बलूचिस्तानी जी के निरोल अध्यात्म की बयार की महक प्रेमी जनों को देकर सतमार्ग पर अग्रसर करने में जी जान लगे हुए हैं। दुर्दैव से कुछ वो सम्भ्रांत साधु हमें अपने सुखद सोहबत की गमक से महरूम करके पूज्य शाह मस्ताना जी के दरबारे अगम का रुख़ कर गये हैं।

ग्रंथ में संजोई गयी सभी घटनाएँ, सच्चे प्रसंग, विभिन्न हालातों में शाह मस्ताना जी द्वारा बनाये गये नमूनों में सहज रूप से प्रकट जो जाने वाले चमत्कारों की मौलिकता व सत्यता यथारूप अक्षुण व अजस्र बनी रहे, इसका पूरा प्रयास किया गया है। इसके लिए किसी भी प्रकार की जन श्रुति या सत्यता की कसौटी पर खरी उतरती न दिखाई देने वाली किसी भी घटना अथवा प्रसंग को समाहित करने से पूर्णतया बचा गया है।

महान और प्रबुद्ध पाठकों को स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि पूज्य परम संत शाह मस्ताना जी बलूचिस्तानी के जीवन चरित्र पर आधारित प्रस्तुत काव्य-ग्रन्थ के भाषायी स्वरूप में, साहित्यिक व वैयाकरणिक नियामावली को अनावश्यक जानकर उसका अक्षरस परिपालन नहीं किया गया है। हमारा प्रयोजन पाठकों को अपना भाषायी पांडित्य प्रदर्शन न करके मात्र उन तक सही व उचित और स्टीक प्रस्तुतिकरण ही रहा है। पाठ करते समय शब्दों में स्वतः ही एक सहज छंद और लय की उत्पत्ति हो जाती है। रचना में उर्दू, अंग्रेजी के रूढ़ शब्दों, देशज, विदेशी, प्रादेशिक, आंच. लिक शब्दों के साथ कहीं-कहीं ब्रज, अवधी व गुरुमुखी शब्दों का भी छिट-पुट प्रयोग किया गया है।

सधन्यवाद...

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
शहनशाह मस्ताना जी बलूचिस्तानी तेरा ही आसरा
हाज़िर नाज़िर ज़िंदाराम तेरा ही आसरा

मंगला चरण

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, मुरसिद शाह मसताना
कन कन बिआपै परम पिता तू, घट घट तेरा ठिकाना
निरभौअ पुरुख अकाल निबैरी, निरगुन सगुन दूहाँना
बगसो दासन के परदास कू, चरन कँवल हीं मुकामा

मिहिर सु तोरी उतरयौ सतगुर, कोटिक पातकी सारे
गनिका देई उबारी सहजो, सदना बधिक को तारे
कहत नां आवै एतिक पापी, तिरि गये तुझ सरनाई
करुना रूप निहारी दयामय, अंतरे आस उपाई

जनमाँ जनम ही पामर निगुरा, फँसि रहयौ जग जाल ही
फांदियौ पाँच बिकारी चोरां अनदेखि कियो काल भी
राजयौ जगत जहंदम ऐसो, बिसरायो तुज्झ नाम भी
जनम अकारथ दीया गँवाई, झेलिक-झेला काम ही

जरन-मरन दुख निरखयो नीरे, जानियो अबु गिरै गाज
हौल-दिली भयी कालबली अब, झरपसी पंखी जु बाज़
शाह मसताना बलूचिस्तानी, जानयो मुलुक हि सारा
आप ख़दाई पूरम पूर हो, समरथ नाम तोहारा

हुकुम हिँ संत हज़ूर शाह सावन, रचनाह इसो रचाई
सच्चाह सौदा दीया दिनाँ–दिन, सिरसाह में निरमाई
पकरी रूहां जनमों तिआसी, नऔका नाम चढ़ाई
अनुभौअ जिंदाराम कराई, भौव जल धार तराई

बाट न बूझी मीरां–अमीरां, महतो जन जो कहाते
दलित पतित और झेलते ज़िल्लत, जीवां हिरदाह लाते
लखया अदबुद दुनिया फ़कीरा, पहल ही पहली बारा
दीन हीन मसकीन निआदरे, चित सौँ कीनी सँवारा

जोरिं हाथ जुगम येह सुआमी, अरज़ करूँ तोहीँ आज
दोसी दुरमति अधम ख़ताहग़र राख़ियो दास की लाज
सागर अनत चरित से तिहारे, बूँद सा जस निराकार
लिख पावौं किरपाह से तुज्झ मैं, कीजो ये मुज्झ उपगार

पहला सर्ग

अफ़शा-ए-इसरार

ईश्वर का नूर (प्रकाश)
इसरार का हुकुम

प्रगासोत्स्व

जन्मोत्सव

संवत उन्नीह–सौ–चौवन और, अठरा–सौ–उन्नी साक़
पावस मास सरावन पूनिमा, ऊजल सुकल का पाख

ठाठ ठयोह इक ठेठ इलाही, दिवस महत गुरूवार
गाजे पुलकित मेघा दामिनी, दमकी गगन मंझार

बिखराह डारी छटा देवधनु, नभ हिँ बहुल मनोहार
नाना बरन हीँ झलकती मस्ती, फ़लक नां पारावार

कुल तिरलोकी रही थी इक टक, बलूचिस्तान नीहार
ख़िल रहा जाइ कोटड़ा सरवर, संत सरोज अवतार

जनिक ख़यतरी पिल्लाह मल और, माई तुलसां बाई
परगटा पंचम सिसुआ अनुपम, जन जन था हरसाई

शाह मसताना जौं परगटयो, दिग मग छायोहु नूर
जन जन छन छन मंगल गायोहु, पुलक पुलक भई चूर

सीतल मलयज बहियो समीरा, सुर मुनि हरसे फ़कीर
अमरा पुर सों उतरयौ पूरा, अवल अनामी सफ़ीर

अगम लोक आहलाद समाया, निगुन दैव उलसाई
अख़त गूढ़ धरी देह मनुख की, तारन रूहाँ जाई

प्रगटयो शाहा मसताना जी, सरब जगत हितकारी
लखि लखि बाल का नूरी मुखड़ा हरस रही महतारी

निरमल तन अभिरामा नयन वर, मसतक तेज समायो
सगल गरामीय बांधव देखनिं, बाल कु पुनि पुनि आवो

बाल छवि

बालक का सौन्दर्य

मंजुल बाल का मुख़रा बहुत हि, गोरे मटोरे गाल
बरन गुलाबी बिकसित कुसम सा, लोचन वर ही बिसाल

अरुन चरन भुजा गौरे सरीरा, सुषमा मनोहर गात
जोत नखन की भरमायौ ज्यौँह, तुहिन कनी परै पात

अधर दुहुँ भरमावते एहि विधि, पाँखुरियाँ जौं गुलाब
मुख़ पै नासिका सोभति एतैँ, छवि का जवाब

दतियाँ दुइ दुइ निकसीं बाल की, लागत महत हि प्यारी
पारे बरन के सोभा सगरी, अनिन बड़ी हि अन्यारी

कबहुँ बिसूरता कबहुँक हँसता, लखि लखि जननि नीहाल
आई बछलता बस माँ तुलसाँ, उन सौँ लावती लाल

कबहुँक अंकम कबहुँ पालना हिँ, मातरि बबुआ झुलाइँ
एहि विधि जननि औ भगिनी दोइँ, ललनाह को दुलराइँ

घुटनियाँ पानि बिचरैह इत उत, धूसर धूरि हो जाइँ
जौँ ही मैया बोलन लागती, ठुमकी ठुमक टुरुकाइँ

मुसकाती माँ पाकरिं जातका, गोद हिँ ले बैठाई
अतर फुलेल मिलाई पानीय, हरस हरस नहवाई

रंग बिरंगी झँगुली बाल को, नवीं नवीं नित पाई
काज़र टीका टीपती माता, नज़िर न लागै जाई

कारी करघनी गौर कटि पैह, लागती बहुत प्यारी
आभूसन जुत धवली भुजायें, देइँ रहिँ छवि निआरी

पाउँ करौलियाँ कनक रजत की, छुन छुन बाजिं सुहाती
कारी कंठी नज़र बटूअ की, नज़र बुरी सुँ बचाती

सुनिं सुनिं मीठरे बोल तोतरे, लेत हिलोरे पिआर
मोहते बरबस बाल के सबकु, घुंघरियोंह से बाल

बाल रसीलाह बहुल सजीला, लागत बहुत सलोना
उतर ही आया जैसे केऊ, लोक गगन सु खिलौना

लागा हौरे हौरे बिगसने, बालक रूप ये फ़ूल
पर बालक ये आन तें दीठा, अलग सुभाउ सों मूल

धीर सिथिर चित और अबोलाह, एकला रहना भाइ
बालक आसी पासी बोलाइ, केलि करन नहीं जाइ

एतिक कहिन तो आवता अवसि, सरल अति ही सुभावा
आप नां चाहत खाहिँ बसतूह, दूजन कु ही खिलावा

मीत सखा संग लेत बुलाई, पूछत कत कछु खाई
मिसठाना लई भाँति हि नां नां, देत सबहुँ बितराई

किशोरावस्था

दस से बाहरा वर्ष का अन्तराल

रफ़ता रफ़ता बाढ़ी उमरिया, आइ गयौ तरुनाई
पितरि बिचार लगाया आतमज, बनिज कोइ खुरुवाई

पर अवलोका तनुज का अपुने, जनिता अजब सुभावा
दीसता साधु संत जहाँ कोउ, चरन हिँ सीस नँवावा

दीठा साध फ़कीरां हि मंझा, नेह किसोर अन्यारा
सेवा संत फ़कीरां बिहाता, साँझ निसि औ सकारा

निरखी बाल के हिरदय माहीँ, एक रूहानि तिआस
तबहूँ पावता तुसटी जौं जौं, बैठता संतन पास

बाल अवस्था हिँ अजब सुभावा, साधो संतन नेहु लगावा
बितरत बाल सखा मिसठाना, ऐहिँ विधि मन हिँ तोस समाना
(चौपाई)

बालक हिरदय माहैँ समाई, रूहानी इक पिआस
पावते त्यों त्यों तिरपति जब जब, बैठते संतन पास

हलवइया थे पितु विबसायो, नितहुँ बिबिध मिसठान बनायो
बानिज हेत नगरहिँ पठायो, भूखे जन मिसठान खिलायो
(चौपाई)

खेमा मन हिँ विचार जु आयो, पितु पूछन पै काह बतावो
पूरी करन पितु धन की हानि, करने ताँइ मजूरी ठानी
(चौपाई)

कासतकारा खेतहिं लागे, कठिन सरम कियु तनिक न भागे
निरखि सुभाउ हली समुझायो, बाल बिसेख जनक चेतायो
(चौपाई)

मुख मंडल पै आभा रवि सी, मोहत निज दिसि दीठ सभी की
बेपरवाह गरज़ नां देखा, मौला मस्त बड़ा ही बिसेखा

जौं-जौं बाढ़न लगी उमरिया, भगती राची चित चादरिया
नित हि सवारै मंदिर जाते, भोर भये ही पथ बुहराते
(चौपाई)

परखते मार्ग पनही बिहूना, बाधा हवै नां कोइ
कंकर किरिट नां कोइ चुभै पग, जातरी पीर न होइ

पूरव अरुनोदय से हि आलय, आगति बेपरवाहा
भनक परै नां किन्हीं जना कबहुँ, जात कहाँ थे शाहा

बलूचिस्तान बिलोकी जौंइ ही, नीर कमी अति भारी
कांधे पै धरी घट मसताना, तिरसा पिलाइँ वारी

मेहनत संग जुटाई कै नित, बेर खुजूर ले आइँ
भूख़े प्यासे राहगीरों को, भीलनी सरिस ख़िलाइँ

सेवा करते दीन हि भाव सों, कबहुँ ग़रब नां आई
बिन हंकार ही साँची सेवा, जग संदेस पुँचाई

मूरती सत नाराइन जी की, कंचन सुद्ध बनवाई
कीयो स्थापना देवलि मूरत, भरम की भगति भाई

समुझिँ मूरती ईसरु साँचला, पूजा आरती गाइ
सतनाराइना के जस माहीँ, अनुदिन भोज जीमाइ

दूसरा सर्ग

तलाश-ए-रहबर

सच्चे मार्ग दर्शक की खोज

(पहला आस)

रूहानी ख़्वाब

(ईश्वरीय स्वपन)

खेल हुआ दिलनवाज बहुत ही, होया अजब सुहाना
रात स्वपन किये दरस फ़कीरा, रूहानी मसताना

संत रूहानी कियो इशारा, गुरु क्यों करत न पूरा
खोजी ले कोइ मुरशिद क़ामिल, फ़ेर परिं नां अधूरा

इसहीँ खोज में मसताना जी, बीहायो नौंअ साल
भरमत रहयौह वास्ते क़ामिल, गुर मिलै दीन दयाल

कीये छह गुरु मसताना शाह, धारण जु देह धारी
पर नां पियास बुझी अंतर की, लागिं सब रियाकारी

लंबे इस अंतराल तलब के, टोह रही बेमाना
बे सुकून बेसूद ही रहयौ, और तिरसे मसताना

तड़प-ए-मुरशिद इस हद पहुँची, दरज़ा इस थे अधीर
अभिलासा रही एक बार हो, दरसन उस ही फ़कीर

तो कुछ मारग मिलैह आगिला, मिल जाई लाफ़ानी
दरसन फ़िर साकार रहे हुई, दरवेसाह रुहानी

निसि दिवस कियो भगती दासा, तदपि रहा अंतर मन प्यासा
बाढ़ती जाइ चेत निरासा, अंतस हूक नज़र हुँ तलासा
(चौपाई)

समुझा फ़कीर नज़र जु डारी, है सतलोकी का अधिकारी
अंतरहिँ है रूहानी प्यास, लागी उर निराकारा आस

जानी फ़कीरा नूरी नज़र सु, नेह सुधाँ फ़रमाया
मंज़िल तोहरी और कहीं पै, फँसया क्यूँ जग माया

मूरती पूजा जग आडंबर, फँसता जाये बंदा
काम समाजी आरती पूजा, सत मारग का बंधा

पल दो पल मिल जाई आनंद, इनसु यहाँ पै ज़रूर
काल कफ़स हीँ फँसयो आतमा, साई मिलन मजबूर

परमपिताह आला शै तेरे, अंतर रहिँ न पिआसी
तोड़ ये पिंजरा काल अभी हि, रूह रहे नां दासी

सतगुरु की है चाह अजीज़ तो, देयीं कदम बढ़ाई
मनमुखताह के मंदिर मसजिद, देइँ बुत को ढहाई

माया काल की कारा से इस, सतगुरु रूह छुड़ाईं
परमपिताह के सरनीं जाईं, मारग देई लाईं

बात फ़कीर की सुन मसताना, पूछी लियो ख़िराई
मंज़िल है दरवेस जी किस थाँ, दीयो मुज्झ बतलाई

साथ नेह दरवेस बतावा, गहि साधन पहुँचो गंधावा
पंजआब सूबा हिँ बियासा, हो जाईं ये दूर हतासा
(चौपाई)

मिल जाईं सांचे करतारा, सावन शाहा धन भवतारा
क़ामिल गुरु करिँ पूरन आसा, शांत करै सब चितहिं पिपासा
(चौपाई)

रिहाल-ए-रूहानियत

(रूहानियत की तरफ प्रस्थान)

सुनिहिं फ़कीर बँधी कछु आया, हूक उठी जाने की ब्यासा
किस हि तरह पहुँचे मसताना, बसर सहाई हुआ अजाना
(चौपाई)

बतलाया जाइ पहुँचो सूधे, बियासा नांवाँ थान
उतर वहाँ तैं पहुँचियो जाई, राधा सुआमी धाम

हिरदै माहैं साँई दरस की, उतकट चाह को थाम
उतर बियासा थान पै पहुँचे, सूधे सुआमी धाम

मिलन कु आकुल मन था बहूता, दरसन की बरी चाह
कोठरी दोइ लखयो वहाँ बस, नज़र नां आयो शाह

खिजमतगार सु पूछा भाई, साई कितहूँ नज़र न आई
सेवादार तबहुँ बतलायो, पातशा साँचि सिरसा जायो
(चौपाई)

होई रवाना लइ सरनामा, सिरसा पहुँचि गयो मसताना
मालिक या संजोग बनायो, बहुरे शाह न मेल करायो
(चौपाई)

मसताना जी हार नां मानी, जा पहुँचे पुनि बियास
धरते पगियाँ धामा ही माहिँ, पूरन हुई चिर आस

संत परम सावन शाह जी का, अवलोकाह जो नूर
कुल ही उमर लौं मसताना पै, रहयो सुरूर हज़ूर

महाराज के करी कै दरसन, मसतानाह हैरान
ये हि तो हैं फ़कीर दरस हुये, जिनके बलेचिसतान

दियो सलाह ब्यासा की मुझ को, देर लगी न समझते
आख़िर मिल गयी मंज़िल असली, आ पहुँचा सही रस्ते

बोले नज़रीं देइँ नज़ारा, जोहत ही था राह तिहारा
प्रेम सहित पूछा तब शाहा, सफ़र हुँ मुश्किल हुइ तु बतावा
(चौपाई)

बोला मैं तक़लीफ़ नां होयो, मारग महीं सरकार
होती अग़र तो किस नीयत से, साथ तिहारौ पिआर

बोले शाह तब जदि हो मुसकिल, कबहूँ ना घबराना
हिम्मत में करने का इज़ाफाह, कठिनाइ है बहाना

दुसकर घना सफ़र जिन कीया, आपा मेटि जगती हुँ जीयो
भटकी जग सहरा गुरु पाई, जीव उसी की असल कमाई
(चौपाई)

शा सावन तब येह उचारो, जो तुम साचा साईं भारो
बाहिरमुख माया कु बिसारो, दयाल रूप हिँ अलख़ निहारो
(चौपाई)

भंज दे सतनाराइन मूरत, रब्ब नां मिलै इस हाल
तग दे तसबीह कंठी माला, लखि निराकार निहाल

बचन सुने जब शाह सावन के, हैरां थे मसताना
अरचूँह सत नारायन घर पै, साईं कैसे जाना

अरज़ कियो शाह से मसताना, कठिन अति है मन को हटाना
तजि न सकूँगा सतनारैना, और हुकुम दो शाह जो देना
(चौपाई)

इस पै शाहा चित मुसकायो, मसताना से पुनि फ़रमायो
जानि लिया तू जग भरमायो, सतगुरु नाम न रस अभु पायो
(चौपाई)

ठाकुर पूजहिं मोल लें, मन हठ तीरथ जाहिँ
देखा देखी स्वांग धरि, भूले भटका खाहिँ
(कबीर)

पाहन मूरती होत सदा ही, राम रूप मसनूई
ज़िदाराम असल हि मैं दूंगा, दयाल रूप जु होई

देखोगे नित उसके नज़ारे अंगो संग चलेगा
ग़ैबी मेहर अकूत खज़ाना, हाथ सदा हि रहेगा

जीवों के तुम बन के मसीहा, रूह पिआस बुझाओ
ज़रिया क़लमा–ए–नाम सतगुरु, सार सबद पहुँचाओ

बिदरा कोहरा लोक बेद का, मन से नाता तोड़ो
होगा मुमकिन तब ही सक येह, इश्क़ मज़ाज़ी छोड़ो

तोरीह मूरत बन तू सूरा, थोथरा जब तप छोड़
अंतर कर परबेस तू अपने, नाता अगम सों जोड़

दम हि तोड़ते अमित कोटि जीअ, काल जाल महिं फँस के
ख़ुद को करदे हवाले साहिब, साथ बिसास तु हँस के

सदके जाईं साँचला सतगुरु, सौंपि दे जीवन नय्या
भवजल तारौं पारक नवकाअ, बनहीँ तोर खिवैया

बेगहि तज कै काल का किरतम, आउ सरन जगतारा
मुरसिद क़ामिल असली भरोसा, झूठों है जग सारा

मसताना से शाह सावन जी, फेरि एहिँ दुहरावा
पूरब आवने के इस मारग, तजना होय वु राहा

अजहुँ लौं जो राह थे परयोह, मनुवाअ का बस खेलि
मनहूँ हरस तो अवसि मिलै पर, होत नां साईं मेलि

चेतहु मन मुखता सों बाउरे, सगल काल कू जारा
ऐ वेबसाउ बिपर अपनाई, पोसन को परिबारा

समुझ रूहानी तिरसना अब तु, अगिरौह पैग बढ़ाउ
जाऊ बलुचिसतान लौटानी, संग हिँ मुजस्समा लाउ

तबहुँ देउँ हौं तरिका नाम की, देउँ तोहिँ बक़सीसा
काह करो बतलाऊँ तोहिँ तब, मिलैह किमि जगदीसा

परम संत धन सावन शाह जी, पहली ही मुलाक़ात
अंत हिरदै छपि गयो साहिर, अमिट रहे ताँ हयात

दरसन नूरी करि कै शाह के, मसतानाह बलिहार
कहि नां परत है महिमा सतगुरु महती कियो उपकार

समुझी गये लखते मसताना, सादे मनुख नां शाह
बलूचिसतान तें पकरिं दयामय, कियो खड़ा यहाँ ल्याह

बानी मीठरी जगतपिता की, अंतर तक कियो घार
ठानि लियो मसतानाह अंतस, चलिहौं शाह अनुसार

बदल ही मारग अपना इबकै, दूर न तोसौं जाईं
चरन सरज हीं रहियौं रावरैं, मंज़िल इतहीं पाईं

बुत शिकनी

मूर्ति भंजना

हिरदा सोचि बिचारि गहनताह, बाहुरे बलूचिस्तान
मूरती लइ सत नाराइन की, पहुँचे बियासा धाम

शाह सावन जी तब फ़रमाइ, बरसों अर्चना इस ही गँवाइ
मूरती टूक-टूक करवाइ, देखो मूरत कछु नां समाइ
(चौपाई)

इसहिँ कलि की सठता भुलावा, साजिस चाल बिडंब छलावा
बाधा मंज़िल बना पसारा, जीव बनिं सबु इसके सिकारा
(चौपाई)

धन शाह सावन अक़सर कहते, जीव है जेली चोर
देस सकल ही काल बिकट येह, कलिजुग छाइरा घोर

सतगुरु पूरम पूरा मुरसिदा, धारयौ देहि फ़कीर
देस ये काल छुराइ हि ताँई, गुरु बनि आई सफ़ीर

तीन बचन लइ काल के सतिगुरु, लइ औतारा आवै
जीवों को चेताइ कै राहिम, भवजल पार करावै

जाई लेय निज धामा अज़ोनि, अमित कीयो उपकार
कहत नां आवै उसतत मुरसिद, सदके सहसरी बार

बस इतना हि समुझि लो आई, अंदर है तोरे ही साईं
बिनु घट सागर डुबकी लाई, दरसन ज़िंदा राम न पाई
(चौपाई)

काज बड़ा हि कठिन है पिआरे, सुलीह ज्यौं है काम
आस बिसास नां तूटै मानस, अबस मिलै तोहिँ राम

करत काम ये सूरा ही कोउ, मनहीँ धरी बेसास
साँस-साँस हरि साथ है तेरे, छन-छन देय अहिसास

परम संत के बचन ईलाही, असर करयौ भरपूर
निरमल हुइ गई अंतर आत्मा, बसि गयो चरनिं हज़ूर

मंसब-ए-मस्ताना

मस्ताना का उहदा

रहिने लगे मसताना उहवाँ, धाम बियासा हुँ आइँ
नाम–दान बक़्सीस दरब लेइ, साइयाँ के गुण गाइँ

धामहिँ सेवा तन मन लायो, गोबिंद रूप गुरु सुख पायो
सेवा ढब अदबुद दरसायो, शाह बिलोकहिं वर हरसायो
(चौपाई)

इश्क लखिं मसताना साँईं जी, नाँव दियोह बग़सीस
बूझि परी नां बात ये अब लौं, कौन बरस दी असीस

शाह सावन फ़रमायो बचन जु, देइ है जे संकेत
मसताना सों चाहते सतगुरु, कारज कोई बिसेख

पूरन सतिगुरु राखते आये, जीव अमित निज छाँईं
औखुरी सेवा बचन सुधा तें, अंतर सवछ बनाईं

मनसा बाचा नज़र नूरानी, मोहते सबन कु शाह
लेते उनतें काम थे वाही, जाकी राखते चाह

बाबत सेवा करने कठोर हि, थे मसताना बिखात
जनया पूत अनूठा मातरी, पाई गयी जस बात

निसि बासर मसताना न सोइ, सेवा कठिन हूँ भाव हिँ खोइ
बादल प्रेम बरसया शाहा, भीजी आत्मा घट हरिआवा
(चौपाई)

सतगुरु जी बक़सीस जो कीन्हीं, दीयो नाम का दान
चाहते साँईं मसताना जी, जाईं बलूचिसतान

तीसरा सर्ग

सोहबत-ए-मुर्शिद

मुर्शिद का साथ

(दूसरी आस)

हुकुम-ए-बलूचिस्तान

बलूचिस्तान का हुकुम

सावन शाहा सदा फ़रमाइँ, बलूचिस्तान पंजाब हिँ जाइँ
रूहें अगन वहाँ भरमाईं, बापुरी अर्सा से अरुझाईं
(चौपाई)

रूहाँ सदा सु येह पुकारा, क़मालि संत जगत हुँ उतारा
तब सतिगुरु मिलीं रूप फ़कीर, बचन शहनशा हुई तकरीर

सावन शाह जी हुक्म लगाई, बलूचिस्तान अबिलंब जाई
मसताना घट दुविधा भारी, मन हिँ होई घनी दुसवारी
(चौपाई)

मसताना कु हज़ूर ने इक दिन, चौबारा बुलवाया
शादी लाल परेमी संग था, शाहा ख़ास लगावा

रात दिवस रहते थे वहाँ वो, शाह सावन हिँ सेवा
सोइ शाह सावन से बहूता, गहरायी था नेहा

भावना सेवकी निरखि उनकी, देखिहीं उनके काम
दे दिया शादी लाल कु साहब, भाई बालाह नाम

बातों बातों शाह फ़रमाई, जावऊ बलूचिस्तान
ज़िंदाराम देऊँ मैं तुमको, करसी सबरा हि काम

उतरे नीचे जब मसताना, शादी लाल कु दिया उल्हाना
कछु भी नहीं दियो हैं साईं, शादी लाल तबहुँ समुझाई

नाहीँ नाहीँ यूँह नां बोलो, तुम मसताना भाई
परम संत कियो बचन जु सारे, तेरे ही हक़ जाई

जाहि बचन दियो तोहिँ साईं, काहू नां दियो अजहुँ लाईं
सुन मसताना उठे सुधि जोइँ, मांगी शाहा खिमा घट रोइँ
(चौपाई)

तबहुँ सावन शाहा बिराजो, पद समरथ रूहानि नवाज़ो
खेमामल से बदल हि नांमी, मसताना कियु बलूचिस्तानी

शाह समुख जाई मसताना, नाचा घुंघरु बाँधि दिवाना
भूली देह जगत को भुलाइ, धन सावन शाह नारा लाइ

शाह सावन तब यौं फरमाइ, जीव जो अपनी हस्ती मिटाइ
मेटि खुदी घट सतिगुरु जाना, बनता है बस वो मसताना
(चौपाई)

आपा मेट गुरु ही राखा, जब बोले तब गुरु ही भाखा (चरण दास)

मसताना को शाह सावन जी, दीयो ये फ़रमाना
पर मसताना तनक नां चाहीँ, साहब सु परे जाना

मसताना की बेनती शाहा, येह वचन फ़रमाई
मैं हूँ निआख़र फ़क्क़र सूधाह, नेह हि बाँक नां पाइ

साहब मैं रहा अपढ़ निपट ही, मूढ़मती वा निरंध
पढ़सों कैसों में पोथड़ियाँह, किम ही करौँ सतसंग

साहब हाथ सों लिखहिं पातिरी, मसताना को थमाइ
बलूचिस्तान पंजाब हिँ अब तें, निरभौ होइ तू जाइ

सतसंग करु हो बेपरवाहु, धूमधाम गोबिंद गुन गावु
पढ़ि न पोथड़ी नां त गरंथा, बेधरका जस गावउ संता
(चौपाई)

नाहीँ कोई ज़रूरत है तुज्झ, पोथीह पंथ गिआन
पीट ढिंढोरा सतगुरु साँईं, जावई बलूचिस्तान

देवसों तोहिँ रहमत मिहिर मैं, सुनु रे सिष मसताना
करसी पूरा काम ये तेरा, देऊँ सुरत ख़ज़ाना

ख़रच करीं माया जो सदातन, परमेसर जस माहीँ
है ये ख़ज़ानाअ अलमस्तों का, कबहुँ ख़तम हो नाहीँ

जाईं बलूचिस्तान के अंदर, सतिगरु नाम उचारो
जनम तैं तिसही रूहों को तुम, औघट घाट उतारो

मसताना जी बचनों मुताबिक, सतगुरु कहिं मसताना
बोलै कोई जू ओछा तोहिँ, हिरदै उसकू लाना

बलूचिस्तान का तोहिं बनायो, सुलताने सुलताना
ग़ुरबत दीनता फ़क्क़रता माहिँ, सरबत प्रेम बहाना

आठ जाम और चौबिस हि घड़ी, सतिगुरु लेखा लाई
निरुवारी अंदेसा फ़िक़र तू, करता जाइ निकाई

सतिगुरु साइँ कही मसताना, पीर हुईं तुम बलूचिस्ताना
पूत हुइ सतिगुरु तू बिसेखा, जीत सकै नां कोउ अजेता
(चौपाई)

जीव यहाँ हर भूखा प्रेम का, प्रेम हि कम है हयात
सबरे जीव अघाउ परेम सों, प्रेम हि इनकी ख़ुराक़

कटुवा कट्टरता से कटै नाहिँ, कोटि करो ताहिँ वार
कट जाई इक बार दानाई, साथ हि परेम कटार

आगिले बचन कही मसताना, सतिगुरु इहिँ फ़रमाहा
बेशक मसताना है फ़क़ीर तु, पर शाहों का शाहा

याद करेगा सदा ज़माना, पतित ग़रीबों का मसताना
शाह मसताना बलूचिस्तान, याद जुगो जुग रहेगा नाम
(चौपाई)

बहुत हुए पहले मसताने, किधर गये दुनिया नां जाने
तुम जैसा नां हुआ न आवै, गुज़रें लाख ज़मानें भावै
(चौपाई)

बेपरवाह मसताना शाहा, बरसाया जो पिआर
सगरे बलूचिस्तान को पकरीं, भव जल से कियो पार

निआख़र थे शा मसताना जी, सबद गिआन नां साथ
संत परम सावन शाह जी की, पाई अनामी दात

टूटि फूटी हिंदड़ी सिंधड़ी, की जो करी बौछार
शहन शाहा मसताना जी ने, जीव निगन दिये तार

मसताना की बानी हरगाह, अचरज कीयो कमाल
छाती सतसंग मस्तीह मचता, आलमे ग़ैब धमाल

जीव हज़ारों ब्यास पठायो, संत परम तैं नाम दिलायो
मसताना गुरु सदके जाई, बलूचिस्तान हिँ धन बरसाई
(चौपाई)

अलमस्ती और बेपरवाई, सावन शाहा के मन भाई
चाहत काज बिसेख करानी, घट रूहानी चढ़ाइ जानी
(चौपाई)

जिसके रोम हिँ रोम में केवल, रूप बसा हो साँईं
हो मुतलक़ जु दुनिया नितानंद, सुख दुख सबहि भुलाई

होई अकाम अमीरी ग़ुरबत, और सफ़ेदी स्याहा
नेकि बदी अपजस की परवाह, से हो बेपरवाहा

अकल के काँटों से ही अपना, कर ले आपा छलनी
अरपन कर दे सक कुछ अपने हि, मालिक प्यारे चरनी

सतिगुरु नूरी चरन कँवल रहै, भूली सकल ज़माना
हर पल नाम ख़ुमारी रहै जिस, वो हि बने मसताना

जीवन नवका सौंप दी साईं, मांझी नाउ बनाई
अभिलासा थी साब हज़ूर की, नौका जित ले जाई

एकै साध थी मसताना की, केसिक शाह रिझाये
कैसो परीतम खुश हो पायीं, मस्तीह लूटी जाये

सतगुरु जी निराकार अजर का, पूरन रूप ही जानि
निरमल पावन अमला अनाविल, दरपन होइ रूहानि

सतिगुरु पूरन का नां करि सकें, सामना रूहें आम
जीव साधारन का नां होवै, बिरलों का येह काम

सनमुख पूरन सतगुरू के जो, जीव सदाइ वो जाहिँ
अपना जिनहीं बनाई सतगुरु, लेवता काम अलाहिँ

मारग दुइ मुरसिद बगसीसा, एक नज़र अरु नज़र असीसा
देइँ शाह बचन ये ज़बाना, ज़िंदाराम दुँ तुज्झ मसताना
(चौपाई)

सिमरियो नाम अगम सतगुरु का, रात दिवस सुबू शाम
काम सकल करै पूरन तेरे, साथ में ज़िंदाराम

आहलाद रहा मसताना का, नाहिँ कोयी ठिकाना
पावते ओहदा रूहानियत, ख़ास हुये मसताना

सावन शाह नवाज़ी नां किन्हीं, आला येह बग़सीस
पहले थे शाह मसताना जिन, पाई बसतू नफ़ीस

सदके सावन शाह के जाइ, मसताना ने ख़ुशी मनाई
संत फ़कीरां खुशी पचाना, काम कठिन नां अति आसाना
(चौपाई)

संतन बड़े बड़े फ़रमाया, अजब फ़कीरों की है माया
मिहिर मार दोनों ही माड़ी, निभना नां ख़ाला की बाड़ी
(चौपाई)

सावन शाह जी आपसे हि बस, राखिँ एक थे आसा
बग़सा इस ही वजहा आपको, रुतबा बहुत हि ख़ासा

जिनके रूप में बैठ के हि सब, करत हैं मालिक काम
पहले से तैयार हैं आते, होयी यहाँ बस नाम

कोई कमी जु रहे अधूरी, की जाती इस जनम हुँ पूरी
कीयो सावन शाह ये काम, होईं ख़ियाबाँ बलूचिस्तान

कुछ करनी कुछ करमगत, पूरबले कुछ लेख
देखो भाग कबीर का, लख से भया अलेख
(कबीर)

एक दिवस इक सेवक आयो, मसताना का रूप बनायो
टाट पहन मसताना सागा, शाह चरन सर टेकन लागा
(चौपाई)

परम संत जी पूछा कौन ये, बहरूपी अफ़साना
बतलाया तभू साधु एक ये, आया है मसताना

पीछे हटते शा फ़रमायो, प्रेमी जनों काहिँ भरमायो
और न है कोई मसताना, वो है बस इक जानिँ ज़माना
(चौपाई)

मसताना तो एक ही है बस, जोई बलूचिस्तानी
लावते जीव जोअ काढ़ि-काढ़ि, भवसागर सुँ तरानी

साखी संत कबीर की है ये उनहीं मुख सों बखान
कबिरा-कबिरा कहते सबू ही, बनना नाहिँ आसान

होईं जगत हीं आला सब सों, आसय या ही कबीर
छोरै कामना अग जग सगरी, होवै नाहीं अधीर

सरब खियाल होइ बे मुरादी, नाहीं करै हंकार
लोभ मोह और काम किरोधा, घट सूँ देवै निकार

पाईं ताँईं मुकुति-ए-आलम, माया बिसैय तजानि
सोधि खड़ा किस ठाउँ जगत माहिँ, असलीयत लेय जानि

कबीर कबीर तुम क्या करो, छोड़ो जग की आस
अपना आपा जो लखे, सोई कबीर दास
(कबीरदास)

घर दर ज़ोरु ज़मी जयदादा, छोड़ि दी मसताना सुभागा
शाह के नूरी चरन हिँ आइ, कियो हवाले निज को साईं (चौपाई)

चौथा सर्ग

रूहानियत

अध्यात्म

(तीसरी आस)

हुकुम बरदारी

हुकुम निबाहना

जानि परयो मसताना बचन हिँ, राज़ एक येह ख़ास
मिलयो संत परम जैयमल से, पाछिले जनम हिँ आप

बाना धवल था पाक़ आपका, मुखहिँ रूहानी नूर
झलकती अलमस्ती थी अदाओं, नज़र इलाही सुरूर

जैमल जी ने तब फ़रमाया, हाल कही सब ग़ैब सुनाया
भगतों के तुम्हीं हो सरताज़, बतलाऊँ ये हक़ीक़त आज
(चौपाई)

लेना तुमको होइँ जनम अभी, फ़िर सेह बलूचिस्तान
रूहों कोटि ही कोटि की जहाँ, रहियोह तरपत जान

जाना होवसी सिरसा भी तुज्झ, लेय अलमस्तीह आप
दे संदेसरा सतगुरु जी का, संगतांह मस्ती साथ

सच्चा सौदाहुँ नींव रखायो, कछु दिन पहले वचन लिखायो
मस्ती बानी जब ये लिखाया, नूरी देहीं थे तब शाहा
(चौपाई)

ख़यालात साच्चाह सौदा तब, मन भी नां थे आये
जान परी इस तें जैमल सिंग, जी तोहिँ थे बुलाये

ज़रिया परम वचन बाबा के हि, धरत लीयो औतार
हुकुम ईलाही हेत हि पिछले, जनमों से थे तियार

पहिले बहुत ही रूह आपकी, हो तय्यार थी आई
जिस माहैं कुल मालिक आपनी, मंज़ूरी फ़रमाई

पाठवाइ दिया जब तें आपको, फ़ेर सूँ बलूचिस्तान
होइ ख़िलाफ़त भारी आपकी, ख़्वार हुये परीशान

गये सिवाला तोरि आवास हिँ, सतनाराइना आप
बाबत इस ही होइ ये वहाँ, दुखदाइ थे हालात

हिंदू होये मुख़ालिफ़ बाबत, मूरति देवल तोरी
दैवता कीयो अपमानित वर, धरम सनातन छोरी

मुसलमान भी उतरे बिरोध हिँ, इलज़ामात लगाई
पहले सकल कीयो बुतपरस्ती, अब सूफ़ानी भाई

बतलायी दियो तुम आपुन को, कौनो हवो इनसान
नां ही तौ रहयो तुम हिंदुआ, नां हुइ मुसल ईमान

तिल-ए-सिरसा

बलूचिस्तान हिँ आपने भजन व, सिमरन करने ताईं
ढींगरे छापों की लाई कै, गुफ़हा एक बनाई

उसके आगेह इक लंबा सा, बारांदा बनवाया
इतना तंग व नीचा बनाया, गुफ़हा तक जो जावा

पड़ताह जाना अधिशायन हो, था जो नाहिँ आसान
गुफ़हा ऐसी बनाईं बूझहिँ, नाहीँ परै बिबधान

बाधा डारीं भजन नां कोई, सिमरन नां खुट जाये
हिम्मत नां रही कोई किसी की, गुफ़हा पास हि आये

ऐसे थे शाह मसताना जी, सदके साईं जाईं
बेपरवाह मेरे मुरशिद के, गुन बरनी नां पाईं

मन का मुक़ाबला

आडंबर मज़हबों को लेईं, लोग जुगों से खफ़ीर
दुश्मन सदियोंह से रहे ख़ब्ती, महात्मा संत फ़कीर

मसताना शाह सावन हुक्म से, बहुरयो बलूचिस्तान
मज़हब ठेकेदारां न छोड़ी, कसर कियो परीशान

जंगल आग की माफ़िक फ़ैली, ख़बर ये बलूचिस्तान
आइँ आपकी पत्नी पिता संग, करन बिरोधना ठान

तानों और उलाहनों की वो, पाँड हि जैसे लाई
खोल दी गठरी होइँ किरोधित, कसर न की रुसवाई

मसताना समझायो थे पत्नी, मारग सत वो आये
छाँड़ी दुनियादारी मिथियाह, धाम ब्यासाह जाये

जीवन सफ़ल हो जाइँ तिहारा, चौरासी कटिं फ़ेरा
तजहीँ बतियाँह इधर-उधर की, कहिना मानो मेरा

पत्नी और ससुर नाहीँ माने, आपकी कोइ दलील
लागे करने ज़िरहा दोउ ही, बातों करहीं ज़लील

हारी मसताना शाह कीयो, निरनै बहुता कठौर
पत्नी से कियो अरज़ ये कोई, शादी करलयो और

सुसरा आपका बर हि फ़ुतूरी, और बहुत हि हठीला
करने लागयौ दूजी शादी, का मन ही मन हीला

बैरी मन यहाँ डाला पहरा, करयौ पैदा सवाल
मसतानाह को ही बहकाने, लागयौ चालीं चाल

मसताना तु ऊँचे कुटुंब का, इज्ज़त नाम है पूरा
दूजी शादी जो होई पत्नी, होइँ काम ये कूरा

होसी येह बदनामी तेरी, दुनिया तुज्झहिं हँसैगी
दुनिया घर परिबार बिरादरी, थू थू मुख हिं करैगी

राखी लाज मग़र सतगुरु शाह, हौसलाह बग़साई
आयो मन में ख़्याल शहनशाह, घड़ियां बृथा गँवाई

मन के बहकावे में हि आई, इतना वक़त गँवाया
लागती घड़ियां ये जो लेखे, जाती बदल हि काया

लागा कहिने मन अब बहकीह, औसर नाहिँ गँवाओ
मन बहकावे को ही लताड़ो, अबहिं निरनै सुनाओ

अगले दिवस ही काला ख़रहा, मसताना मंगायो
लाईं काला तवा एक रहीं, मुँह पै कालिख़ लायो

बैठीं खोताह मुँह करिं पाछै, रूप हि अजब बनायो
रुपया पंचस की मंगवाई, पास मिठाइ रखायो

चालिं जानिब परे बाज़ार थे, देखया अजब जुनून
लागे पीछे मज़मा बीन थे, चालयौ पाछु हुज़ूम

फ़रमाये मसताना बहन माँ, पत्नी गालीह लाऊ
निंदा मसताना की करु छकीं, मीठाई भी खाऊ

नुक्ता चीन वा मसख़रे रसिकों, की रही लागी भीर
ढोल औ ताशा बाजिँ साथ था, और बाजी मंजीर

कोई सीटी मुँह से बजाता, कोइ ताली बजाईं
मसताना का सेवक एक था, थाली को ठनकाईं

ख़ूब हि लागा शहर तमाशाह, हल्ला परयो इलाका
मसताना की जोरु की कोई, घटिया बात बनाता

मसताना को कोसने वाले, निंदा करने वाले
होइ दूने से गये चौगुने, लागे करने चाले

रहमत

कल्याण - मुरशिद की नज़र

पूजनीय शाह मसताना जी, बलूचिस्तान हिँ जाई
सदके संत परम सावन शाह, देइँ रढ़ ही मचाई

बोया बीज वो प्रेम दीनता, जाकीह फ़सल मुफ़ीद
आया जीव जो सोबत साईं, रहयो होईं मुरीद

लागीं जों जों बाढ़ीं संगतें, बोझ बढ़ीं मसताना
वजह इस मसताना जी चाहीँ, थोड़ा बोझ बँटाना

सावन शाह सतगुरु की सेवा, पतरी एक भिजाई
सेवादार वहाँ से जु साईं, देयो एक पठाई

संत शाह सावन जी जवाब हिँ, चिठिया इक भेजायो
मसताना करो तनिक न चिंता, साईं जी फ़रमायो

खुद ही पास तिहारे बशर इक, बेगा पहुँची जाई
होगा मतलब ख़ास ही तुज्झ वो, हर पल होइँ सहाई

ऐसा आदमी मिलसी तुमको, पाईं वो दिलाराम
सगराह अंचल देखीं उसकू, होइ जाईं हैरान

पाछै कुछ दिन लड़का एक जो, चौधरियों का नामी
रेवत राम जु बेटा चौधरी, गोबिँद राम मलानी

आयो पास में मसताना जी, रहना वहीं सुहायो
मसताना ले ब्यास गयो शाह, सावन नाम दिलायो

लड़के ने उसी मसताना की, सेवा की जी दारी
रहता साथ ही उनके हरदम, सुबहो शाम हि सारी

मसताना जी साथ गयो परीं, इनका परेम अथाह
सेवादार था सुलझा बर ही, निष्ठावान औ सच्चाह

सेवाह जब मसताना जी की, सिरसा देइँ लगाई
संत परम ने रेवत राम को, दीया हुकुम सुनाई

बाद हि कुछ दिन इक और लड़का, डेराह बलूचिस्तान
आया मसताना जी पास उस, रेवत ही रहा नाम

बाद में ये हि जंघ सड़या के, नाम होया मशहूर
लागा रहिने संग मसताना, सिमरन बंदगी चूर

पर थे घर वाले तो मुख़ालिफ़, लड़के के उस सारे
आने नाहीँ देते डेराह, रोकीं करते रारे

बार अनिक लाइ ताले उसको, देते डक घर वाले
पर थे रेवत राम भी साचे, साईं के मतवारे

पहला रेवत राम औ दूजा, रेवत जंघ सड़याह
दोनों बहुत मशहूरी पाये, संग मसताना शाह

होईं ज़िक्र इसी लिये इनकाह, जगहा हर ही तमाम
सेवादार ये साखी हर ही, वाकिया बलूचिस्तान

दूजे मसताना जी के येह, दोनों सेवाहदार
सबसे थे नज़दीकीह सेवक, और फ़रमा बरदार

इनकी देखी सेवा भावना, और भजन की कमाइ
मसताना शाह रहते इनसे, आहलादित गहराइ

रात की है इक दास्तां मौसम, सरदी के हि दौरान
धूना जल रहा लकड़ी का था, डेराह बलूचिस्तान

मसताना शाह दोनों ही इन, सेवाहदारों साथ
बैठे माहीँ भजनों बंदगी, लाईं लिव संग नाथ

जलती लकड़ी रेवत राम के, लागी पाँव जलाने
भजन की मस्तीह खोये रेवत, रहयौ इस अंजाने

राती भर रही लकड़ी सुलगत, पाऊँ इक सुलगाये
पैर बलाशत दो सुबह ताईं, दिया उसने जलाये

गहरा इतना ज़ख़्म था बन गया, देखा जाता नाहीँ
हैरां थे सब रेवत राम पै, भजन न चालिं पताहीँ

सुबह जब हुई जागयो भजन सु, चाराग़र दिखलाया
फ़ैल ज़हर जायेगा जिसम में, उपचारक बतलाया

काटनी टांग पड़ेगी इनकी, हर हालत ये निदान
वरना जा हि सकती है इनकी, येह ततछन ही जान

पूछयो रेवत मसताना जी, साइँ क्या किया जाए
पूछो ज़िंदाराम से अपुने, मसताना फ़रमाए

बैठे रेवत राम भजन महीँ, लीव साईं सु लाईं
ग़ैबी रूप जवाब ये आयो, रेवत नां घबराईं

नीम की पाती का रस सरसों, माहीँ तैल पकाई
लेपो जख़्म पै बेगहीं तेरा, ठीक जख़्म होइ जाई

ज़िंदाराम नाम लेइ रेवत, ने वो तैल लगाया
मालिक कीन्हीं किरपा जख़्म वोह, बीस हि दिन हुँ सुखाया

देखीं इतनी नेक भजन और, सिमरन की ये कमाइ
नाम दियो मसताना जी इन्हें, जंघ सड़या जी भाइ

मेहनत और सख़्त बड़ी सेवा, मसताना निबहाये
सारी सारी रात औ दिन थे, सिमरन साथ बनाये

आम और लेइ ऊँट घूमते, सारी सारी हि रात
उठते बैठते काम हि करते, भजन भी करते साथ

मन का ख़ूब मुकाबला करते, होईं उस पर भारी
मानते मन की बात एक नां, आत्मा की सरदारी

गारे की बनवाई हि ईंटें, ख़ूब मकान बनाईं
बनवा उनको तुरंत गिराते, फ़िर से सेवा लाईं

गारा ईंट बनाना सुखाना, ईंटों से ही मकान
गिरवाई बनवाते मकां फ़िर, गारा बस यही काम

कबहूँ बनाना और गिराना, मन न छोड़ते खाली
सेवा भी दिन रात ही करते, करत भजन भी आली

न कबू सोते न कबू बैठते, आठों जाम ही काम
कबहूँ गाराह कबहूँ ईंटें, बंदगी औ सिमरान

भजन बंदगीह भी जो करते, दरज़ाह एक ख़सूस
आख़िर आपकी देह कु नींद न, होवती क्यों महसूस

रेवत रामा औ जंघ सड़्या, कबहूँ सोत न देखा
या सेवा में सख़त ही होते, या फ़िर भजन हिँ पेखा

रजूहाने-पीर

पीर का इच्छा (सुझाव) आकांक्षा

मसताना शाह ने दो अपने, सेवकों संग जाहीँ
बलूचिस्तान मचाइ दी रढ़ थी, बारह सालों माहीँ

मस्ती छुपन में मसताना शाह, अब नाहीं थी आती
चरचा फैलीं वहां जों जंगल, आग है फैलिं जाती

दिखलाइँ करामातें नज़ारे, मारग लाइँ अलाहीँ
बोये बीज परेम व दीनता, जीव सधारन माहीँ

गूँजेह नारे धन धन सतगुरु, धुर ताईं आसमान
भूल न पाईं आज लौं मंज़र, नूरीह बलूचिस्तान

मशहूरी सुन बलूचिस्तान का, पीर जो था मबरूर
चेले जाके रहयौ हजारों, बहुता रहा मशहुर

आयो मिलने मसताना शाह, देखा नूरी जलाल
होइ बहुत हि गया हैरान वो, अंतर ताईं निहाल

सुनयो बैठहिं सतसंग वचन जु, मस्ती में गया आई
पीर मुसलमां नाचा ख़ूब ही, तजहीं लोक लजाई

सत्संग सुन परभाउ था आया, हुई गया दिलफ़िगार
मसताना संग जाने ब्यासा, होया मन सुँ तैयार

क़लमा लेवने मसताना से, पीर ने अर्ज़ लगाई
मसताना जी कहयौ न हम हैं, काबिल इस अबु भाई

क़लमा लेना अगर है तुमको, ब्यासा जाना होगा
दीद का नूरी जलवा पाईं, रहमत पाना होगा

संत परम दरसन की अब लगी, जलने घट महीँ आग
लागयौ तड़फ़न तरह बुरी वो, वास्ते जाने बियास

चालीं परयो पीर वो इक दिन, मसताना शाह साथ
बलूचिस्तान सु होते सांगला, पहुँची गयो था ब्यास

ब्यासा पहुँचते संत परम को, देईं ख़बर पुँचाई
पीर बलूचिस्तान का बियासा, आपसु मिलने आई

संत परम ने देइँ सम्मान था, इंतिज़ाम करवाया
पीर साहब के लिये बियासा, तंबू था लगवाया

मसताना जी पीर को ब्यासा, साईं से मिलवाई
पीर कीयो उसतत मसताना, जी की उनसे जाई

पूरे बलूचिस्तां मसतानाह, ने है ख़्याती पाई
पीर भी सकया नहीं अभी लौं, ऐसा हल्ला मचाई

सोची येही बात हज़ूर मैं, करने दरसन आया
कि ग़र मसताना जी हैं ऐसे, मुरशिद कैसो पाया

पीर वो हिंदू मज़हब के था, रहता बहुती ख़िलाफ़
रोबीले परभाउ के साथ हि, रुतबा उस रहा ख़ास

बलूचिस्तान में पूरे उसका, ऊँचा था बड़ा नाम
पर था खोया इल्मां-ए-दुनिया, दूर हि साचे मुकाम

शरियत और तरीक़ते मज़हब, हर इक अलग हि जाई
इस ही वजहा मत भी अलग हैं, संत परम फ़रमाई

लेकिन हर मज़हब की मारिफ़त, और हक़ीक़त जाई
होवै एक ही चाहै जीव कु, दरगाह जु पहुँचाई

देईं पाक़ कुरान हवालाअ, सावन शा समुझाई
औ मौलाना रूम साहब की, मसनवी दी सुनाई

पीर साहब थे समझदार बर, और बड़े होशियार
नाम दान लेइँ वास्ते साईं, अरज़ कियो बड़े प्यार

बख़शो मुझको नाम दान वही, दीया जो मसताना
नाम जपूँ मैं मुरशिद अपनेह, रात दिवस रोज़ाना

सच्चे पातशाह पीर सु कहयौ, पीर साहब सुनु ध्यान
मेहनत बहुती करनी पड़सी, जापने नाम अनाम

पाछै पंदरह मिनट पीर फ़िर, शाहा अरज़ लगाईं
नामदान मोहिँ बख़्शो दीया जो, मसताना को साईं

इस पै फ़रमाये शाह सावन, नाम मिलै नां भाई
मेहनत करनी परहिं आपको, पूरी दिल से जाई

थोड़ी देर के बाद पीर फ़िर, करयो शाह ताकीद
साईं नाम दियो मोहि बग़सी, दिल से होया मुरीद

पर मुझे देना नाम वही जो, मसताना दियु साईं
सावन शाह न देने नाम की, बात वही दुहराई

तकरीबन पाछै दोइ घंटा, बाहर गइँ सब आई
पीरी है तो ये हि है पीरी, पीर यही फ़रमाई

क्योंकि नाम के दान की दौलत, सबसे बर है मुफ़ीद
ऐसा टिकट है दरगाहा ये, मिलयौ है बा नसीब

ऐसा होइ है दुरलभ औसर, दुनिया काल की फ़ानी
बा मुसकिल येह मिल पाई है, मिलता नां आसानी

सांग्लाहिल, मुल्तान, मिंटगुमरी, गोज़रा

सन उन्नीसौ छयाली शाहा, मसताना को हुकुम सुनाया
सांग्लाहिल मिंटगुमरि पधारो, गोजरा व मुल्तान भी तारो
(चौपाई)

बोलयो मसताना से साहिब, छोड़्यो बलूचिस्तान
सेवगी पूरी होइ यहाँ पै, जायीं पकर मुलतान

जंघ सड़िया व रेवत रामा, साथ बेपरवाह मसताना
बलूचिस्तान हिँ जब नां आयो, संगत सकल उदासी छायो
(चौपाई)

पतरी भेजयौ मसताना कू, सतसंग माहिँ सुनाइ
माला माल हुये हैं पिआर हिँ, चिट्ठियों महीँ दरसाइ

संगत की करते बेपरवाह, अंतर से संभारी
जूतियाँ संगत की लइ फ़िरते, ख़ुद की झोली डारी

गुम हो पनही न हो नुक़सान, प्रेमी जीव न हों परेशान
दरबारे मुरसिद और धाम, हो नां पाये कभी बदनाम

नीहारि मसताना शहनशाह, की ये अदा निराली
गद गद हो जाती थी संगतें, सुन सुन बोलि रसाली

प्रेमियों की जु आती पाती, बिरहा बेदन बहु छलकाती
देखी पीर बिछोह अथाहा, मसताना सु मिलन की चाहा
(चौपाई)

मानि हुक्म श्री सावन शाहो, संगलहिल मसताना आयो
संगत सेवा दिल जु लगायो, सतिगुरु मिहिर सु रंग जमायो
(चौपाई)

दीनता और प्रेम के चरचे, होने लगे सब ओर
आपकी सोबत एक घड़ी भी, मनवाअ करत विभोर

ख़ुद भी सिमरत नाम थे सतगुरु, संगत से जपवाते
सेवा करते रात और दिन हि, जस मालिक का गाते

सतगुरु का जस सुनहिँ बैराग हिँ, जाती रूहें खोई
परेम लबालब होइँ आपके, संगत उठतीं रोई

सावन शाह दात थी पूरी, पोथी ग्रंथ कहा न ज़रूरी
होअ निसचिंत करो तुम काम, अंतर तेरे ज़िंदाह राम
(चौपाई)

सतगुरु सावन शाह हज़ूर की, रसनाअ का पैग़ाम
ब ज़रिया मसताना शहनशाह, पढ़या गया सबु थाँन

सांगलहिला में रोज एक था, साब कमिसनर आया
ख़ूब ही था वो आलिम फ़ाज़िल, रुतबा ऊँचा पाया

लाला रक्खाह राम साथ हुई, बार कई मुलाक़ात
बारे शाह मसताना जी के, होत ही रहती बात

सुन सुन बात कमिसनर चाहीँ, मसताना दरसन को जाहीँ
एक दिवस सौभागी आयो, रक्खा राम उसे संग लायो
(चौपाई)

लाला रक्खा राम मिले जाई, जब मसताना शाहा
अरज़ लगायो सांगलाहिल का, बिसद कमिसनर आया

करना चाहै दरसन आपके, शहन शाह मसताना
सुनि सुनि बातें आपकी साँईं, होइ परा दीवाना

करयौ साफ मनाह मसताना, हटका रक्खाह रामा
चाहते मिलता हम न बड़ों से, साथ न उनको लाना

रक्खाह राम अरज़ कीयो बहुरि, बेपरवाह दरबार
ले ही आया अब तो साथ में, दरसन दोअ इक बार

करयौ मसताना जी इनायत, राम रक्खाह फरमाइ
ले ही आये साथ जो अपने, अंदर लाऊ बुलाइ

लाना है तो लाऊ गरीबाँ, काह महाजनां काम
मिलौं ना साहब से तेरे तो, होउसी तू बदनाम

जों हि कमिसनर अंदर आयो, मसताना ने उसे लखायो
मुखरा पै घनि मूँछे सांजी, सर पै टौरा पगरी बाँधी
(चौपाई)

साफ़ सवछरे बसतर पाये, जूते कीमती पाउँ लाये
जोश हिँ मसताना फ़रमायो, मल बैठा मुच्छ माल परायो

एक इधर इक उधर लपाटा, मारे काल पलट दे पासा
छा जाएगा घोर सनाटा, मल वी कढ़ दे नाल सवासा
(चौपाई)

बस हो गयी सतसंग बहुत अब, तुरंत यहाँ सु उठाओ
रक्खा राम जी अपने ही संग, इसकू तुम ले जाओ

डरहिँ परेमी सब पछताये, अच्छा कमिसनर लाइ मिलाये
हो गया बेइज्ज़त बेचारा, करसी अब ये उज़र हमारा
(चौपाई)

ठोकर लागयो ज़बर कमिसनर, खुनस तनक नां आई
मसताना शाह के बचनों का, गहरा असर समाई

खोवता सुध मसताना जी के, चरनों माथ टिकाई
बोला साहब चलो मेरे घर, लंगर सब उत खाई

मसताना सुनि बातें कमिसनर, दीयो हुकुम सुनाई
नां तो नवाजूँ नाम दान सों, नां ही टूकर खाई

बेपरवाहा कमिसनर को थे, मन ही मन ठकरायो
नाम दान के वास्ते पाछैह, धाम बयासा लायो

सतसंग नाहिँ था येह कोई, पर बड़ी गहरी बात
कतहौं लागयो ज़ख़म कमिसनर, कतहिँ लागा आघात

पूरन ताकत के ही बचन थे, संत परम की हि दात
सतसंग होत रहे बानी से, पोथी ग्रंथ नां साथ

मेरा मिठन मलाई
(मेरा मुरशिद ही सब कुछ है)

लाला रक्खा राम की ज़बानी

पाकि़सतान के बनन सु पहले, सावन शाह पिआरे
देवन सतसंग गुज़रांवाला, दो दिन ताइँ पधारे

साब मैनेजर भी सांगलहिल, से ही होयी तियार
जाई गुज़रांवाला रहे थे, मिलने शाह सरकार

सांगलहिल सतसंग घर हिँ तब, ठहरे शा मसताना
मैनेजर शाह मसताना को, मिलने होइ रवाना

मिलिहिं अरज़ कीयो वो भी थे, गुजरांवाला जाई
मसताना ने अपनी तरफ़ से, पतरी एक लिखाई

देना हाथ हज़ूर शाह के हि, मसताना फ़रमाई
साथ हिफ़ाज़त साब मैनेजर, ने चिठिया रखवाई

गुज़रां वाला सतसंग घर में, शाहा हुइ मुलाक़ात
पातरी मैनेजर साहब ने, दी नां शाह के हाथ

लौटिहीं गुज़रांवाला से तब, पहुँचे शाह लाहौर
पातरी लेयी मैनेजर भी, पहुँच गयो उसी ठौर

पहुँचना पास हज़ूर वहाँ था, मुश्किल बहुत ही काम
संत सिरी किरपाल साहब का, अज़रायल इंतिज़ाम

पातरी हाथ लई मैनेजर, शाहा मसताने की
पुरज़ा लिखि तब पायी इजाज़त, शाहा तक जाने की

बोलयौ पाती मसताना की, देवसों जाइ हज़ूर
पास इजाज़त जाने उन ताइँ, साहब करो मंजूर

सच्चे पातशाह हुक्म सुनायो, फ़ौरन मैनेजर कु बुलायो
तलब मैनेजर होइ पूरी, पहुँचे संत परम हिँ हुज़ूरी
(चौपाई)

पातरी मसताना जी की थी, शाहा पढ़ी सुनाई
सच्चे पातशाह सुनहिँ पातरी, अत्याहनंद समाई

दीसत सकल ही कोरी चिठिया एक सतर थी लिखाइ
भाव अथाह भरा चिठिया महीँ, संत हि पाइ बूझाइ

मेरा मिट्ठन मलाई सतगुरु, मेरे लिए राधा स्वामी, अनामी सब मर गये
(मस्ताना जी)

भिजवाइ परसाद भी सेर इक, उस ही पातरी साथ
समझ सके था भेद मतीन भी, छुपयोह जो उस दात

समुख रखा परसाद हज़ूर के, अंतरधिओन हज़ूर
दोनों हाथ उठाअ परसादा, लखयौ नज़र हीं नूर

दे देना मसताना को इसे, देना कथि येह बात
फ़िकर करें नां अब वो किसी का, सतगुरु जी होइँ साथ

मैनेजर जी वापसी जाइ, सांगलाहिल पहुँचे थे आइ
मसताना जी गयो मुलतान, मग़र मैनेजर थे हैरान
(चौपाई)

दिया किसी को न अजहुँ जनाब, दीया जो शाह ने परसाद
मैनेजर जाने मुलताना, की तैयारी होइ रवाना
(चौपाई)

बतिया सगरी सुनहिँ हज़ूर की, मसताना दीए रो
भरयौ मुखरा नूरी जलाल सु, घट नां हरस का ठौह

बात है सारी बाहर बरनन, बूझी सकै न कौऊ
पातरी खाली सतर एक का, मतलब समझत दौऊ

मेरा मिट्ठन मलाई सतगुरु, मेरे लिए राधा स्वामी, अनामी सब मर गये

(मस्ताना जी)

लिखिया मसताना पढ़िया शाह, भाउ दोन ही जानी
संत रमज को संत ही समझें, बूझीं आपस बानी

साचे पातशाह ताइँ तरपन, और परेम अथाहा
रोम हीँ रोम भरा मसताना, नां काहु से छुपावा

सतगुरु मेरे धन निराकारा, तोर हि रूप निहारूँ
तुम बिन जगत ये मोया साँईं, चेत तुम्हीं को भारूँ

बासते सच्चे पातशा नूरी, लागियौ दरसन हूड़
अभिलासा-ए-हयात यही बस, आगे इस सबू कूढ़

रुतबेदारी

दर्ज़ा (ख़िताब) देना

राम रखा देहली हि ज़बानी, बात होयी मशहूर
डेरा बाबा जैमल सिंग जी, ब्यासा में थे हज़ूर

सच्चे पातशाह पाखंडियों सु, रहते सरवदा दूर
समुख न करता हौसला कोई, नाचने भरहिँ सरूर

देखि साहब हज़ूर फ़रेबियां, जाते सूखी परान
अंतरजामी संत - हज़ूर थे, सकल ही जानी जान

औसर मिलयाह जौं मसताना, आवने ब्यासा धाम
भरते हाज़िरी मसताना जी, शाह की बिन बिबधान

एक दिवस जाईं थे कहीं पै, सावन शाहा जनाब
मसताना सुरू कीयो नाचन, मस्ती ए रब उनमाद

सच्चे पातशाह जाते जाते, रुक गयो तजि कै काज
मसताना सु बोले 'हज़म करो', धरहिं धीमी आवाज़

सुनत ही मसताना जी फ़ौरी, थिर हो गयो बेनाज़
साखी बनयो खड़े निकट रहीं, मैनेजर जी साहब

बाद हिँ सच्चे पातशाह होये, चौबारा खड़े जाइ
दरसन देवन ज़रिया दरीचा, आसन बैसियो आइ

फरमायो मसताना जी तबू, सतगुरु जी सुनो आज
न कोइ आया आप सा अबलौं, नां आवै महाराज

साब हज़ूर भी फुरमाये उनु, तुझ सा भी मसताना
नां ही अब ताइँ आया कोई, नां हि है कोउ आना

आगिले पल फ़रमायो साहब, जाओ ऐ मसताना
बग़सीं सारे वर किया तुझको, पीरे बलूचिस्ताना

कथयो तब मसताना जनाब सु, सुध हिँ कहौं करीं गौर
ये तो हो बस आप हि साइयाँ, आप सिवाय नां और

बेपरवाह की एक बार हुइ, तनक सी लम्बी दाढ़ी
पूछियौ संत परम मसताना, काहे केसा बाढ़ी

फ़रमायो मसताना हज़ूर सु, मिसकीनी के हि साथ
अपने मिठन मलाइ की करसों, पनहियां इस तें साफ़

शाहा की चमकाऊं जूतियाँ, इसका बरुख बनाईं
हँस दिये बात सुनि शाह सावन, थे ख़िल ख़िल ही जाईं

सच्चे पातशाह जी के नूरी, हुक्म हज़ूरी बजाई
दिन ही दिनों मसताना जी ने, ख़ूब बुलंदी पाई

शाह सावन जी मसताना को, देने ख़ासा मुक़ाम
लेना चाहते थे वो इनसे, खासा ही कोइ काम

इस ही सबब ख़ुराके अनामी, बरक़त ख़ुशी खज़ाना
ग़ैबी रूप से मसताना को, शाह कियो नज़राना

करते पूरे बचन हज़ूर के, जानहिं हुकुम अलाही
चश्मे करम से संत परम के, शिद्दत थी कमी नाहीँ

कूटि कूटि ही जज़्बा भरा था, सेवा करने शाहा
ख़ूब कमायो भजन की सेवा, शब्द के अंदर जाहा

खिज़्मतगार कीयो नां कोउ हि, सिमरन इतो अथाहा
कोउ न देखा सोते आपको, जागत ही सब पावा

मसताना पै शाह के नूरी, बचन असर करिं भारी
बाँधहिं घुंघरू ख़ूब नाचते अंतर मस्तीह धारी

‘हज़म करो’ कहते शाह सावन, मसतानाह सँवारी
जौं हि पातशाह करते मनाहि, नाच न रखते ज़ारी

सच्चे पातशाह मसताना पै, हो जाते बलिहारी
होईं संतोंह कामिल की तो, नूरी नज़र हि न्यारी

बाहर छेकते पर अंदर से, मसताना हिँ समायो
अपने और मसताना अंतर, दरिया मस्ती बहायो

दोन्यू नज़रां नूरी मिलन का, भेद न कोई पायो
जिनहीं खोजहा तिनहीं मिलयौ, सेस अकारत जायो

मुरशिद अपने संग मसताना, नेहा करत बेलाग
देखिँ परेम बिसेखा शाह का, लागियौ कछु को आग

साधो मसताना से वहाँ कुछ, राखिं मन हीँ बुराई
चाहते किन ही लीला करना, उनकी थे रुसवाई

मसताना की शाह से दूरी, करने आत नां बाज़
पर मसताना बंदगी सेवा, शाह को रखते शाद

सेवा बंदगी भजन सिमरना, साहब लेहिं रिझाई
पुलकित हो मसताना को शाह, वर पै वर बरसाई

ईरसा मारे साधु बहूते, नक़ल करीं दरसाईं
मसताना के रूप में चाहीं, शाहा को भरमाईं

दीद-ए-हक़बी सच्चे पातशा, पर कोइ बच न पाई
जानहिं शाह किस सेवा कीन्हीं, कैसो कतहि कमाई

नक़ल से मसताना की साईं, चाहीं जब भरमायो
एक दिवस इक सेवादार जो, मोहन नाम रखायो

मसताना ज्यों बोरी टाट के, बसन पहन के आयो
नूरी चरन हिँ सावन शाह के, माथा जब टेकायो

पूछते शाह खिज़मतगाऱा, कौन था जु ये आयो
कहयों कोइ ये मसताना थे, जा पै शा फ़रमायो

पकरीं रूहें बलूचिस्तान तें, सतगुरु देस लिआनी
फ़ितरत जिसकी जज़्ब-ए-महोब्बत, रोम हिँ रोम समानी

बिन साहब देख्याँ नां परै कल, पीव मिलन जिस ठानी
सतगुरु पंथ निहारते निस दिन, सारी उमर बिहानी

मसताना दूजा न निगाह में, सिवाअ बलूचिस्तानी
मसताना तो इक शाह कथयौ, और न दूजा जानी

शाह सावन जी ये फ़रमायो, मसताना कोउ नाहिँ
नक़ल करें जोइ मसताना की, बाहर डेराह जाहिँ

संगतें इतनी सेवा करतीं, वल्लाह कहत न आवी
लुत्फ़-ए-नज़र-ए-सावन शाहा, मस्ती वोह थी छावी

रोज़े पचासां काम वहाँ पै, पाँच दिने निपटावीं
बतियाँ कहि-कहि सतगुरु रस भरी, संगत भजन बिठावीं

करते भजनो बंदगी बहुती, मान कबहुँ न करावीं
संगत हिँ मसताना जी भरयौ, मस्ती पूर ईलाही

जो भी आपकी सिफ़ताँ गावै, रोका ततछन जाई
हीर है जस औ मान काल की, सबहों को समझाई

ग़रब काल के हाथ मरयौ सब, की जिन ख़ूब कमाई
आछी मान बढ़ाई कबहुँ नां, नींवाँ देइ गिराई

खोलै राह गरब हंकार की, कुल ही देह ढहाई
नामबरी जस मसताना कबू, अपुनी नाहिँ कराई

किया कराया सब गयो, जब आया हंकार
(कबीर)

लोभ मोह तजा, जग आस को
काम क्रोध को तज, भूख और प्यास को
नंगा बन बन फिरे, बसन नहीं तन में
अरे हाँ पलटू सभी बात गयी, खोये बढ़ाई मान से
(पलटू साहब)

वास्ते मसताना जोइ साधो, राखीं मनहिँ दुरावा
ईरखा आग हिँ जल जल जाईं, रुसवा करना चाहा

रार करते बेजा मसतानाअ, बिन कारन उकसावा
सोंटा पकरहिं उनकू खदेरीं, डाही साधो आवा

बहुत परेम बूझाई उनहीं, रोस नां कबहुँ लावा
बसर पै हर इक मसताना जी, प्रेम घना बरसावा

करने थिर चित अनखबाज रहे, बिसतर बाँध हि जाते
अलहदा जाई दूर कहीं छुप, जेता औसर पाते

मुरसिद के सिमरन हीँ मुसलसल, लिव साईं से लाते
बेला सच्चे पातशा सतसंग, आई प्रभु गुन गाते

परत मुख़ालिफ़ फेर भी पाछै, जोरी हाथ नँवाते
हरदम हर ही बशर मसताना, मिसकीनी दरसाते

ढूंढते मुफ़सिद नवें बहाने, करनेह को बदनाम
करते शिकवा शाह सावन से हर दिन सुबह औ शाम

झूठी धरते तोहमत कोई, और ओछा इलज़ाम
पर चाहत मसताना ख़ैर ही, साधुआं सबन हि धाम

गरज़ थी उनकू बस सतगुरु की, निस दिन आठों हि जाम
बैर बिरोध न पालयो काहू सेवा भजन था ध्यान

प्रेमियों साथ गयो मसताना, गोज़रा जब इक बार
लाला देवी दयाल हि घर पै, अक़सर करत ठाहार

गयो टहलने साधुओं संग जु, होइँ फ़कीर दीदार
नाम फ़कीर का फुम्मन शाह था, बोल थे गुले बहार

नज़्म सुनायी शाहा फ़क़ीर ने उसतत की बेसुमार
खुश हो मसताना ने फ़कीर कु, दे दिया कोट उतार

अबहुँ इस बेला नहीं कीमती, चीज़ है मेरे पास
कुछ दे देते नाम पै सतगुरु, चमरी भी काह बात

ज़रिया मसताना की बात ही महात्मा लागिं अघात
छाया सतगुरु असर फ़क़ीर पै, मसताना जी हि साथ

फुम्मन शाह वही आ सतगुरु से, नाम गयो ले बियास
पा गया चीज अमूली बहुत हि, देस अनामी सुगात

लाला देवी दयाल व प्रेमी, बहुता जतन लगाईं
पर मसताना शाह नां माने, कोट नया न सिलाईं

लागया जब पताह मुख़ालिफ़ां, आये करिं ख़ुराफ़ात
लेइँ कोट की आड़ थे लागे, उलटी करनेह बात

पहुँची उलटी सीधी सिकायत, जब सावन जी जनाब
संत परम ने दीया बरमला, साफ दिली से जवाब

साधो जलत हैं मसताना से, मोहीं सबना हिसाब
सतगुरु जस मसताना बख़्स दियो, कोट ही निज ज़यदाद

कोट बिना ख़ुद सरदी गुज़ारी, पा गयो असल सवाब
सावन शाह जी ख़ूब समझते, साध जो तिही दिमाग़

सच्चे पातशाह हुक़ुम बजाई, सांगलहिल तब जायो
गोजरा मोंटागुमरी में भी, जाइ सेवाह लायो

हलका से हर जीव थे सहसर, बयासा हिँ भिजवायो
नाम दान दे तिनकु हज़ूर ने, औगुन सब बगसायो

सिमरन हर छन मसताना रहे, निमिख नां एक खुटाइ
बासते जस सतगुरु मसताना, ख़ूब ख़ज़ाना लुटाइ

आज़माईश

परख

अगराह पाकिसतान बनन के, सांगलाहिल इक रात
थे मसरूफ़ बा दिल मसताना, भजन हिँ दयाला नाथ

बाबाह जयमल दौरां इस ही, दीयो दरस साछात
आपसे यूँ फरमायो बाबा, सुनू मसताना बात

आ गया वक़त यहाँ से जाने, सेवा सिरसा लगात
सजदा बाबा जयमल का कियो, करियौ बेनती साथ

बाबा जयमल का सिजदा संग, ख़ूब ही कियो सम्मान
कथया आप तु मुरसिदे मुरसिद, आली आपकी शान

पर मैं जिस महबूब का आशिक, मिठना मलाई नाम
जाऊँ नां कहीं हुकुम बिना उन, चाहे जाईं पिरान

हूँ महकूम मैं शाहा सावन, उन ही की येह जान
वजहा इस ही मसताना शाह, साहब का किओ नाम

दूजी रात जो भजन लगायो, सतगुरु दरस दिखाई
पाई हुक़मे बरदारी ख़रा, पूर परीछा जाई

रूप धरी बाबा जैअमल जी, मैं ही कल परख़ाई
अब तुम सिरसा जाई तुरत ही, मंजिल इक नइ पाईं

रूह पुकारें तुज्झ को अब वहाँ, जायी उन्हें तराईं
मसताना जी इमतिहाँ हर इक, पार ख़रे हो जाईं

जा सिरसा करो सच्चाह सौदा, प्रेम पिआर हिँ खोई
बीज दीनता और महोब्बतां, के हर ओर हि बोई

आज देऊँ वर तुमकू ऐसो, बाल न बांका होई
सांगलाहिल मुन्टगोमरी छोरि, कै सिरसा जब ढोई

बिछुरी संगतें विकल वहाँ की, फूट फूट ही रोई
हुकुम था पर शा सावन जी का, टारै कैसे कोई

सोहबत बिन मसताना जी की, परयोह उत अंधेर
मसताना शाह मिलयो नेहा, जिनको था वहाँ ढेर

उनहीं की सोहबत में रहकर, भजन के परिहों फेर
सिमरन का हुइ चाव था इतना, करते राती सवेर

न मिलने पर सोहबत आपकी, लुटि गयो भजन कुबेर
विरहा मारीं संगतें सारी, करत फ़िरत रही हेर

ज़िकरा एक ही था हर पाती, बात यही दुहाराती
आपकी सोबत बिन मसताना, संगत छाइ उदासी

लागेह नां मन बिन साँईं, करने माहीँ सेवा
भजन नां सिमरन बनता कोई, बिन तुज्झ दरसन मेवा

परेम बेलरी लागी सूखन, आप ने थी जो बोइ
मुरझाने बूटे लगे जाईं, प्रेम सलिल जु सिंचोइ

सोहबत की है साँईँ आपकी, सख़त ज़रूरत भारी
नूरि सोहबत का बेपरवाह, आइ लगाओ वारी

पातियों के आने पर ऐसी, मसताना मन आई
औसर उस हीँ मसताना शाह, पाती इक लिखवाई

देई परेमियों कु भिजवाई, उसमें ये लिखवाहीं
सबसे ऊपर हुकुम ए मुरसिद, हुकुम मानना चाहीं

मानि हम भी तो हैं हिदायतें, अपने सतगुरु शाहा
जायी हैं बस उस ही ठाँव पै, जितहिँ हज़ूर पठावा

क्यूंकि पातशा साचेह नूरी, बात ये घट हिँ आई
कारनै इस ही मालिक ने थी, सेवा सिरसा लाई

कबहूँ हुकुमे हज़ूर बिहूना, हम उत सकत न आई
जो भी काम हैं होयी सतगुरु, हो रहयौ करवाई

वाहा वाही करु नां हमारी, अरज़ कियो मसताना
करने वाला सतगुरु एकला, हम तु ज़रिया बहाना

शाबासीह जो मसताना की, ऐसे तुम करिं भाई
लेना जानी तुमने अदावत, मसताना सु निभाई

वाहा वाही और उसतत से, होये ऊँचे घाटे
मटिया मेट फ़कीर जती कई, होयीं मारे जाते

देइ तुमको दीया तोहारा, ज़िंदाराम निआरो
भीतर ही सतगुरु है तुज्झ महीँ, अंतर झाती मारो

कीमती क़लमा सतगुरु जी पै, करहिँ भरोसा बिसास
अंदर का क़लमा लेय पकरीं, साँची निसठाह साथ

आप ही लेगा वो संभारी, जैसी तरप दिखाईं
वारे निआरे हों जायेंगे, पहुँचोगे धुर जाईं

सावन शाह हज़ूर जनाब जी, तोह पै बलूचिस्तान
पत्तर भिजवाये थे अनेक ही, रहने उत दौअरान

आप सदातन निबहाये वोह, दिया हुकुम जो शाहा
हुकुम कभी किसी हाल न तोरा, सावन शाह जु चाहा

बलूचिस्तान में बरस कई ही, आप वहाँ बितलाये
लाईं हुकुम परम संत शाहा, ने ब्यासा बुलवाये

बही वचन

मसताना जा बलूचिस्ताना, पहन नया आनामी जाता
सतगुरु की ताक़त धारी, काम कियो था वहाँ हुँ भारी
(चौपाई)

फ़िर शाहा ने हुकुम सुनायो, बलूचिस्तां से फ़िर बुलवायो
सांगलाहिल लायलपुर थान, गोजरा मिंटगुमरि मुलतान

लायी सेवा सब इन्हीं थान, सांसत संगतें बलूचिस्तान
कहती हमको छोरि न जाना, तुम बिन रहिं न सकों मसताना
(चौपाई)

आयें फ़िरी यहाँ पै इक दिन, संगत को फ़रमाया
पंचस साठ हज़ार रुपये का, बांटेंगे सरमाया

सतगुरु का इलाही खज़ाना, इसहीं कबहुँ कमीं नां आना
कीरति सतगुरु जी हि करेंगे, प्रेम खुराक सभी को देंगे
(चौपाई)

जैसा सावन शाह फ़रमाइ, सत्संग ग्रंथ सहारे न लाइ
सतगंग होईं सतगुरु हस्ती, मालिक ने बख़शी जोइ मस्ती
(चौपाई)

हुकुम शाह सावन अनुसारा, सतगुरु जस सब थाहिँ उचारा
सुनि सुनि तुमरी सूधी बानी, सतसंग माहिँ मस्ती समानी

मस्ती हीँ संगतें थी नाचतीं, पूरी पूरी हि रात
लखि लखि मस्ती संगतों की यूँह, वाह वाह करहिं आप

मास सातवाँ या फ़िर आठवाँ, बरस छियाली आई
सतगुरु सावन शाहा हुकुम से, सिरसा वापस लाई

आपके संग उस वक्त वहाँ थे, चौधरी रेवत राम
वो भी साथ ही साथ आपके, आयो सिरसाह धाम

औसर इस ही सांगलहिल और, गोजरा वा मुलतान
मोंटोगोमरी सिंध साथ ही, सगराअ बलूचिस्तान

आइ सैंकड़ों प्रेमियों की गइँ, पतियाँ आपहिँ नामी
अरज़ सरब रही दरस दिखाओ, धाम हिँ आइ सुआमी

पाँचवा सर्ग

हुक्मी रब्बी

ख़ुदा का हुकुम

(चौथी आस)

हुकुम-ए-सच्चा सौदा

सच्चा सौदा का हुकुम

सावन शाहा खुद फ़रमाई, सिरसा हीँ सेवाह थी लाइ
आपने सारी उपर बिहाइ, शाह के हुक़्म पै आँच न आइ
(चौपाई)

आगामी वोह चौदह साल, सिरसा धाम हीँ दियो निकार
बेपरवाह हदों के पार, बरसाया संगतों हुँ पिआर
(चौपाई)

संत परम सावन शाह हुक़्म का, करते होयीं सम्मान
आप दोबारा कबहुँ गयो नां, लौटी बलूचिसतान

दौरे हुकूमत अंग्रेजी था, खून रंगा इतिहास
अंगरेज़ी शासन हुँ दमन से, घुटती सबकी सवास

अनपढ़ता बदहाली ग़रीबी, बदतर बहुत हालात
जीव करोड़ों जाल फंसे थे, माया काल के हाथ

शा सावन की बढ़ती उमरिया, और भयी दुखदाई
बरस था उन्नीह सौ छैयाली, आया नां सुखदाई

दौरे कठिनाई बेपरवाह, होये कभी न अधीर
करम गुनाहगारी जीवों के, झेले अपुने सरीर

तंदरुस्ती गयी सबब इसी ही, बाढ़ी दुबिधा तमाम
शाह सावन थे चाहीँ लेना, आपसे महत हि काम

बुलवाया जदा मसताना को, छोर हि बलूचिसतान
मसताना जब आये बहोरी, पहुँचे बिआसा धाम

देखी हालत डेरे की वहाँ, करयौह बर अफ़सोस
राखते मनहिँ साधो अदावत, आपसे बिसम हि सोच

फ़क्कर मस्त थे ख़ुदादाद शाहा, और अदीठे फ़कीर
शख़सीयत की रहियो आपकी, अलग ही इक तसवीर

मुरसिद की थी परस्ती वा मस्ती, बेपरवाही अजीब
नाचते गाते साँईँ रिझाते, पावते सतगुरु दीद

देखी आशिकी मस्ती व चाहत, सतगुरु का दीवाना
सावन शा महाराज आपको, कहते थे मसताना

मसताना धरी नाम आपका, शाहा दियो ईनाम
चोला छोरन ताईं आप भी, अपनाये यही नाम

मात पिता ने दीया आपका, खेमा मल था नामा
पर नां काहू दीया पुकारन, कहलायो मसताना

धन सावन शाह निरंकार का, नारा ख़ूब लगाते
साधु आपसे ईरसा बहुते, कारन इस ही खाते

भजन कमाई वाकिफ़ आपकी, ईरसा मारि जाते
देखि उनका अमल ब्यौहार ये, संत परम फ़रमाते

मसताना ये नारा चले नां, है शरियत यहाँ छाइँ
नाम चलेगा सदियों हि तेरा, लेकिन और ही थाइँ

करत बिरोधना यहाँ शरीयत, और कहीं तुज्झ जाना
करहिँ परदे माहीँ बूझाई, एकि था ये बहाना

काम फ़कीर करैं सदा परदा, चाहीँ नां दरसाना
रूहें सिरसा की शाह सावन, पकरिं चाहते लाना

मसताना को वजहा इसी ही, रमज गहन समुझाईं
जाईं सिरसाह मसताना तुम, नारा ये हि चलाईं

नारा राधा सुआमी का नां, मसताना जी बुलाइ
धन धन सतगुरु नाम तेरा, सिरसा हीँ तुम जावा

पठवायो सन छियाली सिरसा, कथया डेरा बनाउ
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, नारा तेरा चलाउ

वचन कियो सिरसाह में जाके, सच्चा सौदा करावो
सौदाअ मस्त करे यह तेरा, सतगुरु जाइ रिझावो

थाउँ इस संगत और शरीयत, तुमरे उजर हीँ जाइँ
पाबंदी नाचन पै तोहरे, हम भी इस थाँ लाइँ

नाचें सहसर लाखों वहाँ पै, हो होइ मस्त नचावो
ज़िंदाराम है हाज़िर नाज़िर, जीवों को चेतावो

लंगर ब्यास का दुनिया हिँ जहाँ, जाये होउ मशहूर
चरचा मस्ती-ए-सच्चाह सौदा, होगी दूर से दूर

येह फ़रमाई भेजे सिरसा, मसताना को हज़ूर
दुसमन होइँ ज़माना फ़कीरां, दुनियाह का दसतूर

चलने देइ दयाल की नाहीँ, काल करे बदकारी
काल के जाल कु तोड़ो सतगुरु, आसरे होसियारी

काल नां चाहे कामिल मुरसिद, दुनिया हिँ कोइ आये
काल के देस तें जीव छुडाइ, सचखंड हुँ ले जाये

गीताअ का उपदेश सुनाई, किरिसन ने दी राए
अरज़ुन दरिया असनाना करो, घाट सुरसती ठाए

बागड़ में सिरसा थाँह वो है, गीता में है बख़ान
कमतर नाहीँ सचखंड से ये, लेय जाये सतधाम

कथयोह वासुदेव ये अरजुन, पारथ सुनू मुज्झ बात
दोइ अरब हनन कीया जीवां, भाग में तेरे पाप

भारे करम हटे जीअ हतिया, जाओ सुरसती घाट
करम भार अभिसाप भी झेले, धरत असीस के साथ

क़ामिल गुरु सब सिरसा हुँ आयो, नूरी चरन के साथ
तर गये कोटिक जीव यहाँ के, पाइ रूहानी दात

है बिख़यात की सिरसा अंदर, धरम गुरु बड़े आई
संत बहुत बड़े पहुँचे हुइ भी, चरन यहाँ निज पाई

मसताना जी शाह सावन के, हुकुम यहाँ हि निभाए
आयी सिरसाह डेरे माहीँ, कुटिया एक छवाए

ख़ूब तवज्जाह दी सिमरन महीँ, दिन सेवा हिँ गुज़ारे
धरम गुरु सिरसाह में कहत हैं, एक सु एक पधारे

रात–रात गुरु चरचाअ करते, करत नां दिन हिँ आराम
सेवा बहुत ही कठिन कराते, रात दिवस और शाम

जीव अनेकों पकरीं हि पकरीं, भेजे बयासा धाम
शाह सावन जी से दिलवायो, नूरी इलाही नाम

धीरे–धीरे चढ़ रहे मंज़िल, गहरे इश्क पी जाम
रात दिवस थे रहयौ जागते, सोवते सतगुरु नाम

अपनी मौला मसतगी कारन, होये बड़े मशहूर
बीच बीच हिँ आते ही रहते, सावन शाहा हज़ूर

रहते देत हिदायतें आपकु, साथ ईलाही नूर
खुश रहते बड़े शाह आपसों, चाहे रहत वो दूर

मसताना भी रहते सदा थे, धुन हिँ जनाब की चूर
प्रेमियों सेवादारों को सब, करती अदा मख़मूर

इक दिन करने ख़िलाफ़त सरियत, डेरा ब्यास के माहिँ
परेमी इक ने कियो सिकायत, सनमुख शाह के जाहिँ

कहयौ ईरखा बस मसताना, कबहिं मरै नां पताहिँ
वचन कियो शाह सावन जी ये, मरत वो ऐसे नाहिँ

सैकड़ों मसताने ये बनाइँ, तबहिं मरिं बड़ी शानी
गहरावाअ जानूँ मसताना, है ये बलूचिस्तानी

सावन शाहा बढ़ती उमरिया, तंदरुस्ती लगी जाइ
परेमी जीव पढ़े व गुनों की, प्रेम ने फ़ौज बनाइ

अल्लामाअ उसदात बैद और, अभिजंता थे समाइँ
चाल रसम दसतूर निज़म सेह, वर बीबसथा रचाइँ

कीयो परगती दिन दिन डेरा, प्रेम की नींव धराइ
सदके शाह डेरा सिरसा ने, मशहूरी बरी पाइ

कूच-ए- अलीम

सर्वज्ञ मुरशिद (गुरू) का प्रस्थान

दौराने इस हिंद बिसाल का, कियो अदू बँटवारा
बन गये भारत - पाक़ मुलुक दो, लुटे फुँके घर बारा

आग हीँ झुलसीं बटवारे की, मर गइँ लाख हज़ारा
फ़ाक़ेह ग़ुरबत पाप अधमता, हद हि कर गये पारा

काल ने अपना तांडव खेला, ख़ल्क मरी बेशुमारा
लाशों ऊपर लाशें चढ़ीं थीं, नज़र जिधर ही डारा

क़ामिल संत फ़कीर भी इसकी, ज़द में आयो सारी
ढोहने भार करम जीवों के, परि गई ज़िम्मेदारी

दो अपरैल बरस अरतालीस, दे गइ दुखरा भारी
बिआस हुँ चोला छोरीं शाहा, धाम अनामि पधारी

मसताना की आँख के परदा, साईं ने मुख मोड़ा
रोते बिलख़ते जीवों को था, तरपत डेरा छोड़ा

संत परम पहलेह मसताना, से दीयो फ़रमाई
चालीं नां यहाँ नारा तेरा, सिरसा देहुँ भिजाई

परी अनेक ही रूहें बागड़, तारु वहाँ उन जाई
गरज़ तेरी मसताना उनको, तुमहिँ उनके सहाई

पर क़ुदरत कियो ज़ुल्म था भारी, कुछ नां दियो सुझाई
उठ गया सर से हाथ हि शाहा, मारग कौन दिखाई

सनमुख मसताना की हि आँखों, उमड़ी भीर थी ब्यास
अगन चिता महिँ धू धू जल शाह, नूरी चोलाअ राख

एक-एक करि याद थे आये, बचन जो बोले नाथ
भूखे जीव परेम के सारे, प्रेम हि इनकी ख़ुराक़

जलदी शाह सावन के चोला, छोड़ने के पसचात
रुके नां ब्यासा मसताना जी, छूटते शाहा साथ

दर्ज़-ए-वचन

वचन का दर्ज़ होना

पाछै चोला छोरन शाह जी, मसताना असहाई
पर नूरी नज़रीं शाह सावन, नवीं दिसा थे पाई

छोरन से पहले शाह चोला, थे ये हुकुम सुनाई
डेरा सच्चाह सौदा बनाऊ, दिया इसारा जाई

लेकिन डेरा सच्चाह सौदाअ, सन अरतालिस आई
शाह सावन के बचन निभाते, शुरू किया बनवाई

संत परम का बचन अटल यही, करता साफ़ इसारा
शाहा सावन जी ने आपको, ये ही हुकुम उचारा

जाई सिरसाह डेरा माहीँ, सुन लो तुम मसताना
कुटिया एक वहाँ पै छवाई, सिमरन भजन बनाना

अपना सच्चा सौदा करायें, सतगुरु जी के सत जस गायें
सतगुरु के वचनों कु निभायें, बाद हि इसके ब्यासा आयें
(चौपाई)

नाम लई सावन शाह सतगुरु, एक कुटीर छवाई
मानिं हुकुम लिया लायी आसन, माहिँ गुफ़ाह बनाई

है परमान बचन येह कथया इक, इस ही बात का आज
खोलन का अभी हुकुम नहीं था, सतगुरु का यह राज़

आगे भी इस बचन में नूरी, जान परी येह बात
मिलयौ बाबा जयमल सिंग से, पिछले जनम हीँ आप

औसर उस ही सिरसाअ का ये, सच्चा सौदा निआरा
होयी गया बाबा के मुख था, वास्ते बनन इसारा

सतगुरु बाबा जयमल सिंग जी, अपना वचन सुनाई
ताक़त अलमस्ती बनूँ तोहरी, अब ही उेउँ बताई

तार के दुनियाँ सारी को ही, लेइ चलांगा भाई
जग सगरे का इस ही बहाने, अंधारा कट जाई

तोसों बलूचिस्तान में रूहों, को सब नाम दिलाई
ले जाना भव जल के पार है, सदके सतगुरु जाई

बलूचिस्तां में रूहें अनेकों, अंतर आस बनाईं
बैठिँ तोहरी बाट हैं जोहत, राहिँ नज़रें गड़ाईं

करी इनायत बलूचिस्तान पै, फ़िर दोबारा आई
करना है इक़राम तुम्हें फ़िरी, बागड़ सिरसा थाई

मसताना शाह बचन इलाही, माहीं ये फरमायो
खेला इश्क जो बलूचिस्ताना, जानिं नां कोउ पायो

बात पता नां चली ये काहू, ऐसा खेल रचायो
इश्क बलूचिस्तान का सगराह, ब्यासा ला पटकायो

तरपती प्यासी रूहों ने तब, अपना काम करायो
बचन शहनशाह आगे भी हैं, सगरे ही लिखवायो

ले ले जाईं सावन शाह सब, जीव हवाले कराइ
जीव संभारे आपै सतगुरु, जैसन उनको हि भाइ

है ये मोरचा सतगुरु जी का, बाल न बाँक हि आयो
सनमुख उसके काल भी बेबस, मात यहाँ पै खायो

दी ही जाती इश्क ख़ुराक थी, प्रेम लबालब छायो
भरयौ जीव छलाछल परेम सु, अंगो अंग समायो

हाज़िर सतगुरु रहते हुज़ुरी, महत नसीबा पायो
धूम परी पंजाब हीँ सारे, जन जन ही मुख आयो

वरी इश्क ये कमाल की वसतु, हो भी क्यों ना यारों
है ये मंज़िल इश्के हक़ीकी, इश्क न है ये कायो

इश्क फ़नाईयत है मजाज़ी, पर ये नाहिँ फ़नाहो
ये तो अज़ल है जो जुग–जुग से, इसका साथ निभायो

नाहीँ परै कभी कमज़ोर ये, ताक़त बढ़त सवायो
बैठ के गुफ़हा काम करेगी, ताक़त ये हि लखायो

करने की आबाद है ताक़त, जिसकी साथ फ़नाहा
बचन ये शा मसताना जी ने, आगे है लिखवाया

मसताना शाह बचन अगम में, ये ही थे बतलाईं
हालते मस्ती मौजेह सतगुरु, आगे ये फ़रमाईं

धन धन मेरे सावन शाह जी, सतसांईं निराकार
मौज ने साबे आलम कैसी, मस्त ये लाई बहार

करहिँ विदयानंद का इसारा, बचन यही लिखवाईं
नाम सु अपने मसताना कभी, वचन दरज़ न कराईं

विदयानंद परेमी नाम ही, इस्तेमाल हीँ लाई
मसताना परहेज़ किया सदा, अपनी सिफ़त बढ़ाई

संत सिरोमनी गुरू कबीरा, जैसे निज रचनाईं
साधु सबद का लीया सहारा, थाँव हि थाँव लगाईं

कबहूँ नाम किया नहीं अपना, या मिस अहम भगाई
मसताना जी कबहूँ गिरे नां, गरब हिँ ऐसी खाई

शुभ हंकार की दलदल न परे, ऐसी बिधि नीकारी
बाबत इस विदयानंद नाम हि, इस्तमाल किया भारी

इस ही मारग शाह मसताना, चले उमरिया सारी
मनसा बचन करम नां दिखे कभु, मसताना हंकारी

बचन महीँ अपने बेपरवाह, आगे ये लिखवाया
ज़रिया शेरो शायरी अपनी, हाले दिल दरसाया

<u>बही वचन</u>

छोटे-बूटे नित संभाले, नित पिलाबे विदया को जाम
मस्ती और मुहोबत यार सजन दी कित्थे छुपावां
हरगिज़ विदया कहे शोर शराबा सिरसा में
सतिगुरु का दया महर मचवावां
जिसनू चाहवां पकड़ शाह सावन साईं के,
चरणों में मंगावां-हरगिज़ गल्ल किसी की न चल्ले

छोटे बूटे नित हि संभाले, विदया जाम पिलावां
मस्ती महोब्बत याअर सजन दी, किस थाईं मैं छुपावां

विदया हरगिज़ कहे मैं सिरसा, शोर शराबा लावां
दया मेहर का नित सतगुरु की, मैं सिरसा जस गावां

जिसनूं चाहवां पकड़ शाह के, चरनों हिँ मंगवावां
चल्लेह गल हरगिज़ नां किसी की, सन्मुख दयाला शाहां

छोटे बूटे जीवों रूप की, ये अन्यारी कियारी
संभारी करे जिनकी सतगुरु, औसर हर नीहारी

जामे नज़र सों नित ही पिलाइ, इश्क पिआले भारी
करत है रखवारी बूटों की, आठ जाम घड़ि सारी

सोहबत का है नशा महोब्बत, मस्ती की ये ख़ुमारी
बकसीह बूटे जीवों को जो, शाह सावन गप्र्फ़ारी

बहुत है मुसकिल जिसे छुपाना, अबिरल है जो ज़ारी
इसका अनहद रूपी शोर है, सिरसाहुँ नौबहारी

पीट रहा जु ढिंढोरा सतगुरु, मेहर का बलकारी
चाहत है जिस जीव को भी ये, पकरिं उसे ततकारी

सावन शाही मौज के नूरी, चरनों में दे डारी
आगे काम दयाल का अपने, खुद हि जीव संभारी

आगे भी इक बचन हि शहनशा, साफ़ हि साफ़ लिखायो
ताकत मौज-ए-सावन शाही, सिरसा माहीं आयो

बचन इसी के आख़िर में शाह, मसताना फ़रमायो
इक सच्चा साहब है बिआस में, दूजा सिरसा आयो

दरसन दूसरे को पहले के, सत्संग नित हरसायो
धन दरबार साहब कवि बाउन, बानी भजन सुनायो

साईं के दरबार में सब ही, उसतत सतगुरु गायो
बानी सबद हीँ मसताना को, शा सावन दरसायो

याद दिलावती कवि की बानी, सतगुरु ये फ़रमाई
उनकी सोहबत ही ले जाती, सिमरन भजन सदाई

बिआसा में इक साचा साहिब, नूर उसी का छाई
ताक़त मेहर दया से दूजी, उन हिँ सिरसा समाई

समझ लो पूरन ताक़त सिरसा, साहब ने भिजवाई
दरसन भजन के अंदर मिलते, सच्चे गुरु पातशाई

भजन की महिमा मसताना जी, अक़सर ही फ़रमाई
दरसने ताक़त पहली मिलते, दूजे कु संगताई

बचन हीँ पावन अपने रहयौ, मसताना फरमायें
मोरचा यूँ ही भजन मंडली, अगर रहा तु बतायें

बहुत नफ़ीस औ ताक़तवर ये, फ़ौरी ही हो जाये
कारन मौज-ए-सावन शाही, मस्ती ही मस्त बनाये

वरी-हमें अब ला दो कतरनी, थोरी मूँछ छँटायें
है इसरार बदल रहा सावन, शाह झलक दरसायें

बेपरवाही दा है लगे डर, बेपरवाहि डराये
भूले भी कोइ समझ न बैठे, झलकीं सावन शाये

कह जाते सब बातें इसारों, अरु समझा सब जाते
संत की बातें संत बखानें, और समझ नां पाते

तेरे ही दरबार में लुक छिप, बेचूँ सौदा आके
आयाह बन दरबार ग़दाग़र, तेरे शहर इलाके

बातें सारी गूढ़ छुपी हुयीं, कहत इसारों जाईं
परगट था अब ताक़त दूसरी, सिरसा में थी आईं

(हाफ़िज़ साहिब फरमाते हैं कि)

गुफ़्त आ यार की अज़ ओ गस्त सरदार बुलंद
ज़ुरमश आं बूद कि इसरारे हवैदा में करद

(गुरू अर्जुन देव जी फ़रमाते हैं कि)

पाठ पढ़ियो अरु वेद बिचारियो न्योली भगम साधे

इस हि तरहा मसताना जी थे, ठेठ निपट अनपढ़िया
फ़रमाया दुनिया मनवाउने, जग है पोथी गढ़िया

दुनिया ही नहीं माने वरना, पोथी में क्या धरिया
सब कुछ अंदर तोहरे ही पर, अंदर न कोउ बड़िया

बाहरी मुख तें अंतर मुख है, होना बर औखड़िया
वंज भैणया खालाह जी का, बाड़ा नां सौखड़िया

काम बहादुर सूरवाँ का ये, बस का नां डरुकड़िया
खोज्या जिंदाराम जौ अंदर, दरगाहां पहुँचढ़िया

थाँव सच्चा सौदा

साफ़ है जैसे वचन इलाही, बाबा जयमल आईं
पूरबले हि जनम थे आपको, अपने दरस कराईं

सच्चाह सौदा सिरसा बनाने, हुक्म अलाही सुनाईं
जनम हुँ इस भी सन छयाली में, सावन शाहा साईं

साचाह सौदा नींव रखन से, बरस दु पहले जाई
डेरा सच्चाह सौदा बनाने, नूरी हुकुम लगाई

पाछै चोला छोरन शाह के, अरताली मंझाईं
सोच उपाई कि डेरा सिरसा, सच्चा सौदा बनाईं

खोजहीं ताँईं जगहा वाज़िब, साधुन थाउँ दिखाई
आया हुकुम ख़ुदाई सिरसाह, धाम करों सिरजाई

सन छयाली में सच्चाह सौदा, की नींवें तो शाहा
मसताना के अंतर मन महीँ, हुक्म सु अपुने धरावा

बचन ये अपना मसताना जी, ने था दरज़ कराया
चोला छोरन पाछै शहनशा, था ये ज़िकर हिँ आया

संत हज़ूर ने जब ही आपकु, था ये बचन लगाया
जाओ सिरसाह भजन कमायी, साची करु मन लावा

जाई करो वहाँ सच्चा सौदा, रूहां सुनो दुहाई
औसर उस ही साचाह सौदा, समझो नींव धराई

नूरी बानी में बेपरवाह, दीया ये बतलाई
मुशकिल नाहीँ भजन का करना, संत बचन हिँ रहाई

औंधे सूधेह हुक़ुम मानना, जैसन संत कहाई
बहुत दुहेलरा संत वचन हीँ, रहि कै काम कराई

भजन है उनका बना बनाया, ये हि साची कमाई
हुक़ुम–ए–मुरसिद जिनहिँ निभाया, सतगुरु होइ सहाई

बाद हज़ूर के चोला छोरन, मसताना फ़रमाते
कहत रहे सबू कुछ थे अक़सर, कुछ भी न थे बताते

हुकुम नहीं है जनाबे आली, बंधन हीँ हैं हाथे
हुक़ुम की सेवा भजन सु तगड़ी, हुक्मे हज़ूर बजाते

हुक्म की पालना रहते उलसित, सतगुरु दिन औ राते
विरहा तरप हीँ मुरसिद अपने, लुत्फ़ ए अनहद पाते

वचन रहे उनके बड़े साखी, बातें बहुत बताये
शाह सावन के हुक़्म औ उपमा, मसताना लिखवाये

छोरन ताँईं शाह ने चोला, जेते हुकुम सुनाये
सन अरतालीस तलक सरब ही, पूरे देइँ निभाये

डेरा सच्चाह सौदा बनाईं, हुक्म थे शाह लगाये
अरतालिस किया पूरा हुक़्म वो, डेरा नींव धराये

पहला हुक़म

हुक़ुम हिँ पहले सकल वो बातें, शाहा जो फ़रमाई
मसताना जी बतलाये इवैं, किमि किमि थी निबहाई

शाह सावन जब मसताना को, बकसिस नाम कराई
नाम दान बक़सीस पछेत ही, ख़िदमत तुमरी लाई

फ़रमाई मसताना अबिलंब, बलूचिस्तान हिँ जाई
सबब इसी ही बेपरवाह थे, पहला हुक़ुम निभाई

अवसर इस ही डेरा ब्यास में, मसताना थे आयो
अबहिँ समूचाह संत परम को, समुझीं भी नां पायो

या तु कहें न समझना चाहते, क्या है सावन साईं
क्योंकि अकत ही आपने खुद को, डेरा ब्यासा जाई

समझने सावन शाहा चरन हुँ, खुद हवाले कराई
लेईं उनको मन हीँ आपके, भरम कबहुँ नां आई

एक गुरु और सिस के लगावहिँ, ज़िहन का नां आधार
लेत जनम है बेशक येह तो, हरदम घट के मँझार

कारनै करते आप वही जो, चाहते शा सरकार
गुरु वा सिस में अंतर नेह ही, प्रेम का है आधार

बचन अनिक ही कथे जो पहिले, ज़िकर हुआ ये ज़रूर
पीर बनाई हि बलूचिस्ताना, शाहा किया माजूर

जाइ कढ़ो वहाँ जस सतगुरु का, मसतानाह मामूर
प्यास बुझाओ मालिक चरचाह, रूहें पड़ी मह्जूर

जस परसाया सावन शाह का, भंडारेह मशहूर
फ़ैल गया जस संत हज़ूर का, दूर ईलाका दूर

पड़ गई रढ़ थी बलूचिस्तान हिँ, संगतें हुइँ मसरूर
प्रगट हो गये ज़िंदाराम जी, इंसां घट बेहुज़ूर

काम कराये राम सु गाइबी, और शाह के मक्दूर
बूंदी खा गये ऊँट बैल औ, खोते होइ मख़मूर

सदके सावन मसताना कियो, बलूचिस्तांह बानूर
होइ रहा था नाम से सतगुरु, थाँहा थाँहा ज़हूर

दूसरा हुक्म

वापस आउन बलूचिस्तान से, शाहा दियो फ़रमान
मुंटगोमरी सांगल गोजरा, सांगलापुर मुलतान

ख़ूब हुआ जस सतगुरु शाह का, महत ही खुश अंजाम
सतसंग डंडे वाला हुआ कि, रोते परेमी आम

कहत रहे सबू उमर गँवा दी, नाहीँ पायो गुफ़ान
पावई सतगुरु साचा अबहीं, घट हुये चमनिसतान

छोरीं बिछौना निदरा तजिँ सब, जागते सकल हि रात
मदिरा कचराह छोरिं छोरिं सब, भजन करीं मिलीं साथ

भजन बंदगीह लीन हुये सब, उतर कै अंतर घाट
लाखों सहसर सतसंगियों को, भेजा डेरा बिआस

नाम दान बकसीस दीलायो, सावन शाह जी हाथ
छुटकारा किया जीव अगन का, अपुनी पूरी हयात

पकरीं जिन जीवों को चाहते, सावन शाहा जनाब
ज़रिया मदद–ए–मसताना जी, रहते बुला अहबाब

मौज–ए–अलाही मस्ती सतगुरु, ताक़त ने कियो कार
सूबों से पंजाब के इन सब, उमड़ेह जीव अपार

लेयीं बकसिस नाम अमोल की, संगत थी बेसुमार
चढ़ी जिहाज पै नामदान के, होईं गये सब पार

डेरा बिआसा थे न मुनासिब, उस दौरान हालात
हालते इब्तिदा धाम ब्यास था, ख़ामियों कुछ के साथ

थी दुसवारियाँ डेरा बिबस्था, दुखदाई येह बात
मर्तबा बहुत ही प्रेमी करते, आपसी दो दो हाथ

बढ़ता वैर विरोध बिलोकीह, होये परीशाँ नाथ
थान भजन सिमरन कई साधो, करन लगे खुराफ़ात

साथ दीनता सावन शाह जी, राम प्रेम फ़ैलाते
जीव अनेक ही सबब इसी थे, बेजा लाभ उठाते

मसताना मिसकीन से सावन, शाहा खुश थे ख़ासे
क्योंकि टूटी–फूटी हि आपकी, बोली में रस पाते

इश्क था जिनको साचा मुरसिद, लेईं प्रेम खुराकें
बलवती होती जातीं निस दिन, साधुओं की जमातें

तीसरा हुक्म

संत परम सावन शाह जी ने, जौं जौं हुकुम लगाया
करने संगतें मसताना को, ठाउँ जहाँ फ़रमाया

लाखों सहसरों ही सतसंगी, होइ वहाँ उस थाँहा
दात ये होइ अनोखी आपकु, फ़रमाये तब शाहा

मसताना देई हैं तुझे हम, ग़ैबी दरब अथाहा
है ये खज़ाना ख़ास अलाही, मौजे सावन शाहा

सतगुरु के इस ग़ैबी ख़ज़ाने, से हि करना गुज़ारा
आगे कबहूँ करना किसी नां, अपने हाथ पसारा

दाता हम हैं बनाई तुझको, सबको देवन हारा
देवत है नां लेवै किसी तें, सतगुरु का जु पिआरा

साधु बरे बरे और गिआनी, देखे अनिक हि बारा
संगत के मोहताज़ हि रहते, चंदा उनहिं उगारा

गुज़र हैं करते उसी सु अपना, खरच निजि हैं निकारा
ख़ोला सतगुरु ग़ैबी खज़ाना, जा सावन बलिहारा

ज़रिया कलमा जिंदाराम चढ़िं, मसतानाह सय्यारा
जो भी आया सोबत आपकी, करयौ वारा न्यारा

चौथा हुक्म

सरब गुरु गये सिरसा नवाज़ी, अपने चरनन धूरी
बहुत बख़ेरा तिरलोकी महीँ, होइ आस ये पूरी

बानी अपनी मसताना कियो, येह बखाना नूरी
बाद ये चोला छोरन होया, ज़ाहिर बीच जुम्हूरी

एक आध गुरमुख की चौथीह, आस हवै ये पूरी
दात मुकम्मल पा होये कामिल, सावन शाह हुज़ूरी

हुक्ुम मुआफ़िक शाह सावन जी, जाईं सिरसा थाँही
ख़ूब भजन कियो मसताना जी, लाईं लिव ईलाही

सीकंदर पुर डेरा सिरसाह, अनहद मीं बरखावीं
हो गया मंगल मंझा सिरसा, सदके साईं जाहीं

निरबाही जिन आस येह ओरि, धोऊँ ताके पाईं
इन तीनों की आस ही चौथा, पूरन हुक्ुम कराईं

सदके सतगुरु साचाह सौदा, सिरसा धाम बनाईं
तरपती रूहां नेह दिया वो, कबहूँ नां बिसराईं

रिसियों मुनियों की भी नां हुई, पूरन चौथली आस
सतसंगी या बे सतसंगीह, रीते गये सब हाथ

सदके नूरी नज़रें मिहिर की, ताक़त बकसयो नाथ
अकथ कथा ये किरपाह साँईं, कथयो जाई न बात

ऊँची तीनों आस तें सिरसा, असल हूँ चौथी आस
पूरी की मसतानाह मुफ़लिस, सकल ही दीन निवाज़

संत परम ने बचन तो दीये, मसताना को हज़ार
चार बचन पर येह मसताना, जीवन का हि आधार

संपूरन किये चारों बचन जु, जानहिं सकल ज़माना
बेपरवाह बने इन बचन से, असल हुँ अब मसताना

छठा सर्ग

सआदत

शुभकारित (भालाई)

तंज़ीम-ए-सच्चा सौदा (डेरा)

सच्चा सौदा (डेरा) का निर्माण

बरोई दांम राजाये, दिगरना कि अनकार बुलन्द्स्त आशियाना
(हाफ़िज साहिब)

काल सुनु तुम अपनी सैतानी, अब न यहाँ फ़ैलाना
फ़रमाते हाफ़िज़ साहब येह, और कहीं पै जाना

कामिल संतों का अधिवास ये, सतगुरू आसियाना
बहुत बुलंदी आशियाँ ठाकुर, आइ सको नां थाँना

जाकर के किसी और हि थाई, अपना जाल बिछाना
दाल गले नां यहाँ पै तेरी, अवलि गुरु का ठिकाना

अमर लोक से किया पिआना, ज्ञान घोड़े असवारी हो
कहे कबीर सुनो रे साधो, अबके जीत हमारी हो
(कबीर)

जीतहिं काल कु पहुँचा यहाँ मैं, मालिक की दरग़ाहा
आलमे ज़ाहिर गया बहोरी, हुकुमे मालिक आवा

आया काम बिसेस ही ख़ातिर, मानुख चालोअ धार
आलमे ख़ाक हिँ आइ गया फ़िर, जीवां करन उपकार

माताना इत सतगुरु शाही, सदके मौज हि नित दिन जाही
सफ़र रूहानी डगर हिँ आहिँ, एक और मंज़िल रहे पाहिँ

(चौपाई)

चौथा हुक्म जो सावन शाहा, पूरा करने औसर आया
साचा सौदा इक है स्थाना, जीवों कु तारन का बहाना

जीव जु अधिकारी ही नामा, था उनु सच्चा सौदा कराना
जीव असलहिँ क्या ये बताना, सच्चा सौदा करना सिखाना

जीव कु उसका रूप दिखाना, कहाँ हुँ क्या है कहाँ हि जाना
अरजुन को ज्यों किरिसन जाई, जगती क्या है ये समझाई

अरजुन को किरिसन समझाये, गीता के उपदेस सुनाये
बिरछ है उल्टा येह संसार, नीचे तना ऊपर जड़ जाल

तरक बिबेक जड़ों की शैली, दसियों दिसाओं में हि फैली
सबब दुखों का यही परसार, बन कै तना हो एकागार

फिरी किरिसन पारथ समझाइ, करम करो फल कामना नाइ
करता पुरुख के आगे आइ, पूंजी कर्म ले खड़ा हो जाइ

तुझको तेरे करमानुसार, झोलियाँ भर देगा करतार
मांगने की नाहीँ दरकार, देहरी भव सागर हुइ पार
(चौपाई)

वास्ते डेरा साचाह सौदा, नींवों की तैयारी
मसताना जी करत रहे यहाँ, प्रेमियों से बिचारी

ठाऊँ थी ये वो ही जहाँ पै, जीव अनेकों अनेक
नूरी नज़र प्रसाद बचन और, पायोह सतगुरु टेक

ज़रिया ए सतगुरु क़ामिल अवलि, शाह मसताना भेस
दीये जाने थे जिस थाँव हीँ, सुभ कर्मों के संदेस

चासनी गूढ़ प्रेम सनेह की, पर मिसकीनी ज़बान
बचन दीये जाने वाले जो, थे नाहिँ कोई आम

बेद कतेब गरंथ वा पोथी, लीया नाहिँ सहारा
बचन सुधा बरखाइ दी ऐसे, दीनता बर हि द्वारा

मुरसिद और सिस की उपमायें, मुमकिन ये हो ही नां पायें
जगत धरम गुरु और अवतार, रिसी मुनि सभी लिखियो बिचार
(चौपाई)

उपमा गुरु हि करना बेकार, है ये सोच की हद ही पार
तुलना गुरु की न सबद समाइ, बसतू बाहर कथन नां आइ
(चौपाई)

जाहिँ ग्रंथ साहब फ़रमाई, गुरु की उपमा की नां जाई
इतनी सी बस बात फ़कत है, कि ये गुरु की बानी अकथ है
(चौपाई)

संत कबीर ख़रा फ़रमाही, करूँ जु सात समंदर स्याही
बिरछों की सब क़लम बनाऊँ, कुल हि धरा का कागद लाऊँ

उसतत गुरु की लिखी न जाई, है ये अकथ न बरनी आई
गुरु की उपमा नहीं बख़ानी, अनुभौ घाट उतर कै जानी
(चौपाई)

मसताना गुरुओं के हि गुर हैं, हर ही जगत के पीर
कर गये सजदा ग़ैबी रूप सु, पैगंबर महाबीर

महज़ गुरु मसताना जी क़ामिल, दूसरी नाहीँ राय
आपके सदके कीयो सजदा, अनिक फरिसतेह आय

रामायन में ज़िकर है भारी, राम सहित सबू भाइ
कीयो उपनैइन संसकारा, कुलगुरु उनके हि आइ

कहने का परियोजन बस येह, गुरु संसकार कराइ
कीया सिसयों को था समाहित, अंतर लीआ समाइ

अपनाई सिसयों को सरब ही, सगरी किरत बताई
ससतर सासतरों की विदयाअ, तबहूँ थी सिख़लाई

इस ही मानिंद मसताना जी, जैसे हिं यहाँ आये
परखीं निरखीं जीवों को सबू, नैया नाम चढ़ाये

करम रहे सब झेलते उनके, ढोत रहे उनू भार
सरब करम दिये काट यहीं पै, हो गये बेड़े पार

मरजादा उपनइन यहाँ रहा, अलग ही इक परकार
अपनायी जीवों को यहाँ पर, ढोते करम के भार

ताकि जीव ग़रीब और उज़बक, मूरख़ अबुझ नादान
दरग़ाह हाज़िर होइ सकें सब, काल से पाइँ तरान

जीव सभी ही पकड़ें राह वो, दयाला दर हिं जाई
काल के तांडव का कबहूँ वो, होइँ अहेर न पाई

बेपरवाह को था ये अबहूँ, करनाअ बर ही काम
सिरसा सच्चाह सौदा धाम का, करना था निरीमान

जीवों के जहाँ जनम जनम के, करमों के लेइँ भार
भांडा साफ़ ये करना ही था, बास्ते नाम तैयार

देयी नूरी नज़र की बक़सिस, देयी नाम का दान
बास्ते सदगति देवने रूहां, करना था बरा काम

बासते इस कुछ अरसा लौं था, साचाह सौदा धाम
कालिज रूहानी के नाम तें, शोहरत पाइ तमाम

है ये गया नवाज़ा अनामी, थान असल दरगाही
और कभी रहे कहत इसे वे, कारिखाना इलाही

बाबत सिरजन साचाह सौदा, बागड़ सिरसा माहीँ
ठावाँ वाज़िब खोजने ख़ातिर, नित ऐयाम हि जाहीँ

उनमें ही था साधो एक जो, मसताना शाह साथ
ख़ातिर कुछ दिन आये रहा जो, छोड़ी डेरा बिआस

भाई शादी लाल पुकारते, उस परेमी का नाम
आये रहिं कइ इन भी अलावा, सिरसाह के इस धाम

साधो बहुत ही थे उस अवसर शाह मसताना साथ
बास्ते डेरा सिरजाउने सब, करते थाँहा तलास

साधुआं इन सब इक था साधो, माली भूराह राम
साचाह सौदा मौजूदा की, उस ही भालयो थान

दिख़लायी मसताना को वहाँ, भूरा रामा थाँईं
जगहा देखते मसताना ये, देत रहे फ़रमाईं

इस ही अपारा पर सतगुरु जी, रूहों को तारेगा
सच्चाह सौदा मस्ती महीँ यहाँ, ठाठें ही मारेगा

साधो भाई शादी लाल जी, करते सेवा बिआस
बहुत बरस पहले ही इस थाँह, आये शाह के साथ

ईंट की भट्टियाँ देखन सावन, शाहा सिरसा आयी
शादी लाल ज़बानी शाह को, ठाम यही थी भायी

शाह सावन जी तबहुँ यहाँ पे, ऊँचे टीले जाई
देर बहुत ही रहयो खरे थे, नूरी नज़र गड़ाई

खड़े खड़े मसताना जी तभी, उतरे गहरे धिआन
संत परम गये जहाँ ली जानि, है येह वो ही थान

लखते ही वोह ठाँव बिसेखा, शहनशाह मसताना
सिरजाने वहीं सच्चाह सौदा, लाइ दिया फ़रमाना

जैसे संत परम शाह सावन, नूरी नज़रें जाई
नज़रों से तब मसतानी मिली, सब कुछ दिया बताई

कर हि गयीं वो ग़ैबी इशारा, नज़रों को मसतानी
बतलाया है जगह यही वोह, की जो नज़रे सानी

कालिज रूहानी मर्हीं सिरसा, चलता ठाठ सु शाही
मसताना शाह बचन मुआफ़िक, हुक्म गया ये निबाही

न हि शहनशाह पूछे किसी से, और नां की परताल
कौन बशर है जिसकी ज़मीं ये, कौन साईं फ़िलहाल

पूछ ही ताछ बिहुना होयी, हुकुम गया तब ज़ारी
होयी गया शुरु बनना डेरा, लागी होन उसारी

बहुत बीरान उजार वहाँ थी, ऊबर खाबरी थान
बाइस मई सन अरताली का, याद रहे सदा नाम

पल थे शुभ शनिवार दिवस वोह, पूरनिमाह की रात
छिटक रही थी चांदनी पूरी, नूरीह मुख के साथ

रात करीबन पहर था पंचम, शाह मसताना साथ
डेरा गुफ़ा से होइ रवाना, परेमियों की जमात

विदया गोबिंद सिंधी औ थे, लालाह नेकी राम
नेकी राम समेत हि पूत के, साथ ही सीताराम

प्रेम सिंग और देस राज भी, साथ ही रौनक राम
संग हि महात्मा नारायन सर, वा आये ख़ुशी राम

अंग संग थे प्यारे लाल भी, साथ ही न्यामत नाम
राम लखा सह देहली वाले, रहयो साधो तमाम

औसर उस ही मुंबई से तब, महात्मा हज़रत राम
ईदन दास जी सिंधी भी थे, पहुँचे सिरसाह धाम

बाहर ही तब मिल गये उनको, माली भूरा हि पास
थाऊँ गये वो डेरे वाली, मिल के तीनों हि साथ

साथ की माली ढानी से थे, कसियाँ तसले लाये
बिछुए तीन निकल कर पहलका, टक ही लाते आये

देखे जब वहाँ बिछुए बिछुए, हर इक टक के हि साथ
घबरा सब जाने लगे वापस, फूले पाउँ औ हाथ

डेरा सिरसा साचाह सौदा, थाउँ से कुछ ही दूर
कच्ची सड़क थी होती वहाँ इक, परयो नज़र मग़फ़ूर

मारग उस इक बशर था लेटा, रासते के बिचकार
बारी खेत हीँ पानी लाने, करता वो इंतिज़ार

पास पड़ी वहाँ कसिया उसकी, इक दम उसके हि साथ
लालटेन रही जल थी उसकी, जाका होइँ परकास

उसके सर की ही इक ओर था, काला भयानक साँप
बैठा था ताने हुए छजली, देखहिं गये सब काँप

उठहिं मनुख वो औचक नींद से, बैठ गया डरी मौन
फ़रमाई मसतानाह देखो, राखाह इसका कौन

राखाह इसका भी है सतगुरु, राखा अपुन भी राम
नाम लेइ परमेसर का सभी, कर ही दो शुरू काम

बस इक बात कु ध्यान से मेरी, सुन लेना सभी आप
बिछुआ साँप न मारना कोई, बचना बस इसी पाप

बेपरवा मसताना शाह जी, बिन पूछेह परताल
हुकुम इलाही धरियो नींव थे, होई मस्ती-ए-हाल

पूछने व परताल की जैसे, ग़रज़ थी कोउ नाहीँ
जैसे थी ज़मीं सारी उनके, अपने ही हक़ माहीँ

तिरलोकी के नौ हि खंड और, सारी ही काइनात
जैसे थी अपनी ही हुकुमत, सतगुरु के पअरताप

सौदा न किया ज़मीं का कुछ भी, कीया नांअ भुगतान
तय था जैसे सब कुछ पहले हि, होना अज़ल से काम

हुकुम था ज्यों बिन ख़ौफ़ के सब हि, होने का येह काम
मिठना मलाइ नूरी नज़र के, हुक्म अनामी ऐलान

असल साधु

अगले दिवस ही सिरसा माहीँ, दिया छावा गड़ाई
उस ही वक़्त मैनेजर साहब, जोरि हाथ थे आई

फ़ुरसत पाकर जीव वहाँ कई, शहर सु भी थे आते
मालियों की ढानी से भी थे, प्रेमी जन आ जाते

रख दिया सावन पुरा बाद में, ढानी का इसी नाम
आ जाते हर रात ही प्रेमी, सारे ही इसी धाम

आठ पहर डेरा में सेवाह, और करने के काम
बीच में मिलता साधु जनों को, घडियाँह कुछ आराम

रैन बिहाउते भजन की मस्ती, नाहीँ करत बिसराम
जीवों के मन करन को थिर थे, शाह बनाईं निज़ाम

सेव कठिन दिन रात ही पाते, पल गिनती के निज़ात
गुड़-ए-इश्क और नूरी नज़र हिँ, देइँ शहरनशा ख़ुराक़

बातें दरगाह की मसताना, जी ऐसी बतलाते
चेता नींद का रहता नाहीँ, बातों ही खो जाते

साधो इक रहा वहाँ आपकी, निज देही की सेवा
शादी लाल था जो सौभागा, पायो नूरी मेवा

सोहब्बत नूरी जीव जो कोइ, पाइँ आपकी जाता
रहतना नां कभी अनछुआ वोह, मस्ती अलाही पाता

हो जाते अलमस्त सबू ही वो, साधो हो रह जाते
नज़र कबीर में क्या है साधो, बेपरवा फ़रमाते

कहत कबीत सुनो भई साधो, अब की जीत हमारी
(कबीर साखी संग्रह)

साधु असल में कौन है क्या है, अचरज वाला सवाल
नां नां रूप बना कई करते, दुनिया सकल इजलाल
साधु है कोइ नागा दिगंबर, पहिने कोई सवेत
भगवाह धारी है कोइ साधु, पीतांबर भी अनेक

साधु कोई हठी हठजोग का, कोइ है जटाधारी
मेरे लेखे साध वो ख़ालिस, जिन प्रभु नाम खुमारी

साधो वोही नज़रे कबीरा, जाकी येह तख़सीस
होई जिहासु साथ जिगासाह, चालैह मुरसिद सीख

अगर होइ जज़ा गुरु साधन की, घट में गुरु की पिआस
साची हो जो टोह मुरसिद की, गुरु मति चालै हयात

साधो सबद में सादापन है, जिगरेह सोज़ी साथ
बेतलबी संग चितहिँ सहजता, होवै संग अख़लाक

संत कबीर जी सबब इसी ही, बीजक में फ़रमाये
साधो सहज समाधि भली हवै, जगती को समुझाये

मसताना जी सरल हैं बहुते, सहज व सीधे सादे
संत परम सावन शा हमेशा, सबद यही दुहराते

अदबुद बहुत ही सबद ये साधु, घटना महत है आप
हो ही गयी जब घटित जहाँ ये, रच ही दिया इतिहास

भेस बनाई साधु निरोलाह, हैं हि नाहीँ जो साधु
नकली धोकेबाज़ चोर वोह, ऐश तलब और स्वादु

संत जगत हीँ कर परबेस ये, जग भरमावते जीव
चाल से करते काल जाल की, अतल आघात सफ़ीह

औसर पाई ये काल बलि तबु, काम बनावै मिराक़
ज़ालिम देइँ बिछा सतरंज की, बद अंजाम बीसात

साधु तो बस साधु ही हो गये, सहज ही पाक़ ज़मीर
जैसे सीधे सहज औ गहरे, सरल सुभावा कबीर

हंस गति ग़र होवै नां साधो, होइ दुरूह सुभाऊ
हिरदैह जीव साधारन माहिँ, पहुँ कबहुँ नां पाऊ

उसकी बानी नज़र सलीकाह, और साहिबे अख़्लाक़
सोबत सालेह सीरत उसकी, होइँ बुलंद हर बात

जिसकी सोहबत जीव रहिं कोउ, जावै बिन परभाऊ
कैदी बन रहिं काल चौरासी, साधु वोह किस भाऊ

सानिध जीव रही कै महात्मा, साधो ही होइ जाइँ
उरुझन तिआग जगत की सगरी, तिरसा हिरदै बुझाइँ

जीव मँझारे साधो–असाधो, भेद है बर निराला
होना असाधु से तो है साधु, सुहेला और आला

पर साधु से असाधु भी होना, नामुमकिन न आसान
खेल बिराट येह काल बलि का, खेलै वोह सैतान

असटावकर ने राजा जनक कु, अंजली भर जल देइ
बास्ते तन मन और धन अरपन, उनसे बचन थे लेइ

रंक हुये महीपाल जनक थे, और असाधु से साधु
सरल हुये वो जटिल सु छन में हि, अंतर मन करीं काबु

दास हुआ मन राजा जनक का, की ख़ैरात सबेही
अंतर जटिल का सौंपी जंतर, होये निरिप बिदेही

बेपरवाह थे बहुत हि सूधे, मिरदुल महती सुभाउ
परेमी जीवां साधुआँ ताइँ, राखत नेह का भाउ

राखिं खोली देहरी आस की, जीवां सबू हित रोज़
आपसु ज़िआदा होइँ सरल जो, दुसकर बहुत है खोज

नेक निहादी पाइ शहनशाह, फ़ितरत महीँ इफ़रात
शख़सीयत रूहानी आपकी, सावन शाह की दात

दरगाही इस देहि में लखयो, नूरी वोह परकास
होइँ अनंत ही सूरज जैसे, एक हि साथ आकास

रहे निआख़र शाह मसताना, साधुआँ संत मँझार
क़ागद क़लम मदरसा मसि संग, राखियो न सरोकार

नरहरि साधो आप थे साँईं, सौमता भरी सुभाइ
सरनाई तुद जीउ जो आयी, होयीं साध ही जाइ

साखी जग पुसतें उन साधुआं, साधुता पाइ जाहीँ
हो निहकरमी रूह निरबैरी, परमेसर लिव लाहीँ

डेरा सच्चाह सौदा सिरसाह, आप लगे निरमाने
पार उतारना चाहा जीव जु, पकरा इस हिँ ठिकाने

आये सुभागे आप हि चल कै, समुझी नां कछु दूरी
पंखी सरिस हो गगन बिहारी, आयो चरन हुँ नूरी

लेना काम था जिससे साहिब, चलकर आप हि आईं
खिजमत सोहबत साईं तोहर, अनहद सुख वो पाईं

सिदक-ए-ख़ुराक

ख़ुराक की पवित्रता (शुद्धि)

पानी की थी कमी बहुत वहाँ, उनहीं दिन बतलाते
ख़ातिर शाह मसताना जी भी, पानी शहर सु लाते

ईसरदास निआमत परेमी, साथ रहे ख़ुशीराम
लाते शहर से पानी भर के, भजतेह ज़िंदाराम

राम चंदर इक प्रेमी बूढ़ा, कुछ ही दिनों पसचात
लागा आने रोज़ ही तब वो, इन दोनों के हि साथ

नारा लावता रामचंद ये, पानी शहर सु लाता
बूढ़ा प्रेमी गावता नारा, सबको बहुत हि भाता

धन धन दी आवाज़ पड़ आवे गुरू जी तेरे मंदरां विच्चों

बीस ही तीस कदम की दूरी, छोटी नहर थी जाइ
पास हि नहर के थी इक नाली, काम जु डेरा चलाइ

नहर की नाली से पानी को, रोज़ हि थे ले जाते
काम बनाने गारा ईंट का, पानी इस सु चलाते

बीच में डेरा और नहर के, खाइ बनी इक भारी
पूरा जामें रहता भरा था, अपने आप हि वारी

नाका था अक़सर ही नहर का, टूटी रात कु जाता
पानी इस से महीँ खाई, रोज़ हि था भर जाता

नानक मोडा ज़मीदार दोउ, बाड़ी में थे रहते
सोचते बिन पानी चिनवाई, कैसे डेरा करते

देखी खाइ जब वो भरी हुई, उन्होंने वहाँ तरके
कीया संदेह रात को तोड़िं, पानी हैं ये भरते

बैठे रात हिँ पहरुवे दोनों, देख्या खेल अनूठा
नाका नहर का थोड़ी देर हिँ, अपने आप हि टूटा

मसताना जी अपने सरब ही, साधु परेमियों साथ
रहते गारा पाउँ लतारते, सारी सारी हि रात

उस हिं बने हुये गारे से थे, कच्ची ईंटें बनाते
रात बनाई ईंटें जु सारी, सुबहा थे चिनवाते

परती तपस कहर की हि पूरी, थी कठिनाई भारी
उस पर पीवने के पानी की, थी बहुती दुसवारी

रात ही दिन थी चलती सेवा, जान ही परत न बात
रात ख़तम हुई कब दिन होया, दिन से कब हुई रात

खाने को थे रासन लावते, नित हि शहर से ताज़ा
पर इक पाव हि सेवादार इक, से न आता ज़िआदा

दोई छटांकी गुड़ हर सेवा, दार के हिस्से आये
खाना गुड़ जिन साधुआं होता, मिलती न उन्हें चाये

दो ही बार थे चाय बनाते, दिन में सुबह औ शाम
बाड़ियों से हि दूध था मिलता, बदले कोइ सामान

मिलता दूध नां अगर कभी तो, होता इक वहाँ काम
पूरी चाय हिँ देते डाल थे, घिसकर दो हि बादाम

ज़िंदा रहे मिसाल थे अबिरल, सेवा कठिन के आप
करते ख़ुद ही सेवा आप भी, साधु परेमियों साथ

देइँ निस दिन आप थे साधुआं, इश्क औ प्रेम ख़ुराक़
ज़रिया नूरी नज़र गिज़ा सेय, उनू नवाज़ते आप

प्रेमियों कु जब देत ख़ुराक़ ये, दरग़ाही इसी रूप
कर सकते महसूस वो कैसे, फिर दुनियावली भूख

निसि–बासर की सेवा सदातन, मिलते ऐसी ख़ुराक़
देही से सब होये बिदेही, नां रहीं तक़लीफ़ात

इश्के मसताना जी शहनशा, आलम गया ये होइँ
भूख पिआस और नींद कु भूलि, सेवा हीँ रहे खोइँ

टुकरा हक़ व हलाल का खाना, नेक कमाइ पै आप
देते ज़ोर सदा ही बहुत थे, वजहा बोलते साफ़

खेतों में खाली जो खड़ी थी, झाड़ियाँ डेरे पास
काट करील और झारियाँ बेचि, रासन लावते आप

गोबरु सूखा भैंस व गाय का, सेवादारों हि साथ
ऊँटों का भी गोबर सूखाह, चुगहीं लेत थे आप

करहिं काम जुलाहे का नित ज्यों, करघाह बुन परिधान
रहयौ बेचते कबिरा बसतर, साँईं हि धुन गुज़रान

टुकरा खाटना हक़ व हलाली, होवत बहुता कठोर
गुज़र बसर करिं आप भी साँईं, दीया इस पैह ज़ोर

ग़ैब़ी मिल्यौ ख़ज़ाना इलाही, सावन शाह सों दात
मुख़तारी भी होवते सालिम, खरचन समझयो पाप

ख़ालिस हक़ व ईमान हिँ रहिने, जीवाँ हुकुम लगाई
अटल रही इसी मारग औघट, सकल हयात बिहाई

नज़रो-नज़र निहाली

पहली नज़र में (हाथों हाथ) कल्याण

जीवां देइँ मुलाहिज़ा नूरी, हुक्म निभाते इलाहीँ
जीव सरब रहे चालिं ही चालिं, सरनीं तुज्झ हीँ आहीँ

बाद वहाँ कुछ दिन लगे आने, साधो गोबिंद राम
लागे रहिन वो साधक डेरा, रात दिवस सुबो-शाम

गोबिंद नारायनसर करते, मिलहीं बहुत ही काम
बशर ये दोऊ कुसल बिसेखा, गारा बनाने आम

साधुआं मसताना जी जाई, बार अनिक फ़रमाईं
साथ हमारे आउ चलो तुम्हें, घानि बना दिखलाईं

घानी हुँ मसताना जी कसिया, फुर्ती से यूँ चलाते
देख निकलता आगे हि सबसे, जीव चकित हो जाते

मारते कसिया गारा कहीं हि, त्यार कहीं हो जाता
रहती डलिया एक नां गारा, कौतुक ये हो जाता

संत ख़रे माहिँ सेवा भाउ, कूट कूट भरा हो न लगाउ
जग हुँ मिसाल बनीं दरसाते, इहि विधि जीव भुवन समुझाते
(चौपाई)

उमस तपस ने जान निकारी, देहवंत सबु आफ़त डारी
चलते सेवा दिवस औ राति, रहते गारा बनाते आपि

ईंटें गारा से बनवाने, मिलता वक़त न वहाँ नहाने
पाउँ रहिं सदा दीखत गारा, रहत बना निस दिन हि नज़ारा

दीखे शहनशाह घानि माहिँ, बैठे कतहूँ बिलोका नाहिँ
जोस अपूरब सेव रुझानां, निरिखिं सरब थे अति हैरानां

सेउ उनिंदा भी रहिं करते, देखिं सभन अचरथ थे धरते
सेवक सेस भी मिलिकै आपि, करते सेवगी राउर साथि

मस्ती अनिन थी अज़ब निराली, सतगुरु ने हर घटि में डाली
महत समय भी होईं अजीब, मस्ती वोह नाँ अब हो नसीब

रात सकल गारा लतियाना, अगली सुबह ईंटें बनाना
दिन अगले जु ईंटें सुखाईं, देते मिस्तरियों से चिनाईं

जिस दिन ईंटें बना न पाते, उस दिन एक मकान ढहाते
ईंटें उसकी निकालि सारी, जगह दूसरी करत उसारी
(चौपाई)

पर कबु काम रुका न मंझार, चलत रही सेवा लगातार
अब नां सावन शाही बहार, नां महकास रही वो बयार
(चौपाई)

भावै कछु हो कहौं ज़रूरी, हुकुम हुआ हर पूरा नूरी
होइ बरा ज्यों परियोजन ये, एक जुनूँ या पागलपन ये

कोठरु इक बनवाया, छह गुफ़ाओं की घरी माया
आदम कद हर गुफ़हा बनाइ, बामुश्किल जहाँ बैठ हि पाइ

सबरी गुफ़ा की छत ऊँचाइ, चार हाथ बरी मुसकिल जाइ
छोटा बरांदा इत्तु बनाई, सीधे सकिं परबेस न पाई

कोठरी मसताना हि के हाथ, निरमायो गुफ़ा सुथरी साफ़
छोटा जामें इक दरवाज़ा, भीतर कोठरि से था जाता

सीढ़ी भी तहँ थी बनवाई, आदम कद छत तक ऊँचाईं
ऊपर उसके इक चौबारा, काची ईंटों सु था उसारा
(चौपाई)

कोठरि और गुफ़ाउँ अलावा, इक परकोटा भी उसराया
डेरा चारुं ओर घेराई, बार एक मज़बूत लगाई

आइ नां जाइ सकिं कोउ पार, जानि परि काँटों की दीवार
बहुती टिकाऊ थी ये बार, बीघा कुल जमीं साढ़े चार

बार ज़बर डेराह मज़बूत, फ़रमाइ बेपरवाह अकूत
मारग हीँ बागड़ के डेरा, करत रहा सबु चकित घनेरा

कौतुक देखिं बटोहि निराला, अचरज परयौ निरखिं धमाला
पर नां थाह कोइ वो पाते, होइ जिगासु अरुझते जाते

डेरा निरमाने के हि बाद, दास्तां गुज़री अजीबो-शाद
मलिके डेरा जीं आइ, ताको कोयी दिया बहिकाइ

धरते पग डेरा हिँ हैरान, निरखिं सामने हुइ परीशान
चउबारे पै शा मसताना, दीठे सन्मुख नूर शाहाना

देखा मसताना कु जु धूरी, दरस हुआ सावन शा नूरी
दीसे अगिले पल मसताना, रहयौ हरस न तासु ठिकाना
(चौपाई)

बौराइ नेह थिरकन लागी, किसमत गइ जौं वाकी जागी
डेरा सब दिसि सँवरा पाया, धाम अलोकहिं चित पुलकाया
(चौपाई)

हौले हौले लोक थे बहुत हिं, डेरा निरमने बाद
लागे आउने सच्चाह सौदा, डेरा हुआ आबाद

लागयो परगति होउन दिन दिन, संगतें होइँ भारी
ख़िलक़त होउते दउगुनि चउगुनि, जल की हुइ दुसवारी

कूवाँ डेरा माहिँ खंदाउन, लागयौ होन बिचार
पीने के पानी को लेइ कै, संगत हो नां ख़्वार

जान परयो मसताना जी तब, करियो मिसतरी खोज
खंदाई कु धूकां, वाली से बुलवाया

मिसतरी हीरा लाल कु धूकां, वाली से बुलवाया
कूआँ खंदया कारिंदे जब, पानी तामें आया

मसताना जी होइ आनंदित, संगत प्यास बुझावा
कूआँ अचूरा पुख़्ता कराने, को आदेस लगाया

देवट नाजियाँ वाला सु गया, सिवाकरन बुलवाया
करने पुख़्ता कूआँ ताँइ ही, जोड़ मसाला लाया

जोड़ मसाला की रही उन दिन, दुसवारी बहु भारी
मंगुवाई कछु ईंटें चूना, राखी ता में डारी

पुख़्ता करवाया कुआँ ऊपर, काचा अधधर सारा
बाग़ड़ी सिल्प दिखायो जिन पैह चार बनाइ मुनारा

चारुं मुनारां पक्कियों का था, ऐसा रूप बनाईं
जौन पै चाकि भौनिया भी थी, जा सकती चलवाईं

काम चढ़ाया सिरे पै मिस्तरी, तीजे बजरंग लाल
अरनिया वाले मिस्तरी ने इस, कर ही डारा कमाल

बन जाने पे डेरा में कुआँ, ख़त्म हुई कमी पानी
होई रहा था सकल तमासा, ग़ैबी और अनामी

आमद रफ़्त की डेराह में अब, बढ़ने लगी रफ़तार
भेडकूट साँसी नट गूरजर, जाटों का नां सुमार

हरिजन मोची बालमीक और, बीसनोई कुचबान
बनिया सिंधी बामन बाउरी, सिख और मूसलमान

कापड़िया और धानक भी थे, लागे आने तमाम
सतसंगी बन बन सभी जाते, लइ परमेस का नाम

आधी सिंधी बोलते आधी, मस्त बड़ी पंजआबी
टूटी फूटी बोली पिआरी, लगती मीठी ज़्यादा

गूढ़ ख़ुराक ए इश्क से मस्ती, जीवां में थी आयी
देख अदायें आपकी नूरी, संगत थी हरसायी

समझाने का ढंग अनूठाह, सीख सभी जन भाई
परसादी से बूँदी जलेबी, ख़्याति महत ही पाई

नज़र हीँ नज़र निहाली अब तो, संगत हुँ लगी होने
पायीं दरसन मुख़राह नूरी, जीव लगे थे खोने

रात रात भर चलती सतसंग, सेवाह चलती साथ
पर मसहूरी कछुक मुख़ालिफ़ां, आयो नां तबहुँ रास

वास्ता-ए-नारा

धीरे धीरे होने लगी थी, सरियत अब तो खिलाफ़
कटुता अनबन पनपी बीच हीँ, प्रेमियों के कुछ ब्यास

डेरा ब्यास के सतसंगी वो, साथी बहुत पुराने
धुर हि बिरोधी आपकी बातें, लागे बहुरि बनाने

कथने लागे ये नहीं करता, नारा राधा स्वामी
मस्ती हीँ गयी अक़ल बौरायी, इसकु हम गये जानी

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, का ये लायीं नारा
समझे न दीवाना हंकारी, उचरै बोल अम्मारा

सतगुरु देहवंत को हठीला, सतगुरु ही नां माना
बातें पूरी सकल ख़िलाफ़ती, पहुँची जब मसताना

मज़लिस आमो ख़ास व सतसंग, बेपरवाह फ़रमाइ
राधा सुआमी सबद सुरत का, धुन इहीँ गूढ़ समाइ

मुरसिद मेरा राधा सुआम, ब्यास मेरा करतार
धन धन सतगुरु भी मोहिँ सावन, शाहा ही निराकार

मेरा मिठना मलाइ समाया, दोनहूँ के मंझार
मुरसिद सरब का ही है धन धन, मेर भी अपरंपार

सिमरो ये चाहे वोह सिमरो, राहीं नारे उचार
मारग दो पर मंज़िल एक ही, पहुँचने जगदाधार

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, भरया मस्ती इलाही
इश्क ए मुरसिद बौराही जो, ज़िंदाराम उपाही

देते हुए सरियत की दुहाइ, कुछ थे आफ़त ढाईं
ब्यासा के कुछ साथ पुराने, अफ़वाहें फ़ैलाईं

नुक़ताचीन कहयौ मसताना, डेरा बना लइ आप
कर देगा शुरू नामदान भी, सरियत ही के खिलाफ़

अफ़वाहें फ़ैलाइँ वे निसदिन, मनगढ़ती ही अनेक
बेपरवाहा सदा ही लेकिन, आते दीनता पेश

माली भूराराम था एक जु, मसजाना संग आइँ
डेरा सच्चाह सौदा सिरसाह, जगहा जिसने दिखाइँ

निंदक मसताना का एक जो, डेरा सिरसा आया
बनहिँ काल का पिआदा उसने, उलटा पाठ पढ़ाया

आकर भूरा राम को उसने, दीया यूँ बहकाई
माली भूरा राम बेचारा, बात गया उस आई

मसताना शाह ने भूरा को, डारा देइ इसारा
बाड़े चूहा लागियौ तेरे, हो जा तू हुसियारा

धन धन सतगुरु लिखा दुवार पै, नारा था जु अनामी
मिटवायाह पुतवाई उसको, कीन्हीं जा मन मान

मनमुखता के कीच हिँ पटकयौ, कीयो काल आघात
छूटया मारग खोया खट्टया, हो गया रीते हाथ

बाढ़ी संगत रफ़ताह-रफ़ता, लागा हुई परसार
सतसंग होने लाग थी अब, हर ही एक इतवार

साथ साथ ही संगत बाढ़यो, डेरे माहीँ बिरोध
पहुँची नौबत आइ यहाँ ताँइ, केतिक कीया किरोध

माली संता सिंग बिमुख़ताह, कहयो इस हद जाहीँ
दरसन मसताना हम तोहरे, करना ही नां चाहीँ

क्योंकि तुम होई गुरु से बेमुख, करते जाइ हो काम
पहिले सरजाई दिया डेरा, कीयोह इब्तिदा नाम

रूहानी कालेज

बेपरवाह ने दौरे इब्तिदा, औरासी रचा खेल
सूख़ी लाकरियों का बड़ा सा, एक पड़ा वहाँ ढेर

लाकरी ढेर मँझार परी इक, जानिब किया इसारा
लाकरी समुख परी है कैसन, मसताना हि उचारा

कोऊ कहयो पीपर डंडाह, ये तु परा हुआ साइँ
बचन हुआ गाड़ी दियो सोंटा, ठाऊँ इसही धराइँ

लकरी सूखी रूप से अपुने, हरिअर जे हुइ जाई
समुझीं हालै ही येह डेरा, हरिआना हो आई

कीन्हीं सतगुरु करामात जोइ, दंडा भयो हरिआह
रोक भी सकता था को उसको, जा पै नज़र हो शाह

पाछै ही खनवाइ कै कूवाँ, सच्चा सौदा मंझार
बनवाइ दिया जानिबे मारग, कच्ची ईंटों सु दुआर

सिमरन बंदगी ठाँवा ऊपर, लिखवाई ये डाला
नां तु मुसाफ़िर खाना ये कोउ, नां हि धरम की शाला

मानुख जो भी कोई यहाँ पै, अंदर डेरा आवै
छोड़ी दुनियादारी समाजत, मालिक सु लीव लावै

बनता सच्चाह सौदा मकां जो, होता बहुत ही ख़ास
रंग औ रोगन भी हो जाता, बनवाई के हि साथ

राखा जाता डेरा उन दिनां, इहिँ विधि साजा साजा
जानि परै जु दियार फ़कीर नां, महल काहु महराजा

बहुधाह मैनेजर साहब ही, थे ये सेव कराते
आपु भी माहीँ करते सेवा, कसिर न कोउ उठाते

मास जनवरी वासर इकतीस, बरस था ये उनचास
आयौ ब्यास से साब बहादुर, शाह मसताना पास

साहबज़ादे थे वो जेठरे, शाहा सावन साईं
दौरे पाछै ही दिया इरके, दरवाज़ाह ढहाईं

दरवाज़ा था महिले जहाँ पै, देइँ दीवार बनाइ
बनवाई मेराज दी बाहिर, भीतर खाली रखाइ

सीढ़ी बाँसुआ की ही लगाइँ, आरोहते दीवार
जाया जाइ था सकता ज़रिया, उसहीँ पार दीवार

पाहिले चाहरुँ ओर लगी थी, पुख़्ताह ऊँची बार
अंदर बाहिर आईं हि जाईं, बस थी ये हि दीवार

दरवाज़ा ये चाहै बना था, कच्ची ईंटों ही साथ
आलीशान था बहुता ही पर, रंग रोगन था ख़ास

काम नक्क़ासी वा रंग साज़ी, और जो नक़्शोनिग़ार
पहिले इसके कबहुँ नाँ देखा, लखया पहल ही बार

मंज़र बागरी इक जु देखा, दरवाज़ा ढहा नीचु लेटा
लेइँ निसास कहा बेहाली, रखता पीढ़ी सत संभाली
(चौपाई)

होता जु दरवाज़ा हमारा, राखता इसकु जी से प्यारा
हरसता नेति हि नित निहारी, पर याँ इसकी महत न डारी
(चौपाई)

मुख ही गुफ़ा के साथ हिं फिर से, छोटी इक गली छोरि
कोठरियाँ सिरजाई दी चारुँ, थाउँ बहुत जिनहिँ थोरि

दरवाज़े हर कुठरी बनाइ, सवाह गुना दो हाथ रखाइ
छत गलियारा पै भी लगाइ, लंगर घर छोटा ही बनाइ
(चौपाई)

सनमुख ही उस थरा बनाया, खाती भी था इक बुलवाया
लंगर घर दरवाज़े ताँई, सात चार की काठ लियाई

चौखट दरवाज़े की बनाइ, उस पै रंगसाजी करवाइ
समझ न भेद ये कोउ पाया, बेपरवा क्या खेल रचाया

शाह मसताना मस्ती आई, परस राम इक दिवस बुलाई
पुलकाई वाको फ़ुरमाई, परसा राम सुनहु चित लाई
(चौपाई)

हुकुम से साँचे सतगुरु साईं, खोलों एक दूकान
डेरा सच्चाह सौदा सिरसाह, होवसी जाको नाम

दूर सुदूर से जीव तिरासे, आवसीं सब याँ धाम
नाम के सौदा से हम राखों, पूरम पूरी दुकान

पुरज़ा देउँ ईलाही यहाँ सु, जाने अगम पुर धाम
फ़ेर फ़ार होवै नाहिँ मारग, धुर ही का इंतिज़ाम

मारग न कोउ कांटा लाईं, सूधि सच खंड रुकती जाईं
ताक़त कोउ रोकि नाँ पाईं, नाँव की पटरी जु चढ़ि आईं
(चौपाई)

सेवा दुरूह चली दिन रात, सतसंग मज़लिस साथ हि साथ
नठने लगा जीवां जग जाल, सिरसा अबु भयी गयो निहाल
(चौपाई)

ख़िलक़त तबकाह सबरे से अब, दूरो दूर सु आई
सोबते शाह मसताना जी, पासी काल कटाई

पै हि गई रढ़ ज़िंदाराम की, चरचाह मुरसिद आम
गूंज थी मौज सावन शाहा, चीरती सत असमान

सूधी बतियां भोली साथ ही, शा मसताना साईं
सामने वाले जीव कु देते, अंतर लौं समुझाईं

सिछित अल्लामा और खेतीहर, माठर और मज़दूर
पहुँचे उमरा मीर औ मुफ़लिस, शाहा नूरी हुजूर

काल के तीन वचन

अबिरल सेवाह चलती डेरा, बना मकां थे ढहाइ
था आनंदै आनंद धाम हिँ, मस्ती अजब थी छाई

इक दिन मज़लिसे आम हुँ आईं, नूरी मुख फ़रमाई
वरी चितै सतगुरु की मायाह, कैसन देहि बनाई

कोटि तेंतीस दैवत सारे, लुके होइँ अंदर हि हमारे
सौच पिसाब हिँ करहिं सफ़ाई, मालिक क्या हि रचना रचाई
(चौपाई)

नर से हरिन करने वाली, देहि इनायत सतगुरु न्यारी
कदर वरी इसकी तुम जानो, चोल अमूला है पैछानो
(चौपाई)

खोलों परदाह आज हमीं ही, आख़िर क्या ये सरीर
काल पसाअरा आख़िर क्या है, सुनहू संग तक़रीर

काल की भगतीह कलप बहत्तर, महत वो सिलिपीकार
गढ़ दिया काल कलेवर पर था, आत्मा सु तो बेज़ार

क़ालिब माहीँ करि नाहिँ पायौ, आत्मा पाक़ तैयार
आत्मा दयाल हि वाली एकल, जीव कूँ बगसनहार

काल दयाल हैं कसबल दो ही, माहीँ जगती महान
सायरे मिहिर दयाला जितना, काल बिराट सैतान

की किरपालता करुनामय तब, आत्मा कैदी सरीर
बासतै मुक्ताई फंद काल सु, होइ महती गंभीर

बचन मांग लियो दयाला सु तब, काल बलि ने ये तीन
बरनाईं हौँ बचन कौन येह, धरहीँ सुनू तसकीन

<u>पहला वचन</u>

जीव किन्हीं कु ही जनम पूरबल, कबहूँ रहै नां याद
मुकतायी सकै जान न कबहूँ, सतगुरु करीं फ़िरियाद

<u>दूसरा वचन</u>

आत्मा जोइ पाकीज़ा होवै, निरगुन कीयो इज़ाद
चोर भी पाँच नफ़्स के काल ने, डारे करने ख़राब

रहिना नफ़सी चोरां साथ ही, कायाह को हर जाम
है असराल हि होना मुक़ाबिल, ले अबीनासी नाम

को को चोर हैं ये नफ़सानी, सुनहू समुझ बीचार
मोह लोभ और काम किरोधा, पाँचवाँ है हंकार

तीसरा वचन

मिरित लोक हीँ संत फ़कीर जो, सतपुरुज़ हैं पठाईं
नाहिँ हुक्म है उनका साधारन, जीवों में वो आईं

दिखलायें कोऊ चमत्कार या, दिखलायें करामात
जाई संत मते के उसूलां, सख़्त ख़िलाफ़ ये बात

बिन इच्छा बिना अभिलासा किसी, जीव को देना नाम
क़लमा पाक़ दीया बरज़ोरी, नाहीँ करत है काम

वरनाह इसमें ताक़त इतनी है ईलाही समाइँ
क़ामिल संत दियो क़लमा येह, दे चौरासी छुड़ाइँ

फ़िर भी मौज या मज़बूरी ही, संत करै करामात
समझो पाछै उस हि है कोई, राज़ की अवसी बात

या फ़िर जीव किसी का भांडाह, साफ़ नहीं ग़र होईं
ऐसे जीवां नाम दान देइँ, करम पड़ें उन ढोईं

भारी करम हों जिन जीवों के, देवन से उन्हें नाम
संत फ़कीरां पड़ते उठाने, देहीं दुख हैं तमाम

आतमा सों परमात्मा करि कै, ऊतिम करि देउ काम
काल हि रूप इस काया अंतर, आत्मा दयाला नाम

होता नां जो काल बलि का हि, ज़ालिम काम सैतान
होती तपसा भंग कभी नाहिँ, जन मुनियां जो महान

बरस असी असी सहसर की थी, तपसिया जिनकी घोर
काल बली बनिं मोहिनी सुरपुर, दीयो मुनी झकझोर

समुझना है ये बहुत दुहेला, मोहक कलि का जारा
मोहिनी बसतुआँ ख़लक उचाइ, भरिमाया जग सारा

सतगुरु को बिसराई जीव सु, है येह गहरी चाल
समझी अब येह चाल पिरानी, क़ामिल गुरु लऊ भाल

साचा मुरसिद मिलैह भाग सों, नां तो मिलै न मिल्याह
मिलै नसीबां ही तै लोक इहिँ, फूल अनामी ख़िल्लाह

हुकुमे नामदान

नामदान करने का अलाही हुकुम

सच्चाह सौदा कीया सिरजना, अरताली सन जाहीँ
पर छीयाली सन से हि पहले, रूहानि मंडलाहीँ

नीवं धरी थी साचाह सौदा, ने घट माहीँ
बलूचिस्तान तें बहुराइ कै हि, सिरसा माहिँ पठाहीँ

फ़रमायाह कि सिमरन भजन सै, नेक कमाइ बनाहीँ
सच्चाह सौदा इस तें करो तुम, सिरसा अंदर जाहीँ

संत परम शाह सावन हुकुम कु, समुझै लाइँ धिआना
साफ़ झलकती बात हैं दोईं, पर नां जानिं ज़माना

थापना गुर गद्दी की दूजाह, सच्चा सौदा बनाना
रूहों को बागर की सबन ही, औघट घाट लिवाना

दूजी बात छुपी है इस महीँ, पर महती गहराई
सच्चाह सौदा सिरफ़ करे वोह, जीवां जो बग़साई

नाम दान बक़सीस मंझारी, नूरानी येह दात
दीसै साफ़ ही संत परम के, अंतर हुकुम ये बात

सावन शाह हुकुम दरसाई, रूप अनामी थे समुझाईं
मसताना कु इसारों साईं, पहले ही सबु दिया बताई

बनवाइ रूहों को ये डेरा, बगसौ नाम का दान
साचाह सौदा सिरसा माहीँ, ज़ीव कीयो कलियान

फांदिया काल बली जिन जीवां, बेपरवाह पछांना
करम निबेरे इसहिँ जगत महीँ, दियो पुँचाइ मुक़ामा

बाद ही सिरजने सच्चा सौदा, शाह के बरखुरदार
साहब ज़ादे शाह सावन के, बाहादुर सरेदार

नाम दान शुरु करने बास्ते, कामना की इज़हार
हुकुम दिया मसताना नाम दो, अबकै लाउ नाँ बार

शाह मसताना कु दरगाह सों, आयो जेह पैगाम
नाम का दान देउ मसताना, हुकुम हुआ ये अनाम

अगहर इब्तिदा नाम हि दान के, सत्संग एक रखाये
जदपि पाहिले ही सतसंग के, मसताना दरसाये

सेवक बाबूराम था इक जो, अपने निकट बुलाये
देइ पहलका नाम शहनशाह, बाबूराम तिराये

बाबू पहले था बड़ा अकसी, बदल गयी अब काया
रूहानी सतसंग से सच्चाह, सौदाअ महमहाया

चाला भेद पता न ये काहू, ख़बर नाँ कानों कान
बगस दियौ शाह मसताना जी, बाबूराम को नाम

पाछै इस दिया नाम आगिला, बेपरवाह ने दान
बेगूह पुर जगदीश बिनायक, शाह था जिसका नाम

सातवाँ सर्ग

अनामी पयाम

अनामी संदेश

(ईश्वरीय संदेश)

नामदान महिमा

मारच उन्नीसौह उनचास हीँ, सच्चाह सौदाअ धाम
नाम दान आगाज़ थे कीयो, जीवां सबन हीँ आम

करते ही शुरू नाम दान के, ख़िलक़त उमड़ी अपार
नाम दान की पाने दात को, संगत का नाँ शुमार

बदरंग दौर बतन था आया, बेढब सोच निराली
भेद भाव अरु छूआ छात की, छाइ घटा थी काली

अनपढ़ता बेअदबी ज़हाली, भुखमरी व कंगाली
जानिब जिस भी नज़र थी पड़ती, हालाते बदहाली

बदनज्मी बदफेली फँसे सबू, पाउते ख़ुद असहाइ
ख़िलक़त होई शिकार सितक की, देता कछु नाँ सुझाइ

जात व पात अमीरी गरीबी, जकरा विकट था जाल
नफ़रत मज़हबी और सियासी, कर ही दिया पामाल

बँटवारा ए हिंद बतन बना, वासते सबु जंजाल
शतरंज ए शैतान काल की, चाल ने किया हलाल

उन्नीह सौ उनचास का आयो, पुर दुसवारियाँ साल
पर बेपरवाह दौर भयानक, कर दियो पेश मिसाल

आछत दौर कबाहक इधर थे, करते मुखासिम घात
नाम हालाते मौजूदा में, देना जुध था बिराट

सबरी आफतें और मुसीबत, होई गयीं दुसवार
काल बली के रूप खड़ी हुई, लई पाँचों हथियार

मसताना जी दयाल रूप आ, होये मुकाबिल काल
सतगुरु नाम के बजर सु रोका, काल महाबली वार

नाम के दान की बगसिस होइ, जीवन का हि आधार
सोभती पर उसके ही हाथ हु, मुरसिद करनी हार

क़मामिल संत फ़कीर गुरु कोई, या फ़िर कोउ बिकारी
पाई गया जो सतगुरु साईं, हो हि गया अधिकारी

है बक़सीस क्या नाम दान की, परचै बहुत जरूरी
कलजुग के इस दौर में आनिक हि, पीर गुरु जो फ़ुतूरी

नाम दान बिनु सोचे हि समझे, करते बस मगरूरी
कामजाब नाँ होवै नाम वो, हो जामें मज़बूरी

करने बास्ते खड़ी जमातांह, बांधने मिथिया शान
महत नाँ समझें नाम दान का, परसादा जो अनाम

तथ ये जानना बहुत जरूरी, है ये लाज़िमी बात
समरथ भी हैं या रियाकारी, नाम लीया जिस हाथ

झूठे गुरु वा पीरों फ़कीरों, फाँदि माया के जाल
ज़रिया ए सैतानी हि बरकस, भरमायी रहा काल

नाम दान गहिँ पा जाई येह, मानुख ऐसो बिराम
मनमुखताइ तजिकै जीव जहाँ, राचैह गुरुमुख तान

नाम दान मारग उस देस का, पाकरै जो इनसान
जीवन की दे बदल दिसाअ ही, ले जाई सतोधाम

दुहेलाह रहगुज़र है बेशक, पर नां मुमकिन नाहीँ
जीव को ग़र हो इश्के मालिक, चाह जहुँ वहाँ राहीँ

है ये बदनज्मी ए आडंबर, मनमुखताइ का रूप
पाक़ निज़ाम ए अंतर ही है, गुरुमुखता का सुरूप

नाम की ये बक़्सीस रूहानि, मिलती उस जु पुगावै
दीवा लेइँ ईलाही मारग, मंज़िल बढ़ता जावै

बात न ये हर जीव के बस की, नूरी नेमत पावै
सीप खुलै नाँ बूंद कहो वरी, मोती काहिँ बनावै

भावै खेल नसीब ही फ़िर भी, सतगुरु मिहिर दिखावै
जीवां पै करि किरिपा दयाला, दात नाम बग़सावै

दात नवाज़ी नाम की साईं, झेलै करम के भार
जीवों की अपने है सदातन, सतगुरु करता सम्हार

सबद पाँच के नाम का छापा, मोहर एको अलाहिँ
जीव हिँ सबद की देखि अलामत, काल अलेखी चिताहिँ

नाम सबद की जिस पे सिनाख़त, कामिल गुर हैं लगाहिँ
हद से बाहर काल की है वो, एक निसानी जमाहिँ

नाम सबद तो इक है उपाऊ, जोत में जोति समाहिँ
सबद पाँख नाँ साधारन येह, धारि ले घट के माहिँ

नाम कमाई करना जीव को, अल्ज़म बहुती ये बात
मस्ती रस महीँ खोईं कमावै, संभारैह फ़िर आप

पहलम पहलां कदम है जीवां, नाम दात बक़साना
नाम की नूरि दात से जानिब, मंज़िल कदम बढ़ाना

गुरु औ मुरसिद असल है मंज़िल, मुरसिद ओट हिँ जाना
अलख़ अगोचर अगम अनामीह, नज़र गुरु की छिपा नां

क़ामिल सतगुरु काईनात कुल, परगट सकल जहानां
नाम दान बक़साई जीव को, सफ़रे मालिक पाना

नाम दान बक़सीस है असली, मिलती हर इक नाँहीँ
हे येह दुरलभ रोचक बहुती, पावै किसमत ताँहीँ

बिनु गुरु समरथ क़लमा फ़लै नां, ज़ाहिर है जग माहीँ
सिमरन नाम ए मुरसिद क़ामिल, अज़मत बहुत दिखावीँ

नतरु काल की चोह हि चोह है, अंत समय पछिताहीँ
पार उतारै नाम ए सतगुरु, पहुँचै धुर दरगाहीँ

बक़सिस नाँवा दान की करना, सुहेली नाहीँ बात
संत करम पढ़ लेते सवाबिक, हैं जो जीव के साथ

होती बग़सिस नाम की उसको, जाकेह करम शफ़्फ़ाफ़
जनम ए माज़ी भगती मिलती, रूहों जिनन के पास

देहीँ संत उन्हीं को अनामी, अबिगत नाम सौगात
जीव हैं नाम के जु अधिकारी, हों पुर रसना बिसास

क़लमा नाम पढ़ें जिंद छूटे, कासित काल के हाथ
पाईं बगसिस नाम सुभागरे, राचैं दिवस औ रात

सोच वरी ये जिसम का मंदिर, सतगुरु क्या हि बनायो
जंतर अजब गज़ब का बनायी, कारीगिरी दिखायो

काम को हर इक बड़े सलीका, पहुँचाया है मुकाम
अंदर इस ही देह के सरबस, रचयौ अरभो निज़ाम

तीन लोक नव खंड चोर पंज, इलम गयारह पाईं
देवी देता कोटि तेंतीस, सगरे देहिँ समाईं

चारों की मानिंद ये बंदा, खाये फिर सो जाई
जिसम पाक़ येह बेजा गँदले, कामों हि में लगाई

दीया करम को मालिक ने किस, करम किसू हिँ लगाई
सोचो मन महीँ बेर ज़रा इक, गूढ़ बिचार बनाई

वरी नज़र इक बार तो फेरो, अलहक़ देइ दिखाईं
लाख चुरासी जोनियाँ प्रानक, नां नां रूप हिँ पाईं

जगती के सारे ही चराचर, मालिक ही सुघराई
पर तू जीव अमूलरा सबसों, सतगुरु तुज्झ सरजाई

हया करो कुछ चोला कीमती, कौड़ी भाव बिकाई
देखो इनसां अनयाई करै, हीरा जनम गँवाई

और भी लाखों हाड़ माँस के, जीव जमीं बिचराई
रूप ये गुन औ बानी मूरख, बक़सी तुझ हीं साँईं

शुकराना करो उस मालिक का, फ़िरि फ़िरि सीस नँवाई
खोलने का दरवाज़ा दसवाँ, औसर तोहिँ थमाई

इस्तेमाल अक़ल करीं आपनी, कत सुअजोग गँवाई
गूढ़ रूप में चोला कीमती, सच खंड हिँ पहुँचाई

अनगन बेद औ धरम गरंथा, ज़ोर दिया सबु भारी
नाम सबद नूरी ही कमाई, प्रानी तोहिँ उबारी

नाम दान शुरू करन सु पहिले, जीवां सबु बतियारी
की हर नज़र ही से जीवों की, पूरी ख़बरेदारी

दीया जा नहीं सकता सबकू, समझो ज़िहन लगायी
करो कमाई चित सों नाम की, साथ यही इक जायी

नाम अमोल है बेश कीमती, होवै न खरीदारी
सबब इसी हर काल खंड महीँ, गुरु पीरों ने सारी

नाम जोत उपजोग सबद कियो, अंतर खूब बिचारी
देखो ये वरी क़लमा नाहीँ, हल्का कोई गुब्बारी

है ये इक दरगाही इसारा, कदरे क़लमा करना
दाग नां लगने देना इसको, अंतर घट है धरना

आगे सतगुरु करयो सम्हारी, तुम न काहु तें डरना
आज नहीं कल-कल नां कभी तो, दरगाहीं पग धरना

सीधे धुर पहुँचागे अगम पुर, वचन न सतगुरु टारा
नाम जहाँ पहुँचाई दरगाह, सतगुरु दइ ललकारा

राचीं पुर आनंद ही सतगुरु, सारे नियम निभाऊ
नाम जोत हुक़ुम ए दरगाही, पूरे गुरु सु कमाऊ

जतन करीं भरपूर तू बंदे, कारज सिरे चढ़ाऊ
जो नां करै तो पड़ खड्ड माहीँ, हमकु पड़ी क्या भाऊ

अपनी तो दूकान खुली यहाँ, सच्चा सौदा कराऊ
सौदा सच्चा करै तो कर नहीं, मरज़ी जनम गवाऊ

संगत नाम दान की अपने हि, आप महीँ खुलेआम
काल उसी के हि नाम चुनौती, लोक मिरित हिँ जो आन

भोले भालेह जीवां राखै, बिसया बिकारां थाम
अरुझाई कै अपुने जाल हीँ, जीव जगत के तमाम

तेग–ए–नाम सबद कर सकती, काल सु सबका अमान
यातैँ आइ सोबहते सतगुरु, धारु ईलाही नाम

अंतर रूपी अनहद नाद है, ताक़त इसकी अमाम
कर देगा जो काल को बहरा, काल करै त्राहिमाम

कर देइ उसे बिबस ये रास्ता, छोड़ने को ज़बरान
गुरु के बनकर रहना उसी के, काल न रोकै अब्बाम

राज़ी रहना उसकी रज़ा हीँ, रखना हुकुम की आन
जदपि काम ही करना है येह, मुसकिल बहुताअ काम

लेकिन नां मुमकिन नहीं कछु भी, मन ही जो लीया ठान
पाई सोहबत गुरु की पूरे, पहुँच तू अबिगत धाम

क़ामिल एक फ़क़ीरा देखलो, तुम जीवों के हि काम
मिरित लोक आयोह देह धारि, देन सत का पयाम

लाज न देना ताको तुम कभी, देइ सुनु येह धिआन
फ़ुरमाया गुरु सीष का होवै, बासता पुर ईमान

देखो आज करेंगे हम तुम्हें, बक़सिस नाम का दान
दरगाह में तसवीर तुम्हारी, जाइ पहुँच इसी आन

करम तिहारे अब तें हि सारे, होंगे माफ़ नादान
रहना ख़बरेदारी हिँ, आगे, योंह नां करना काम

करना दाने नाम औ लेना, साधारन नाहिँ बात
खेल नसीबों का है बड़ा ये, सबहूँ मिलत नां दात

नाम दान सों ही गुरु सीष का, गहरायी है नाता
ज़रियाह बक़सिस नाम दान गुरु, अंतर सीष समाता

सीष गुरु रहें अंग संग सदा, दूरी नाहिँ बनायो
रोम रोम दोउ अंत समाहित, मसताना फ़रमायो

गुरु करत है अपुने हि सीष की, पग पग ही संभारी
नाईं इस ही सीष भी अपने, गुरु को लेयीं धारी

बाबत उनु जो नाम सबद लेइँ, मसतानाह फ़रमात
पूरा सौंप दे सीष अपन कौ, अपने गुर के हि हाथ

सीष और गुरु दौरां हि बग़सिस, नाम दान बा वकार
होईं इक दूजे हीँ समाहित, ये ही विसाले यार

सीष का अपने गुरु के बास्ते, साखी है तथ ये ही
पालना हुकुम करै हरदम ही, गुरु जो सीष कु देही

साथ ही इसके गुरु भी होवै, जानिब सिस ही सचेत
साखी है इस बात का ये ही, सिस की गुरु करै देख

राखी हर ही कदम पै करसी, सतगुरु आपुने जीव
काढ़ि बदरवी बद करदारी सु, लावहै सतगुरु लीव

सबद साकसी से बना साखी, और साखी से सखी
होना सीष का अंतर सु सखी, होत है नाम से ही

संतां गुरु फ़कीर और पीराँ, साखी भाव है पाइँ
इस ही ताँईं इनकी जमाताँ, धरती पैह इस आइँ

बानी आपुनी संत फ़कीरां, साखी रूप लिखाई
याद रहै सरवदाअ सहादत, उस हि सखी का जाई

बानी साखी रूप में ये ही, बानी बनिं दरगाहीं
अबतीरन होइ लोक इसी हीँ, मसताना फ़रमाहीं

सबु ही कुछ है सबके हि अंदर, फ़रमाहीं मसताना
पाराबार ही नाहिँ है कोउ, भीतर वोह खज़ाना

परया भीतर भरा सबन जीअ, महता एक खज़ाना
अंतर ही छिपयाह परमेसर, जौ अब लौं जाना

साखी भाव हिँ होवै रूबरू, करम है तेर बिचार
मेल यही परमातम आतमा, मिलयों यहीं करतार

नाम दान का लावहिं छपकाह, सिमरन करहु कमाई
ज़िंदा राम जु टोहना चाहै, भजन करु तू ढुकाई

ख़बरेहदारी रहि कै पूरी, पूरा ही पतियाई
बंदगी सिमरन करना रवाँइ, आसरा उस हिँ जाई

भीतर गोते खायीं हि खायीं, होइ जाओगे पार
ज़िंदा राम मिलैगा अबस पन, संकरा बहुत दुआर

कर पावै परबेसाअ इस हीँ, काम यही दुसवारी
भीतर ही है जावना इसके, खेला ख़बरेदारी

कहबत मुरसिद चालै जीव जो, पहुँचे जाई ज़रूर
एक ही होईं चालैं गुरु सिष, मारग हुईं मसरूर

मतलब इसका गहरा बहूता, सबकी समुझ न आवै
गुरु मति ही में मत को मिलायीं, चेलक आगे जावै

गुरु गरंथ साहब में लिखा ये, दुनिया सारी जाने
गुरु की मत ले निमाणे गुर बिन, डूबे बहुत सियाणे

गुरु की मत में मत को मिलावै, तबहीं बनै कछु काम
वरना काल के डंडे नीचे, आई परै इनसान

पार लगावै गुरु तजवीज़ ही, दे निज धाम पुँचाई
वासी धाम अनामी अगम पुर, वास हिँ अपुने जाई

जोत अमर है वहाँ पे एकै, देह वहाँ नां पावै
जोत सिवा नाहिँ होवै कछु भी, जौं कबिरा फ़रमावै

हम बासी उस देस के, जहाँ ब्रह्मा का खेल
दीपक देखा ग़ैब का, बिना बाती बिन तेल
हम बासी उस देश के, जाति बरन कुल नाहिं
सबद मिलावा है रहा, देह मिलावा नाहिं

वहाँ सबद ही सबद साथ मिली, हो इक रूप हि जाई
देह वहाँ पै पहुँच सकैह नां, मिट्टी माटी समाई

रेशमी चोला

कालिज था रूहानी बनाया, कारिखाना अनामी
जीव संभाली करत शहनशा, नज़रिं-नज़रिं नूरानी

नेह बहुत ही साथ थी होती, जीव सम्हाली पूरी
कालिज रूहानी का हुआ जस, होइँ लगी मशहूरी

बेपरवाह मसताना जी को, होईं येह महसूस
करने पूरा हुकुमे दरग़ाह, साईं अलख मख़सूस

औसर आई गया है आगे, करने अनामी काम
चाहते करना इब्तिदा बग़सिस, अमरित नाम ए दान

दौराँ इस ही बेपरवाह को, पतरी ख़ास थी आइ
लिखिया पाती नाम दान शुरुअ, मसताना करो भाइ

पूत पलौंठे शाह सावन के, बाहादुर सरेदार
आई रहे थे बास्ते मिलने, मसतानाह दरबार

साहब सिंग बाहादुर जी ने, जनवरी सन उनचास
राखयौ दौरा सीकंदर पुर, आख़िर में इसी मास

तीस जनवरी सन उनचास को, पहुँचे सिरसा धामा
करने दरसन आपके नूरी, कुटिया गइँ मसताना

होई मज़लिस समय अबेश थी, सिंग बाहादुर साथ
साब मैनेज़र थे वहाँ कियो, साथ ही पोथी पाठ

मसताना साँईं ने कियो तबु, अरचा येह सरदार
सतसंग सच्चाह सौदा अवस हि, देई दियो सरकार

अगले दिन सरेदार बहादुर, सत्संग थे फ़रमाए
ढहि गया दौरां इस हि कुँआँ जो, सच्चा सौदा बनाए

मिहिर दया कियो सतगुरु इतनी, कीया येह अक़राम
कुँआ ढहरने तें भी हुआ नां, कोई वहाँ नुक़सान

आते हि मुख दवार पै धाम हिँ, पठयो येह सरदार
नां ये सराय न धर्म की शाला, ख़ालिस येह दरबार

सिमरन भजन वा बंदगी ताइँ, ठाउँ येह ईलाही
जीव कोई भी बात करै नां, आई इत दुनयावी

साच्चाह सौदा भजन मंडली, जानहीँ लोक तमाम
चालिं रहा उस दौर में डेरे, का था इक यही नाम

फ़रमाईं ये साहब बहादुर, सतसंग करने बाद
नाम दान शुरू करने का हम, देईं हुकुम हैं आज

बोले साहब बहादुर फ़िर से, बात सुनो मसताना
मस्ती बेपरवाही ये तेरी, जानि कुल ही ज़माना

मस्ती ही ये जदपि है तेरी, एक खज़ाना नूरी
रसमे दुनिया फिर भी निभाना, हो हि जायी जरूरी

आगाज़े बग़सीस नाम करो, बादशा सावन शाहि
वचन तेरे सु काल को भी है, भय से पसीना आहि

नाम दान करु देना शुरू तुम, लेइ आसरा दयाल
सच्चे पातशाह आप हि लेहीँ, भोरे जीव संभाल

पाछैअ फ़रमाई मसताना, सहज-सहज बड़े धीर
रूप है मंदिर का ही वरि ये, इनसानी जो सरीर

सुरत ही रूपी तत है इसमें, रेसम पट के समान
चोला रेसमी फँसियो माया, जाल हीँ काल अव्वान

बेधें काँटे काल की झारी, दुनिया के ये बिकार
काम कोम मोह माया लालच, और मनवाँ हंकार

आत्मा रूपी चोला रेसमी, जाका मोल ही नाहिँ
पर निसि बासर कांटे काल के, छलनी करत ही जाहिँ

मानस अथिर की सुनु धिआन तें, अभिलासे है ये क्या
ज़रिया जिस्म ये अपनी ज़रूरत, पूरती कर ही रहा

अरुझिं काल की माया महीँ ये, मनुआ काल के संग
माया दुनिया ठगुवे काल की, लेयीं रहा आनंद

दिन ही दिन रहा होयी ये मन, शैताँ और बलवान
बिबस बेचारी आत्मा होयी, खोवै जायीँ परान

आहलाद मन अपने हिँ खोयी, लेते सरब ही काम
काँटे पाँच बिकार करत येह, तीख़े और बलवान

नूरी चोला रेसमी होवै, छलनी और बेजान
बंदे गहरायी सु बिचार ये, आख़िर क्या है निदान

जुगति क़लमा ए मुरसिद क़ामिल, अलख़ अरूप का नाम
बाज़रिया क़लमा ए नाम ही, मिलसींह ज़िंदाराम

जायीँ बास्ते सफ़रे अनामी, पुरज़ा सीधा थमाइँ
ज़िंदा राम ये खोजै अंदर, आतमा देइ जगाइँ

आत्मा हो बलवान कियोंकर, काबु मन बेईमान
मन येह कपटी छलिया गुरु ढिग, बैठन दे न सैतान

नज़र चोर है बाउरा मन ये, बीबी देखन जाहीँ
काम चोर है येह दुनियावी, बतियाँ सुननी चाहीँ

खावइँ मांगे नां नां पकावन, बसतर महल चुबारा
सगरी चाहै बसतू सदातन, अरुझा काल पसारा

मन है दास ये काल महाबल, लफ़तरा यावाकार
बन पायीं तो दास तो सतगुरु, एक वो ही दातार

हुकुम रहै जौं सतगुरु साइयाँ, ऐसी मारैह मार
जीना सीख अथिर मन जावैह, भौअ सागर हो पार

चोला रेसमी शानदार ये, याकौं करहु संभार
काँटे पाँच बिकार के नां तो, देवसीं कर छलनार

इस चोले हिँ क़लमा ए सबदे, पाँच का लेयीं पका
ख़बरेदारी चोला अमोला, रेसमी काढ़ि ले जा

करै तो कर सुख भोगै तू ही, लेना हमकू ही क्या
जौ नां मानै जाई परों खड्ड, मानैह तेरा भला

कोटिक जीव हैं बन रहे नित हि, घानीह ज़ालिम काल
नां मानैह मत मान फ़ँसा रह, चौरासीह इस जाल

मसताना शा के सुन वचन ये, कुल सतसंग आवाम
एक ही चित हो ख़बरेदारी, और बड़े ही धिआन

बीबियाँ बंदे बालक ही क्या, क्या जरठे क्या जवान
क्या विदजन क्या अनपढ़ सकल ही, सुन हि सुन थे हैरान

पुर चेताउनी सत्संग नूरी, जीव बने सबु साखी
सोच परयो उहाँ जीव सबन हि, सुनि सुनि बातें साची

शाह मसताना जी ने अपने, जीवन काल सदायी
सत्संग और मज़लिस हर बातें, ख़रम ख़री फ़रमायी

ज़रिया गूढ़ सबद चेतावनी, जीव सकल चेताये
साखियाँ कर उपजोग फ़कीरां, किस्से साचे सुनाये

सतगुरु आपने अपने जीवां, कू पूरा चेताया
अगिरौ देने हि नाम दान के, दामन पाक़ बनाया

पहले देवने नाम दान के, में दीया फरमाई
हाड़ माँस के जिस्म को रेसमी, चोला दिया बताई

बैठा जीव हर इक जु सतसंग, सतगुरु शाह हज़ूरी
रेसमी चोले सोच हिँ खोया, सुनिं सुनिं बानी नूरी

जीव उठा हर एक ही था जब, सुनके बातें सारी
लागा समझने निज कु रेसमी, चोले का अधिकारी

बेपरवा की बात नूरानी, सुनहिँ चेतना आही
नाम की जल उठी औचक हि बस, एक मशाल अलाही

जोत नूरानी ने कर डारा, कुल अंधिआर फ़नाइ
लोंय में इसी नूर की सारे, जीव रहे थे नहाइ

खुंभ धवल अनुहार थी संगत, इक टक बैठी जु येह
खोईं मस्तीह लागती जैसे, देह से होइँ बिदेह

आगे मसताना जी थे येह, संगत हीँ फ़रमाहीँ
करना ज़िकर है वरी फ़िकर से, उनका तुमकु सदाहीँ

ज़िकर करेगा अगर तू उसका, धरि ले चित ये ख़िआल
फ़िकर करेगा तेरी भी वोह, तब हि रहमती दयाल

फ़िकर करो बस चित से हि उसका, हर पल और लमहात
ऊठत बैठत जागते सोते, साँझ सवेराअ रात

ज़िंदा राम का जपले नाम तु, हर पल चित हिँ पुकारी
आधा इक दो घंटा हि भावै, हो जा नाम बपारी

बैठ जा खोलिं सतगुरु पिआरे, अपनी बस तू दुकान
चाहे मन लागै नाहिँ तोरा, चाहे न लगै धिआन

करले सच्चाह सौदा है येह, लाभ ही वाला काम
गाहक चाहे आवै न आवै, तोहना नां नुक़सान

सिमरन भजन तू कर बस उसका, होवईं खबरे दार
है ये काम बहादुरी बहुता, निआने का नां कार

सतगुरु जीवां करत संभारी, आपु हि पूरी पूरी
कदम-कदम वो साथ दे तेरा, रह सतगुरु हि हुज़ूरी

करि ले उसपै पूरा भरोसा, करि ले पूरा बिसास
क़लमा अंदर का ले पकायी, पूरी सुरत के साथ

वरी बहुत ही क़लमा अनूठा, तू न समझ ये हौला
हरुफ़ ये तेरे अंदर जाईं, करि दें हरफ़न मौला

ये दरग़ाही हुकुम है अबिगत, करले जतन सूजान
सतगुरु तोहरे पूर करेगा, आप ही सगरे काम

वरी बनिज येह बर अनियारा, खोलो ख़बरेदारी
परदे का है काम ये सिमरन, सध ले परदेदारी

फ़रमाये शाह मसताना जी, क़लमाअ पढ़ निसकाम
बैठे हैं बस पार ही परदा, तोहरे ज़िंदा राम

बात न बस की बामन बिपर ये, नां काज़ी का हि काम
ताकी पहुँच है देवल मसजिद, नाहीँ पहुँच सतधाम

ले जाई तुम्हें धाम अगोचर, बस क़लमा दरग़ाही
पुरज़ा धाम अनामी का येह, सूधा ही ले जाही

बदले बीच हिँ काँटा न पटरी, नाहिँ रुकै किन्हीं थान
रोक न पाइ ताक़ते काल भी, पहुँच है धुर ही धाम

काज़ी कथया कतेब कुराना, पंडित बेद पुराना
वो आख़र तो लखया नां जाइ, मात्रा लगै न काना

कबहु छोड़ना नाहीँ वरी तुम, पुरुख़ अकाल की राह
डहकाई कहीं पहुँचोगे नां, रोइँ सुरत ये सदाह

बिलख़ेगी येह सुरत जुगो जुग, रोवै दिन और रात
झपटै काल सरारती तुझहीँ, और बनाही मज़ाक़

हर पल हर दिन जनम जनम होइँ, जुग ही जुग लाइँ फ़ैल
चाकी काल की बनहिं रहैगा, कोलहू का इक बैल

रहट काल के लावहिं फ़ेरियां, कुटता पिटता ही मर
रहट ही करनी है तो मूरख, तू सतगुर की ही कर

पकरहिं लेअ अब भेदी को तू, चल हि परैगी तेरी
भेदना है बस किला तुझे ये, कर नां अब तू देरी

अंदर ही इस किले मिलै तोहिँ, ज़ाहिरी ज़िंदा राम
आलम सगरा इसहीँ समाई, और सकल ये जहांन

वस्तु कहीं ढूँढे कहीं, केहि विधि आवे हाथ
कहै कबीर तब पाईये, जब भेदी लीजै साथ

मारग है दुहेला बहुत येह, सतगुरु करहिं संभाल
मारग एहिँ चालै बशर जोइ, कोनो माइ का लाल

बाट पै चलना इसो है नांहिँ, खाला जी का बाड़ा
टेढ़ी खीर है ख़ासी ही ये, जुगती कर तू गाढ़ा

भेदी लयीं साथ तू अपुने, साध ले ज़िंदा राम
झलक उपाई लेअ तू उसकी, कशिश ए दरस दवाम

मारच उन्नीस सौअ अरताली, संगत होइ निराली
नाम दान सतसंग ईलाही, नींव निकेतन डाली

ज़रिया शाह मसताना जी ये, साच्चाह सौदा धाम
मज़बूती करने का नींव की, होया पहल ये काम

कठोर सेवा

मसताना फ़रमाई सदा ही, बचन बहुत ये अनूप
बाड़ हो ग़र मज़बूत वरी तो, डेराह भी मज़बूत

बेपरवाह दुनयावी रूप हिँ, पुख़ता बाड़ कराई
साधुओं से ले सेवा निसि दिन, धाम ज़बर बनावाई

लोग अनिक लगे आने सत्संग, डेरा परगति पाई
पुर मस्ती बेपरवाह अदायें, प्रेमियां मस्त बनाई

दिन दिन लागी बाढ़न संगतें, थाऊँ परिं कम सारे
धन धन सतगुरु गूंजते नारे, देखे अजब नज़ारे

रहते शाह मसताना गुफ़ा हिँ, पूरा दिवस औ रात
रातीं निकसत गुफ़ा अनाम से, आखिरी पहर हि आप

एक ही लेईं चाय पिआली, मज़लिस राति लगाते
बातें इश्क औ प्रेम लबालब, गूढ़ी बहुत सुनाते

उड़ जाती आँखों से नींद ही, मस्तीं सब खोइ जाते
सो जाता जो मन की कचाई, बाहर धाम कराते

करता जो परजास था सोने, सोने ही नां देते
लेने वाले निदरा खराटे, ज़बर सज़ा थे लेते

अंदर आने का हि नां उनको, हुकुम कई दिन होता
जीव दुहागा ऐसा दिनों तक, बाहर ही था रोता

प्रेमी करते रो रो गुज़ारिश, दूजे प्रेमियां रोज़
पर अंदर आ सकता हुकुम हीँ, बेअ परवाही मौज

वरना दिन कई हफ़्ते महीने, बाहर निकल हि जाते
थी बिन हुकुम मज़ाल ही किनकी, अंदर डेरा आते

अक़सर आप वचन हि थे ऐसे, सतसंगों फ़रमाते
अंदर असर अथाह कर जाते, बाहरीं मस्त बनाते

लंगर हो जाता सुरू राती, तीन बजे के हि बाद
बनती सूखी रोटियाँ ही बस, भाजी न कोई साग

मसताना जी सबन ही देते, रोटी थूरी थूरी
भूख ही रहती न बेपरवाह, सदके नज़रां नूरी

नान्हें नान्हें टूकरे रोटी, लेयते इन्हीं खाइ
मिट ही जाउती भूक जनम की, रूह की चिर तिरसाइ

भूख और तिरसाह का पूरा, दिवस न आता ख़िआल
मौज ए सावन शाही होया, देखन ऐसो कमाल

सख़ती का था समय वो भारी, जीव जु डेरा रहते
रहते साधो डेरा बस वही, सख़्ती पूर जो सहते

वरना लाखों आये वहाँ पर, होइ गये वो रवान
ठहरे उत बस जीव रूहानी, मसताना शा निज़ाम

रातरी इक शा मसताना जी, तीजे पहर के पार
बाहिर गुफ़हा आइ बचन दिये, सतसंग हीँ साकार

सिमरन और भजन वरी साचा, साथी होइ तिहारा
गूंज से होइँ काल भी बहिरा, दरग़ाहि ये नगारा

हिम्मत काल नां होइँ दोबारा, रोकै मारग आई
ये ही सबद जो सुरत तुम्हारी, सबद हिं साथ मिलाई

गुरमुख़ता

गुरू की ओर लगाव

आया एकदा डेरा अंदर, गाँव का नंबरदार
ले बंदूक का आया अपने, साथ में इक हथियार

मसताना अबलोकिया उसको, माना बहुत अचंभा
पूछे मसताना जी वरी - ये, साथ क्या लाइँ टंबा

नंबरदार बुझाई कि बाबा, ये बंदूक कहाई
दुसमन नीरे आवै जो कोइ, गोली देइँ चलाई

मसताना हँसे खिलि खिलि जाइ, पूछा काल भी निकट न आइ
नंबरदार नां कछु फ़रमाइ, चुप से खड़ा शाहा कु लखाइ
(चौपाई)

तबु मसताना जी फ़रमाई, करले ज़िंदा राम कमाई
सिमरन भजन सु उनहिँ जगाई, दुसमन से हर तोहिँ बचाई

अंदर ज़िंदा रामा जागीं, दुसमन तेरे निरे न लागीं
सामुख काल करै क्या टंबा, नाम की गोली सु कर लंबा

काल कु नाम हि गोली गिराइँ, टंबा तेरा काम नां आइँ
करले सिमरन जपले तु नाम, करसी हिफ़ाजत ज़िंदा राम
(चौपाई)

डेरा सच्चाह सौपा सतसंग, होया पहल ये काम
मनमुख प्यासी रूहों को दिया, गुरुमुखताअ का जाम

कर दिया मसताना शाह सुरू, बख़सिस नाम का दान
अब लौंअ अरुझे करम कांड जो, गुरुमुख होये तमाम

आडंबर सब तजि तजि बाहरी, पहुँचे आ सतोधाम
होई गयी थी गुरुमुख तबु लौं, मनमुख रूहें तमाम

अगिया धधकती करम कांड से, जीव बचाउने साफ़
कीयो मसताना शाह भारी, बहुताअ ये परयास

जोड़े झाड़न वाले सदेही, सेवादार के हाथ
धाम अनामी ताक़ते मौला, तरियो सब ही उसात

बिछ नां पायी बिसात काल की, सनमुख ताक़त नूरी
पार उतारन जीव शहनशाह, कीये जतन ज़रूरी

सीधी सादी सिंधि पंजाती, नूरि आपकी बानी
अलस्ती भरे बचन ख़रेह की, संगत होइ दिवानी

बरख़ाअ अमरित करीं अनामी, रूहें सब असनानी
भर्म सरीर को मायाह के मृत, लोक तेंय धुर धामी

लेय जाने का अनथक जतन हि, लागे करने फ़ानी
गाती नारे लाती इलाही, संगत हुइ मसतानी

सोचें धिआन लगाई सोचें, बर ही अनोखी बात
सन उन्नीह सौ अरताली सेइ, लौं उन्नीह सौअ साठ

सतसंगी बने बरस हिँ बारह, केतिक सहसरी लाख
बग़सिस नाम ले कुछ सौभागे, पढ़ि गये क़लमा पाक़

मनमुख सों गुरुमुख के बीच के, दरवाज़े वो ख़ास
पार होंयी बनिं गुरुमुख पायौ, मंज़िल नूरी हयात

दर से इस जाने ताँइ उस दर, पार अमेय सतधाम
इसमें है लेना ये ज़रूरी, असथूल एक विराम

करता है थिरता की मांग ये, कछु पल और कछु आन
आख़िर होत है क्या ये गुरुमुख, है किस शैअ का नाम

गुरुमुख होना मानुख जात का, आख़िरी ख़ास मुक़ाम
अनुरत होइँ क़लमा ए सतगुरु, गुरुमुख पाइँ वो धाम

रहना मनमुख काम है लानत, कह गये संत अल्लाम
मुरसिद धारना बिन गति नाहीं, कथयो सरब आवान

मसलेह इस ठहराव बहुत हैं, पर न जवाब अलआन
बेशक रहयो जवाब न अजहद, इन सवालात अमाम

सब ही जवाब छिपे थे मानो, मसतानाह मुसकान
पर था समरथ को जोइ बूझै, भेद ये गहन अनाम

अंग है हर मानव के जीवन, का असथूल बीराम
कबहुँ आयीं ही जावै मानुख, जीवन ही ये मक़ाम

जब गुरु मानुख रूप समुख कभी, निज को पावै अमाम
औसर है गहराइ बिचार का, करना कौन है काम

होयीं सरन तू क़ामिल मुरसिद, पावै पुख़ता अमान
छूटे फंदाह आवन जावन, रहवासै सतोधाम

पेचीला सबसु काइनात की, रचना जगत पसारा
रचना मोहिनी इतौ फ़रेबी, जीव करत नाकारा

पायी इनसांह सबब इसी ही, तेज़ अक़्ल ये तर्रारी
ज़िहन करीं उपजोग ये तेरा, मुरसिद पाइ गफ़्फ़ारी

होई जमघट खड़े ना बदलै, ये तो भेड़ की चाल
बल्कि लेअ वीराम ही समझ तू, साथ बिचार के भाल

वरना कवल बनाने नां लाइँ, देर ये काल सफ़्फ़ाक़
चारों युग हीँ पुरुख औतारी, संत कबीर के साथ

माना मक़सद महता फ़कीरां, साचे गुरु की तलास
मुरसिद चोख़ा ही की सोहबत, मंज़िल पाये हयात

लग जाते हैं जनम अनेक ही, पहुँचन रहबर ताहीँ
उसके क़ामिल क़लमें को तबू, साँस हि साँस पकाहीँ

खोलना गाँठ अनामी भी इक, पाइँ महला इलाहीँ
लेकिन सतगुरु है बड़ा दयालु, पल पल मिहिर दिखाहीँ

भेदी येह दुरलभता सतगुरु, राहिँ दरगाह पाहीँ
चलता हुकुम ही जीव रहै तो, धुर हि सचखंड जाहीँ

धन धन राजा जनक, जिन सिमरण कियो बिबेक
एक घड़ी के सिमरते, पापी तारे अनेक
(कबीर दास)

अनगन दरब ईलाही अपने, की करीं खर्च कमाई
जीवों पर रहै करत आपुने, किरपा मेहर छाँई

औसर औसर मिरतू लोक हीँ, मानुख चोला आईं
जीव चेताये काल देस हीँ, दरगाहा मग लाईं

पापियाँ बदले सिमरन पल ही, धाम अगम ले जाई
जीव सकल के कटें करम सबू, सोबत सतगुरु पाई

इस ही वास्ते अनिक गरंथ में, बारहा बोली बात
जीव को चेताया धुर भेदी, राखने अपने पास

होना चाहिये भेदी भी पर, काशिफ–ए–काइनात
वरना पक़सद होयीं अकारज, नां संदेह की बात

बीराजे ताकत इक सिरसाअ, दूजी बियास निवास
पूरन होने का है भेद ये, समझ लेइँ इशारात

जेता दे विराम है सोचना, ईलाही येह बात
लेना है इतना मन की, गहराई के हि साथ

क्योंकि कोबिद गिआनी व साख़र अक्ल से खोजीं ख़ल्लक़
पर ये भोले भाले ग़रीबी, पलयो नीचली जात

जिनकी सोच की मार हि छोटी, मारे होइँ हालात
जाहिँ कहाँ करें क्या ये मुफ़लिस, ख़ाक़नशीं फँसे पाप

मौज-ए-ग़रीबां

गरीबों के लिए मौज(लीला)

मौजे सावन शाह मसतानी, आई बलूचिस्तानी
फ़रमाते थे हम तो हमेशा, आइँ गरीबां खानी

मौज ये वास्ते बेकस निरधन, आइँ देह इंसानी
वास्ते आये गरीब न थाली, लोग बड़ों सु फ़िरानी

आई मौज कंगालां लेयीं, आजिज़ औ नादानी
सावन शाही मौज है आई, साहर हीँ मसतानी

शाहा बलूचिस्तानी ज़बानी, सबको कहा सुनाई
हमको काम बड़ों से नहीं कुछ, लेना क्या उन भाई

ऊपर लाने कौमां नीचली, मौज वरी ये आई
बोली थी वर सीधी शहनशा, सादी और सधाई

फ़क्क़र सूधी बातों हीँ अपनी, हुंकारी दी सुनाइँ
किश्ती सावन शाही इलाही, भेजी निरधनां ताइँ

सीधी फ़क्करी मस्ती भरी शाह, मसताना की भाषा
तोड़ा गरब हंकारी ऊँचे, फ़ेंका ऐसा पासा

सीधे सादेह निरधन जीवां, बंधाइ यूँ आशा
इश्को प्रेम की बातों बुझाइ, जीव सबु की तिरासा

नाम सबद देइँ जोत जलायी, बोल मधुर मन राचा
छोड़ि छाप दी हिरदै गरीबां, साथ बिसास दिलासा

मनमुख़ता से गुरुमुख़ता इसी, सफ़रे इंसां महान
पहला होयीं पड़ाउ शुरू जब, लेयी जनम इंसान

जातरा इस महिँ आत बहुत हैं, एक सु एक आलाम
टोहना रहबर साचा कामिल, अकरा काम इंसान

पहुँचना कुँआँ ताँइ है पहला, पिआसे का ही काम
होयीं गुरुमुख ही लई पावै, इक़राम ए रहमान

फ़िर है ये तो पिआस हक़ीक़ी, म़ग़रूरीह नां काम
दयालु और मेहरबां सतगुरु, करहीं ख़ूब इक़राम

पहुँच नां पाइँ उस तक जीव जो, पकरीं किरपा निधान
कीमती औसर देइँ बहुत ही, पाइँ इलाही अमान

इस ही बाबत संग परम सबू, पाउते मालिक नाम
करते हासिल संतांह, क़ामिल, सोहबत अगम मुकाम

हो परवरदीगार ही परग़ट पहुँचै तुम तक आईं
काम करेसी अपना सपूरन, जाल सु काल छुराईं

वैसे तो देहधारी रूप हिँ, हर ही जुग हुँ खुदाई
जनम लइ लइ इसी ही अपरा, जीवों को चेताई

पर यहाँ मौजे सावन शाही, मेहर ख़ुद ही आयो
मौज की इस ताक़त ने भोले, जीवां भरम मिटायो

फ़ौज ए कोबिद और अल्लामा, रहती डेरा बिआस
जाकीह थी दरकार जहाँ पर, भेजया उस ही पास

या फ़िर कहिये ख़ुद जाइ पहुँचे, बूझी गरज़ को ख़ास
संत परम कही मसताना से, मसताना सुनो बात

तेरा सतसंग होगा कभी न, पोथी ग्रंथ के साथ
टूटी फूटी बोली हि तेरी, साईं कियो अलताफ़

फ़क्क़र सूधी सुन तेरी बानी, संगत नाचे सरूर
बाबत इस अनआख़रे अपढ़े, पर बेलौसी ज़रूर

ज़िम्मेदारी नवाज़ी तिराने, जीवों की थी हज़ूर
मसताना रहे भले मदारिस, से कोसों हि थे दूर

हस्ताख़र करै औंधे अछर जो, मसतानाह मबरूर
की क़लम ए ईलाही केतिक, जीव कीये मग़फ़ूर

कांड करम की जौं, आहूतियाँ, पहले ही दे डाली
सच्चाह सौदा नामदान होइ, सत्संग अवलि निराली

दे दी काल को चुनौती, तीनों जग के वाली
जीव शहनशा सब कियो गुरुमुख, मनमुखता करिं खाली

गुरुमुख़ता के पाइँ कै मारग, कीयो करम बहाली
रंग दिये सबु रंग ईलाही, माया जाल निकाली

अंतर हो एहसासे अनहद, इसकु समझने माहीँ
मसताना जी जीवांह अपने, अनुभौ देन न चाहीँ

निसबत इसकी मन से मुक़ाबिल, होना उनकु सिखाहीँ
अनुभूति असथूल गरज़ नाहीँ, मोटी समझ बनाहीँ

मनमुख़ता का करीं मुक़ाबला, मन मज़बूती पाहीँ
गुरुमुख़ताअ से मनमुख़ता की, उपमा हि कोउ नाहीँ

भूख़े पिआसे रह कर सेवा, करने का ये विराम
है ये थिरता सत्संगियां दिया, मंडल भजन हि नाम

है ठहराव ये संगत में हो, मसती नाचना धाम
है ठहराव ये खाइ मार भी, रहना शाह के थान

राह गुज़र पड़े रहना रोज़ हि, जाइ परै शाह ध्यान
ये ठहराव मिलैह मसताना, की फ़टकार रोज़ान

ये ठहराव बनाइ इमारतें, सुबहा गिराना शाम
ये ठहराव दिखा करामतें, देना जीवांअ ज्ञान

ये ठहराव चेताना जीवां, दिखलावईं रहमान
इन ठहरावां गुज़रे हि जीवां, पहुँचते धुर ही धाम

ये ठहराव था सेव कठिन औ, सहना भूख़ व पिआस
ये ठहराव था करना सिमरन, और भजन दिन रात

उल्टी रमज़ फ़कीर की

सुन्दर बहुत हि पाठ की शाला, तलब मुक़ाबला ताइँ
पढ़कै मदरसा ये रूहानी, बेशक मिलहीं साईं

कारेख़ाना इसको अनामी, मसतानाअ फ़रमात
सूझी बूझी दियो यहाँ पैअ, भार ए करम निज़ात

पूछा कोउ सवाल ये इक दिन, सावन शाहा जुहूर
सेवा आपको चोख़ी लागे, कौनो वाली हज़ूर

पुत्तर बंदगी भजन की सेवा, लाउ शाह फ़रमायो
कीमती है बस सेव भजन की, सबनां ये समुझायो

शाह मसताना जीवां ऐसे, गुरुमुख़ता के राहा
सेवा संग बनाई पुख़ताह, रहयो भजन करावा

मन वो सीवनी जिसकी छेदहिँ, डोर भजन की पाईं
आत्मा के इस रेशमी चोल हुँ, उस परमात्मा साईं

फ़ुलकारी पै सबद की मीना, कारी रंग चढ़ाई
नगरे नाच सु काल के तुज्झ ये, रेसम चोल बचाई

सनमुख जोत ईलाही तुझको, मिलसी लानत नाहीँ
दाग नां लगने देना चोला, रखना इसकु बचाहीँ

कारन से इसी बनना गुरुमुख, लेईं नाम का दान
गुरुमुख होना राहे दरग़ाह लाज़मी सबसे काम

काँटे पांच से छलनी नां हो, चोल तेरा इंसान
तार तार होने से बचाने, राखहिं हर पल धियान

चोला प्रेम ईमांदारी से, लौटाना तुझे ठान
कोरा ले दरबार हीँ जाना, मालिक कुल ही जहान

कीन्हीं प्रेम से भजन बंदगी, की हि होगी कमाई
घेरै काल अहेरी कभी नां, होइँ दयाल सहाई

सतगुरु करहिं भरोसा आपुने, आँच न आने पाई
जोत अनामी सचखंड सनमुख, हो अफ़सोस न जाई

कहयो ये दरबार साहब में, बचन इसी को फ़ेरी
परेम पटोलो ऐसो दीजो, ढांकण को पत मेरी

रूप हिँ भजन ये प्रेम पटोला, पत तेरी भी बचाइ
प्रेम भजन सिमरन और बंदगी, पौड़ियाँ चढ़ता जाइ

वरना लाख़ चुरासी कुंडियों, में हि फँसया रहेगा
पार दुवारा करन ये सँकरा, साधना सब्द पड़ेगा

छोड़ जो मनमुख़ता को पूर हि, गुरुमुख रूप घड़ेगा
सबद और सुरत को एक बनाइ, मंज़िल अगम चढ़ेगा

मुसकिल नाहीँ भजन का बनना, बल्की बहुता आसान
समझो बस की सबसे कठिन ही, एक है ये ही काम

संतों के रहीं बचन सदातन, करना सतगुरु धियान
औंधे सीधेह उनके सारे, मानना हुकुम तमाम

संत परम के रहें जो हुकुमीं, बसर वो ख़ासो आम
बनया बना हि भजन है उनका, सतगुरु का ये क़लाम

बात यही बाबा जैमल सिंग, ने श्री सावन शाहा
लिख पाती में ज़रिया बचन ये, उनकू था भिजवाया

गंगा चलती उलटी फ़क़ीरी, अज्किया ये हि बताया
चाल भी संतां उलट दिसा ही, चलती ये फ़रमाया

उनकी सीधी बात भी सीधी, चालै नाहिँ लकीरी
जल गंगा–ए–बचन रूहानी, चालै तरफ़ फ़कीरी

ऊट पटांग बचन कु फ़कीर के, समुझीं मानन वारी
टकरावै कोइ एक हि आधा, सब तें बर दुसवारी

होत हुक्कुम है संत की नूरी, रसना निकसया तीर
गर्जना शेर की होवै जिसके, होयीं मुक़ाबिल बीर

नाहर होने वाला मुक़ाबिल, करताअ उच्च तक़दीर
हुक्कुम फ़कीरां परते निबाहीं, हिरदैय धारीं धीर

मानहिं हुक्कुम को चलना उस पै, नाहिँ इतना आसान
येह तो जीव अनामी का या, साधुओं का ही काम

जो उस पर करिं पूरा भरोसा, पूर ही इतमीनान
है बिसवास की दुसमन अक्ल ये, कहते आये अल्लाम

बाद बिबाद करत है अक़ल बर, मूल है येह अस्काम
कहत सयाने हुक्कुमे फ़कीरां, चलना नाहिँ आसान

संत महान अज़ीमो शान ने, है ये ही फ़रमाया
अक़ल जो है तो तर्क भी होगा, अकरिं खड़ा मुँह फ़ारा

इस हि लिये अक़सर ये फ़क़ीरां, कथया बारमबारा
दाग़ लगावे अक़ल ये तुज्झ हीँ, दिन ये इक अज़मावा

दाग लगा छोड़ै नां कहीं का, आयीं न अक्ल छलावा
सूझ बूझ लेय काम पिरानी, मुरसिद सरनीं आवा

दाग़े तुझ ये किनहीं बहाने, फ़ाँस चुरासी डाले
बचना दाग से है तो ख़ुद को, करदे उन हिँ हवाले

अपनी अक़ल दे भेंटि उसी को, वो हि आप संभाले
पर ये अक़ल लौटावै कैसे, कौन उपाय निकाले

पर इस ज़िहन से बचहीं कैसे, परयो बस ये लाले
दानिशमंद हि डूबते देखे, परयो अक़ल जु पाले

अक़ल से केहीँ छूटे पीछा, सीधे है सवालात
पीछे मेधा जीव रहै खड़ी, दिवस हो चाहे रात

काज करै जो अकाज हमेशा, ज्ञान वो ही कमज़ात
चाहै अगर तू टारिं अकारज़ चाल तू संतन बात

सोच बड़ी ऊँची है संत की, पार तुझे वो लगात
छोड़ नां पल्लाअ संतां क़ामिल, अपनी सारी हयात

ज़िम्मेदारी परमपिताअ येह, काम है ये करतार
ज़िम्माअ अग़र नां दीया उसको, जीव होयीं दुसवार

बंदे काल है पीछे हर दम, ज़ालिम अतिआचारी
क्योंकि अक़ल भी ख़ादिम काल की, करती है अभिसारी

छोड़ तू सब मालिक पै उस ही, भव जल से हो पारी
अक़ल हि पाछै दुनिया पड़ी जो, भुगत रही है ख़्वारी

इतमीनान करीं निजी अंतर, बीज परेम उपाई
पाहन माहिँ बोउने बीज के, सम हि शाह फ़रमाई

मेहनत और कुसलता सिल्प से, बीज उपाई पाये
पर बर सहजता क़ामिल संत हि, कारज ये करि जाये

प्रेम सौगात मिले नां यूँ ही, पोथी ग्रंथ बताये
जीव जो है राचयाअ मालिक, नज़राना वो पाये

पहुँचने पायीं इस मंज़िल तक, जीव को जनम अनेक
देनी पड़ती भगती की और, संचित करम की भेंट

सतगुरु मेहर दया हि जीव को, इस मंज़िल पहुँचाए
बरस असी असी सहसर वरना, भगति बिरथाअ जाए

जन मुनियां रिसी तपसी अनिक हि, काल चपेट हुँ आए
गिरि गये सारे मुहँ के बल वो, जनमों तक पछताए

परेम नहीं ये ऐसा वैसा, पायीं जिस हर कोई
इश्के मज़ाज़ी से बिलकुल हर, सूरत अलग हि होई

है येह ऐसा इश्क किसी जो, विरले लेख समाई
सहजो बाई उचरया जैसे, अंतर भावहिँ जाई

गुर की किरपा होइ तो होवै, नां होवै तु न पाईं
हाल हर इक ही रहना राज़ी, राखै जैसा साँईं

प्रेम अनामी की दरकार है, धीरज सबरो बिसास
इश्के हक़ीक़ी मदद करेगा, हुक़ुम जो रहियो नाथ

हुक़ुम रहीं उस अमल भी करना, सबन तें ऊँची बात
भजन तु उसका बनया बनाया, पावईं सतगुरु दात

जिसको नां हो भरोसा गुरु पै, नां हो इश्क भी साथ
मुसकिल है उसे हुक़ुम पालना, फंस रहे मख़्लूकात

मानन को सतगुरु का हुक़ुम ये, ज़िहन तु करत मनाहीँ
हुक़ुम ने राखा संत फ़कीरां, सरबदा चर्चा माहीँ

परख़ते रहते जीवां अपने, संत फ़कीर सदाहीं
उलटे सीधे हुक़ुम लगावईं, नित नव खेल खिलाहीं

बंधन दुनियावी नाहिँ रहते, संत फ़कीर इलाहीं
दरिया लोक हीं रहि के वो तो, जीव घरैं दरगाहीं

संतों ने रूहानी सदातन, अपने सिष अज़माये
परख़ने ख़ातिर कठिन कसौटी, औंधे हुकुम लगाये

लेइँ प्रेम औ इश्क का इम्तिहाँ, उनहूँ ख़ूब तपाये
औसर औसर दरज़ा ए नेह, जीवों को परख़ाये

जिसका प्रेम हो गूढ़ा जितना, मंज़िल उतनी पाये
गहरे पानी जिन हीं खोजया, मोती तिनहीं लाये

परेम इश्क गूढ़ा हो जितना, ऊँचा उतना बिसास
फूल हों जिस घर हीँ गुलज़ारां, परेम इश्क इफ़रात

हद ए भरोसा पार हो जाइ, काबिल वो ही सिफ़ात
मिट जाइ मनमुखता अंधारा, सतगुरु करै इश्फ़ाक़

गागर में सागर

बोली मीठी शाह मसताना, फ़क्क़ड़ता रंग माहीँ
रंगती जाती संगत सारी, मस्ती ऐसी समाहीँ

सीधी सादी भोली अदायें, जीवों को थी भाहीँ
बोझ नां धरयो गूढ़ताह का, राह सरलता पाहीँ

सीधी बोली आम मिसालांह, जीव सभी समुझाहीँ
मौके पै मौके की बात कू, बोलन चूकत नाहीँ

गहरे राज़ सरलता से बड़े, जीवां देयीं जाई
नाम दान की पहली हि सत्संग, संगत बहुती आई

बगसी नेमत नामदान कईं, राहे मालिक लाई
बसतू नां साधारन सबद ये, माहीँ इस हि ख़ुदाई

लोक मिरित महीँ समय समय पै, संत रहत उतराईं
भोले भालेह जीवों को इस, काल पकर सु छुराईं

परेम अथाह छुपा है गुरु का, नाम की इस बक़्सीस
फ़ूल को सींचे नामदान के, प्रेम अथाह गुरु ईस

फ़ैली जा रही ख़ुशबू इसकी, चार तरफ़ सबू दीस
हो दीवाना रहि गया हर इक, परेम ग़मक जगदीस

मौके पे कहते मौकेह की, रहत अछूते न सीष
बात हिँ बात थे जाते कहिं सब, कोई न करता टीस

ख़तरा था हमले का पाक़ के, फ़ौजें सिरसा आईं
मंगाराम दयाल बाग़ महीं, फ़ौजी थे ठहराईं

फ़ौजी आते डेरा हिँ अक़सर, देखी सब चकराईं
हैरां और परेशाह फौजी, समझीं कछु नां पाईं

चलती रहती डेरा हिँ सेवा, होउन ख़तम न जाईं
जागना करना भजन बंदगी, सेवा से न अघाईं

सोचते फ़ौजी देख हमेशा, हैरानी बड़ी साथ
ताक़त ऐसी कौन है इनमें, काम करत दिनों रात

फ़ौजी सोचते रोज़ देखकर संगत सेवादारी
लागत है अधिसासन साधुआं, फ़ौजी से भी भारी

दौरां इस थे फ़ौजी बने बहु, नाम सबद अधिकारी
अफ़सर करनल साब भी लाये, साथ रहे इक बारी

सामने हाज़िर हुइँ मसताना, रुतबा ज़ाहिर दारी
बोले अफ़सर ऊँचा फ़ौज में, सच्चा अरु वफ़ादारी

मसताना जी जोश में आके, इक दम ये फ़रमाये
तुम कंगाल कंगाल कंगाल, तीन दफ़ा दुहराये

उनहिँ साथ दो अफ़सर और भी, सबके मुख़ मुरझाये
चेहरे थे गये उतरिँ सब ही, दिलगीरी थी छाये

पुत्तर लागे होंगे सबद बुरे, देख हंकार बुलाहिं
कंगले असल हिँ हम सब जगते, मौलाह नाम बिनाहिं

मालिक ने वरी तोहिँ फ़ौज का, है सुलतान बनाया
लाम है सगरी हुक्म पे तेरे, चालीं ज्यों तु चलावा

मालिक बक़सयो आन बान वो, ऐंहि रुतबा बढ़ाया
रहमते मालिक़ क़दर करी क्या, तूने अलग छलावा

शाही तेरा ठाठ बाट येह, नित नां रहने वाला
जायेगा तू खाली जहाँ से, दोनों हाथ पसारा

सरमिंदा होना पड़े तुझको, आगे सीस झुकाई
ख़ातिर देन जवाब तू मालिक, ख़रचा लेइ जुटाई

तुझको शान हि यहाँ की तेरी, देगी आग लगाई
जीवन बुलबलियाह पानी की, एक निमिख हिँ फ़नाई

कोई भी हवै रुतबा तेरा, काम वहाँ नां आई
छोड़ी भरम को सिमरन कर तू, मारग आगम जाई

करना सीख ले शुक्रिया मालिक, सीस नँवा अदबाई
जिसने बक़सी अक़ल तुझे उसी, मालिक से लिव लाईं

सतगुरु के दरबार हिँ अदब से, होयी बिना हंकार
भजन बंदगी सिमरन नाम की, हाज़िरी दे तू डार

वरी – नां तेरे पास खज़ाना, नाम का उस करतार
बात पै किस तु ऐंठता मूरख़, कुछ तो बूझी विचार

दरग़ाह ऐ मालिक तुम जैसा, न ही कोई कंगाल
मसताना को आता नजर है, तेरा कुसल नां हाल

ठाठ बाट शाही होइ जावै, इतहिँ तेरा पामाल
ख़ाली हाथ है बैठा इकदम, उसके ज़र और माल

कह दी बात जो मौके की थी, बात मुका दी सारी
सुनहिं अफ़सर बात ये हो गये, सारे शरमो सारी

सीधे सादे फ़क्क़रे ढंग से, बात ज़िहन में डाली
बेबाकी थी बेपरवाह की, संगत देखी भाली

बातें गूढ़ी और बड़ी बड़ी, औसर उचित निहारी
साधारन जीवों को सरलता, दी बूझाइ बिचारी

साधु जीव परेमियों को सबू, समझाने के ख़िआल
करते दूसरे जीव हमेसा, थे वोह इस्तेहमाल

वो करिशमे नमूने मिसालें, बहुत बने हितकारी
होते अक़सर उनकी नज़ीर हिँ, सेठ और अधिकारी

बीतन साथ ही बेला था तब, ऐसा भी दिन आया
ठहरी होई फ़ौजों को गया, वापस था बुलवाया

जाने वापस छावनी आया, हुकुम जो फ़ौजों पास
डेरा थे मसताना जी नाहिँ, फ़ौजी होये हतास

फ़ौजी दरस बिहूना भयो सब, अंतर सेह ग़मगीन
करना मुसकिल बहुत बयान ये, हालात ए मिसकीन

फ़ौजी लौटती बेला कुछ थे, आयोह लाईं आस
मन मायूसी झलकती मुख पै, चेहरे फ़क व उदास

छाई थी सब मुखन पै खिन्नता, मन था बहुत मायूस
जड़ चेतन सबू लगत रहा था, रीता और मनहूस

करते उनसे बात थे कुछ पर, मिलता कुछ ही जवाब
निरासाअ और ज़बर हतासा, होयो जेहन ख़राब

दिलग़ीरी लखिं फ़ौजी जीवांह, छाया धाम उपताप
जदपि धिआन बटाउने उनका, साध कीयो परजास

होई नां सका कामजाब पर, उनका ध्यान बटाना
टोह रही थी आँखें तिहीँ सब, जैसे शा मसताना

टरक चढ़िँ लगे जाउने फ़ौजी, आंसू थे भर आये
रोते रोते रूंधे गले सब, ज़ोरहिं नारे लाये

खिज़मतगार परेमी व साधो, देखी प्रेम अथाई
निरखि गहरा परेम रहे दंग, और अजीब बिदाई

हक की कमाई

होया डेढ़ बरस बने डेरा, मसताना फ़रमाई
रात दिवस चली सेवा अब लौं, कोइ कसर नां पाई

वासर सेवाअ की तन मन से, रातों नींद गँवाई
खिदमत सबन जो अब ताँई की, लेखे सतगुरु लाई

देउँ नाम ख़ुमारी ख़ुराक़ अब, अंदर छाल लगाई
सदके सतगुरु इस ही सहारे, जाइ मिलसों साँई

माहीँ सिमरन पातशाह साचे, घड़ियाँ अब हम लाई
सावन शाहा निसान बनाया, बागड़ देस हिँ आई

मौन रखेंगे अब हम सकल ही, सतगुरु घट हीँ ध्याई
करके इब्तदा मौन रूहानी, शेष करम निबराई

जदपि भजन मंडलियाअ को भी, सिमरन रोज़ कराई
पर इस मौन रूहानी ने की, बातिन ख़ूब सफ़ाई

होता प्रसन न पैदा नाँह का, कोइ हुकुम नां टारा
चाहते देवन प्रेमी जनों कु, नई बिचारी धारा

सिख़लायी मसताना की बड़ी, अदभुत रोचनहारा
काबु बहुत था जीव ख़ुराक़ पै, देयीं अल्प आहारा

बार अनेक था जलता चूल्हा, ख़ाली धूकरा जाइ
भूख़ेह सेवादार धुँआ तकिं, जाते सबू हरसाइ

सेवा दुसकर थोरी ख़ुराक़ां, फ़ौज रुहानी बनाइ
भूख पिआस भी धीर सु सहते, बंदगी भजन रहाइ

लखते हि धुआँ भूखे परेमी, सबरे आँखें फ़ारी
कहते संगतां मसताना जी, हिम्मत नां वरी हारी

पुटरो लंगर आवसी अबहूँ, चालि रही तैयारी
देखो धुआँ जलता है चूल्हा, थोरि करु इंतज़ारी

देते सगरा दिन यों निकारी, कबहुँक रातें सारी
करते जल्दी देने ख़ुराक़ नां, कैसी हो दुसवारी

क्योंकि देत ख़ुराक़ ये जीव को, निद्रा काल की डारी
सिमरन भजन को खा ही जाती, ग़फ़लत आलस भारी

मसताना जी आइ आवेस हिँ, अलग़रज़ी नां बिचार
तन से तन और मन से मन का, कम्म ले हो होसियार

करिहिं सेवाअ तन के साथ तू मन सिमरन देउ डार
बाबत सफ़र रुहानी खुराकां, होउ चश्मे बेदार

टुकरा हक़ो हलाल का इक जो, दूजे कम हो ख़ुराक़
ख़ा बस इतना वासते जीने, चालै सवास अवाक

भोजन का कियो तय मसताना, समझीं तौल औ माप
आधा पाव हि चून की रोटी, मिलयौ कठिनता साथ

दलिया या इक वक़तीह खिचड़ी, रोज़ाना मिली पात
मिलता नाहीँ इसके सिवा कछु, सेवा तोड़ती गात

चाय बहुत कम थे बनवाईं, पर सबना पूरी आ जाईं
अठ पहरी लंगर थे पकाहिँ, जदपि रासन कम भी था नाहिँ
(चौपाई)

बूंदी ढेरुँ कमरे अघाते, जानवरों कु मिठाइ ख़िलाते
सेवादार जु सेव लगाते, दाना एक न उनकु चख़ाते
(चौपाई)

काबू ख़ास था सेवादारों, की रोज़ाना ख़ुराक़
कहते थोड़ा ख़ाई हि पायीं, रूहानी मंज़िलात

मसताना जी ये फ़रमाईं, जेते खाली उदर रख़ाईं
भरत पदार्थ से नां ये खोली, उसकी रहमत से भरिं झोली
(चौपाई)

मसताना जी हाथ से भावै, टुकरा आधा ख़िलाइँ
सेवादार प्रेमियाँ जनम की, अभिलासाअ मिट जाइँ

मस्ती में आईं दिवस सकल ही, हाड़ तोड़ करिं सेवा
सदके नज़राँ नूरी शहनशा, मिलता सबकू मेवा

साधो सेवादार परेमियों, कु रहता न ये धिआन
कि ख़ाना लंगर भी है उनकू, रहते करत ही काम

धारन मौन का मसताना शा, दिये हुक्मुम यों लाई
चाहत मसताना शाह साधो, अगिली मंज़िल जाई

रूहानी रिशता

आध्यात्मिक संबंध

हुकुम मौन का लाई कै अजहुँ, अनभौ अनिन कराईं
पाछै मौन के बीस दिवस ही, अगिला हुकुम सुनाईं

साधो उत दौरान इसी सबू, सिमरन भजन कमाईं
चलते फ़िरते बैठते उठते, सिमरहिं सतगुरु साईं

सिमरन भजन वा सुरत बंदगी, राचोह उस करतार
दरसै मारग मौन समाधीह, अखन अगम निराकार

होते ही परवेसाह अंतस, औसर या मिलि जाईं
बाहिर मुख इस जाल सों सगरे, निमिख निबेरा पाईं

अंदर झाती मारो पिआरे, मिटि जाईं ये दूरी
ताथैं ही ये मौन है रखना, साधो बहुत ज़रूरी

प्रेमी इक परिवार कु नगर के, आये सिरसाह धाम
ईसर दास व रामचन्द्र और, साथ थे मसती राम

मसताना जी चल दिये लेयीं, संगत सारी तमाम
बाहिर डेरा पसचिम की दिसी, बहुतेह बिरछ सघान

मैनेज़र और छोड़ीं मास्टर, अंदर डेराह काम
पहुँच कै बाहर थाउँ हि औझर, दीयो सबू फ़ुरमान

भजन करो सब अलग बिलग हुई, पूरा लाइँ धिआन
उतरोगे गहराइ हीँ जेते, पावसों ज़िंदाराम

घंटाअ डेढ़ भजन सिमरन हीँ, पाछै येह फ़रमाइँ
आइ गये दरबार पातशाह, चालीं हाज़िरी लाइँ

करसों सतसंग थाउँ सिकंदर, पुर सतगुर जग गाईं
पाँउ पाँउ चल निकले सिकंदर, पुर हि सब संगताई

सिमरन चलते चालते करयौ, रहयौ नां बतियाई
पाँच हि साथ था मील सफ़र ये, पर सूरज असताई

संग शहनशाह भूख़ लगी नां, सुध हि प्यास की आई
चाहै जी चलते हि रहें संग, मसताना शा साईं

पहुँची कीया वहाँ पै लंगर, प्रेम सु सरब हि ख़ाया
थाँह सीकंदर पुर फ़िर बाहर, इक चौपहल बिठाया

सिमरन भजन व बंदगी करने, का आदेस सुनाया
सजदा करिं चौख़ट दरबार में, था परबेसा पाया

अजब धीरता और सुकून का, अनभौ घट था आया
पाछै आधक घंटा लगाते, नारे सब्द ये गाया

धन धन दी आवाज पई आवे, गुरु जी तेरे मंदिरां विचों
सतगुर दी आवाज पई आवे, गुरु जी तेरे मंदिरां विचों

सिंग सिरी हरबंस जी साहब, ज़ादे शाह सरकार
संग प्रेमियों के थे सुन रहे, रेडियो सु समाचार

माथा टेकयो मसताना जी, सामने सब परिवार
दीया नारा लायीं बुलंदी, धन शाहा निराकार

लख़िया नूर ए मसताना जब, साहबज़ादे अनाम
लीयो परख़ पहुँच मसतानाअ, कौन रहीं थे मुकाम

पूछ लिया मसताना बताओ, कित से अभिमद आयो
बगसीसे बापू हि ख़ुमार ये, मसताना फ़ुरमायो

बापू के तुम तीन हो हाज़िर, बेट जानिं ज़माना
पूत है बापू का इक ग़ैबी, जाका नाँ मसताना

चाहिं तुमने मसीनें खांड की, मिलियौं दुनिया जाना
मांगा मख़न मलाइ सु नाम ही, ये मुफ़लिस मसताना

दिन दूनी और रात चौगुनी, सच्चाह सौदा माहीँ
नाम ख़ुमारी साचेह सतगुरु, चढ़्यौ पूर कला हीँ

होइँ साधारन या घरबारी, सच्चाह सौदा जाहीँ
साधू होयी दरिया ख़ुमारी, जिन भी डुबकी लाहीँ

कीया चौख़ट जा जिन सजदाह, बचया बशर हि नाहीँ
निगहा वोह मसताना जोड़े, झाड़न वाले आहीँ

मस्तीह नूरी नज़रे फ़कीरां, जिन सौभागे पाहीं
सूधी मंज़िल हो गई उनकी, पहुँचे देस अलाहीं

जीव साधारन और साधु का, हाज़िरी फ़र्क मिटायो
सादे भोले जीवां शहनशा, पेश नमरता आयो

साधू यौं तैयार कीयो जो, ढलयोह सहज सुभाउ
देखो जैसे लागते वैसे, नूरीह मुख पै भाउ

मसताना जी बने नां भागी, आप कबहूँ हंकार
दीन समझते सब तें हि निज को, सबनां उच्च निराकार

दीया कांटा चुभने कभी नां, जीवांह सुभ हंकार
प्यार बहुत ही राख़ते रूहां, करते ख़ुद हि संभार

लागू की कुछ सख़्तियां ऐसी, थी जिनकीह दरकार
छोरै नां अख़लाक़ जीव कोइ, साध गिरै न आचार

कारेख़ाना मसताना शाह, माल हुयीं जो तियार
चाहै तो भी सकत नां कोयी, तामेंह खोट निकार

औसर मिलयोह लाभ उठाने, जीवां जिस्म ए फ़ानी
पायीं बेपरवाहा इनायत, होयो सब रूहानी

देयीं ख़बरेदारी बूझ हीँ, बातोंह सब अंजाम
देवन वाज़िब रूप ही ताँईं, होयी रहा था काम

ख़ाना हक़ औ हलाल कमाई, मसताना का पयाम
देते मसबिरा हक़ व हलाल हि, करनाअ तुम गुज़रान

मसताना की नज़र हुँ कीमती, शै ही नां थी जहांन
इससे ज़्यादा कीमती जितना, टूकर हक़ व ईमान

खाई हक़ व हलाली ख़ुराक़ हि, साईं ताइँ पुँचावै
यातैं संत सरबथा हर कोइ, ध्यान ख़ुराक़ हिँ लावै

महता अहम है गिज़ा मुनासिब, राहे सफ़र रुहानी
अपने ही मतलब के मुताबिक़, हक्क़ हलाल की खानी

नफ़्स रूहानी गिज़ा अनामी, मंडल अगम पुँचावै
लूट ठगी बेइमानी सु खाइ, रिज़क नरक हिँ धिकावै

अनूठा फकीर

अनोख फ़कीर

बाबा संत फ़रीद बरस कई रोटी काठ की ख़ाइँ
दीन्हा छोड़ी पाछै सलिल भी, बस पवमान जीवाइँ

मसताना शाह बेर बहुत ही, बातें ये फ़रमाईं
कम ख़ाऊ कहूँ बात भले की, बातां अमल कराईं

करना सबर खुराक हीँ थोरी, भीतर एक सिख़लायो
घोरा मन करि काबू खुराक हि, पूरा ध्यान लगावो

इतना खा चलती रहें साँसें, भर न गले लों जाहा
खाऊ बस ज़िंदा रहीं ख़ातिर, जी नां खाने ताहा

हाड़ तोड़ चलती थी सेवाह, डेरा हीँ दिन रातें
सिमरन जागना भजन व मज़लिस, बहुती सख्त थी बातें

भार उतारने कर्मों के जहाँ, सेव कठिन थे लेते
मसताना जी साधुओं को थे, नेह बहुत भी देते

चरचाअ ये गुरु बसिस्ठ आया, रामायन में भारी
राम लखन सतरु और भरत से, दिन व रात ही सारी

सेवाअ बहुत कराया करते, मिहनत बे ही शुमार
बोलयो तब गुरु माता गुरु से, बालके राज कुमार

कमसिन उमर सु गात अबिगसाह, देखन मेंय सुकुमार
सेव कठिन नां इनसु लिया करें, करना तनिक बीचार

पतनी से गुरु बोले वसिष्ठ जी, औसर की मज़बूरी
करना हेत आगामी नौबत, है तैयार ज़रूरी

बाल ये खतरी जोधा भावी, जुध ही कौसल पाईं
वरना दूरी चालिं ही थोरी, डगडोली ये जाईं

होनाअ हर परिवेस मुक़ाबिल, सिख़लाउँगा मैं आप
भूख़े भी रहीं सीखना होइँ, नां ये लाज की बात

दरसन रन कौसल वा सियासत, सोलह हुनर के साथ
सेवा दुसकर अंग जीवन का, समुझीं हर हिँ हालात

बहुत कठिन लेते थे सेवाह, साधुओं सु मसताना
मन गुरु सेवा लाईं रखन का, लागा हुक़ुम रोज़ाना

सुमरिन हिँ रमीं रहियौ ज़बां ये, सेवाह तन दिन रात
छोडा मन जो अपरछन करसी, दहशतनाक उतपात

मन के घोरे राखना बांधे, रसिया भजन की साथ
पाला जाये घोरा नफ़स का, ईमांदारी ख़ुराक़

नूरी नज़र सु मसताना शाह, चेतयौ भूख व प्यास
परचंड भूख शमित कर देते, मुसटी चनक से आप

दौर–ए–मौन हो जाईं सख़्ती, पीने खाउने साथ
पूछाअ अगरिम मौन दफ़ा इक, जाईं साधुआं पास

करसों गुज़र ख़ुराक हीँ कितनी, कहि दो साफ़ ही साफ़
बोल्यो महात्मा नारायन सर, मसताना शाह नाथ

होवै पाऊ एक फ़ी मानुस, बनती तब कोइ बात
हाथ मैनेज़र ही के थे सब, लंगर इंतिज़ामात

इस ही सबब थे पख में रखने, कम से कम ही ख़ुराक
थे वे पाबंद बहुत उसूलाँ, सख़सीयत सु बेबाक

मैनेजर को सख़त हिदायतें, मसताना जी लाईं
कम से ही कम साधुओं को सब, खाने कु दिया जाई

इक दिन खीचरी सबज़ी इक दिन, इक दिन रोटीह दाल
दी जाइ अठ पहरी ख़ुराक थी, लंबा था अंतराल

चाये बीच बीच बना करती, लाज़मी ही मादाम
छाल उबालते कीकर की या, डालिं घिस दो बादाम

लाअ चाये में कबहूँ कबहूँ, देते दूध ही डाल
और कभी गुड़ लाइँ बाजार से, बीच में कुछ दिन टाल

लेता माँग जु गुड़ कोइ खाने, चाये उस न पिलाते
कद्दू घीया टींटे वा दूजी, सब्ज़ियाँ धाम लगाते

नाहिँ हुक़ुम था पर ये कोउ भी, सब्ज़ी तोड़हीं खाता
करता हुक़ुम उदूली वहाँ जो, बाहर कीया जाता

भरने सबर वा तोस साधुआँ, जाता ये किया काम
महती ख़बरेदारी करायी, जाती भजन और ध्यान

सेवादारां मसताना शाह, हरदम ये समझाते
पुत्तर औखे सौखे जनम येह, कट लो थे फ़रमाते

सेवा सख़त भजन और मज़लिस, हर पल हर घड़ी लाइँ
दरग़ाह में फ़िर ही सुख है, भोगोगे उसे जाइँ

खाना पीना अपनी किरत का, अपने हक़ की कमाइ
सच्ची भजन और बंदगी तब ही, समुझो जीव ने पाइ

धीरज सबर की मस्त फ़कीर थी, दी येह ऐसी दीठ
बहके जीव न आगे चल कहीं, दी इस ताँइ ये सीख

मैनेज़र जी की सेवाह थी, लंगर घर से जुराइ
थे वोह मुख़ता उसूलों नियम, हद से आगे हि जाइ

दौरां मौन प्रथम किया रासन, पाँच छटांक तैयार
धीरे-धीरे जगहा पाँच की, कर दीया उसे चार

करते करते हि आध पाव फ़ी, साधू रासन लाया
रासन को घटवाइ जगहा उस, पानी अधिक पिलाया

पर सच मानो आनंद तामें, रूहानी हि समाया
भावै पीत थे जल ही कोरा, पर न डोलती काया

मन की ख़बरदारी

माया के प्रति मन का सचेत रहना (सावधान रहना)

हुकुमे शाह मसताना था ये, दिन हिँ सेवा दौरान
साधु अकत ही कीया करेंगे, घंटा एक आराम

लेकिन रात को सारी करना, सिमरन भजन ज़रूरी
रात हिँ जागने पर हो जाते, खुश मसताना नूरी

देते थे शाबासी उनको हि, जागत रात जु पूरी
बूझाईं कि रहत है रात हीँ, सतगुरु महर हुज़ूरी

रहमत बग़सत सेवाहदारां, करते वोह अक़राम
सेवादार भी थकते नाहीँ, करत ख़ुमार हीँ काम

होवत जागना रातों को इक, आला बहुत खज़ाना
बचन थे बारहा दुहराइँ ये, बेपरवा मसताना

चेताइँ नित साधुआं सोवते, बेड़ा हवै नां पार
जाग खुँराटे मार नां सोणा, नाँह तेरे दरकार

रखने फ़क़त जगाये हि साधू, भोजन कम हि रखाये
कारन इस ही कायदा देने, ऊन ख़ुराक बनाये

आत रहा रासन ये सख़्त बड़ी, सेवादारां सेवा
तोस सबूरी हक़ का हि खाना, बन जाता ज्यों मेवा

साधु कुछ इक काट के लकरियाँ, बेच बज़ार हिँ आते
सूख़ा गोबरू पसुओं का कुछ, बीनी रोज़ हि लाते

सेवा औखी हक़ व हलाल ही, रासन साधू खाते
वो भी बस रहा नाम का हि था, उस हिँ सबर थे पाते

सतगुरु सदके डोलती नीत न, भूखे भी रह जो
दरसन पा मसताना न दूजा, मन बीचार बनाते

नां थी बात ये दूर दूर तक, परजन खाना कमाइ
लेगी ग़ैर कमाई लूट तुज्झ, बेपरवाह फ़रमाइ

खायीं हक़ जो पराया तो मन, बेकाबू होइ जाइ
पटकैगी कहीं तुझको कमाइ, पापों की ये पराइ

बदनीती बे हक़ी कमाइ सू, तौबा कर लो गाढ़ा
राख़ना काबू माहीँ मन ये, ख़ाला का नां बाड़ा

सुलतान बाहू

दिल बाज़ार ते मुहँ दरवाज़ा, सीना शहर डसींदा हू
रूह सौदागर नफ़स है रहजन, हक़्क दा राह मरींदा हू
जाँ तोड़ी इह नफ़स न मारें, तां इह वक्त खड़ेंदा हू
करदा जाये वेला बाहू, जान नूँ ताक मरेंदा हू

मन

मन है जीव अभ्यासी वासते, बिकट रुकावट भारी
मूल है मन ही तरहा तरहा, बिसया पाप बिकारी

जीते बिन इसे मालिक पाने, का मक़सद हि अधूरा
राहे प्रीतम रूह सौदाग़र माल रूहानी पूरा

राहजनी करिं लूटने वाला, मन ही है हरजाई
चाहे अगर तू मारग इस पै, ज़ाये वक्त नां जाई

रूह बचाई कै तू आपनी, मालिक घर पहुँचाई
जीत ले चिलबिले मन कु पहले, समझु परीतम पाई

मन को ज्ञान की मथनी बिलोइ, पा सुख तत अबिनासी
मन के संग लरै जोइ सूरा, जीत जगत वो जासी

आदि ग्रन्थ

धन गुरु नानक देव कहयौ सच, सूरा वा हि कहासी
मन जीते जग जीत है बंदे, मन हारी मुक जासी

देते हुइँ उपदेस मौलाना, रूम यही फ़रमाईं
बाढ़े दरद न दुःख कभी तेरा, ख़ा तू नेक कमाई

भगतीह वास्ते नेक़ कमाई, हक़ हलाल की खाई
पैदा होइ इस ही ख़ुराक से, तुज्झ में नूर ख़ुदाई

बुल्ले शाह साईं ने बड़ी ही, फ़क्क़रताह फ़रमाया
भार बढ़ावे करम का अपने, खाये हक़ जु पराया

बाज़ी जीती होइ जुए महीँ, बेशक है वो हराइ
खावै छोड़ि हक़ वा हलाल की, नावाज़िब जो कमाइ

अजीब नज़ीरें

अनोखे उदाहरण

एक सितंबर उन्नीसौ उनचस, के दिन हुकुम लगाये
जानिब शहर पकीह ईंटों से, गेट बनाया जाये

साचा सौदा ईंट पकीह से, होवने वाला काम
पहला पहल था इससे पहले, कच्चाह डेरा तमाम

दरवाज़ा बना पक्की ईंट से, दिलकश आलीहशान
दरवाज़े की मेहराब रही, भारी शोभाहमान

छोटे छोटे मेहराब पैअ, शेर दिये दु बनाईं
लंबी थी फुट तीस तीस दोउ, पख दीवार चिनाईं

उनकेह ऊपर मन मोहक सी, खड़ मीनार कराईं
जिनमें सुंदर लकड़ी का बड़ा, दरवाज़ा लगवाईं

सुंदर मीना कारी सु जिस की, सुंदरता बढ़ी ख़ास
दरवाज़े के पाटों दोन की, चौख़ट के ही साथ

खड़ दीवान पे उसके दोनों, ओर ही लिखया साफ़
सच्चाह था इक तरफ़ लिखा हुआ, सौदा दूसरे हाथ

बनवाने का शेर दु गेट पै, मक़सद था रहा ख़ास
मतलब शेरों का इनसान की, आँखों से था मुज़ाफ़

लिख दिया इस पे कि है नक़्ल येह, रूह के पहल मुक़ाम
दोनों ही आँखों के बीच ये, कमल सहसदला नाम

रूह कु पड़ता है यहाँ जाना, छोड़हीँ जिस्म–औ–ज़ान
रूह की पहली जेल ख़तम हो, जावती छोड़ अज्साम

मसताना शाह की फ़ितरत थी, गूढ़ सु गूढ़ेह राज़
बातों ही बातों कही जाते, होत रहीं जबू शाद

क्योंकि मसताना जी थे अनपढ़, सीधे साधे सुभाउ
छोटी जात के सेवादारों, संग बड़ा था लगाउ

लोग धनी और ऊँची ज़ात न, मसताना को भाते
कौन उठाये करम भार वरी, इनके भारी ख़ाते

बाबत उमरा अमीरां शाहा, मसताना फ़रमाहीँ
जीवों को अपुने बेपरवाह, समझानें के ताहीँ

ज़रियाह आसां सहज मिसालां, बातें सब समझाईं
पंछी अगन वा जानवरों की, तसवीरें बनवाईं

एहसासे इंसानी दुख इन, तरक़ीबां करवाईं
मक़सद क्या इंसान का असली, मंज़िल कैसे पाईं

तसवीरें दीवारों पै रहे, जीवों की छपवाई
जुड़ते तस्वीरों से पयाम ही, नीचे उनहिं लिखाई

ज़रिया मिरिग शहनशाह जी थे, राज़ यही ज़ाहिराइ
कसतूरी ए नाम छिपी हुई, अंदर इंसां बताइ

पर इससे अनजान ये इंसां, तरज़ मिरिग भरमाया
कसतूरी ए नाम ईलाही, छोड़ि जगत की माया

भागता फ़िरता जगहा जगहा, मिरिग तिरिसना आया
फ़ेर हिँ जूठी मिरिग मरीचका, जीवन बिफ़ल गँवाया

नाम की कसतूरी न तलासै, भीतर अपने जाई
ज़रिया मिरिग दीया क्या ख़ूबी, मनमुख़ को समझाई

साहिब तो तन में बसे, मरण न जाने तास –
कस्तूरी का मृग जों फिर फिर ढूंढे घास

मानुख वेह जिन गीद्ध सुभाऊ, उनहूँ था चेताया
हाल कीया उन जीव बयाँ जो, माल पराइँ उड़ाया

पंछी गीद्ध ज्यों उमर गुज़ारी, खा खा मांस पराया
नरकों हिं गया लोभी परिंदा, फंद चुरासी पाया

माफ़िक उस ही वास्ते मायाअ, हम भी जान लुटाईं
गीद्ध हैं सब वो मानुख लोभी, माल पराया खाईं

मया मरी न मन मरे, मर मर गये शरीर -
आशा तृष्णा न मरी, ये कथ कहै कबीर

मन की तुलना मसताना शाह, बंदर सु थे कराये
चंचल होत सुभाउ है बानर, बहुता ये फ़रमाये

माफ़िक उस हि मन होइ चुलबुला, टिक न ये कहीं पाए
पल से भी पहले ये कहाँ से, लेइँ कहाँ पटकाए

मन ये जीव कु सगरी उमरिया, अपना नाथ नाचाई
और जीव है नाचता रहता, मन के बसहिँ सदाई

सुनहीं गरज़ना बादल की जों, नाचेह मायुर राज
अंदर वाले ज़िंदाराम की, सुनहिं नूरी आवाज़

नाचनें लागि आत्मा जीव की, पावते अनहद नाद
दीयो मसबिरा मसताना जी, समुझीं जीअ हमसाज़

ढोंगिये पंडों को मसताना, ने बगुला बतलाया
पेट के हैं ये फ़कीर सभी हि, उलझे जग की माया

बाहर दी सबू उमर गुज़ारी, झातिया नाहिँ काया
आडंबर का पाखंडियों ने, ऐसो खेल रचाया

फाँसी सीधे भोलेह जीवां, अपुना काम चलाया
भरते पेट हि अपना रहे ये, राग ठगी का गाया

दुनिया ने पाछैह लगिं इनके, जीवन नरक़ बनाया
पंडे ठगुओं का कीया आइ, काल बली हि सफ़ाया

लाख़ चौरासी जोनियां भटकिं, अजहूँ ज़िहन न आया
अबहूँ अक़्ल के अंधे न चेते, परदा नाहिँ हटाया

टोह किया नाहिँ मुरसिद साचा, सचखंड जु ले जाई
पंडोंह को बगुले थे माहिर, मसताना बतलाई

आत्मा हाथी रूप पै बैठा, बंदर मन इठलाई
हाथी इस वीराट को छोटा, सा मन जित ले जाई

इधर कभी और उधर कभी ये, अपना नाच नचाई
रहना भोगत बस ये शरीर कु, चंचल औ हरजाई

हरमंदिर से पाक़ शरीर को, दूसित करत रहाई
बानर से मन रूपी परीशां, आत्मा देइ दुहाई

आत्मा रूपी हाथी बयाकुल, काबू करने ताँईं
अंकुस नज़रे अफ़शा महावत, सतगुरु है जब लाई

कर लेअता मन को है काबू, आत्मा ये मुक़ताई
सतगुरु हाथ ही चाबी से है, द्वार दसम खुलिं पाई

इक तस्वीर शहनशाहा जी ने, जीव चंडूल बनाइ
छोड़ जो बोली अपनी करता, बोल की नक़ल पराइ

मानिंद इसकी हमने भी है, छोड़ि अपनी कमाई
पकड़ के बोली अलग अलग हैं, अपनी उमर गँवाई

गाते गुन रहे संत फ़कीरां, ज़िंदाराम भुलाई
बैठा राम है गुरु जो अंदर, लखया झाति न लाई

गुंछै पै अंगूर के बैठे, तोते तीन दिखाईं
बेदर्दी वर गुंछा अंगूरां, का तोते हैं खाईं

माफ़िक उस अंदर है हमारे, तोते तीन समाईं
तीनों गुन रजो तमो सतो सब, बेशक उनके नाईं

अमरित अंदर का हैं हमारे, पीते हर पल जाईं
पर हम उरुझे बसतुआं फ़ानी, मस्ती ही में गँवाईं

बाद बनाने ईंटों से पक्की, दरवाज़ा इक भारी
सच्चे सौदे माहिँ चिनाई के, काम रहे सब ज़ारी

कबहुँ बनवाते थे मकां नये, कबहुँ चार दीवारी
चलते काम कभी थे नये कुछ, गुफ़हा कबहुँ उसारी

रंग औ रोगन लीपा पोती, रात दिवस करवाते
गिरवाने सबू मकां पुराने, कबहूँ हुक़ुम लगाते

ईंटें इधर की उधर वहाँ की, और कहीं लगवाते
बस यूँ हीला किनहीं न किनहीं, सेव नां ख़त्म कराते

त्रिकुटी गुफा

मौका रहन का ख़ाली मन को, हरगिज़ नाहिँ थमाते
सेवादार भी करि–करि सेवा, आनंद नूरि पाते

पाछै बनने दुआर वो पक्का, शा मसताना साँईं
उन्नीसौ पंचास में डेराअ, बंद गुफ़ा चिनवाईं

आख़िर हीँ सन पंचसवाअ इक, काचा भवन बनाई
गुफ़हा बंद के नाम से वर हि, मसहूरी जिन पाई

उपमा अंदर इंसां तिरिकुटी, गुफ़हा साथ कराई
गुफ़हा ऊपर है ये तिरिकुटी, ख़ूब बड़ा लिख़वाई

पहुँचेगा जो तिरिकुटी माहीँ, ज़िंदाराम रताई
छूटे जेल यहाँ पै दूसरा, सपने जो ले जाई

बाहर बरन है नूर यहाँ का, नाहीँ सबद समाई
बस एहसास हि होवै इसका, आवै नाहिँ कथाई

कमरा एक गुफ़ा में बड़ा था, जिसहुँ दुआर रख़ाया
कमरा दूजा बना था जा पै, चौबारा बनवाया

लकड़ी के शहतीर गये कई, डेरा हिँ मंगवाए
चौबारा आरोहने उन तें, ही सीढ़ी बनवाए

छोटी एक कुटीर भी उनके, ऊपर देइ छवाई
सतगुरु जाने खेल ये क्या था, साधू सब चकिताई

गुफ़हा मसताना ने पुरानी, मैनेज़र कु थमाई
अंदर इस नई गुफ़ाहा ख़ुद ही, लागे रहने जाई

साथ हि इसके कोठियां भी कुछ, देईं उत बनवाई
लंगर घर बनवाई साथ ही, उसका नाम रख़ाई

नाम दिया उस दसवां दुआरा, ऊपर ही लिखवाई
खेल अजूबा बेपरवाहा ये, कोइ बूझ नां पाई

दुवार दसम ये देख लो जित्थे, जेल से छूटहिं दूर
होइ रूह आज़ाद निफ़न जहाँ, ईलाही पाइ नूर

याद जो उसको आइ बतन की, लागि रोइँ बेचारी
अरचनीय नाहिँ मुझ सम कोई, दुनिया माहीँ सारी

मनवा वैरी बेरियां ऐसी, पग पग मोहे डारी
दिलग़ीरी ये उमरिया सारी, कारावास गुज़ारी

बीच हिँ फ़िर इस नूर के कोई, आ सकता न दुबारा
आ सकता नां ध्यान है नीचे, देखन जोग नज़ारा

लख़या नां जो आत्मा कंत वो, जानि परयो नादान
हक़ नाहीँ कहलाउन का उसे, वाकई ही इनसान

काल मौत के पाँउ तलेह बस, वो तो दलया जाई
हक़ ही नां बोलन का तु उसकू, बोलन भी नां पाई

सचखंड और भँवर गुफा

पच्चीस छह उन्नीसौ इकयावन, आया बहुत सुहाना
होया था आगाज़े सचखंड, शुभ दिन इस निरमाना

दिवस ही पहले करयो शुरु थे, गुफ़हा इक ख़नवाना
अंदर उसके खोदी गयी कुछ, गुफ़हा नइ रोज़ाना

हो गयी अंदर सात गुफ़ाएँ, भेद न कोई जाना
सावन शाही मौज़ सिवाअ नां, सकिया जानिं ज़माना

पाछैह कछु दिन फ़क़त एक ही, राख़िं गुफ़हा तैयार
छाजन जाकी रखयौ ज़मीं से, ऊँची हाथ थी चार

एक बड़ाअ सा सनमुख उसके, कोठर था बनवाया
अंदर जाके जाने गुफ़ा तक, राह तिआर कराया

बाहिर वाले कमरे संग इक, कमरा और चिनाया
खाली सेहन उस दरपेश था, एक बड़ा रखवाया

छत पै चढ़ने ख़ातिर सेहन हिँ, इक मेराज़ चढ़ाई
उनपर भी मसताना शाह ने, जाली इक लगवाई

दरवाज़ा था खुलीं सेहन का, पच्छम ओर ही जाई
दूजा इक दरवाज़ा इतर भी, पूरब तरफ़ लगाई

चौबारा उस पै थे छवाई, मतलब जानें साईं
गुफ़हा सीढ़ी सेहन दुआरा, परयो समझ न आईं

दरवाज़े पै शेर इस ही, एक बिकट बनवाया
मतलब जिसका पेबरवाह ने, साधुओं को बताया

सचखंड के रस्ते हिँ ज़बर बड़ा, शेर खड़ा महाकाल
अंदर जाने दे नां किसी को, केसरी ये खूँख़ार

जा सकते सचखंड में बस हैं, पहले इसको हि मार
जीव सकै मिल तबहूँ साचेह, अगम पुरुख निराकार

भँवर गुफ़ा जहाँ पहुँची रूहें, हो जाईं मसतानी
मतवाली अलमस्त हो जाउती, बेख़ुद औ दीवानी

पहुचने वाले को हि पता है, ताक़त मिलत बढ़ाई
तैयारी फ़िर जाउन आगैह, आत्मा करती जाई

गहरे गूढ़े अगम थे नूरी, गहरे सबद ख़ुदाई
दीवारां सचखंड शहनशाह, समझाने लिखवाईं

इमारत इक सचखंड साथ ही, लगती थी बनवाई
दिया नाम था भँवर गुफ़ाह जिस, ता पै ये रचवाई

अंदाज़ा–ए–रूह की शोभा, ताक़त का रूहानी
लाईं सकत है जीव वही बस, गाहक है जु अनामी

रूहें भँवर गुफ़ाह ये आने, पाछै ही ततकारी
करने लागती पड़ाउ दूजे, सचखंड की तय्यारी

इमारत पर सचखंड की गये, येह सबद लिखवाये
है ये संचखंड देखिं इस, नूर हिँ गुम हो जाये

खोइ दे दरबार में रूह ये, आपनी भी पैछान
कर पाईं नाहिँ भेद पुरुख़ सत, औ ख़ुद माहिँ अलआन

जाती अबिनासी में समायी, हो जाई एक सार
जैसे जल हीँ जाई समा जल, होईं एक ही तार

पहुँचै सचखंड रूह जु वाका, एक हि बाल का नूर
देइ रोशनी सूरज एक की, अंजोराह सी पूर

जबकि उस इक नूर के बाल में, अफ़शा ऐतिँ समाई
सूरज एक करोड़ यहाँ मिलीं, नूर करीं नां पाई

पहुँचन वाली सचखंड ऐसी, रूह के ज़ेब बहार
बाढ़ी जाई भँवर गुफ़ाह से, दर्ज़ा कई बे शुमार

रूहें ऐसीं पाई लेत हैं, समरथता इस नाईं
फँसयो माहीँ मात लोक रूह, छुड़वाही मुकताईं

परयोजन इसी रूहें ऐसी, पाक़ीज़ा औ शफ़्फ़ाफ़
मारग सबब अनामीह के ही, करती करम ये पाक़

ज़रिया मारग सबद अनामीह, मिरतू लोक से पार
होते होईं भँवर गुफ़ाह से, सचखंड पुगहिं मँझार

बहुरी आवती मात लोक हीँ, मानुख देही धारी
लेईं साथ ही हुकुम पुरुष सत, करने सेवादारी

मतलब साफ़ है कहन का ये कि, जो होई जग माहीँ
हुकुमे आईं हुकुमे हि जाईं, हुकुम परे कछु नाहीँ

रूह का फ़िर ऐसी है जीव जु, सोबत सतगुरु राहीँ
चालैह मारग बतलाई गुरु, बहुरी बतन हुँ जाहीँ

सतगुरु जाई चरनांह सरनां, रूह सुभागी होई
जैसी जाकीह भावना किस्मत, औ मानस पतयोई

वरना जीव अगन जोइ निसि दिन, बदनीयत हि कमाते
गुरु पीरों और संतों कामिल, एतबार नां लाते

जाते काल के हाथों मारे, औगुन बर हि उठाते
रूह कु काल के सामने जम्मों, से तसदीह दिलाते

रूहें लज्जित होईं ये सतगुरु, के दरपेश हि जाती
और बतौर सजा येह ऐहीँ, फ़िर इहलोक हुँ आती

दुख वा तकलीफें पड़िं काटनी, फ़ेर चौरासी जेल
अनगन जुग ताइँ आवा जाही, देत है काल धकेल

उसपै भी ये नाहीँ ज़रूरी, मानुख मिलहीं सरीर
बंधना परयौ काल चुरासी, आवा जाइ जंज़ीर

भुगतीह लाख चौरासी जोतिं, मानुख देही पाईं
फ़िर जाई हो मानुख ज़रियाह, काल दयाल लड़ाई

सुनहरी दौर

बहुत अच्छा समय

सतरह मई उन्नीस सौ बावन, बेपरवाह दरबार
मंसूबा हुइँ बाड़ियों जानिब, जाईं बनी दीवार

नींव थी भर दी गइ जो उस पै, लागयौ होन उसार
जाये इक दरवाज़ा बनाया, इसमें आया बिचार

कच्ची सड़क उधर से ही सिरसा, से थी बागड जाई
बनवाना दरवाज़ा नींव पै, इस आरंभ कराई

देख रेख हीँ साब मैनेज़र, थे ये काम चलाईं
जोश हीँ सेवादार परेमी, तन मन सेवा लाईं

दौरां उस मसताना शाह थे, डेरा से बड़ी दूर
जगह दूसरी करने सतसंग, जाइ रहे थे हज़ूर

दौर रहा इस छाइ उजास था, शाह मसताना नूर
दिल्ली महोम्मद पुर रोही और, शाह जाहाना पूर

बावन सन रहा बड़ा सुनहरी, सच्चाअ सौदाह दौर
मस्ती आनंद बरस था रहयो, जीव हुये सराबोर

मसताना शाह थी जग ज़ाहिर, पुर हैरत वो अदाह
हाज़िर नाज़िर जीव सभी हुये, सोहबत बेपरवाह

जीव थे कर रहे दर्शन नूरी, शहनशाह–ए–जहान
मानों नूर आमेय हिँ करिं सब, एक ईलाही स्नान

पार थी हद के मसताना शा, मस्ती अजब वो न्यारी
बाजा डंका खुशबू अलाही, उनका दिसिहीँ सारी

दरसन पाईं गये जो नूरी, हो गये साधु भारी
नाम हि बस जिन जीव था सुनयो, हसरत से थे मारी

पावइँ दरस को उनके इक पल, देखने शक्ल पिआरी
मच ही जात थी हूक दरस की, संगत मारा मारी

मुख मंडल लखते हि वो नूरी, इक मुसकान निहारी
दरद औ ग़म सब जाते बिसरी, जीवां काल पसारी

उनपर लिखने वालों ने लिखा, इकदम सबद सही है
शा मसताना तेरा मुस्काना, भुल्लन वाला नहीं है

शाह मसताना तेरा मुस्कराना, भूल जाने के क़ाबिल नही है

आठवां सर्ग

अधिकारी जीव

मालिक के नाम के असली हक़दार प्राणी

कबीर सेवला की ज़बानी

कबीर सेवला के मुख से

कर गइ बांटने वाली नफ़रत, हिंद सकल हि वीरान
बाँट दिया दो मुलक़ों में नये, हिंद और पाक़िस्तान

लंबी गहन ये लीक भयानक, बीचों बीच हीँ आन
जीव थे लाख़ों ही ख़ो बैठे, इस्मत माल और जान

संत परम सावन शाह जी ने, मसताना कु बुलाई
सन छयाली हिँ बलचिस्तान से, सिरसा दिया पठाई

बँटवारा की धुंध थी काली, सैंताली के माहीँ
जीव कुछिक अधिकारी थे जोइ, पहुँचिं शहनाशाह छाहीँ

पर ये जीव नां चोट काल से, सकयो रहीं अछूते
घर परिवार गंवाई बैठे, जीव पियासे भूख़े

दहशत भुख़मरी और ग़रीबी, फ़ैल गयी दिसि सारी
ऐसे में ख़ासी थी ज़रूरत, प्रेमो उलफ़त भारी

बुझ सकती थी प्यास ये केवल, मसताना हिँ हुज़ूरी
दरदो ग़म मिट सकते सभी थे, चरन शहनशा नूरी

बँटवारे की आग़ में झुलसे, लुटते पिटते सारे
चक उन्नीस तेइस और त्रेपन, लोग सभी कुछ हारे

कच्चा खूह व कुसुमसर–गोज़रा सरकीह चक मुलतान
मोंटोगोंमरी सांगला हिल व, और कई भी सथान

सांसी बावरिये औ भेडकुट, सिंधीह आदि अनेक
जातों के सब लोग ग़रीब इन, जान–औ–बच्चे समेट

उजड़े बँटवारे में डर लिये, झेलते क़त्लेहआम
छिपते छिपाते जान बचाते, पहुँचयो हिंदोस्तान

जीव थे इनमें ऐसे भी कुछ, पाक़ सु भारत आये
बदल गयो बद किसमती जिनकी, किसमत ख़ुश ही जाये

उजड़े सारे लुटे पिटे हुए, बँटवारे हिँ कंगाल
जागे भाग वो आ भारत में, बन गयी एक मिसाल

बहुत दयालु है सतगुरु साँईं, करत सभी का ख़ियाल
जीवों की वो करत हैं अपुने, कदमो कदम संभाल

गाँव महोम्मद पुर रोही महीँ, जीव सतगुरु पिआरे
सिमरन सिंग जी जात भेडकुट, कोई केहिँ बिसारे

कर गये ऐसा काम भलाई, कीयो सब उपकारे
अपनी ही जिन ज़ात को नाहीँ, ज़ातों को कइ तारे

क्योंकि सिमरन सिंग ही भेडकुट, की अरज़ी पै गफ़ूर
गाँव महोम्मद पुर हीँ पधारे, बेपरवाहा हज़ूर

ध्यान सिंग इक इनका भतीजा, हाकम सिंग दुलारा
रहि गया पाक़िस्तान ही में वो, दौराने बँटवारा

था ताजीर रहा वहाँ भुगतीं, ज़र्म हीँ कारागारा
बच्चे इनके पाँच में एक था, लड़का किसमत मारा

नाम असल था जिनका निरंजन, ममता संग व प्यारा
मातरी निरमल कौर बुलाती, कहि कर बेटा काला

नीरंजन सिंग की बटवारा, औसर उपर बा ख़्याल
होगी बा मुश्किल ही सिरफ़ ये, दस या बाराह साल

दौराने बटवारा निरंजन, सिंह बहनों के साथ
उन्नीह चक पाक़िस्तां सेह चले, एकले बिन माँ–बाप

भूख़े पियासे करते फ़ाके, सोये बिन दिनों रात
नंगे पाँव ही सफ़र काटते, जलते सड़क के ताप

आये काफ़िले सहसर यूँ तो, मारे होइँ हालात
पाक़िस्तान में थाँव अनेक से, इस ही जात के ख़ास

पहुँचन भारत की सीमा महीं, चलते साथ ही साथ
कहनें को चक अलग-अलग से हि, बांधव सारे भरात

आईं रहे सब आगे पीछे, अगली-बगलीह पाछ
पर न किसी को सुध थी किसी की, रहयो ये हि हालात

उन्नी चक के लोग भी चल रहे, काफ़िले हुँ परेशान
सिमरन सिंह घासी व राम सिँह, भानाअ काँसी राम

यूँ तो लोग अनिक जी गाँव के, गिरते पड़ते सारे
अपने अपने कुनबे समेटे, आ रहिं मारे मारे

औरतें बूढ़े बच्चे जवां सब, चल रहे टूटे गात
भूखे पिआसे डरते थामे, इक दूजेह के हाथ

बालू गुरुमुख और कबीर भी, संग अपने परिवार
डरते सहमते छोटे-छोटे, चल रहे बीच कतार

काला नीरंजन संग दादा, सिमरन सिंग सरदार
उँगली पकड़े चल रहा अपनी, बहनों के संग चार

भारत में भी पहुँच के सब ही, फिरत रहे लाचारे
आशा ले सब रोज़गार रहे, फ़िरते मारे मारे

घूमने इधर उधर के कुछ ही, बरसों कठिन के बाद
हरियाना के तीन ज़िलों और, एक ज़िला पंजआब

कैथल अरु करनाल फ़ाज़िलका, ज़िल्हा इक फतेहबाद
जिस जिस थाँ मिली इनकु ज़मीनें, हो गये ये आबाद

गौतर घासीह जात भेडकुट, धियान सिंग था नाम
बरसों चार के बाद किया उन, पाक़ से हिंद प्रस्थान

उनको जेल से मिली रिहाई, इकयावन महीँ आन
झेले बीच हीँ दुख जो बालक, हावै नाहीँ बयान

काला नीरंजन सिंग घासी, बहनों चार के साथ
ग़ुरबत बहुत हि तंगहाली में, बीते दिवस वा रात

होने के नाते से अकेला, बहनों चार का भाइ
करने उनकी देखभाल सबू, ज़िम्माह परयाअ आइ

उभर रहा था भारत भी अभी, पीड़ा से बँटवारा
सरकारी शासन भी बिफ़ल था, देवन हिँ रोज़गारा

सिमरन सिंग का इन हालातां, मिल्या जितना सहारा
हो ही नांअ पाता था उसमें, बच्चों सब का गुज़ारा

दौरां चार बरस के निरंजन, सिंग बेकस मक़हूर
पंद्रह बरस की उम्र भी रहयौ, बालका एक मज्जूर

मांगन भीख जो गाँव गाँव था, होई गया मज़बूर
गाँव अपन महोम्मद पुर रोही, के नज़दीक वा दूर

पाड्डों सु बिसनोइयों के बची, जूठी छाछ का पूर
भूखे बेकल बाल वो पीकर, जाते होइ मश्कूर

मुसकिल और मुसीबत ने बड़ी, बच्चों को वोह मारा
मुमकिन नाहीँ करना बयाँ ये, किया कैसे गुज़ारा

मात पिताह जब इकयावन में, नीरंजन के आये
भूखमरी और ग़ुरबत के थे, देस हिँ बादल छाये

लाखों परिवारों का हि जैसे, हो रहा इमतेहान
निर्मल कौर वा धिआन सिंग भी, थे बहुते परेशान

बच्चों पाँच का करना गुज़ारा, रहयो नाहिँ आसान
मिलता नाहीँ इन हालात में, करने भी कोइ काम

धियान सिंग ने लड़के अपने, नीरंजन सिँह काला
की भी गरदन रस्साह मजमाअ, बंदर हि संग डाला

खेल मदारी और बंदर का, गाँव हि गाँव दिखाया
खारा डोबी गाँव पड़ौस तो, जाते अनिक हि बारा

मजमा दिखला धिआन सिंग ने, बंदर और मदारी
पाला पोसया बच्चों को और, घड़ियाँ बिपत गुज़ारी

बदले है करवट जब वक़्त ये, बदल बहुत कुछ जाता
नीरंजन बालू गुरुमुख संग, जो था वक़्त बिताता

होई मेहर गयी थी सतगुरु, सन इकयावन जाई
सावन शाही मौज ईलाही, सिरसा में थी आई

कटते फ़ाके भोगते ग़ुरबत, बाल बिलख़ते हज़ार
मौजे सावन शाह ने सुन ली, जैसे इनकी पुकार

होईं नज़र मेहरबां बदलै, घड़ियोंह में तकदीर
ख़ुद ही देत बनाइ है सतगुरु, कोई नई तदबीर

गाँव महोम्मद पुर रोही रहा, नौजवां एक कबीर
जात रही जिसकी थी भेडकुट, कर गया नाम ज़हीर

ले गया सिरसा निरंजन सिंग, मानिंद एक सफ़ीर
होइ करिसमा ऐसा इक वहाँ, होवै नाँह तफ़सीर

ईलाही सुन बचन शहनशाह, सतसंग में तक़रीर
मुड़ ही गया रुख नीरंजन का, फ़ौरी बदला ज़मीर

सन इकयावन की सतसंग वो, रह गयी बनहिं नज़ीर
भूल ही न पायेगी कभी उस, सतसंग की तसवीर

आवा जाइ थी ही कबीर की, सच्चाह सौदा माहीँ
होती थी पहले से बहुत ही, इसमें शक ही नाहीँ

जब निरंजन सिंग काला और, बालू गुरुमुख जाहीँ
नूरी चरन हिँ शाह मसताना, दरसन करने ताहीँ

हाज़िर बच्चे होये जौं दोनों, होइ गया था क़माल
दे नां सकते बानीह में या, ज़रिया क़लम वो हाल

हैरां रह गये देख के बच्चे, मुख पे नूरी जलाल
पायीं अगिन ख़ज़ाना नूर का, मन हीँ मचया धमाल

बेहतर है दिल शांत रहे बस, रहे ख़ामोश ज़बान
साख़ी भाव करें महसूस वो, घटना पहुँचे जु धाम

जा सकता है इतना ही कहा, पाइ गये जों हल्लाल
सकते भूल नां सकल हयात हि, दीद अलाही जमाल

नूरी नज़र का पल भर में ही, हो गया वो अक़राम
बूंदी का परसाद दे बालक, दीयो बगसी ग़ुफ़ान

बालू गुरुमुख की ज़बानी

बालू गुरुमुख के मुख से कही गयी बातें

सच्चाह सौदा लगे ये आने, बच्चे दोनों ही साथ
लागयौ तन मन तें सेवा हीँ, देखा दिन नाहिँ रात

नीरंजन के पिता ध्यान सिंग, बहुते थे परेशान
चाहते कि कीमत पै किसी भी, बेटा जाये न धाम

बच्चे भूले दरद बँटवाराअ, औ अपनी मज़बूरी
मिल गया मानो सक कुछ इनको, सोबत मालिक नूरी

पायो प्रेम रूहानी जब से, शा मसताना न्यारा
फ़ूट पड़ा तब बीज वो दिल हीँ, बूटा प्रेम निसारा

उम्र ये पंद्रह सोलह साल की, जिसमें लड़के जवान
जाते भटक हैं उतरीं पटरी, देखा है येह आम

लड़के ये दो वहीं शहनशाह, की सोबत सरे शाम
जीवन कु रहे देइ थे अपने, रुख़ औ नया आयाम

कारन भुख़मरी और ग़रीबी, मचताह वर कुहराम
करते बिबस निरंजन के पिता, करने उन संग काम

सेवा करत वो सच्चाह सौदा, इस थे पिताअ ख़िलाफ़
छोड़ी धंधे काम वो घर के, धाम रहें दिन रात

बाप ग़रीब को थी न सुहाती, बिलकुल भी येह बात
चाहते काम करे वो कोई, रोज़ पिता के हि साथ

पर सिर चढ़ कै बोली रहा था, नज़रां नूरी जादू
रुक न सकता रोकने से किसी, हो नां सकता काबू

चलता सच्चा सौदा हालाँकी, रात वा दिन ही काम
सेवाह चलती कठिन बड़ी ही, मिलता पल न आराम

गरमी हो या सरदी रात दिन, भवन नये बनवाना
रंग करीं रोगन से सजाईं, इकदम उनकु गिराना

चलता काम था सब्जियों का भी, डेरा में रोज़ाना
उगवाई उन्हें बेच शहर में, राशन उनका लाना

इतनी सख़्त और सेवा मुसकिल, बेअ आरामा काम
कर नां पाया बालकों दोऊ, थोड़ा भी परीशान

मिलती सेवा जितनी कठिन भी, करते साथ ईमान
लड़कों का इन दोनों इश्क तो, चढ़यो थाअ परवान

मस्ती बहुत हीँ रहते रहे ये, ख़ास ही मस्त हालात
रहते रोज़ ये इकठा दोऊ, सोत रज़ाई हिँ साथ

लागे रहते सेवा हिँ दोनों, गरमी हवै बरसात
परख़ीह शा मसताना ने दी, इनको नाम की दात

बापू इक दिन नीरंजन सिंग, सच्चाह सौदा आये
सोचा मसताना शाहा देंगे, बेटा घर लौटाये

ध्यान सिंग जी सोच के ये ही, हाज़िर हुये दरबार
शाह मसताना जी से कहा कि, अरज़ सुनोह सरकार

है इकलौता पूत ये मेरा, एक ही है सहारा
भिजवा दो इसको संग मेरे, चलता रहे गुज़ारा

मुसकाते मसताना शाह ने, ऐसा तब फ़रमाया
तेरा है तो लेइ जा तू की, करना असां हि यारा

पर न अब तेरे पास रहेगा, रहै तो ले जा साथ
मुड़ के फ़िर आ जायेगा यहीं, इश्क लगा इसे ख़ास

ध्यान सिंग जी ले गये अपना, बेटा ज़बर के साथ
पर नाहीं मन लागा निरंजन, रहयौ घर हीँ उदास

लागयौ लगन हियाँ मसताना, उनकू तो दिने रात
ऐसी तड़प हुई प्रीयतम की, भागे चोरी हि साथ

पहुँचे सीधे साचाह सौदा, रस्ते में रुके नाहीँ
इन दोनों के संग कुछ लड़के, महोम्मद पुर हि माहीँ

चालीं परयौ पैदल सिरसाह, मन हीँ करके बिचार
पैदल ही चलिं मील बतीस को, करतेह लगभग पार

होता ये भी ग़र कभी उनको, साइकिल हि मिल जाती
जाते निकल बैठाइ दो-दो साइकिल इक हिँ साथी

दौरान ए उस वक़त ग़रीबी, होते न थे किराये
पूछते मसताना जी कि पुट्टर, पहुँचे कैसे आये

कहते हम आ गये है पैदल, तांग लगी तुम भारी
चाहते आपके दर्शन करना, नां ही गरज़ सवारी

फ़रमाये हँसि मसताना शाहा, बात करो ये बिचार
होती तेज़ बड़ी है प्रेम के, घोड़े की ये रफ़्तार

घोड़े पै हुइ सवार प्रेम के, आते हो नौजवान
वरना सोच लो होता हि नहीं, सुगम ये इतना काम

साचाह सौदा चलने वाली, सेवा दिन और रात
हाड़ तोड़ सेवा से पर कभी, छुड़वाया नांअ हाथ

मोड़ा हुकुम नां तोड़ाह नियम, सेवा जी न चुराया
लेयीं प्रेम ख़ुराक़ ये लड़के, बेपरवाहा छाया

रहते लागे सेवा हिँ हरदम, मस्तीह अजब हीँ चूर
चरचा सेवा ए सच्चा सौदा, होयीं रही मशहूर

जागना सेवा करना निसि दिन, था येह अजब सरूर
खाने पै था नाम का लंगर, अठपहरा तो ज़रूर

वोह भी मिलते दिन सगरे में, मुस्टी चने के दानें
करते इस हीँ साधू गुज़ारा, माने न कोइ माने

नाम पै चाये मिलती उबले, पानी हिँ कीकर छाल
मिल जाता जो दूध कभी लेइँ, देते उस महीँ डाल

देख लो पर मस्ती येह कैसी, प्रेमी सेवाहदार
पालन करते नियम कठोर का, सेवाअ उतरत पार

मस्ती बहुत ही वक़त गुज़ारते, हाज़िरी मुरसिद यार
डेराअ हीँ सेवादारों में, बहुता आपसी प्यार

इक दूजे को करनेहु सजदा, आदर और सतकार
फट ही जाते कपड़े होताअ, ऐसा भी कई बार

हालाँकि वहाँ सच्चाह सौदा, नाहिँ कमी थी कोई
ढेर भरी थी बूंदी जलेबी, कमरा देखो जोई

बांटे जाते संगातें में थे, सोना रुपया पैसे
कंबल बसतर रेसमी ऊनी, बँटते ऐसे ऐसे

खाने की वहाँ हो सकती थी, तंगी फ़िर ही कैसे
मौज थी ये तो सावन शाही, ख़ुद फ़रमाया जैसे

क्योंकि शा मसताना जी अक़सर, मज़लिस में जब आते
सेवादार परेमियों अपने, ये ही बस फ़रमाते

पुट्टर जी में आता है मढ़ दूँ, तुमको सोने माहीँ
पर मजबूर हूँ कर नां सकता, हुकुम नहीं दरगाही

घर और ज़र सब छोड़ी जब तुम, सच्चाह सौदा आये
मुझ मुफ़लिस मसताना भरोसे, आस बड़ी हो लाये

आये हो सतगुरु जस कढ़न को, करने नांअ आराम
खाने पीने का तो घरों में, भी है सब इंतिज़ाम

छोड़ के घर औ बाल यहाँ फ़िर, आवना है किस काम
पाइ सकोगे ऐशोनशात हिँ, सतगुरु से नां गुफ़ान

पुट्टर औखे ही सौखे होकर, लो येह जनम गुज़ार
पहुँचोगे दरगाह में धुर ही, करहीं रूह गुलज़ार

आगे मौज हि मौज है पूरी, उसके अनामी देस
हालातां इन करै जो सेवा, बिरला कोई बिसेस

काटे भूख पिआसा रहे जो, जीव यहाँ दिने-रात
गिनती के ही होंगे बस कोइ, बस की सबहूँ न बात

बालू गुरुमुख़ और नीरंजन, दोन ही सेवादार
लड़के जात के भेडकूट ये, थे फ़रमाह बरदार

वास्ते सेवाह हाड़ तोड़ ये, लड़के बहुत मशहूर
खेती करना गारा बनाना, करत होयीं मसरूर

आहलादित रहते दोनों से, शा मसताना हूज़ूर
प्रेम ख़ुराक मिलत रही अंदर, से रूहानी तहूर

परयो जान नां देखन माहीँ, ये अक्राम नूरानी
बात सुनी ये खुद ही परेमी, गुरुमुख बालु ज़बानी

काढ़ने रेता नहर सु हमको, भिजवाया कई बार
सरदी कड़क की जिन रातों में, जाड़े का नां शुमार

आते जब वापस तो शहनशा, पूछते साथ पिआर
पुट्टर बहुत हि सरदी तो होगी, लगती नहर मंझार

नीरे अपने लेते बिठाई, जलती सेंकने आग
मीठे पूरे ग़रमा ग़रम को, देत छिपाइँ कै हाथ

फ़रमाते रहीं बीच बीच हीँ, पुट्टरो यूँ लगातार
सेंको हाथ न आग पे ज़्यादा, होइ जाईं बीमार

करवाइ रज पूरों का मीठे, पूछे पुट्टर उचार
हो गया रज या कसर है कोइ, लेना इस महीँ सार

हो नहीं सकता इससे ज़्यादा, मरज़ी येह इसरार
गुरुमुख जी कहते हुये साख़ी, रो दिये ज़ार हि ज़ार

बोले ऐसा प्रेम व दीनता, वाला गुलशन आरा
मसताना शाह बलूचिस्तानी, आवै नां दोबारा

ख़ाकसारी

धूल के कण के बराबर अपना मूल्य समझना

पूछो उनके दिल से ज़रा जिन, देखी वोह मुसकान
देखो पूछ के उनसु रहे जो, रीतेह नूरी शान

झलकी बस इक पावने उनकी, प्रेमी सेवाहदार
रहते तरसत दिन कुल खड़्यौंह, बाँधयौ हाथ कतार

एक नमूना प्रेम निरोल का, थे मसताना शाही
लेकिन राख़ते ख़ुद को लुकाइँ, बेपरवाह सदाही

टेकना माथा हाथ जोरना, पीर गुरु से बुलाना
भाता नाहीँ शाह मसताना, चरनों हाथ लगाना

देते मसबिरा जीव सभी को, करने को दोइ काम
सतगुरु दयाल व पुरुख़ अगम का, करने हरदम धियान

कहलाते ख़ुद को वो हमेसा, ख़ाक़सार औ हबीब
जोड़े झाड़न वाला कहाते, मसताना वो ग़रीब

जोड़े झाड़न वाला कहे जो, कदर होईं दरग़ाह
पर गुरु–पीर कहेगा जु उनको, मिलसींह नरक पनाह

पेश नमूना कीया ग़रीबी, ऐसा शा मसताना
ऐसा कोई फ़कीर हुआ नां, होगा कोइ ज़माना

रहते थे खुश पहन के जूता, साल कइँ भी पुराना
टाकियों वाला पहनते कुर्ता, फ़टया होइँ पजामा

बोरियों का थे रख़ते बिसतर, रोड़ी का सिरहाना
कीकर छाल की पीते चाये, जानिं सगरा ज़माना

फ़रमाते यहाँ हम नां वास्ते, भोगन को सुख आईं
आये ग़रीबों वास्ते ही हम, जां भी लेखे लाईं

ज़िंदाराम की मशहूरी को, करने दुनिया आयो
दयाल पुरुख का ले संदेसा, लोक मिरित पहुँचायो

ये मशहूरी करत हैं निरधन, प्रेम इश्क हीँ मारे
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, के जु लावते नारे

देते रख ये हिलायीं कै तब, शहर बज़ार हि सारे
जाती लहर सी फ़ैल हि इकदम, होत जहाँ गुंजारे

होयीं खुश रहे वंज भैणया, मसताना फ़रमाते
शोहरत ज़िंदाराम असली, ये निरधन हि कराते

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, सादा नाहीं नारा
आवै नां रसना पे जीव जो, साधारन बेचारा

भगती हो जिस जनम की पिछले, हो सतगुरु का प्यारा
आता है बस ज़बां पै उसकी, ईलाही ये नारा

सिमरन सिंह की गुज़ारिश

सिमरन सिंह की सत्संग के लिए प्रार्थना

शाह मसताना जी अक़सर ही, साचा सौदा माहीँ
प्रेमी जीवों को करीं मज़लिस, खेला एक खिलाहीँ

उकसा देते प्रेमी ग़रीबां, तुम ये नारे गाओ
बहका देते जात के ऊँचे, धनवानों को जाओ

करते हैं बदनामी हमारी, जाकर येह बाज़ार
आने दो नां सामने इनको, लोग हैं ये बेकार

अब हम इनको अपने सामने, देखना ही नां चाहीँ
ऐसे शाह मसताना जी थे, दुहरा खेल खिलाहीँ

औसर इस सन बावन में शाह, मसताना जी साईं
डेरा बाहर वास्ते कुछ दिनां, साचा सौदा जाईं

नगर फ़तेहाबाद वक़्त इसी, सत्संग करने आये
गाँवों पास के भीड़ नहीं थी, सत्संग माहिँ समाये

महोम्मद पुर रोही से संगत, आई तब बेशुमार
जिस महीँ जाती भेडकूट का, आयो इक सरेदार

नाम रहा जिस सिमरन सिंग औ, घाअसी था गौतार
देने नाम का दान अरज़ की, औ सत्संग की गुहार

लेकिन मसताना जी दियो करिं, सिमरन सिंग मनाहीँ
बोले नाम नवाज़ेंगे तुम्हें, सच्चाह सौदा माहीँ

भाषा में बिसनोइ शहनशाह, मसताना फ़रमाईं
फ़िर म्हें थारे आवांगा सुनीं, संगत थी मुसकाईं

बिसनोईं संगतों को बोली, बहुती गइ रुचिआयी
सिमरन सिंग ने मसताना से, फ़िर से अरज़ लगायी

आ गयी मौत मुझे जो पहले, नाम बिना क्या जाऊँ
कल का नाम है काल शाह जी, कैसे मैं पतियाऊँ

बोले शाह मसताना सिमरन, सिंग सुनींह फ़रियाद
नाम बिना तुज्झ देंगे न मरने, राख़यो तुम ये याद

देंगे सतसंग गाँव हिँ तेरे, साचाह सौदा बाद
सुनके महोम्मद पुर रोही की, संगत हो गयी शाद

अगला सत्संग उनीसौ बावन, पहली जून हीँ जाहिँ
होया बहुत ही ज़ोर शोर से, साचाह सौदा माहिँ

गाँव महोम्मद पुर रोही से हि, प्रेमी बहुत हि आये
औरतें बच्चे बूढ़े जवां सब, जात धर्म के सबाये

सिमरन सिंग पहुँचे यहाँ आइ, संग पूरे परिवार
कुनबा सकल की खुशियों का था, आज नां पारावार

साथ में आई पतनी उसकी, लड़के दोनों हि साथ
साथ हि रिश्तेदार भी थे दो, हरस बहुत रही बात

इक संतोख व हरबंस दूजा, लड़कों के रहे नाम
प्रेमी बलवंत सिँह भी साथ हि, खियाली रूपा राम

बिशनोइ आये बसत राम भी, संग हज़ारीह लाल
गुरुबचन सिंग साथ था उनके, सोहबते गुरदयाल

आया साथ ही था शंकर भी, लाल बनियाह लाला
बालू गुरुमुख और कबीर के, साथ निरंजन काला

महोम्मद पुर रोही देहात सु, लोग बड़े थे आये
देख के संगत सच्चाह सौदा, सब ही भाग जगाये

बाद ही सत्संग नाम दान की, बख़शिस दात कराई
देने नाम के दान सु पहले, होती बर पकियाई

संगत बैठे प्रेमी जनों की, होती थी छँटवाई
जिसका होता साफ़ था बातिन, बगसा वो ही जाई

जीव जो छाँटे जाते उनके, ज़ामिन लीये जाते
पाछै ज़ामिनी ही जीवों को, बख़शिस नाम कराते

नाम के दान की बख़शिस न तब, आसानी से पाते
बाद तसल्ली पूरी शहनशाह, मोहर नाम लगाते

पहुँचाअ दरगाह अक्स तुम्हारा, मसताना फ़रमाते
जाओ सूधेह धाम अगमपुर, पुरज़ा वोह थमाते

अब है साथ तुम्हारे ही पुट्टर, सिमरन भजन बनाना
सतगुरु की करी शुक़रगुज़ारी, सदके उसके जाना

बख़शी रहमत सतसंग में ही, मसताना शा हज़ूर
अरज़ी कर ली सिमरन सिंग की, सतसंग की मंज़ूर

महोम्मद पुर रोही में सत्संग, सुनते सारा हजूम
खुशियों से लगा झूमने सब हिँ, छा गया अजब जुनून

तैयारी में जुट गये सब ही, गाँव के लानेदार
करवाना है सतसंग कैसे, लागा होन बीचार

परतापा सिंग नंदा दीया, अपना महता सुझाव
मसताना शा जी का करेंगे, हाथी पर बैठआव

लायेंगे हम शाह को अपने, पूरे साजोह शान
पर नां हो सका बदक़िसमत से, हाथी का इंतज़ाम

फ़िर बीचारा मसताना शाहा, को जिस थाँ ठहराना
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, का तख़ता लगवाना

तख़ते को जायेगा सज़ाया, करके मीना कारी
कीया परबंध ठहराने का, बिबस्था होयी सारी

पहले ही से बनयो वहाँ मै, मसज़िद इक थी भारी
साईं दित्ताह आदमी था इक, कपड़ों का व्यौपारी

दे दिया कपड़ा उसने सारा, बिछवानेह मैदान
कि हो जाई कपड़ा रंगीन सु, उस मैदान की शान

पर मसताना जी ने न उनपै, एक कदम भी डारा
कपड़ा उठवाह डारा उसने, जो भी बिछया सारा

आस पास जबू चार बजे के, मसताना जी आये
पहुँची मसज़िद रहयो खड़े कुछ, देर वहाँ फ़रमाये

होगा सतसंग रात यहाँ पर, सबकु दो ये बताये
रूहानी सतसंग से कोई, रीता नां रहिं जाये

चढ़हिं छत पै सिंग परताप ने, ये ऐलान सुनाया
रात यहाँ पर होगा सतसंग, संगत को फ़रमाया

रात गली पटवारीह ख़ाना, धूम धाम बड़ी ख़ूब
होयी सतसंग जिसमें होया, सारा गाँव मौज़ूद

फ़िर दिन का सत्संग दिया जोहड़, पास जो पीपल पेड़
नीचे बैठ दिया सत्संग जहाँ, नीरे मटियाह ढेर

कहते जिसको आवा लोग हैं, हाथ सवा सौ उँचाइ
माटी टूट गयी थी अचानक, टीला भरहिं भराई

माटी ढलकीह काफ़ी सारी, नीचे थी पड़ी आइ
मसताना शाह के चरनों को, छूती पड़योह जाइ

वंज भैणयाह देखो आवा, भी मस्ती महीँ आयो
सुन के सतसंग ये है नचदा, मसताना फ़रमायो

पूछा जो मसताना शाह तो, थी ये बात बताई
सदियों सु पड़ी रूहें दबी हैं, संतों की चेताई

की नांअ कदर भजन सिमरन की, वक़्त अमूल गँवाई
दिये तोड़ वो सबहिँ उसूल थे, सतगुरु जो समुझाई

करती अब हैं पुकार सभी वो, लेने को छुटकारा
वरी करें क्या मसताना शाह, ने ही ये फ़रमाया

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, ज़ोर हिँ बोलो नारा
नारे लाये संगत ने सभी, पूरा गाँव हिलाया

सिंग प्रताप की लड़की शांती, ने भी सबद सुनाया
होई ख़ुश मसताना शाह ने, रुपया एक थमाया

हैराँ होई संगत गयी थी, देखिं सारा नज़ारा
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, फिर से लाया नारा

होने लागी चारों तरफ़ थी, शाहा वाहा वाही
अंदर शाह मसताना के है, ताकत कोइ इलाही

होने सतसंग बाद समाप्ती, रास्ते में जब जाई
धानक था इक डुगडुगी अपनी, ज़ोर हि ज़ोर बजाई

मसताना जी शाह ने उसको, दिख़लाया बड़ा प्यार
दे डाली अपनी आँखों से हि, ऐनक उसको उतार

आगे तनिक सा चल इक बुढ़िया, अंधी मिलयौ रोती
बोली मसताना शाह दे दो, आँखों को इन ज्योती

मसताना शाह ने फ़रमाया, ज्योती करे क्या ख़ाक़
नाम ईलाही बख़शिस लेकर, मारग ले करीं साफ़

इस ही तरह मसताना शाह, देत संदेस दु टूक
चाहे लेता पकड़ ही कोई, चाहे जावता चूक

सतसंग हुई फ़िर रात उसी हि, पटवार खाना पास
दिन अगले मसताना शाह ने, बग़सी नाम की दात

साठ या सत्तर लोगों को तबू, कीया नाम का दान
सिंग परताप और साँइदित्ता, को भी मिल गया नाम

पाछै इस सतसंग से काफ़ी, लोग जुड़े बिशनोई
जुड़ने लागे रोज़ हि नये जन, बिरला हि बचा कोई

सिमरन सिंग ने मसताना से, लेने बाद ही नाम
बनवाई गुफ़ा खेत हिँ अपने, राख़ा सतपुरा नाम

साचा सौदा में हर हफ़्ताह, ही वोह लोग आन
शाह मसताना भी देते थे, सिमरन सिंग कु सम्मान

प्रेमी जब ये साचाह सौदा, डेरा माहीँ आते
बेपरवाह सदातन ही थे, उनका मान बढ़ाते

बैठाते थे साथ ही अपने, मैनेज़र दाइँ ओर
सिमरन को भी लेत बैठाइ, अपने बाइँ ही छोर

नौवां सर्ग

सहसर बने मस्ताने

हजारों मसताने बन गए

सावन चरण छुआए

सावन सिंह महाराज के चरणों का स्पर्श हो चुका था

10 जुलाई 1952 अमरपुर डेरे (महोम्मद पुर रोही) का निर्माण

गाँव महोम्मद पुर रोही के हि, खाती और कुचबान
धानक कापड़िया वा बावरी, लेने लागयो नाम

गूजर मोची बालमीक और, बीसनोइ भेडकूट
भीतर तक मसताना शाह से, होयी गयो अभिभूत

गाँव की माटी के कन कन से, लागे लगने नारे
मौजे मसतानी में रंगयो, लोग वहाँ के सारे

मसताना ने सतसंग एक हिँ, जादू दिया चलाई
पूरा गाँव यहाँ ताँइ बालक, भी जिन समझ न आई

देते थे बस एक हि रंग में, रंगे होये दिखाइ
नाराअ धन धन सतगुरु तेरा, आसरा देत सुनाइ

आज बने वही बालक दादा, दादी नानी नाना
मारती ठाठें उनके घरों हिँ, मस्ती शाह मसताना

दौर में उस मसताना जी ने, हाथों नोट बँटाये
मँढ़वाअ शीशे में लोगों ने, घर घर हिँ हैं सजाये

रखया जब से कदम गाँव इसी, आ मौजे मसतानी
हो गया तबहिँ गाँव का कड़वा, मीठा सारा पानी

फूटा गाँव के लोगों में वो, बीज प्रेम का आई
फ़सल उसी की नसल में हर इक, दीख़त है बिग़साई

हो जाने सतसंग बाद फ़िरी, बावन दसम जुलाई
पटवारी ख़ाने आ गाँव में, सत्संग थी फ़रमाई

सतसंग दो दिन दे शहनशाह, दीया प्रेम बढ़ाई
बानी में मसताना शाह की, बर मीठास समाई

बोली आपकी बिशनोइयों कु, गई बनाअ दिलसाज़
कहते थे लगे मिलती जुलती, जाम्भा जी महाराज

जांभा जी महाराज़ का कोइ, फोटु साथ था लाया
मसताना जी समुख वो फोटू, सेवादार पुँचाया

दर्शन जाम्भा जी महाराज का, मसताना में पाया
साफ़ गया हो दिल अंदर सेइ, मन का वहम भगाया

दो दिन का दिया सत्संग नूरी, दिन में और फ़िर शाम
सुनके इस सतसंग को बड़े हि, लोगों ने लिया नाम

चाहें लोग कि मसताना शाह, नाहिँ यहाँ से जायें
कीयो अरज़ शा मसताना से, डेरा इत हिं बनायें

इतना परेम निहारी सब का, मसताना फ़रमाई
ख़ातिर डेरा देखों अपारा, संध्या उतहीँ जाई

करसों तय फ़िर जाई के वहाँ, डेरा कितहिँ बनाना
साथ परेमी चल दिये बहुते, शहनशाह मसताना

जग्गू राम परेमी एक वहाँ, अपनी धरत दिखाई
नाहीँ हुकुम बनाने का यहाँ, मसताना फ़रमाई

सिंग प्रताप की ज़मीं वहाँ से, थी जो काफ़ी हि दूर
लेकिन कर दिया साफ़ मनाही, मसताना जी हज़ूर

रूपा राम ने थी तब अपनी, धरती भी बतलाई
बिशनोई पतराम ने भी थी, अपनी भूमि दिखाई

बाहिर गाँव के हि थी ज़मीं ये, रोड़े टिब्बियाँ माहीँ
सिमरन सिंह ने भी तब अपनी, धरती थी दिखलाहीँ

अर्ज़ किया यहाँ डेरा बना लो, झगड़ालू बिशनोई
पाछै भी ये करसीं ख़राब हि, न बिसवास है कोई

देखेंगे मालिक का हुक्म अभी, मसताना फ़रमाई
मालिक उस की होइ रज़ा जहाँ, उतहीं धाम बनाईं

दस या बारह पल के बाद ही, मसताना फ़रमायो
बिशनोइ पतराम की अचलाअ, हुक़ुम बनन का आयो

कीकर का इक पेड़ था इत ही, बहुताअ ले आकार
संत परम सावन शा जी यहाँ, आये रहे इक बार

घोड़ा बाँध यहीं पर था किया, घड़ियाँ दसक आराम
थी नज़दीक हि गाँव के मारग, पड़यो ताहीं धियान

हुक़ुमे मालिक हुआ था तब ही, बनसी इस थाँह धाम
कर दीया शाह मसताना तब, होइँ खुश ये ऐलान

हो गयी थी अब बड़ी जगह ये, जो पतराम दिखाए
सन छियाली हिँ संत परम यहाँ, नूरी चरन छुआए

सोबत शादी लाल शा सावन, बार एक थे आये
कीकर घोड़ा बाँधी शाह जी, थे बिसराम हिँ जाये

देखो होता असर है कितना, संतों की परछाई
बंदनीय हुई जगहा वो ही, चरन परिं जहाँ आई

कथया ये दरबार साहब में, जिसकोह इन सबदान
जित्थे जाए बहे मेरा सतगुरु, ओ थाँ सुहावां नाम

बसती महोम्मद पुर रोही की, दी किसमत चमकाई
संत परम शाह सावन जी की, धूल चरन थी आई

सदके उनकी धूली चरन वो, जिसका जस वा साया
खिजमत ग़ार पिआरे उनकेह, मसताना जी शाहा

भावै किस ही हीला जगह पर, डेरा थे बनवाये
मिहिर रही सदा क़ामिल संतां, जो हि अमर पुर आये

नसीहत

सदके सतगुरु जी के गाँव ये, दूजे भी वो गराम
हुइ इनायत ए मालिक जिस थाँ, बनयोह धाम तमाम

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, का ये नूरी नारा
ख़िल ख़िल जाइँ गुलाब के माफ़िक, मिहरे गुलशन आरा

ख़ुशबूह रूहानी मसतानी, इस ही से सबू जीव
जीवन अपना सफ़ल बना रहे, लगहिं शहंशाह लीव

आज ये डेरा नाम अमर पुर, धाम से है मशहूर
परेमी जन सब गाँव के हि इस, सेवाअ हीँ मसरूर

मसताना जी के जब हुक़ुम से, बीसनोई पतराम
की हि ज़मीं पे होई गया शुरु, डेरा निरमने काम

जोश में एक अजीम भरा था, महोम्मद पुर का ग्राम
लागा पकड़न तेजी दिनों दिन, डेरा बनन का काम

आते सतगुरु ले सदा अपना, खेल मसालाअ देस
कर देइँ वहीं काल भी ज़ालिम, शैतानी रहीं पेस

काल देस हीँ सतगुरु रूप में, संत फ़क़ीर जु आते
जगहा अपुनी बनावने माहिँ, दुसवारी बहु पाते

बालू गुरुमुख परेमी की ही, साखियां ये ज़बानी
धाम अमर पुर महोम्मद पुर की, है इक अजब कहानी

बिसनोई पतराम की जब था, काम चलाया ज़मींह
धाम अलाही डेरा अमर पुर, की राखी गई नींव

काम शुरू हुआ जब डेरा का, था वो माह जुलाई
मुसकिल आन परयो जब गरमी, अपने चरम हिँ आई

दिखलाई शैतानी काल ने, चल ही दी येह चाल
लागी बिन रुके होने बरखा, घन घोहरी बिकराल

लेकिन था इस ओर भी सावन, शाही मौज ठिकाना
होइ काल से डट कै मुकाबिल, पड़या काल कु जाना

बनवाई गाराअ जो कच्चीह, ईंट बनाई जातीं
जातीं गल वो सारी हि ईंटें, बारिश में दिन रातीं

काल की शैतानी से रुकया, सगरा डेराह काम
रोज़ की चलती बारिस से सब, होइ गये परेशान

क्रोध में आ मसताना जी ने, इक दिन ये फ़रमाया
भैण यवा ये काल भी है अब, पूर सतानी आया

पकने देगा ईंटे नहीं ये, बरखा रोज़ करेगा
पर सतगुरु का भी है हुकुम ये, बनहिं डेरा रहेगा

शाम की मजलिस में मसताना, जी ने ये कह डाला
सुन भइ काल हो तेरा दोनों, तरफ़ा मुँह ही काला

करता ही ग़र रहै तू बारिस, अन्न खेतों हुँ बढ़ेगा
रुकने पैअ बरसात पकेंगी, ईंट डेरा बनेगा

मुँह काला ही कालाअ होवै, होईं तेरी हि हार
लागी सूखने ईंटें बारिस, थम गई आख़िरकार

रोड़ी की गइ साफ़ ज़मीन की, टीबे दीये हटाइँ
बन गयी चार दिवारी भी दो, कोठरियाँ दी बनाइँ

ऊपर कोठरियों के दोन ही, छाजन भी दिये डाल
दौरां सेवा डेरे की रहा, मचताअ अज़ब धमाल

चलती सारी दिवस ही सेवा, लोग ख़ूब थे आते
करते सेवा नाचते गाते, प्रेमी ढोल बजाते

होया कब तैयारी था डेरा, जान परयो हि नाहीँ
चमत्कार होईं सावन शाही, मौज का था अलाहीँ

मसताना शाह जी ने खुश हो, रख़ दिया इसका नाम
कथया आज सु बोलेंगे इसे, सकल अमर पुरा धाम

मोबीह बालक अमर पुरा है, डेरा सच्चाह सौदा
अमर है ये रहे अमर सदाहि, दीया बख़्शी ओहदा

जानिब बाड़ियों के जो खुलता, दुआरा इस दौरान
दरवाज़ा था हाथियों वाला, दे दिया इसका नाम

बनके येह तैयार हुआ जब, आस पास और दूर
नाम इसी से होई गया था, दरवाज़ाअ मशहूर

वास्ते आवने जाने वाले, जात्रियों के आराम
छाया का भी किया गया वहाँ, पूरा था इंतज़ाम

करने दूर अंधेरा रात हिँ, कीया गया था काम
देइँ रौशनी कर वहाँ पूरी, लोग न हों परीशान

भूख़ तिरास बुझाने हि ताईं, राहगीरों की ख़ास
सेवादार बिठाइ दिये वहाँ, चनक भुनेह जल साथ

पास ही उसके जूता भी इक, थे वो उत हि रख़ाये
बहुत बड़े बड़े आखर हिँ वहाँ, दीये थे लिख़वाये

रंज किसी को अगर हो मुझसे, प्यार से यहाँ आये
जूते इस मसताना ग़रीब कु, पाँच लगा खुश जाये

महोम्मद पुर रोही का इस थाँ, धाम हुआ बन तियार
आनंद आई डेरा हिँ किया, सतसंग पर बीचार

पहले इस सतसंग के वास्ते, अर्जी तब थी लगाई
शा मसताना ने सतसंग की, मंज़ूरी फ़रमाई

महोम्मद पुर रोही के सिमरन, सिंग भी थे नाराज
क्योंकि बिसनोइयों की ज़मीं पे, डेरा होइँ आबाद

चालिं रहे थे डेरे में अभी, बाकी सारी हि काम
ठहरे छप्पर में ही शहनशाह, रहते करत आराम

बिसनोई इक बीरू राम का, लड़का रख़ा फ़िलहाल
आपकी सेवा में जिसका था, नाम भजनीया लाल

ओहदेदारी

खिताब देना (पदवियां देना)

गाँव महोम्मद पुर के परेमी, सेवाहदारों साथ
मसताना जी रहत थे ख़ुश बर, आठ पहर दिनो–रात

मसताना जी प्रेम थे करते, लोग गरीबां ज़ियाद
मुफ़लिस लोगों साथ थे रहते, बेपरवाह बर शाद

मसताना जी शहनशा अक़सर, बातें ये फ़रमाई
मौज ए सावन शाह ग़रीबां, वासते येह आईं

सेवा होने वाली कठिन जो, डेरे धामों माहीँ
कौम ग़रीब हि बावरी साँसी, भेड़कुटों कु लगाहीँ

वड्डेह लोग हैं रहते दुनिया, मायाह बस मग़रूर
मान औ बड़ियाई हंकार हिँ, रहत हैं हरदम चूर

लड़का बलवंत सिंग भेड़कुट, अमर पुरा हि के धाम
कस्सी से रहा खोद था माटी, था मसरूफ़ वो काम

लंबाई छह फूट थी उसकी, लगयौ बलूच जवान
औचक परयौ मसताना शाह, का जो उसपै धियान

मारी कसिया टप्पाह रेत का, ज्यों बलवंत उठायो
दूर बहुत जब फेंकयों टप्पाह, मसताना हरसायो

पूछा छोरा वरी ये किसका, काम बड़ा होशियार
प्रेमी बोलयो इक ये छोरा, भगत सिंग सरेदार

मसताना जी बोलयो कि वरी, जाइँ उसको बुलाओ
दे दे छोरा हमको बिछाई, चादर धन ले जाओ

बोला प्रेमी छोरा तु साईं, है ये मंगया गया
सिमरन सिंग सरदार भेडकुट, के ही रचावै ब्याह

इतना मसताना जी सुनी कै, दिये येह फ़रमाई
लेइँ काल गया है रे बाज़ी, पाजी ये हरजाई

रहयो मसताना जी कुछक दिन, धाम अमर पुर माहीँ
अपनी निगरानी के हि अंदर, डेरा थे बनवाहीँ

क्योंकि संत परम सावन शाह, कीयोह इत बिसराम
इस ही लिये शा मसताना का, लागिं दिल यहाँ धियान

निग़हाबानी और निग़रानी, काम यहाँ करवाये
बाद ही कुछ दिन मसताना जी, सच्चा सौदा हिँ आये

औसर सच्चाह सौदा गमन के, कहि गये थे पतराम
कमरा और भी इक बनवाओ, देइँ गये थे निसान

आयेंगे हम अब तो यहाँ पे, बाद सिरजने मकान
करसों सतगुरु साईं का यहाँ, बासर कई गुनगान

लेकिन सिमरन सिंग नां खुश थे, डेरा बनन दौरान
चाहीं थे नां सिरजैह डेरा, धरती पैअ पतराम

लाये सिमरन सिंग को हुक़्म ये, बेपरवा मसताना
रहके गुफ़हा बनाना सिमरन, डेरा नाहीँ आना

आ करके करना न बहस यहाँ, देना दख़ल नां काम
लेकिन सिमरन सिंग नां माने, सतगुरु शाह फ़रमान

बार बार वो अरुक्ष थे जाते, बीसनोई पतराम
बात कोई भी लेकर रहती, बहस थी उनमें आम

सिमरन सिंग जी आई कहते, ईंटें टेढ़ी मेढ़ी
कहत कभी दीवार खुली यहाँ, और यहाँ है भेड़ी

गरमी के दिनों वास्ते रहने, बनवाया चौबारा
चौबारा भी गया ये ऊपर, उसहिं गुफ़हा उसारा

पूजनीय मसताना जी सदा, गरम दिनोंह बिसराम
करते माहीँ इस चौबाराअ, सुबहो दुपैहर शाम

आजू बाजू गाँव हि दूसरे, लोग और बिसनोई
करहिं शाह मसताना ख़िलाफ़त, करते थे चिमगोई

क्योंकि लोग वे चाहते नां थे, डेरा को निरमाना
सदियों से रहा दुसमान संतां, दरवेसांह ज़माना

परयो कुछ ऐसो ही यहाँ भी, संत फ़कीर उदवान
मसताना जी पर नाहिँ देते, बातां ऐंसी धियान

फ़रमाते मसताना शाह की, न परिशानी उठाईं
आयेगा जबू औसर तब की, तबहूँ देखी जाईं

ईंटों से जब बन गयो डेरा, की थी चार दिवरी
एक मकां और गुफ़हा भी थी, तबहूँ देइँ उसारी

बंदनीय मसताना ने तबू, डेरे की लीपाई
सेवादारों की सेवा महीँ, गोबरी से कराई

बुलवाई संगत को एक दिन, सत्संग करना चाहा
भेडकूट परतापा सिंग को, पोथी पढ़न बुलाया

होये नां जब हाज़िर तो तबू, हेल दिया सबू और
आदमी कु फ़िर भेजा बुलाने, आये हाथ वो जोड़

पूछा तब मसताना जी येह, पुट्टर थे कहाँ जाई
फ़रमायो परताप सिंग ये हि, भजन हिँ बैठा साईं

सुनकर ये मसताना जी बड़े, होये खुश फ़रमाई
भाती है सतगुरु को भजन की, सेवा बहुत कमाई

वाह वाह किया बहुत हि खुश हो, मसताना शाह साब
मज़लिस में दिये बख़्श सभी को, ओहदे बर नायाब

वायस राय बनाया एक को, जज साहेब पतराम
काशी राम बनाये गवरनर, लाट हुइँ भीमा राम

दीया रुतबा लौह मरोड़ का, दूसरे काशी राम
मैनेजर वहाँ दीया बनाइ, प्रेमी गोबिंद राम

रुतबा दीया पालटीकल का, साधू हज़ारी राम
दीये बग़सी रुतबे सभी को, करयोह वर अक़राम

दे दिया गौरव सोहन लाल कु, वर हि वज़ीर साहाब
ओहदे पाइ नूरी सकल ही, बनयो जैसे नवाब

मज़लिस में सेवाअदारों को, ओहदे दिये हज़ूर
आस पास गया होयी डेरा, गराम नगर मसहूर

प्रेम की जीत

सीधे रूप हिं देखते कुछ तो, औंधा देखत कोइ
जाल हिँ काल निकट ही गाँव के, फँसयो कुछ बिसनोई

होने पै शुरू डेरा सत्संग, करना किया मंज़ूर
तैयारी करो आएंगे उस, दिन फ़रमाया हज़ूर

डेरे की सतसंग में पहली, गांव ही वोह सारा
लागा था डेरा को सजाने, देखीं बनत नज़ारा

पूरा हि झंडियों से कागज़ी, डेरा दीयो सजाइ
तरहा तरहा बसन रंगीले, नीचे दीये बिछाइ

ख़ातिर ख़िदमते संगत कीया, ख़ूब वहाँ इंतज़ाम
देखी कसर न कोइ भी बाकी, कीयो यूँह सब काम

पूरे गुरु की पैठ के कारण, लागयो चिढ़ने काल
मोरचा बंदी होती जैसे, दोउ काल औ दयाल

आता क़ामिल संत कोई जब, सतगुरु लेय संदेस
आवै जीवों को चेताउने, ज़ालिम काल के देस

चल के चालें काल कुटिल तभी, जीवों को भरमाता
देता पलटी अक़ल है जीवां, उलटा है करवाता

करवा रंजिशें संत फ़कीरां, अपना खेल खिलाता
समझ न पाये जीव बेचारा, बसहिँ काल जो आता

डेरा जों हुआ शुरू गाँव के, पास के कुछ बिसनोइ
कोई अफ़वाहें फैलावता, और ख़िलाफ़ती कोइ

कहते कुछ कि साधो पाखंडी, पाखंड हि फ़ैलाता
साधू लोगों को है सभी ये, उजबक मूढ़ बनाता

ऐसे ही कई लोग थे जो कि, औसर औसर आईं
करत विरोधना पीछे पीठ हि, बातें हल्की बनाईं

पर मसताना जी नां कभी भी, इनपे ध्यान धराते
पूज्य मसताना जी हमेश ही, इन पर ये फ़रमाते

बात न बस की जीव साधारन, काल की ये सब चाल
जीव बेचारे समझ न पायें, फंसयो काल हिँ जाल

लेकिन शाह मसताना अपना, छोडिँ असर थे ऐसा
भावै करने वाला ख़िलाफ़त, होइँ आदमी कैसा

सौबत आ जाता इक बार जो, हो जाता वो पानी
साफ़ करम हो जाते सक़ल ही, खुलता मग रूहानी

पहली सतसंग में जबु पहुँचे, डेरा बनन के बाद
साज सजावट देखते डेरा, शाह मसताना शाद

बसन विछे रंगीन पे अपुने, पलभर चरन छुआई
लीये चरन हटाइ थे अपने, दीया हुक्म ये लाई

फ़रमाया ये हम है बहुत ही, उलसित डेरा आई
कपड़े उठाउ मुज़रा तुम्हारा, मन माहीँ रुचयाई

कैसा दिलकश बनया नमूना, कैसी आई बहार
वाह वाह बल्ले सावन शाही, मौज कीयो गुलज़ार

जानि परा शाह मसताना को, डेरे अंदर आई
गर्म बाज़ार था अफ़वाहों का, कैसा कैसा जाई

कहता कोई बनाइ पारटी, गाँव बाड़ोफल लोग
गाँव महोम्मद पुर पैअ धावा, करसों मिली सहयोग

कहते कुछ कि आ रही पारटी, गाँव खजूरी सु कोइ
चिढ़ते सच्चाह सौदा से सबू, लोग येह बीसनोइ

दूजी अफ़वाह वहाँ किसी ने, ये भी थी फ़ैलाई
कहते हैं कि मार के पीट के, संत को देइँ भगाइ

बातें ऐसी सुन सुन सकल ही, होया गाँव भी एक
गाँव महोम्मद पुर रोही भीह, लोग हुए थे सचेत

बोलयो गाँव महोम्मद पुर के, प्रेमी तैस हिँ आई
लेंगे देख उन्हें भी हम अबू, दुसाहस जो दिखाई

मसताना जी शांत ही रहयो, सुनहिँ नासाज़ विचार
परया फ़रक नां जैसे कोई, शहनशा नेक शियार

थान बलूचिस्तान में आपको, ब्यासा से जु पठाई
बहस कभी नां करना किसी से, शाह जी हुक्म लगाई

भेज रहा हूँ तुमको वहाँ में, बीज प्रेम के बोने
बोने फ़सल महोब्बत की वहाँ, दिल दिल में हर कोने

काम वहाँ बस एक ही करना, तुमको बहुत ज़रूरी
ज़िंदाराम की सिर्फ़ है तुमको, करनी उत मसहूरी

कोई हि कहे चाहे तुम्हें कुछ, पेश परेम सु आना
बहस मुबाहसा करना न कभी, कहियो कुछ हि ज़माना

पालना की सदा हुक्मे मुरसिद, अपनी उम्र ही सारी
हुकुम रूहानी ए सतगुरु ही, की है ताबेदारी

बिसनोई जिस सोहन लाल को, बख़्शा ओहदा वज़ीर
माज़रा क्या पूछा उससु बड़े, शांत सुभाऊ सधीर

फ़िर पतराम भी ये बतलायो, मसताना जी साईं
लड़के की बरात जहाँ मेरे, गई लोग उस थाँई

कहत रहत हैं लोग बहुत वोह, पास हमारे ही आ
गाँव तुम्हारे सेह पाखंडी, मोड्डाह देयो भगा

पार्टी का उस लीडर कहत है, येह तो अड़क गँवार
खुद ही भूख़ से मर जायेगा, मोड्डा ये रियाकार

तैश में आ मसताना जी ने, वचन सभी हि उचारे
जायेगा न मोड्डा ये ऐसे, दुनिया खल्ल जु उतारे

बो देगा यहाँ बीज प्रेम के, मसताना फ़रमाई
मौज यहाँ येह सतगुरु के ही, आसरे सु है आई

है ये काम उसी का ही वोह, खुद ही करे संभाल
फ़िर करो नां कोई किसी का, डर को देऊ निकाल

आये पास तुम्हारे जो कोइ, मिलना अदब सुभाऊ
प्रेम से आओ पेश सभी से, चंगा करिँ बरताऊ

औसर उस चल रहा था सत्संग, आदम दो सौ करीब
ले ले हाथ में लाठियाँ सब हि, आइ गये बे नसीब

सगरे ही लठ्ठ बाज वहाँ वोह, लगयौ लाईं नारे
शान शहनशा हि थे ख़िलाफ़ वो, पुर हि जहालत सारे

लेकिन सेवादारों ने सबू, जोड़े प्रेम से हाथ
विनती की थी बैठन की वहाँ, लेई उनकोह साथ

होये वो शरमिंदा बहुत ही, देखिं ऐसा नज़ारा
लागे कहिन कि हम तो बैठसीं, इत हिँ पालथी मारा

ढाका लेख राज रहा इनमें, बनके नेता आया
पहुँचा घर जब वापसी अपने, हरज़ा बहुत हि पाया

भैंस वो उसकी कीमत जिसकी, तक़रीबन थी हजार
बिन हि कोई बीमारी इकदम, दुनिया से हुई पार

पड़यौ था हरज़ाना उठाना, वक़त उसे उस भारी
जिसने सतसंग में चाहे थी, झंडी इक हि उतारी

मस्ती बहुत में हुआ था पूरा, सतसंग बिन व्यवधान
करन बिरोधना वालों की थी, हो गयी बंद ज़बान

होये बहुत ही ख़ुश मसताना, सतसंग में इस आन
मस्ती में दिया डेरेह को था, नाम अमर पुरा धाम

बहुते प्रेमियों ने सत्संग में, बख़्शिस पाई थी नाम
बीबियों में बिशनोई भी थी, पाया तबू अक़राम

बैठती थी बीबियाँ सतसंग, लंबेह घूंघट तान
बोली नां समझत मसतानाह, करती दरस ही पान

देखहिं सब ये बोल उठे तभी, बीसनोई पतराम
थे बापू हुं पड़दो करोह क्यूँ, कुछ तो कर लो धियान

मसताना जी ने ये कहा तब, पूछोह इन पतराम
आती है क्या इनको समझ वो, बोलत हूँ जो ज़बान

बीबियाँ बोली मसताना जी, प्रेम तु दिल में जागै
भावैं समझ तो कुछ नां लागे, मीठी बोली लागै

दाढ़ी हालती थारी घणी हि, आछी लागे म्हाने
मन तो सतसंग थारी सिवा न, लागे किस हीँ खाने

इस पर फ़िर पतराम ने अब इक, थी यहाँ अर्ज़ लगाई
कैसे येह सवरूप तुम्हारा, मन बैठाईं साईं

बेपरवाही मसताना शाह, थे ये तब फ़रमाई
छड्डो बेड़ाह पार हो इनका, सतगुरु सदके जाई

लेअ सवरूप लिया सतगुरु ने, आये सब हि निगाहां
पहुँचा है सवरूप ये सीधा, सतगुरु की दरगाहां

दरगाह में हो दरज़ गया है, इन ही सरब का नाम
प्रेम उड़ा ले जायेगा इन्हें, सीधा सचखंड धाम

फिर इक डंडा कीकर का लेइ, गाड़ा धरती माहीँ
फ़रमाया कि देखते है इसे, हरया होत कि नाहीँ

डेरे में वहाँ बीचों बीच हि, एक थड़ा बनवाया
बाजरा मोठ तरफ़ ही चारों, उसके था बिजवाया

आ गये वापस मसजाना जी, सच्चाअ सौदाअ धाम
बाद हि कुछ दिन फ़िर सु चले गये, महोम्मद पुर हीँ ग्राम

जाई धाम अमर पुर सूखाह, डंडा देखा शाहा
लगया डंडा हरा था होने, सतगुरु करम दिखाया

फ़सले बाजरा मोठ को कच्चा, करवाई फ़रमाया
कर लो इसको इकठा अभी ही, है वो आउन वाला

आने वाला कौन पता नहीं, सोच परिं सेवादार
गड़ गड़ हुइ घिरे बादल परयो, बरखा मूसलाधार

बांधया घोड़ा कीकर नीचे, सावन शा महाराज
बनवाइँ समय डेरा अमर पुर, कीयो प्रकट ये राज़

शाह सावन जी संत परम ने, कीया इत हि आराम
जगहा कालातीत थी होनी, ख़ास अमर पुरा धाम

बोइ प्रेम अमर के बीज रहे, जीवों के दिल माहीँ
डंडे सूखे होये हरे इत, सदके मौजे शाही

और संदेसे देत अनामी, कर्ता पुरुख के नूरी
शजन ए कीकर का भी करना, था निसतार ज़रूरी

परदे ही के पीछे हमेशा, करते रही कै काम
कर के कोइ बहाना करत हैं, दरगाह हुकुम अनाम

विनती इक दिन की बिशनोई ने, नाम गनेशाअ राम
कर दो बेपरवाह ग़रीब पै, आज बड़ा एहसान

शहनशाह जहाँ के दोउ ही, कमी नां तुझ दरबार
लड़के सोहन लाल की मेरे, धीयाँ सत लगातार

हो जाई तुज्झ नज़रे इनायत, जाये हो वो निहाल
झोली उसकी दया मेहर भर, दे दो एक जो लाल

जड़ से चेतन

निर्जीव से सजीव हो जाना (एक वाकया)

मसताना शाह इक दिन औचक, गुफ़हा बाहर आयो
कीकर काट दियो ये तुरह ही, हुकुमे हैरत लायो

फ़िर से अंदर चले गये तबू, बाहर जब फ़िर आये
देखते हैं कि काटने कीकर, था नां कोई जाये

पूछा शाह मसताना जी ने, कीकर क्यों न कटाई
बोले प्रेमी रस्मों रिवाज़ से, आज अमावस साईं

दूजे एक ही पेड़ खड़ा है, डेरे में हरयावा
काटन बाद ये कीकर नाहीँ, कोइ बचैबी छाया

पर मसताना शाह ने फ़िर से, हुकुम वही दुहराया
कीकर काट गिरा दो अभी ही, सतगुरु ने फ़रमाया

पास खड़ी हुइ सोहन लाल की, पतनी बोली तावा
कीकर काटो कोनी बावले, बाबो हुकुम लगाया

बस फिर क्या था थोरी हि देर हिँ, कीकर काट गिराई
पेड़ गिरा तो लकड़ियाँ जड़ की, चीख़ती दी सुनाई

वंज भैणयाँ रोती क्यों तुझे, दें इंसानी जामा
माँ का पू बनायेंगे किसी, फ़रमाये मसताना

एक दिसंबर उनीसौ त्रेपन, आंगना सोहन लाल
जनमा घरवाली ने चाँद सा, मुखराह लेई बाल

बालक जनमने से पहले ही, मसताना जी साईं
कपड़े आथरी और पौतरे, सोहन के भिजवाई

फ़िर मसताना शाह ने अगला, वचन यही फ़रमाया
कीकर की जड़ जोनि सु बदल के, मानव देह हिँ लाया

कृष्ण नाम ही रखते हैं इसका, सतगुरु हि के इशारे
पूरन ताक़त खेल तकीं लगे, सब ही लाने नारे

मन लगा फकीरी में

गुरू भक्ति में मन का लग जाना

बालू गुरुमुख की ज़बानी

अपने पूत निरंजन सिँग से, हो आजिज़ रोज़ाना
रुचता नां था धियान सिंग को, उनका डेरे जाना

चलते इसके धियान सिंग जी, आये शहनशा पास
सच्चा सौदा आयी की बिनती, धरहिं मन माहीँ आस

मसताना शाह फ़रमाये थे, धियान सिंग इस बार
रुपया गिन लो बिछाई चादर, देदूं धन में अपार

पर ये छोहरा दे दो हमको, साचाह सौदा टेक
बोले इस पर धिआन सिंग जी, छोरा मेरा तु एक

दे दिया इसको अगर यहाँ तो, वंश चले किमि मोरा
मसताना कही बीबी तेरी, कै हो दूजा छोरा

धियान सिंग जी बोले इसपर, होइँ कैसे साहाब
बूढ़ी बीबी हो गयी मेरी, अब न होवै औलाद

छोरा मेरा दे दो मुझे बस, और नहीं कुछ चाहीँ
मसताना कहा ले जा छोरा, पास रहै तुज्झ नाहीँ

धियान सिंग जी ज़ोर ज़बर से, लड़का ले गये साथ
चाहते नां पर जाना परयो, रोशन को पिता पास

नीरंजन की ज़बर ही दसती, शादी देइ रचाही
लेकिन नीरंजन पी चुकयोह, प्याला इश्क इलाही

काँटा चुभ ही चुका था उसको, मौजे सावन शाही
फ़ीके थे अबू सारे रस ही, सनमुख उस दुनियावी

निरंजन रुके दिन नहीं ज़्यादा, घर हिँ बाप के साये
देखीं मौका एक दिवस रहे, भागी घर से आये

सेवा सच्चा सौदा की सबजी, माली गोबिंद राम
देख रेख था करता बड़ी ही, आपुनी लाई जान

सेवादारों दो या तीन की, शाह से अर्ज़ लगाये
नीरंजन बालू गुरुमुख और, ज्ञान जी को बुलाये

आओ पुट्टरा इधरे तुम्हें हम, रिद्धी सिद्ध साधाएं
सुन के रह गये चकित निरंजन, रूहानी बाधाएं

आने लागे ख़याल इन्हें अब, मन में ऐसे ऐसे
बोले मसताना शाह बाधक, शब्द रूहानी कैसे

पहुँचे जब मसताना शाह के, तीनों हि थे ये साथ
फ़रमायो मसताना जी तभी, बैठाई इन्हें पास

रिद्धीह सिद्धीह सबज़ियों का ही, देत हैं तुमको काम
काम हि आयेगा तुम्हें आगे, लेयी लो येह ज्ञान

बालू गुरुमुख और नीरंजन, दोनो सेवाहदार
दोपहर में भरी ये दोन ही, गारा रहियौ लतार

हाथ पाँव और कपड़े इनके, गारा थे सने पर
इतने पर असनान थे निकले, शा मसताना हज़ूर

चमक रहे थे बाल हि आपके, सोने के जौंह तार
मुखरा पुर ही जलाल सु नूरी, लश्कारो रहा मार

बोलयौ औचक निरंजन सिँग, देखी येह नज़ारा
जी हुआ बढ़िया हिंदुस्तान का, होइ गया बँटवारा

पूछा मसताना जी ने तबू, की पुट्टर वोह कैसे
बतलाता हूँ साईं अभी की, होया है वो ऐसे

होता नां बँटवारा अगर तो, आप न भारत आते
चरन कमल नूरी के दरशनों, से वंचित रह जाते

मसताना शाह जी ने हँस कर, थे ये बचन उचारे
पुट्टर चार या पाँच जनम से हि, लागिं पीछे तिहारे

लेते पकड़ ही तुमको तो हम, अगर यहाँ नां आते
मोंटोगुमरी भूरेवाल भी, पकरन तुमको जाते

सुनकर बात ये हम दोनों ही, परयो सोच विचारे
की मसताना शाहा ख़ुदा ख़ुद, जन्म सु पीछे हमारे

सोचते थे हम सावन शाही, मौज हि पीछे जाई
पर थी हक़ीक़त और यहाँ तो, सामने हि अब आई

फ़िर शाह मसताना ने इक दिन, मज़लिस में फ़रमाया
पुट्टर नाम नीरंजन काल का, काहे ये रख़वाया

वरी ये घर तो है सतगुरु का, काल का न यहाँ काम
बदल निरंजन सिंग से रोशन, राखिं हम तेरा नाम

मानिंद इस ही सच्चाह सौदा, सेवक तीन या चार
नाम थे जिन सब के ही गुरुमुख, होत बुलाई ख़वार

भेडकूट गुरुमुख का रख दिया, बालूह गुरुमुख नाम
गोरा गुरुमुख रख दिया करने, दूजेह की पहचान

गिआन चंद तब खेड़ी वाले, ने भी अरज़ लगाई
बदल दिये हैं नाम ही सबके, बदलु मेर भी साईं

रख तो देंगे नाम तोहर भी, पर नां आगे जाए
पुट्टर नाम तुम्हारा नां बदले, मसताना फ़रमाए

बदल सका था न इसी लिये ही, सेवादार का नाम
आज भी लोग हैं कहते उनकु, खेड़ी वाला गियान

मसताना जी रहयो अनूठे, अदबुद बहुते फ़कीर
दीये सरब ही यौंह तरासी, पाक़ रूहानी वीर

ऐसे दिये तराश थे अपने, परेमी सेवादार
लड़ने को हालात से सब ही, रहत सदातन तियार

मस्ती में चलती रही सेवाह, हाड़ तोड़ दिनां रात
कौन भरे गुन साधुआं माहीँ, चलयो पता नां बात

पहरुआदारी करनी मन की, आपने थी सिखाई
टुकरा हक़ व हलाल का खाने, की बरक़त बतलाई

आपने सब सेवादारों को, जस मिहनत बतलाया
खुद कमाई पसीना बहाई, खाना नेक सिखाया

सहसर बने मस्ताने

हजारों मसताने बन गए

देइँ आपने उनको नजीरें, रोज़ नमूने दिखाइ
ज़िंदाराम कु टोहने अंदर, जिगयासा दी जगाइ

तोरिं सब मोह जाल ये निकसन, का मारग दिखलाया
क्योंकि है संसार ये भरयाअ, भरम अहम औ माया

होईं संजमित जीवन जीना, आप ही ने बताया
बाहर से जाने भीतर महीँ, मारग भी चेताया

कर दी पैदा ललक थी उनमें, पाने की आज़ादी
दुनियावी बंधनों से सभी हि, आसा मोख जगा दी

भजन बंदगी और सिमरन ही, रहना लीन बताया
खाई मुसटी भर ही चले भी, करना सबर सिखाया

काबू नींद पे विजय भूख पर, पाइँ कैसे सुझाया
हर परिवेस हिँ जीव को अपने, जूझना था सिखाया

बतलाते आराम हराम है, सेव करावते आप
सेवा रूप बनाई नमूना, करम कीये उनु साफ़

सेवा का चरनों महीँ नूरी, नफ़हा सोबत पाये
होइँ गयो मसताने सभी वो, सानिध साईं जाये

पिआला इश्क हक़ीक़ी हाथ हिँ, सबकु ऐसो थमाया
भीतर उतरया जिन ये प्याला, नाम खुमारी छाया

होया पेश नज़ारा अजब था, पुर हैरत हुआ काम
रीवाज़ ए बुत परस्ती से सब, लागे होने अनाम

जीव सभी आ सोहबत होये, सौदागर रूहानी
चाली सावन शाही मौज की, पौन रही मसतानी

संत परम सावन शाह जी के, वचन भी ये हि आये
मसताना जी बचन हज़ूर के, सबद हि सबद निभाये

मसताना नां मरै ये ऐसे, लाख बनें अफ़साने
बलूचिस्तानी मरि ये बनाई, सहसर ही मसताने

शा मसताना जी का ग़रीबों, से ही प्रेम था ख़ास
वड्डों को नहीं देते फ़टकने, कबहूँ अपन ही पास

अक़सर जातियों मुफ़लिस में था, इन लोगों का शुमार
भेडकूट कुचबान बावरिये, सांसी और चम्मकार

बाल्मीक भी प्यारे थे इनको, हरिजन औ कुंभकार
लोगों से इन बेपरवाह का, प्रेम बड़ा ही अपार

बावरिये सांसी वा भेडकुट, सेवादारां हि ज़ोर
सच्चाह सौदा में बस इनकाअ, चारों तरफ़ था शोर

सेवादार ग़रीब बावरिये, जीव भेडकुट सारे
मस्ती ए मसताना शहनशाह, लाईं लाईं नारे

नारों से वो देत गुंजाई, सिरसा सकल बाज़ार
सावन शाही मौज की होती, हर ही गली जयकार

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, हाज़िर नाज़िर ज़िंदाराम

रख देते नारों से हिलायी, सगरा ही आसमान
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, तेराअ ही अक़राम

मारी झाती अंदर अपने हि, कर लयो इतमीनान
पाईं हर घड़ी हाज़िर नाज़िर, अंदरे ज़िंदाराम

बावरियों में इक था परेमी, नाम था धूनीदास
होया ज़िकरा अवली रहा उस, प्रेमी बहुत था ख़ास

जत्थाह सच्चाह सौदा हिँ उसका, था इक बहुत हि नामी
नाम नवाज़ा शाह मसताना, जत्था उसकु तूफ़ानी

ऐसे ही जत्थाह इक दूसरा, रहयौ इसका सानी
ज़बर दस्त जत्थाह का था मिलया, नाम साँईं ज़बानी

रोशन सिंग जी भेडकुट, थे इसमें कई और

सिंग प्रताप जी नंदू गौतर, धीरियाह गुरुदयाल
और भी जाति भेडकूट रहे, काफ़ी सेवाहदार

गियान सिंग नंदू खेड़ी का, और परेमी कबीर
सच्चाह सौदा दी जाती रही, जत्थाह इस की नज़ीर

जत्थे में इस करन का सेवाअ, मादा कूट ही कूट
निष्ठा ईमां वा नीयत से ये, करते सेवा अकूत

थे मशहूर इन्हीं वजुहात से, जत्थे लोगों के नाम
दिन पंचास का निबटाते थे, पाँच दिनों में हि काम

जत्था इस के सेवादार सभी, काम जहाँ हि लगाते
रोशन सिंह की अगुवाई में, थे अंजाम पुँचाते

जत्था रोशन वाला ज़बर जहाँ, लागता करने काम
सेवा इनकी हाड़ तोड़ लखी, होते सबू हैरान

इस ही वास्ते सेवादार कुछ, रोशन जी के ख़िलाफ़
सच्चाह सौदा डेरा हीँ लगे, करने थे खुराफ़ात

धूनी दास व रोशन सिंग की, अंदर वाली चढ़ाइ
नज़र से नूरानी न छुपी थी, जानी शहनशा साँइ

जूता चमड़े से नां बनाई, तब तक पहना जाई
जब तक उससे पीट पीट नांह, बास कु काढ़ भगाई

सेवा कठिन को मान ज़रूरी, ये हि मिसाल लगाते
मज़लिस हिँ मसताना जी अक़सर, बात यही फ़रमाते

इश्क हक़ीक़ी प्याला इसलिये, शख़्स वही पी सकता
मार–ए–मुरशिद सहने की जो, हर चंद हिम्मत रखता

हिम्मत भी तो ऐसी असल महीँ, अंदर मुरशिद देता
मौके मौके जीव को अपने, संभाली भी लेता

गूढ़ा प्रेम रहा रोशन सिंग, संग मसताना साइँ
आ अंदर से बाहर अब वोह, लागा देने दिखाइँ

मस्ती अंदरे रोशन लागयौ, होने अब बेकाबू
नज़र नूरानी मसताना का, होइ गया वो जादू

मसती में सराबोर उन्हीं की, सकल थे सेवादार
बिरले होते ख़ुद को लहर में, करने वाले निसार

प्रेम लहर की मस्तीह में इसी, खो रोशन ख़ुद सारे
शाह शहनशाह मसताना के, लागे लाने नारे

शख़्स थे रोशन सिंग जी पहले, जिनकी मस्तीह आया
मसताना से पहले जिन्होंने, शहनशाहा लगाया

मसताना शाह ने थी कर दी, सख़्त हिदायत भारी
बोलेगा जो हमको गुरु होइँ, नरकों का अधिकारी

जोड़े झाड़न वाला ग़रीब हि, कहत जो सेवादार
कुरसी मिलसी इधर भी उनको, दरगाह भी सतकार

लेकिन रोशन सिंग जी तो तब, सदके नज़र मस्तानी
बंधयो न बंधन रहे बाग़ी, गुरुमुख बालु ज़बानी

मसतीह रूहानी मसतानी, माहिँ होई मज़बूर
मौजे-ए-मस्तानी अंदर के, होयी नशे हीँ चूर

शहनशाह मस्ताना शाह बिलोचिस्तानी जी तेरा ही आसरा

सबसे हि पहली बार लगाया, सच्चा सौदा हिँ नारा
नारा लाउने का जिन ऐसा, ये साहस दरसारा

था वो बस रोशन ही अकेला, लड़का सेवाहदार
जिसने पहले पहले निभाया, ज़िगर का ये किरदार

सेवादार कबीर जी ने ये, अपने मुख उचआरा
प्रेमी दूजे भी संग इनके, लागे लाने नारा

लागी मसताना को ख़बर जब, रोस कीया बिकराल
रोशन सिंग व साथियों कु दिया, बाहिर डेरा निकाल

और बाहर पहरा डेरा के, दीया सख़त रखाई
अंदर डेरा सूरत ये किसी, भी आने नां पाई

पर किसी तरह रोशन सिंग जी, छिप छिप चोरी आते
संगत या मज़लिस में मसतीह, नारा ला ही जाते

चलते इसके रोशन सिंग को, पड़ती बहुत ही मार
पीटते पीटते कर हि देते, अधमरा सेवादार

बात इसी पे हि सिरफ़ कि तुम ये, काहे लाते नारे
पर इश्क ए दरिया ए रोशन, रहयो तोड़ किनारे

रहने बहुत नाराज़ हि लागे, मसताना जी शाहा
रहन का बाहर ही डेरा से, सख़्ती हुकुम था लाया

बाहर धाम ही रखने इनके, अब जत्थे को हि सारे
सेवादारों को दी हिदायत, फ़टकें नां ये द्वारे

सच्चाअ सौदा धाम के अंदर, कर दो ख़बरेहदार
ज़बरदस्त जत्थे का नां आ सकै, डेराह सेवादार

लेकिन रोशन शाह मसताना, के इश्क महीँ मारे
जत्थे के और दूसरे प्रेमी, भी मिलकर के सारे

चढ़ चढ़ जाते पेड़ पे ऊँचे, झलक शहनशा पाने
कुल दिन रात हि रहते छिपे थे, झाड़ियों हिँ दीवाने

कि कब मसताना जी शहनशाह, बाहर डेरा आयें
नूरी मुख़रा दरस ईलाही, पाइँ तिरसा बुझायें

तड़पे रोशन अंदरूनी से, वाकिफ़ थे मसताना
लेइ आनंद रहे थे इनकी, विरहा बन अनजाना

करहि रहे थे तियार रूप हीँ, साचे सेवाहदार
वास्ते दूजों बनै मिसाल जो, साचे इश्क औ प्यार

होने कारन पहरा सख्त और, पूरी ख़बरेदारी
अंदर जाना था मुश्किल बड़ा, इतनी पहरेदारी

सत्संगों और मज़लिसों में भी, हुकुम ए सख़्ती लाये
नज़रे सख्ती रोशन सिंग और, जत्थेह पे की जाये

हालत कैसी भी इनको नहीं, आने दीया जाए
लेकिन रोशन और साथी भी, लेत टोह उपाए

साथियों अपने ख़ास संग कुछ, बस्तर बीबियां पाईं
बन के बीबियाँ सारे ही ये, बैठत छिपहीं जाई

लेकिन मसताना शाह भी थे, पूरे जानीह जान
पहली नज़र हिँ इन बहरूपियों, को थे लेईं पछान

गुस्साए कड़की सभी पहरुवे, दारों से फ़रमाते
सेवा पहरे की तुम अब नहीं, सख़्ती से हो निभाते

क्योंकि रोशन सिंग और साथी, बैठे इतहिँ छुपाके
पकड़ी पहरेदार वहीँ ही, मार सभी कु लगाते

मसताना जी के ही हुकुम से, होती बहुत पिटाई
पर बस रोशन का तो इश्क जों, बढ़ता ही था जाई

पच्चीह सेवादारों को तबू, शहनशाहा बुलाई
ग़ैबी पुलिस की डेरे में थी, टुकड़ी एक बनाई

ख़ाकी वरदी देई बनाई, पुलसिया सेवादार
हवलदार को पैंटें पिन्हाईं, नेकर थानेहदार

ग़ैबी पुलिस के पहरेदारों, को ये हुकुम निकारे
प्रेमी मसताना के जो कोइ, नाम सिफ़त के नारे

पकड़े जायें लगाते होये, बाहर कीये जायें
इतनी मार लगाओ उसे की, ख़ुद पे ही पछतायें

रोशन सिंग की इस हि सबब की, बार अनेक पिटाई
बेपरवाह ने चमड़े के थी, मानिंद हि करवाई

ऊपर सु पिटवाते शहनशाह, बात थी ये अलैदा
अंदर इश्क-ए-रूहानी की, कर दी खुशबू पैदा

धूनि दास जी कौम बावरिया, का जथहा तूफ़ानी
ज़िंदाराम की करने बिखाति, ताक़त-ए-रूहानी

आगे हि हुआ करता सभी से, साचाह सौदा धाम
करने सेवाह साथ ही शिद्दत, डेरा बहुत था नाम

रहयौ लोग थे बहुत अजूबे, जत्थेह इसके पूरे
मुंडवाई देते सिर पूरे, या फ़िर आध अधूरे

मूँछे कभी सफ़ाचट सकल ही, आधी कबहुँ कटाते
फ़ाड़ि पाँयचे पायजामों के, मजनूँ से बन जाते

मस्ती में आ औरतें बांधती, ऊँची थी शिलेवार
पोत परेमी मुँहों पे कालिख, घूमते कुछ बाज़ार

गाड़ियों वा बसों में लोग ये, करते सफ़र थे आम
देखीं अजब नमूने लोग थे, पूछत होइँ हैरान

जोश भरीं तब लोग तूफ़ानी, जत्थे के येह सारे
ज़िंदाराम के जोर जोर से, लाते पहले नारे

सेवादार ये तब बतलाते, ख़ुश ख़ुश होइ जुम्हूरी
करते हैं हम ज़िंदाराम की, कूची गली मशूरी

किस्से इनके सकल पंजाब में, होई गये मशहूर
देख नमूने लोग ये दूर सु, लेत पछाँनी जरूर

कहले पाग़ल परेमी हैं ये, सच्चा सौदाह सारे
रहते लाते ज़िंदाराम के, सब ही हैं ये नारे

एक तरफ़ इस तरहा जहाँ पर, जत्थाह येह मसहूर
बनहिं नमूने ज़िंदाराम को, रहयो करींह मज़्कूर

दूजीह ओर वहीँ रोशन का, रूहानी ये सुरूर
रहयौ बाढ़ी पल पल सोहबत, मसताना जी हज़ूर

जत्थाह इनका ज़बरदस्त बड़ाअ, सेवाअ में मसरूर
इनका तो नारा भी साथ ही, लागा होइँ मशहूर

आस पास बाहर और सच्चाह, सौदा डेरा माहीँ
जत्था बोलन नारा शहनशाह, वजह नाम था पाहीँ

रोशन सिंग जी अक़सर ही तब, नारा ये हि लगाते
शहनशाह मसतानाह नारे, से डेरा गुंजाते

पकड़े जाने पै होती तबू, बहुती सखत पिटाई
पर रोशन ने भी बस मानोह, कसमे नारा खाई

हार न मानी खा के कुटाई, लांघी जुनूँ कि रेखा
दर्ज़ा इस ये जुनूने इश्क नां, कबहुँ किसी ने देखा

मसताना शाह हुकुम लगायो, परेमी हाथी राम
जत्थेह वाले रोशन के नहीं, रहयो मन फ़रेमान

लाओ पकड़ के इस रोशन को, खायीं मार अभागा
प्रेमी हाथी राम हुकुम सुनी, पीछे पकड़न भागा

रोशन सिंग था आगे आगे, पाछैह हाथी राम
हाथी राम सवा छह फूट का, बांका बहुता जवान

रोशन सिंग था थोड़ा दुबला, छरहरा बहुत शरीर
तेज बहुत था भागता जैसे, छुटया धनुस से तीर

भागत भागत घुस गया रोशन, अंदर जोहड़ माहीँ
सोचया हाथी राम करेगा, पीछा अंदर नाहीँ

पर नां पानी में भी छोड़ाअ, पीछाह हाथी राम
लीया जाई पकड़ जोहड़ में, पूर कीया फ़रमान

पकड़ कै बालों से रोशन को, गोते दीये पानी
की पानी में हि बहुत कुटाई, हुक्म शहनशाह मानी

बाल पकड़ तब मारा घसीटी, पानी बाहर लाया
पटकियां दे दे ख़ूब उसे तब, बाहर भी ठोकाया

आस हि पास के खेतों में जो, काम थे करते लोग
बोले खड़कती है गंडासी, साचाह सौदा रोज़

पीट–पीट किया रोशन सिंग कु, आधमरा सा जाने
मारत–मारत हाथीराम भी, हार लगा सुसताने

मुश्किल सु हुआ रोशन तब खड़ा, जोड़े दोनों हि हाथ
हाथी राम से बोले तब वो, दीनता बहुत हि साथ

जानता ग़र इतना ही मै ये, हाथी राम जी भाइ
करने पूरा हुकुम हि तुल गये, तुम बेपरवाह साँइ

कबहूँ नाहीँ तुमको भगाता, पाछैह इतनी दूर
हाय पीछेह भाग कै मेरे, आप होईं थक चूर

आपके अब भागते भागते, दुखते पाँव तु होंगे
कांटे भी कई हो सकता है, पाँउ चुभ गये होंगे

लाओ पाँव दबा दूँ आपके, बैठी इस ही थाँनी
सुनते इतना हो गये हाथी, राम शरम से पानी

नां ये अफ़साना ही है कोइ, नां किस्सा नां कहानी
सच की है इस दुनिया हि साखी, गुरुमुख बालु ज़बानी

दसवां सर्ग

बेपरवाहियाँ

बेपर्वाहियाँ (निश्िंचतता)
भयहीनता

ख़ासियते-खानकांहा

मुरशिद (मालिक की विशेषताएं)

''धन धन सतगुरु तेरा आसरा, शाहा बिलोचिस्कानी''
''तेरा ही आसरा बेपरवाह, वाह मौज मस्तानी''

सदके सतगुरु शाह मसताना, रहमत तेरी अपार
गाँव शहर हर कूचे गली में, रहयो ठाठेंह मार

चढ़ गया रंग उनकी ही मस्ती, हर इक पर कुछ ऐसे
पीये बिन ही हो गये सारे, मसताने थे जैसे

नज़रे नूरी शाह मसताना, छायाअ के वरदान
होयीं रहीं थीं दिन पर ही दिन, संगते सब बलवान

डेरा सच्चाह सौदा बना जब, उन्नीस सौ अड़ताली
मसताना शाह जी ने तब ही, बातें ये कह डाली

किये वचन कि मंडली भजन ये, ऐसे करे जो काम
एक दिवस पा रहमते सतगुरु, होईं बड़ी बलवान

सतसंगी दया मेहर सतगुरु, होये गाँव के गाँव
बाढ़ हि आ गयी सेवादारां, प्रेमियों का तूफ़ान

शा मसताना जाते जहाँ भी, रखते थाँह जिस पाँव
ख़िलते प्रेम के फ़ूल वहाँ पे, होती प्यार की छाँव

भीड़ खड़ी ही रहती हज़ारों, पाँवड़े पलक बिछाइ
पाउने झलकी दरसन नूरी, रहते आसा लगाइ

शाह मसताना शहनशाह ने, देइँ संदेस अनाम
पहुँचाने पिआरे जीवों को, सचखंड साँइ पयाम

चमत्कार दिखलाये बहूत ही, अगमित ही करामात
भटके भोलेह जीवों को हो, ज़िंदाराम बेसास

वैसे तो हर एक रूहानी, संत फ़क़ीरां जमात
खंडन कर गये अपने औसर, चमतकार करामात

लेकिन शाह मसताना जी का, संत हुइँ ताईं आज
अलगो थलग था इन सबसे ही, संतई का अंदाज़

शाह मसताना जी सब ब्यास हिँ, मिलने हज़ूर कु जाईं
चाहते सेवादार मिलै नां, मसताना जी साईं

डेरा माहीँ पहुँचते सेवा, में लाईं मसताना
चलती उन दिन सेवा ब्यास थी, कच्ची ईंटें बनाना

काम चिनाई माटी ढेर से, दूजी जगह पुँचाना
देते मसताना को लगाई, सेवा इस रोज़ाना

मसताना जी में भी भरयाअ, कूट हि कूट अमादा
सेवाह मिलती जब भी उनको, करते ज़्याद सु ज़्यादा

लागत उधर पता शाह सावन, को भी था रोज़ाना
कि आये हैं डेरा बिआस में, आज यहीं मसताना

सुनकर शाह मसताना जी की, अंतर की वो पुकार
जात पहुँच ख़ुद पास थे उनके, देईं दरस सरकार

मसताना जी शाह सावन के, दरसन नूरी पाके
अंदर की गहराइयों तक ही, गद गद वो हो जाते
ढढजोश में आ तब मसताना जी, नारा ये हि लगाते

''धन निरंकार सावन शाह साईं तेरा ही आसरा''

बस ये नारा लगाते मानो, इस ही में खो जाते

कबहूँ शाह सावन कु पुकारत, मिट्ठन मलाइ दातार
कबहूँ मखन मलाई पुकारत, और कबहूँ सरकार

नाचते शाह के आगे कबहुँ, गाते सबद सुनाते
देखीं मसताना जी की मस्ती, शाह सावन मुस्काते

बाँधी के घुंघरू पाँवों में, सन्मुख शाह बलिहारी
नाचते रहते सावन शाहा, संगत रात हिं सारी

ईरसा करते गाने नाच हुँ, उत कई सेवादार
पाबंदी थी गाने नाच पै, सावन शाह दरबार

होते इतना भी सावन शाह, बैठे रहे चुपचाप
मसताना की हालते मस्त का, आनंद लेते आप

मसताना जी का था पिता ने, खेमा मल्ल रखा नाम
देखी सावन शाह ने इनका, रूहानी वु रूझान

इश्क में डूबीं सेवाह मस्ती, तबीयत में परवान
देख के सारे ही गुन बख़्शा, रुतबा ख़ास ईनाम

देखे शाह सावन जी ने थे, मस्तीह छलकते जाम
कह दिया तू मसताना आज सु, मसतानाह तुज्झ नाम

शा सावन जी ख़ूब थे वाक़िफ़, हालत ए मस्ती आप
देते औसर रुतबा ख़ास ये, वचन लगा दिये साथ

मसताने तो लाखों हज़ारों, किसको किसको जानीं
अपनी नज़र तो इक मसताना, जो है बिलोचिस्तानी

सच्चाह सौदा मस्ती में तेरी, ठाठें मारिं सदाई
बचन किसी नां रहयौ बंधि कै, मसताना जी साईं

बचनों का ये होईं नतीजा, सावन शा महाराज
सच्चाह सौदा में रहे होते, मस्ती मेंह सबू काज

हालत–ए–मस्तीह ज़बरदस्त ने, चमत्कार कारामात
करवा दी ऐसी – ऐसी नहीं, औरों की जो बिसात

मसताना जी की करामातों, की नां कोई मिसाल
दांत तले गया उँगली दबाइ, सामने उनके काल

खुराफात

बेहूदगी (व्यर्थ की बात)

शाह मसताना जी ने ख़ेले, ख़ेल अनेक ही बार
फ़रमा देते ये कीाि औचक, नाहीँ हुकुम इसरार

फ़िर भी मसताना शाह जी ने, थे कौतुक दिखलाये
दिखलाईं करामातें जीवां, कर्म के भार उठाये

गाँव महोम्मद पुर रोही महीँ, मोची गनेशा राम
लड़का उसका एक था जाका, नाम लेईं पतराम

शाह मसताना शहनशाह से, लेयीं चुका था नाम
करता सेवाह वजहा इस ही, डेरा अमर पुर धाम

नोट रुपइये पाँच का इक दिन, जेब सु होइँ बिगाना
ढूँढया बहुत नहीं मिलि सकिया, खोया किधर न जाना

भोले पन में पूछ लिया तबू, जाइ शाह मसताना
खोईं गये मुज्झ पाँच रुपैया, शहनशाह बतलाना

मसताना शाह ने फ़िर उसको, ऐसा खेल दिखाया
चोला दीया छुड़ा जिसमानी, रहयो खाली काया

कहने लागे लोग कि मर गया, देखो ये बेचारा
पाँच रुपैया के ही फ़िकर में, ये मुफ़लिस गइँ मारा

ले जमदूत गये रूह उसकी, धरम राज केह थान
देखा मिलिया नाहीँ बही में, उसका किधर ही नाम

इतने में वहाँ मसताना जी, पहुँच गये उसी आन
मसताना जी को वहाँ देखीँ, हैरां रूह पतराम

देखा रूह ने शा मसताना, धरम राज हि के साथ
लेईं रूह पतराम की उनसु, करते से सवालात

रहयौ ढूँढत धरम राज नहीं, खाता मिलयोह नाम
फ़रमाया मसताना शाह जी, ले ली भूल से जान

गलती वश येह दूत तुम्हारे, लेइँ इस यहाँ आये
दीया हुकुम आ रोस में जल्दी, देहिँ पुँचाया जाये

वरना देना परैगा तुमको, इसका बर हरज़ाना
जल्दी भूल सुधारो ये वरना, परिहीँ तुम पछताना

पूछा शाह मसताना ने तब, कौन हम पैहचाना
बोला तब पतराम शहनशाह, आप शाह मसताना

फ़रमाये मसताना तब उसे, सब ही अब तू बकये
''कुत्ताह खड़ा हुआ है तू यहाँ, या खड़े पंज रुपये''

हो दरबार में खड़ा यहाँ तू, बात अब है बनाता
मसताना को पाँच रुपये के, बदले है अज़माता

पाँच का नोट निकालीं जेस सु, हाथ थमायाअ आन
दिखलाया पतराम को पूछा, ले तू इसको पछान

बोला तब पतराम की हांजी, नोट यहीं है साईं
नीचे सब परिवार बिलख़ताह, रोता मारत धाईं

मचया बर कोहराम था घर हिँ, रो रहे रिश्तेदार
करने दाह संस्कार थी अर्थी, रहयो करीं तैयार

फुरमाये मसताना जी वहाँ, सुनलो धियान लगाय
देई बगसी उमर तुम्हें यहाँ, पीना जा वहाँ चाय

इतने में हुई जिस्म में हरक़त, हिलया डुलया शरीर
आँखें खोली उठ कर बैठयौ, मन था बहुता अधीर

मांगी सबसे पहले चाय ही, लोग बड़े हि हैरान
आई होश सुनाई कहानी, होया इकठा गराम

सुन के घटना आँखों हि देखी, उत्साह सु भरे सारे
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, लागे लगने नारे

जिया चार या पाँच साल और, पाछैह इस पतराम
डेरे में की सेवा ख़ूब ही, सेवा भजन सिमरान

शाह मसताना भोले भाले, जीवों को समझाने
करत नमूने ऐसे नित नये, ज़िंदाराम मिलाने

मस्तीह उनकी रहयौ बनाई, मसतानाअ हर आम
करना इस मस्ती को भी हज़्म था, नाहीँ काम आसान

जिस जिसने की भजन व बंदगी, होयी गया रब्बानी
शागिरदी मौज-ए-मसतानी, ताक़त-ए-रूहानी

नाताफत इश्क

चाहत में ताकत न होना

गाँव महोम्मद पुर रोही के हि, राअम सिंग सरदार
जाती जिनकी भेडकूट रही, और भाना गौतार

होया मस्तीह चूर वो इतना, होइ बेगाना गात
पाइ रहा ताक़त था अनामी, सोबत पाइँ सौगात

चढ़योह रंग इश्क मसताना, मस्ती हुई बेकाबू
पी के पिआला दरसन नूरी, होइ गया वो जादू

सामना कर नां सकता कोई, शा मसताना जलाल
आधा पल भी आँखों में नहीं, सकता आँखेंह डाल

तकना उनके जलाले रुख को, रहयो नांह आसान
ज़ुर्रत कर सकता था वो ही जो, पाई गया अक़राम

बेकाबू हुये राम सिंग थे, मुश्किल काबू पाते
औचक सनमुख शहनशाह आइ, जोर सु नारा लाते

रहते लावते नारे अपनी, सुध बुध ही खो जाते
झूमने लगते चलती संगत, नाचने हि लग जाते

तरहा इस ही हालते मस्तीह, रूहानी वो बख़्सीस
कर नां पाइ रहे थे हज़म वो, नूरीह सतगुरु दीठ

उनके ऊपर मसताना शाह, दिये पहरे बिठाई
करवाया जेलों में बंद भी, ताले दिये लगाई

हट्ठेह कट्टेह पहरूओं सख़्त की, टोली रहयौ बनाइ
हुकुमे मसताना शाह करते, राम सिंग की पिटाइ

होता असर नां राम सिंह पर, गात कु तोड़ा जाता
पड़ जाते थे निशान पीठ पै, खूँ भी निकल हि आता

फ़रमाते मसताना जी अक्सर, वरि बहुत ये सताता
राअम सिंग भी लेकिन मस्तीह, काबू हि नहीं आता

जाता रोका जितना हि उसको, बढ़ता उतना जाता
जाम–ए–इश्क–ए रूहानियत, हो लवरेज़ हि जाता

पहरा सख़्त के बावजूद भी, आइ था वोह जाता
लाई छाल दीवार से धुर हि, दरसन साईं पाता

मसताना शाह ने डेरे को, चारों ओर घिराई
ऊँची बाड़ कंटीली बड़ी हि, मज़बूती लगवाई

राम सिंग भी लेकिन इश्क की, ताक़त से रूहानी
ऊँची बाड़ छलांग में इक ही, जाइँ पार आसानी

मसताना शाह के चरनों में, सीधे गिरता आईं
खेल ये सगरा मसताना जी, रहयो थे करवाईं

तैस बहुत हीँ महात्मा रूपा, के भतीजे ने आई
दाढ़ी पकर कै राम सिंग की, इक दिन दी झटकाई

बाल उखड़ गये दाढ़ी के कुछ, राम सिंह भय खाई
संगत डर गई नाराज़ी से, मसताना जी साईं

सिकवाअ करियो राम सिंग ने, मसताना शा जाई
देखो रूपा राम भतीज ने, करियो क्या अनयाई

इतना सुन शाह मसताना ने, बेपरवाही आई
गहराई के बचन ईलाही, दीये तब फ़रमाई

उतराई खल आशिकों सूली, दी मनसूर चढ़ाई
सीस कटाये नाम पै सतगुरु, तकलीफ़ों हिँ बिहाई

पलटू साहब बीच अजोधिया, ज़िंदा दिये जलाई
दाढ़ी पटयौ वरी तेरी बस, कैसन हि आशिकाई

चल हट फ़ट तू कौन सा आशिक, आशिकी भी लजाई
साची आशिकी दूर बड़ी ही, कौनो तुज्झ समुझाई

पीर इनायत जब किसी औसर, रहयौ चालिं नाशाद
बात पै किसी होयी गये वो, बुल्ले शाहा नाराज़

वचन रूहानी निकले मुख से, अपना ही क्या जाये
‘‘**पानी मोड़ीं अब ही यहाँ से, देते उत पहुँचाये**’’

दाढ़ी का बस लगना बहाना, था कि यहाँ का पानी
होइ गया था बस वो वहाँ ही, उसकु था जहाँ जानी

खींच ली ताक़त अंदर सु और, मस्तियां ही वो सारी
बेपरवाह ने झटके में इक, देइ उतार खुमारी

क़ामिल संत फ़कीर या गुरुओं, दरवेसां येह चाल
पाना समझ है मुसकिल बहुता, रूहानी येह ख़्याल

खेलते हैं ये खेल हमेशा, संग अपने हि हबीब
करते पेश नमूना जहाँ में, होता जोई अजीब

छोड़ते पहले मस्ती थोहड़ी, दुनिया को समझाने
लेते खींच हैं मस्ती फ़िर येह, भावै किसी बहाने

दुनिया को ये देईं सीख के, इश्क तड़प हों कैसे
छोटी बात हिँ देईं इशारा, नुस्ख़ा बड़ा हो जैसे

परख़न ख़ातिर सतगुरु की अदा, इश्क छुईं गहराई
हो बेगाना जिस्म औ नफ़स से, बस हो बेपरवाई

करवाया शाह मसताना ने, राम सिंग येह भान
आशिक आप ही जैसे पर है, सतगुरु मेहरेबान

पर क्योंकि वह ताकते इश्क को, हज़म नहीं कर पाया
महरूमे मस्ती था ईलाही, झटके इक हि कराया

खींच ली लाक़त सारी उसकी, होये थिर सिंग राम
जोशे इश्क रहा नां वो मस्ती, राम सिंह हुये आम

वचन की गोली

वचन की मार

तरह रोज़ की शाह मसताना, डेरा अमर पुर धाम
सुबहो लाइ आवाज़ थड़े पर, संगत सोई तमाम

होई जाओ खड़े सभी अबू, औसर भजन हि आया
बिसनोइ पतराम सबद जांभा, महाराजा सुनाया

''जागो साधो मोमनो, मत सोवो मत करो नींद प्यार''
''जैसा सपना रैन का, तैसा ही संसार''
(जाम्भा जी महाराज)

बोले मसताना जी वरी है, कौन बशर येह धाम
तबहूँ होई खड़े बोले थे, शाह मैं हूँ पतराम

बोले खुश हो मसताना शाह, गाओ फिरीं पतराम
दोहराये फ़िर वचन वही ही, हुक्म शहनशाह जहान

शाह मसताना जी ने संगत, से तब ये फ़रमाया
वचनों को जाम्भा के न कोई, मानत बस परिं माया

ओढ़ी निद्रा पाखंड की सबू, सोये परिं निज खोली
लागी मसताना ही ग़रीब कु, इन वचनों की गोली

संत फ़कीरों की वानी को हि, देते मान बढ़ाई
काट कभी नहीं की संतों की, आपने शाह साईं

पर आडंबर झूठ से लीपा, पोती नां सबीकार
रहबर साचे से ही जुड़न की, बतलायोह दरकार

खेल–औ–बेपरवाही उनकी, नाहिँ समझ थे आते
इश्क ए सतगुरु करने पैदा, सदहा वचन सुनाते

पाना समझीं खेल को उनके, समझना उनकी बात
बात नहीं थी बस की किसी के, नां कोउ की औक़ात

राज़दारी

मर्म -रहस्य का जानना

संत की वानी संत हि समझे, याअ समझें दिलरेश
क़ामिल संत हि करै संभाली, बालक अपने हमेस

सच्चाह सौदा बंद गुफ़ाह से, दी सदाअ मसताना
बाहर कोई जागता है क्या, पैहर इस दीवाना

नेकीराम महात्मा जी और, संग मैनेज़र साब
जाग रहे अबू साईं जी हम, दीया दोऊ जवाब

मसताना जी ने दोइ को ही, तबहिं गुफ़हा बुलाया
देखो हमकू है काल सताइ, कैसे ये फ़रमाया

मैनेजर जी नेकीराम ने, देखा लाइ कै हाथ
बिसतर ए बोरी बेपरवाह, उड़ गये होश हवास

ठंडा बर्फ़ से ज़ियादा बिसतर, जाता लाया न हाथ
मसताना जी करत भजन यहाँ, सारी सारी हि रात

इस पर दोनहूँ को मसताना, जी थे ये फ़रमाई
करने दे नां काल भजन येह, रहत सता हरजाई

जाओ एक बनाइ के ढोढा, बाजरा लेइ आईं
बोले नेकी राम जी तबहूँ, आटा ही नां साईं

ताज़ा राशन रोज़ ही आता, आटा फ़िर कहाँ आइ
ढूँढो थैले माहीँ मनेज़र, शहनशाह फ़रमाई

नेकी राम मैनेज़र जी ने, डेरा छान हि मारा
होता आटा जो डेरे महीं, मिलता तब बेचारा

लानत दोउ को दी शहनशाह, शुरू किया फ़रमाना
चौकीदार हो काल के तुम न, हमदरदे मसताना

मसताना की चौकी पर तुम्हें, काल ने हि बैठाया
मसताना का भजन बने नांअ, काम पे है लगाया

दयाल का तुम अंग नां कोई, ये हि ख़याल हमारा
पिलवा दो चलो चाय सब़ज ही, उसहिँ करसीं गुज़ारा

अलग हि आटा नेकी राम ने, अगले दिन रख़वाया
ख़र्च न दे उसे कोई वहाँ था, इस ही लिये छुपाया

सरदी की महसूस बड़ी जबू, दूजी रात हिँ साईं
ढोढा रात बजे दो बनाने, का दिया हुक़्म लगाई

चालाकी न करना मग़र कोइ, सुन लो नेकीह राम
चाहते नां जो हम ऐसा तुम, करना न कोई काम

दौड़ के नेकी राम गया तब, जल्दी से गया आई
मोटी-मोटी रोटी बाजरा, लाया तीन बनाई

मैनेजर औ नेकी राम को, इक इक रोट खिलाईं
खा रोटी मसताना बजे तिन, बैठन भजन हिँ जाईं

फ़िर से बुलवाइ के मैनेजर, तैश महीँ फ़रमाई
चौकीदार दोउ तुम काल के, चौकी दिये बिठाई

करवाओ अब ही ये अदालत, मैनेज़र नेकि राम
काल के चौकीदार हि दोनों, करते काल के काम

ढोढा रात को बाजरे का जु, मोटा इतौ खिलाया
रात बना नहीं भजन हमारा, उलटा नींद सुलाया

पड़ गये नींद में रात सकल हि, सुरत ही सारी गँवा
गाफ़िल सकल ही रात रहे हम, सतगुरु सावन शाहा

यार नां हैं मसताना के ये, बस ये नफ़स के यार
बिसतर इनका मत्थे करीं इन्हें, डेरे से दो निकाल

वक़त इसी करीं बाहर इनको, भेजो अमर पुर धाम
पाँच बजे की बस पे चढ़ा दो, अबहीं इन ख़ुशी राम

मान के हुक्म शहंशाह जी का, हो के सुबह तैयार
बस में पहली ही दिया चढ़वा, जाती थी जो हिसार

मैनेज़र से बोलयौ तब ये, रास्ते नेक़ीह राम
और खिलाउ रोटी साईं जी, दिया बिगाड़ ही काम

करते थे वहाँ नूरी दरसन, सोहबत हुँ सुबह शाम
सेवा सु गये दूर साईं से, धकया अमरपुर धाम

पहुँचे जो वहाँ चलया पता कि, संगत उस थाँ सारी
दिवस कई से कर ही रही थी, मन में ये हि बिचारी

कि सच्चा सौदा में ही जाइ कै, साधु कोई तु लायें
गुरु की चर्चा होती रहै यहाँ, सतगुरु भजन बनायें

आई समझ हिँ दोनों को शाह, मसताना गई बात
खेल जो खेले मसताना जी, ढोढा बिछाइ बिसात

धाम अमर पुर डेरा में चली, चरचा गुरु दिनों रात
आया रस संगत को बडी हुइ, वचन सुधाअ बरसात

मुरसिद की हर बात के अंदर, होता है बड़ा राज़
बहत है चाल सदा उलटी पर, होत है पूरी साध

मस्ती माहीँ हुकुम लगाई ही, क्या से क्या कर जायें
समझना मुश्किल है ये बड़ा हि, जीव समझ नां पायें

समझ नहीं सकता जब जीव तो, अपनी समझ लगाता
और कई ही बार वजह इसी, औगुन लेइ हि जाता

गहरे राज़

गहरे रहस्य

इस ही तरह शहनशाह दिन इक, मस्ती में जबू आये
वक्त नांधड़ी गाँव से वापसी, बाडो फ़ल फ़रमाये

दिया वचन कि नांधड़ी से चली, संगत रोकसीं नाहिँ
धाम अमरपुर जावसी सीधी, रुकसी वहाँ ही जाहिँ

मसताना होगा आगे और, मसताना की गाड़ी
बीच सटेसन नाहीँ रुकेगी, ये तूफान सवारी

सीधी जाकर रुकेगी अपने, वतन में ही सतलोक
ताक़त बीच नहीं है किसी की, सकता जो इसे रोक

एतबार किसी होइ नां होइ, जब हिं कभी मसताना
खोल हिं राज़ रूहानी ऐसे, बात बात रोज़ाना

बात समझते आई गयी सी, औसर उस सेउदार
गहरी इतनी बात को समझन, सेह थे सब बेज़ार

पड़ गया परदा अक्ल पे सबकी, औसर उस बर भारी
सोच से कोसों दूर अलाही, सोच हिँ दुनियादारी

अपने सेवादार परेमियों, साथ खेल रूहानी
छिपहिँ खेलत रहयो मगर कभी, जग ज़ाहिर नां आनी

करता ग़र कोई भी ज़रा सी, सिफ़त शाह मसताना
डंडों से पिटवाई के उनकु, कर हि देते रवाना

सख़्त हिदायत थी की कोई भी, बचन करे न तारीफ़
दुश्मन है मसताना का वोह, नाहीँ उसका हलीफ़

मसताना जी खुद को हमेशा, कहते सेवाहदार
झाड़ने वाला जोड़े मुफ़लिस, मसताना सेउदार

दरगाह में मिले ऊँची कुर्सी, जाये होइ ब नसीब
मसताना को कहे जो जोड़े, झाड़न वाला ग़रीब

पर जो सिफ़त करेगा हमारी, करेगा जो तारीफ़
धक देंगे उसे नरकों माहीँ, काटे जहाँ तक़लीफ़

उन्नीस सौ अड़तालीस से सन, साठ हि तलक दौरान
खेलीं अनगिनती करामातें, शहनशाह जी हन्नान

इतनी सेवा भजन व बंदगी, जीवों से बनवाई
सेवा जन्म की बरस में बारह, पूरी थी करवाई

जगहा जगहा नूरी चरन धरिं, जीवों को चेताये
काट दिये करमों के भार सब, सोबत में जो आये

सेवादारां सच्चाह सौदाअ, पूरे बारहों साल
सोने दिया नां सेव कराई, और भजन लगातार

एक बार मसताना शाह ने, जज साहेब पतराम
फ़रमाया कि ज़रूरी हि करना, भजन सुबह और शाम

भजन नहीं तो कुछ भी नहीं है, दुनियाअ और जहान
वरना सुबहो शाम के ढलने, हीँ जीवन हो तमाम

सच फ़रमाया तब पतराम ने, भजन बने नां साईं
हिक़मत आप ही बतला दो कुछ, कैसे भजन बनाईं

फ़रमायो शाह मसताना जी, रख चेतेह पतराम
लाज़िम है मरना दिन एक तो, छोड़ना हि है जहान

लेगा सतगुरु लेखा वहाँ पर, हर ही पल का सारा
की नां बंदगी मालिक की जो, गफ़लत वक़त गुज़ारा

शाह मसताना जी ने सब पै, दया मिहर दिखलाई
दीयो काटी करम भार सबू, नूरी नज़र हिं लाई

जान भी परने देते नां कुछ, वो नमूने बनाते
आती समझ नां पहले बाद हिँ, समझीं सदके जाते

''आप इशारा अख दा कीता, तां मधुआ मंसूर ने पीता
सूली चढ़ के दर्शन कीता, होया इश्क कमाल
ऐसे नेह दी उलटी चाल''

खोज हीँ निकलत जो भी प्रीतम, हँस हँस कर सिर देता
अपने ही दिल का है ख़ूँ वोह, हँस हँस मस्तीह पीता

कफ़न है अपना खुश खुश सीता, खुद अपने हि वो हाथ
पिआरे ख़ातिर कब्र में ज़िंदा, होत सुपुरदेह ख़ाक

संतों का कोई धर्म न ज़ात

इक दिन मसताना जी शहनशा, बाहर गुफ़हा आई
बैठ के कुरसी पर फिर सिंधी, भाषा में फ़रमाई

''मन लगायो यार फकीरी में''

फ़िर प्रताप से पूछा मौज ने, चोला तजने हि बाद
तुम सिख लोग रिवाज़ से अपने, लाओगे उसे आग

सिंग प्रताप ने दिया जवाब कि, दाग़ लगेगा जनाब
फ़िर बिसनोई रूपा राम से, दोहराई ये बात

ग़र ये ताक़त रूहानी गई, चोला छोड़ दमसाज़
वक़त करोगे उस क्या तुम ज़रा, बतलाओ मुझे आज

दिया जवाब दबायेंगे हम तु, धरती नीचे गाढ़ा
फ़रमाया इस पै बेपरवाह, फिर तु पड़ेगा राड़ा

छोड़ने पे संतों के चोला, झगड़े हैं पड़ जाते
मज़हब रीति रिवाज़ फँसे येह, लोग समझ हि न पाते

‘‘ना मैं अरबी न लाहौरी, ना मैं हिंदी शहर नागौरी’’
‘‘न हिन्दू न तुर्क पशौरी, ना मैं रैंहदा विच नयौन’’
‘‘बुल्ला की जाणां मैं कौण’’

संतों का नहीं मज़हब कोई, रीति रिवाज़ न कोई
पिआरा अपने ही प्यारे का, दुनिया उसकी सोई

जात धरम के कीच से ऊपर, है हर हद वोह पार
काँटा उसको चुभै जहाँ नांअ, मज़हबी झार झँख़ार

‘‘जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिये ज्ञान’’
‘‘मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान’’

संगत व मज़लिस में शहनशाह, जबहिँ रूबरू आते
बार अनेक ही आम ख़ास थे, बात यही फ़रमाते

‘‘हरजुग में आया मौला, जामा बदल बदल कर’’
‘‘नसीहत दे रहा पैगाम, बदल बदल कर’’

संतों का न शरीर है कोई, नां मज़हब नां शरिया
जाने निकट ख़ुदाह के हैं बस, येह एक ही ज़रिया

चाहीँ ग़र तू सूनना ख़ुदा को, संतन ढिग बहीं देख
कहयौ बात शमस तवरेज़ ये, जगहा–जगहा अनेक

मसताना शाह बार अनिक ही, संगत में फ़रमाते
हर जुग बदली जामा नसीहत, मौला हैं दे जाते

‘‘हर जुग में आया मौला, जामा बदल बदल कर’’
‘‘नसीहत दे रहा पैगाम, बदल बदल कर’’
(मसताना जी)

आया देखने अक़सर संतां, चोला छोड़ने बाद
माया शरियत बस परिं लोक हैं, करते झगरे फ़ँसाद

पर ये दुनिया माया लोक में, रीवाजां परिं मारी
चाकी पिस रहीं आडंबर की, रातों दिन दुनियारी

‘‘प्यारा पहन पोशाकां आया, आदम अपना नाम धराया’’
‘‘अहद तों बण अहमद आया, नाबियां दा सरदार’’

बालका सतगुरु का नये नये, रूप हिँ धरती आईं
मज़लिस हर इक औ सतसंग में, मसताना फ़रमाईं

संदेसा लेई सतलोक का, हर जुग लोक पुगाई
पोशाकें बोली मज़हब और, जाती बदली आई

पर जाओ नहीं जात धर्म और, बोलीह उसके भेस
सीख लेईं उसकी शिक्षा और, मन बैठाइँ संदेस

मुरशिद और दरवेश पीर सदा, लोक हिँ इस जब आते
रंग रूप जिसमानीह चोला, बदली खेल दिखाते

आईं मायाह जगत सदातन, रूप धरीं दुनियावी
नां नां खेल दिखाईं हि जाते, दुनिया को सब तारी

जीवों कु समझाने साधारन, सतपुरुष के ये बाल
लोक मिरित दुख काट हि काट कै, करते जीवां निहाल

दीया सूली चढ़ाई बेशक, अदू ने ईस मसीह
फ़िर भी मांगयो दया खुदा से, वास्ते भोलेह जीव

माँगी भीख़ दया की ख़ुदा से, ख़ातिर जीव अनजान
बोले जानत नाहीँ ख़ुदा ये, कीयो इन जोह काम

मानिंद इस ही मसताना जी, कियो ख़ताह हर माफ़
करही दिये जीवों के अपने, सारे करम ही साफ़

गलतियों से ही उनकी दे दी, दूसरों को भी सीख
फ़र्क किया नाहिँ शाह मसताना, कबहुँ वैरी औ मीत

गैर सोहबत

मुरशिद से मन का हटना – (दूर होना)

काल की चोट सु गाफ़िल जीवों, को मसताना शाहा
भोलेह बेख़बरे लोगों को, मारग सत दिखलाया

काल भी लेकिन कम नां होता, जैसे मौक़ा पाता
चौसर की है मिरित लोक महीँ, यूँ बीसात बिछाता

जीव साधारन गोट बनाईं, चालता मन की चाल
पावै जब भी मौक़ा करत है, शैतानी येह काल

होत जहाँ जब भी मौज़ूदगी, मसताना शाह ग़ैर
घटते सौबत काल की करनी, जीवों की नाहिँ ख़ैर

एक खेत में पानी अग़र कुछ, वक्त दिया नहीं जाता
हरियाली रहती नहीं कोई, खेत सूख मुरझाता

मन की चौकीदारी से ज्यौंहि, सोबत हरत रूहानी
लागत करन है मन ये चिबिल्ला, अपनी ही मनमानी

धाम अमर पुर डेरा इक दफ़ा, शहनशाह मसताना
वक़त गुज़ारने बास्ते कुछ दिन, धाम गये गुदराना

रहयौ काफ़ी दिन थे वहां पर, मसताना जी साईं
सोबत कम होने से समय इस, वक़त काल था पाई

चल दी काल ने वक़त इसी ही, अपन शरारती चाल
होयी येह ताबीर धाम की, होइ गया बुरा हाल

खेलना करयो शुरू प्रेमियां, जुआह डेराअ माहिँ
शाह मसताना जी कु बताया, प्रेमी हज़ारा जाहिँ

होइँ बहुत नाराज़ शहनशाह, रोस महीँ फ़रमाये
खड्ड में परिं ये लैना असी की, नां मन्ने जोइ जाये

औचक हि मसताना जी इक दिन, धाम अमर पुर आये
सुनकर के पतराम भी दर्शनों, की इच्छा को जगाये

हाज़िर हो गये कुछ ही देर हिँ मसताना जी हुज़ूर
शा मसताना जी ने किरोध हिँ, देखा जो उसे घूर

पुर नाराज़गी मसताना जी, सबद ये तब फ़रमाइँ
सतसंग रखयो एक यहाँ हम, देईं तुझ ये बताइँ

सतसंग हिँ तेरे यार कु दिल्ली, से भी हम बुलवाई
तोहरी अदालत मक्ख़न लाला, सेइ यहाँ करवाई

बोलयौ फ़िर पतराम रुँआसा, होइ गया है कुसूर
दुहरायेंगे ग़लती कभी नां, माफ़ करी दो हज़ूर

कड़क के बोले मसताना जी, माफ़ी का नां खाना
अपघाती तुझ जैसों को नाहिँ, माफ़ी हि है कराना

डेरे को दी जमीं है तूने, मन हीँ अग़र ये ख़्याल
तुझको हम कहें आज यहाँ ये, देना मन से निकाल

मालिक को मंज़ूर था खेला, थी धरती की पुकार
बाँधा होता घोड़ा नां यहाँ, सावन शाह सरकार

रखा ही क्या तेरी ज़मीन था, काहे कु यहाँ आते
बड्डा चौधरी समझता है तू, नज़र भी न हम पाते

संत किसी को करके हि आगू, काम अपन हैं करते
वरना है न बजानी डुगडुगी, कदम यहाँ जो धरते

जुआ खेलते देख तेरे को, रूह नयी जो आये
बदमासी देखे तुम्हें करते, मन में क्या ले जाये

सोचेगा वो मन हि में अपने, दी है जिसने ज़मीन
संगतों की सेवा की इतनी, केहिं करेगा यकीन

रिसतेदारों से सबू अपने, होइ मुक़ाबिल ठाढ़ा
खेलती जुआ रूह ऐसी भी, रंज करे वो गाढ़ा

रूहें ऐसी अबसी यहाँ से, जायेंगी ले अभाव
होगा नां छुटकारा हि उनका, जुग ही जुग ताइँ जाह

रूह कु करने वाला घात तो, होया तेरा स्वरूप
जाओगे दरग़ाह में बोलो, परेमी तुम इस रूप

मन की तेरी हि कमज़ोरी से, कितना हुआ नुक़सान
बोल हुआ हत्यारा या नाहीँ, झाँक के घट में जान

फ़रमाना था इतना शहनशा, फक़त उसी ही अवान
ग़लती अपनी कर महसूस थे, रोने लगे पतराम

गिर चरनों में मांगी मुआफ़ी, दोनों पकड़ कै कान
चालूँ ख़बरेदारी सु आगे, कीया अहद ऐलान

मसताना जी शांत हुये तबू, दूध का जेहिँ उबाल
फ़रमाया चलता है काल ये, संत से ऊपर चाल

उसको मौक़ा ही नां दो पुट्टर, तुम रहो ख़बरेदार
सौदा बहुत ही उलटा है ये, काल का बेजिनहार

कर दिया माफ़ शहनशा ने तब, गलतियों को पतराम
लेकिन दी बड़ी सख़्त हिदायतें, सामने सकल जिहाम

सच्चा सौदा धाम हिँ गये शाह, मसताना जी पधार
कातिक पूरन मासी नवंबर, नौ था तरेपन साल

तीन बजे सुबह मसताना जी, बोले मनेजर साब
जनम दिहाड़ा परसों है शाह, सावन जी महाराज

इससे पहल ही दरवाज़े के, दोनों ओर दीवार
लंबी-लंबी है करवाउनी, जल्द बहुत ही तैयार

मौन पे थे सचखंड में तबू, मसताना निगहबान
बंद था सचखंड दरवाज़ाअ, ईंटों से किया जाम

फ़रमाईं मैनेजर जी तबू, मिस्त्री मिलहिं नां आला
जनम दिहाड़ा गुरु नानक जीअ, देव हि आने वाला

होंगे मिस्त्री काम पे सब लगे, औसर इस गुरुद्वारा
जा तु सही कहा मसताना जी, मैनेजर सु दुबारा

पास के भट्टे से हि मैनेज़र, जी ईंटें मंगवाइ
मोहल्ला हरिजन सिरसाह तबू, भालने मिस्तरी जाइ

बाद दोपहर मिल गया मिस्तरी, पूरन उसकाह नाम
सुनता भी था कम पूरन सिंग, नुक़सी बापुरा कान

साब मैनेजर सच्चाह सौदा, साथ हि मिस्तरी लाये
काम शुरू किया मिस्तरी ने पर, ढीले हाथ चलाये

पहले दिन बस पैंतीस ही फुट, पाईं बना दीवार
देखी उसका काम यूँ ढीला, दीया उसको निकार

मिस्तरी दूजा गया था लाया, आगिले ही दिन सार
ऐसे हाथ चलाये मिसतरी, लागी उड़न दीवार

पाया दूसरा लगभग इक सौ, फूट पिचहत्तर दूरी
हुइ दीवार वहाँ तक ढंग से, करिश्माइ सी पूरी

इस पर काल का बुत भी इक था, शहनशाह बनवाया
जीवां ध्यान रहै जो काल की, ये शैतानी माया

तेजी बहुत वा अच्छे ढंग से, निबटायाह सब काम
होया ये सब मसताना शाह, की ही मिहर अक़रम

ख़बरें भेज दी भंडारे की, सब ही थाँह फ़िलहाल
दिल्ली से आये राम हुलासी, लालाअ माखन लाल

राम रखा भी साथ ही आये, रोहतक देवि दयाल
धाम अमर पुर डेराह संगत, आइ गयी हो निहाल

भगवन दास गिआनी व सुंदर, सिंग उत्तम सरेदार
गुदराना सु दादू किशन सिंग, सुच्चा संग मुख़तियार

बीर सिंह संग आये प्रेमी, पच्चीह तीस के पास
सत्संग मैनेजर से कराई, मख़न लाल कियो पाठ

इस सतसंग में मसताना जी, बाहर ही नां आये
बाद हीँ सत्संग के प्रसाद में, हलवा ख़ूब खिलाये

बंद दुआरा सचखंड का जो, शाम शाह खुलवाये
बाहर आकर रात को प्रेमी, ख़ास गुफ़ा हिँ बुलाये

मसताना जी फ़रमाये सुनो, मैनेज़र जी सहाब
पढ़के मुझको सुनाओ जो की, रहयो लिखहीं किताब

पढ़हिं मैनेज़र जी सफ़ेह कुछ, पुस्तक के थे सुनाये
होये मसताना जी बहुत खुश, मन ही मन मुसकाये

उपदेशों पर शाह मसताना, लिख हि रहे थे किताब
लेकिन हुइ प्रकाशित शहनशाह, छोड़ने चोला बाद

अधूरी यात्राा

कबीर सेवला की ज़बानी

मसताना जी ने ख़ूद साधुआं, सेवादारां आई
भरम मिटाने अंदरूनी को, तस्कीं ख़ासी कराई

काम ये बेपरवाह सहजता, से इतनी कर जाते
तीजे को नां चलता पता कुछ, रचना वोह रचाते

बदली जब मुख़तियार सिंग का, रख़याअ नाम कबीर
करवाने उसे पहले तसल्ली, पेश करी वो नज़ीर

रात दिखाया सपना उसे इक, मुसकाते दियो दीद
होइ गया बस वो तो दिवाना, उस ही पल से मुरीद

सर हिँ टोपी पहने हुये और, खद्दर का एक चोला
डंगोरी लिये हाथ खड़े हैं, मसताना जी मौला

ऐनक नज़री चढ़ी थी जिनकी, आँखों पे निगहबान
अगली सुबहा साचाह सौदा, देखिं होये हैरान

सामने भेस उसी में हि खड़े, मसताना जी शाहा
देखते सिँह मुख़्त्यार शहनशा, ने ये तब फ़रमाया

जीव जन्म से पिछले हि कई ये, रहयो चलता ही आ
भगती न हुई इस अभी पूरी, घट से है तिरियाहा

काम वो करता पहले नहरी, महकमे हिँ रोज़ाना
छोड़ी नौकरी दिन सु लगा उस, धाम रहन गुदराना

लागे शाह मसताना करने, जीव की अपने भाल
दे दी उस थी बनाइ नमूना, डेरे की संभआल

अंदरूनी थपक

अंदरूनी शक्ति

कबीर सेवला की ज़बानी

बालू गुरुमुख जी की ज़बानी, साख़ी बर लासानी
साखी प्रेमी इसके हज़ारों, एक जुनून कहानी

नाम निरंजन बदल के रोशन, नाम रखे़ मसताना
वास्ते सेवाह हाड़ तोड़ ही, साधू जाता जाना

बीस या तीस परेमी इसके, रहते सरबदा साथ
फ़रमाते मसताना जी जत्था, ज़बरदस्त बड़ाअ ख़ास

रोशन सिंग वाला येह जत्था, इश्को मस्ती हीँ चूर
लागा वो जो नारा लगाने, था न शाहा मंज़ूर

अगुवाई में रोशन सिंग जी, जत्था उनकाह सारा
मसताना शा तेरा आसरा, लागा लाने नारा

नारे लावते ज़ोर ज़ोर से, गुंजाते सबू धाम
पड़ती मार घनी जत्थेह रहीं, पर नां छोड़यो काम

तब ये हुकुम लगाया सख़्त था, शहनशाह मसताना
कोई करे नां सिफ़त हमारी, वरना हो पछताना

जोड़े झाड़न वाला ग़रीब हि, मुज्झे कहें सेवादार
करता नहीं जो ऐसा उसको, बाहर देते निकार

मसताना शाह सबब इसी ही, जत्थे के सेवादार
देइँ हुक़ुम था उसको निकालो, सच्चा सौदा बाहार

हुकुम नहीं था आन का अंदर, पहरा सख़्त रखाये
जत्थे का रोशन के कोई भी, अंदर आन न पाये

जाते निकल महीने हि ऐसे, अंदर न कोइ आता
आता जो चोरी छिपे कोई, ग़र वो पकड़ा जाता

शा मसताना नारा लगाने, पे हि होती पिटाई
होती जैसे साथ ही धुनकी, रूई की पैंजाई

कबहूँ मार थी पड़ती इतनी, चमड़ा उतर हि जाता
पर था जुनूं सवार शहनशाह, मार हिँ भय नां खाता

दरसन कई दिन लौं मसताना, जी के उन नां होते
लीये तड़पन दरस की नूरी, रोशन बहुत हि रोते

अंदर अंदर तड़पते झुरते, करते सोच विचारी
अच्छा लाया नारा शहनशाह, दर्शन भी हुये भारी

लगता शाह मसताना जी भी, रहयौ खेलिं ही खेल
रोशन भी थे जुगत इसीह में, बाबा से होइँ मेल

माहीँ झाड़ियों छुप जाते कभी, बिरछों पे चढ़ि जाईं
झलकी किस ही बहाने सोचत, मसताना शा पाई

अंदर से दिल रोशन सिंग का, रोता ज़ार ही ज़ार
बाप माँ छोड़े पतनी छोड़ी, छोड़यो सब घर बार

छोड़ी ज़मीं वा खेती बारी, इश्क शहनशाह आइ
सच्चाह सौदा देत नां रहने, जाऊँ कहाँ मैं साँइ

जाओ घर तो दिल नहीं लगता, जाऊँ बताओ कहाँ
बीबियों के हैं फ़तवे लगते, झूठे हि आई यहाँ

होती मार कुटाइ भी इतनी, फ़िर भी दरस न होते
दिल हीँ करके मलाल यही थे, रोशन बहुते रोते

विरहा वेदना से मुरसिद की, मुख़रा था मुरझााया
दर्श रूहानी प्यास ने रोशन, मछली सा तड़पाया

कीया दिल ने फ़ैसला तब इक, हम सब वहाँ हि जाके
माफ़ी मांगें शाह मसताना, गलती नां दुहराते

कम से कम डेरे में रही कै, दर्श तो होंगे नसीब
सेवा मिलसी हुकुम की रोज हि, रहसों शाहा क़रीब

पहरेदार का पिघल गया दिल, ज़िम्मेदारी से आप
लेइ गया गुफ़ा मसताना की, रोशन सिंग को साथ

सेवादार वो मसताना शा, शादी लाल था नाम
रहता मसताना जी सेवाअ, हर ही वक़त हर बाम

रोशन को दी आके ख़बर की, अंदर तुमकु बुलाई
मिलयौ रोशन को ख़ुशी कितनी, जाती नाहिँ बताई

मिलने की रही ख़ुशी बहुत पर, दिल था बहुत हि रोया
मिलया सबरो करार दुबारा, रहयो जो कुछ खोया

दरस पिआसी आँख हीँ बुझते, रौशन होये चिराग़
रोम रोम हीँ विरहा वेदना, खिलयौ चमन औ बाग़

हाज़िर रोशन चरन में होये, नूरी शा मसताना
ख़ेल दिखाता इश्क भी क्या क्या, समझ सके न ज़माना

वाकिया येह जब भी हक़ीक़त, याद सभी को आता
करके मंजर याद रूहानी, रोना निकल हि जाता

रोते रोते अरज़ की रोशन, जोड़ीह दोनों हाथ
जोड़े झाड़न वाला कहेंगे, शाह करी दो मुआफ़

लेकिन रहन दो डेरे में ही, करो न इससे न्यारा
लायें नाहीँ शाह मसताना, का हम कबहूँ नारा
करो नां हमको बाबा जी अब, पास से अपने दूर
हो जायेंगे वरनाअ हम तो, मरनेह बस मज़बूर

सम्मूख मसताना जी के रोशन, लागे गिड़हि गिड़ाने
अंदर-अंदर मसताना शाह, लागयौह मुसकाने

अंदर ही देते से हौंसला, मसताना फ़रमाये
पुट्टर इश्क में आशिकों ने तो, अपने सर कटवाये

हँसते हँसते सूली चढ़ गये, अपने जिसम चिराये
पर नां मुँह से आह थी निकली, मन से नां घबराये

एक हो तुम कि इतनी हि भर से, घबरा गये दिल हार
पुट्टर क्यों घबरावता तू रहा, साचाह सेवादार

बस फ़िर क्या था मसताना शाह, अंदर से हि संभार
थमक लगा दी दोनों तरफ़ से, मानिंद एक कुम्हार

हौसला दिया बढ़ाई सेवक, देकर ऐसा हि हाथ
मिट गयी सारी शंका डर अब, पाईं इलाही साथ

जादूगर से थे नाहिँ कमतर, किस ही से मसताना
इश्क चिंगारी लाईं पहले, जानत थे भड़काना

फ़िर भी धार ये खंडे की वो, लेते ही थे उतार
जानता बाज़ीग़र का खेल तु, बाज़ीग़र व चेलार

रोशन जी हैं घटना पे इसी, अब लौं भी पछताते
समझीं कमजोरी इसे अपनी, जब भी जिक़र सुनाते

घबरा गये औसर वो उस पर, दिल से गये थे हार
लेते जान निकाल ही मेरी, भावैं मार ही मार

खाल हि खींच ली जाती चाहे, मुँह से सी नां करते
कुछ भी होता सिफ़त से मुरशिद, पाँव न पीछे धरते

काटे कर्म जन्म के

जन्मों के दुख काट दिए

बालू गुरुमुख की ज़बानी

सावन शाही मौज के दौरां सेवा शा मसताना
प्रेमी धन्नाह जाट लालपुरा, का था आना जाना

थी परमाथी रूह बड़ी वो, शाह से था वर प्रेम
सच्चाह सौदा आना रोज ही, उसका नित रहा नेम

रोशन बालू गुरुमुख तीसरे, खेड़ी वाले गियान
भेजा हम तीनों कु शहनशाह, लाल पुरा के गराम

शाह मसताना जी ने तब ये, दीया हुकुम लगाईं
काम करो धन्नाह के खेत हीं, जब लौं हम न बुलाईं

पीछे हुक्म की सेवा से कभी, हटना नां थे जाने
लागे खेत हिँ काटने फ़सलें, हल भी साथ चलाने

खोदी करते पानी लगाते, करते साथ निराईं
ऊँट चराते चारा बनाते, ज़िम्मेदारी निभाईं

काम संभाले खेत हिँ सारे, समझी आप हि साईं
काम से दिल नां कबू चुराईं, लाज हुक़ुम न लगाईं

धन्ना जाट को शाह मसताना, राख़ते अपने पास
सेवाह उसके खेत हमारी, लाई हुक़ुम से ख़ास

तलबे दरस शहनशाह लागी, कुछ ही वक़त के बाद
वास्ते नूरीह दरसन दिल थे, होईं गये बेताब

रात दिवस ही शाह मसताना, दरसन होवते धाम
हुक़ुम से सेवा ख़ुश - ख़ुश रहता, दिल मसताना क़ियाम

मिलता था कहाँ शा मसताना, इधर दरस ईलाहीं
धन्ना जाट के खेत में तो बस, बैल व ऊँट चराहीं

पाँच हि मील की दूरी पै था, एक बना हुआ धाम
कबहुँ आवते शाह मसताना, किकरां वाली गराम

आते डेरा शाह मसताना, इक दो मास ही बाद
दरसन नूरी कर होइ जाते, तबहीं हम सभी शाद

पानी खेत को मिले अग़र नां, गौड़ी मिलै नां खाद
लागता है वो खेत सूखने, जात होईं बरबाद

बस वैसे हि रूहानी सोबत, अग़र मिलैह कुछ काल
निग़हाबानी लाज़मी मिलनी, चाहिये उस असराल

आतमा कमज़ोर होयीं बिना, दरसन शा मसताना
मन लागे नां काम किया शुरू, जी सेवा सु चुराना

सोची कै पर कुछ रुक जावते, मनुवाअ कर मज़बूत
पर था पल पल भारी वहाँ पै, लागे खेत था भूत

लागा दिल में ख़्याल ये आने, भाग यहाँ से जायें
मसताना शाह के चरनों जा, सीधे सीस टिकायें

किकरां वाली गाँव की सत्संग, मसताना जुँ पधारे
रोशन ज्ञान औ गुनहगार भी, मनहीँ बात विचारे

दरसन वासते मसताना जी, चल पड़े रात हिँ बाट
लगता था नहीं मन अब अपना, खेत में धन्नाह जाट

आइ मनहुँ चालाकी इसलिये, और ख़्याल ये आये
करके जतन कोई भी यहाँ सु, कैसे निकला जाये

तीनों हम जब मसताना शाह, सामने गईं आये
बोलन लागे झूठे बयां वो, रास्ते में जो पकाये

बोले मसताना जी सु रोशन, साईं क्या बतलायें
बोली बागड़ी बिसनाई वो, समझ कतई न पायें

मसताना जी मौला दिलों के, लागे बात पकड़ने
समझिँ गये सेवाहदारों के, लागे मन हि उखड़ने

इस हि लिये हैं बोलते ऐसा, काम न करना चाहीँ
पर नां चाहते मसताना जी, छोड़ यहाँ से जाहीँ

क्या तुमको वहाँ रिसता करना, मसताना फ़रमाये
पुट्टर क्या करना बोली से है, भाड़ हुँ बोली जाये

मौका मिलया तुमको है पुट्टर, सेवा हुकुम निभाने
मिलता है यहाँ मौका किसको, ऐसे करम कटाने

जनमो जनम के करम तुम्हारे, भुगता हम ही देंगे
वरना ऊँट बनीं खेतों इन्हीं, काटने कर्म पड़ेंगे

नूरी रसना शाह मसताना, जब ये बचन कथाये
लागयौ बहुत हि ठोकर भारी, करनी पै पछताये

मसताना शाह हम हि निमानों, के गत कर्म अनजाने
काट रके ऊँटों के करम भी, सेवा इस हि बहाने

दिल था अपना संभल गया अब, था जो डांवाह डोल
असर हुआ मसताना शाह के, वचनों ही का अमोल

दिल पर असर था होया ऐसा, मन में था अब ठाना
चालाकी न करेंगे अब कभी, सम्मुख शाह मसताना

धन्नाह जाट के खेतों में हम, तीनों ने लगातार
डट कर मेहनत से की सेवा, लगभग बरस थी चार

आते ही जाते रहे सत्संग, और मज़लिस दौरान
हाज़िरी देने मसताना जी, नूरी चरन में धाम

पर फ़िर हमने जिद्द नां की कभी, आने की दोबारा
जब तक मसताना शाह ने ख़ुद, हमको नाहिँ पुकारा

थे तो हम बस दुबले हि पतले, तंदरुस्तींह फ़िलहाल
उम्र भी सबकी होगी रही बस, पंदरह सोलह साल

पर सदके शाह मसताना के, इतना करत थे काम
की बस कोई तोड़ ही नां था, बेपरवाह अक़राम

सेवा करवाना तो करम था, उसका नेह इरफ़ान
चाहते तो वो मुरदों से भी, ले हीं लेत थे काम

नज़र का उनकी हो जाता था, ऐसा ही बस जादू
दिन पंचस का काम था होता, पाँच हि दिन में काबू

आती जाती दुनिया देख के, हो हि जाती हैरान
मन ही मन थी सोचती जाती, कैसे करत हैं काम

नां इरको है भूख़ ही लगती, न ही लागती पियास
नींद न आती है न ये थकते, आख़िर होइ क्या बात

पर दुनियावी राख़ने वाले, नजरें दिल औ दिमाग
समझना मुश्किल था ये उनको क्या है इस महीँ राज़

बाज़ीग़र का खेल तो बाज़ी, ग़र या चेला जाने
तीजा तो बस रहता ठगा ही, समझी ये अफ़साने

दिल में जिसके प्रेम की उसके, बूटी है मुश्काई
आख़िर है ये बला क्या शै है, शान ये वो हिं पाई

पूछ भी लेते ग़र मसताना, पुट्टरा हुई गया रज्ज
रज्ज तो सचमुच होई हि जाता, पूछते साइँ जी तब

दस या बारह दिनों के भूख़े, प्यासों पर भी ऐसे
नूरी नज़र के डालते हि बस, जादू होता जैसे

जनमो जनम की भूख़ प्यास भी, शांत तभी हो जाती
वंज भैणया कहते थके हुइँ, साधुओं हिँ जां आती

उनकी नज़र ज़बां औ दीद का, जादू था वो होता
फूँकते जां मुरदों में बूढ़ा, तरुन गुमां था होता

धन्नाह जाट के खेतों में हम, दिन हिँ सेवा लगाते
रोज़ हि रात को किकरां वाली, डेरे में आ जाते

डेरे हुँ था उन दिनों बन रहा, सतसंग हाल बड़ाअ
रात कु आ वहाँ सेवा लाते, काम हि करते कड़ाअ

बन जाने पर हाल थे आये, मसतानाह महबूब
होया सतसंग महत वहाँ था, आईं संगतें ख़ूब

डेरे में मौज़ूद थे हम भी, दोउ किकरां वालाह
फ़रमाते हुये वचन ख़ास हम, दोउँ पास बुलायाह

एक तरफ़ रोशन को मंच पै, दूजी दिसि गुनहगार
खड़हाइ हमें साथ वचन किये, ईशारोंह इज़हार

बोले पुट्टर दिल में यूँ मेरे, आज है ये हि आई
डाली बरकती इन रूहों को, डिब्बी दिल हीँ बिठाई

तन मन धन भइ जिसका सतसंग, रहत सदा हि हुज़ूरी
नाहिँ ग़रज़ है सिमरन सीधीह, दरगाहा मंज़ूरी

हल्के जिसमोंह से भी मौज ने, सेवा बहुत कराई
रहयो नज़र उसी का असर बस, सेवा हुक्म की पाई

लिखी सेवा नसीबां मौज की, जी भर भर ही लूटे
वरनाअ उसकी नज़र बिहूना, तिनका भी नां टूटे

माता मस्तानी जी की ज़बानी

माता मस्तानी जी के मुख कही गई बात

हम बावरिया कौम ग़रीब के, लोग दरद में रहते
अनपढ़ और ग़रीब अनेकओं, गंग नगर श्री रहते

देश में सारे और जगह भी, लोग रहत कुछो एक
सच्चा सौदा धूनी दास संग, कौम के लोग अनेक

आया जाया करते अबोहर, से सिरसा बने धाम
रखया मेरे पिता फ़कीरनी, बचपन हिँ मेरा नाम

सच्चाह सौदा साथ ही मुझ भी, ले गये धूनी दास
देख जलाले मसताना शाह, उड़ गये होश हवास

दीद था जो भी करता उनकी, जाता हो बेकाबू
नजर का नूरी हो ही जाता, जीव हुँ ऐसा जादू

जादू नूरी नज़रां जीव पे, ऐसा होयीं जाता
होईं कै बेकाबू जीव तो, बस खोई ही जाता

जादू से ही नज़र के सारे, जाते बशर हि मारे
लागते चलने बस तब से ही, सतगुरु साँइ इशारे

नूरी नज़रे शाह का मुझ पर, होया जादू ऐसा
लागयौ डेरा ही में रहने, जाना घर था कैसा

कबहूँ - कबहूँ घर हिँ जो आती, पर न दिल वहाँ लगात
सच्चा सौदा ही मै रहँ सदा, ऐसा था दिल करता

मसताना जी जात जहाँ जहाँ, दिल में इक छवि बनती
पीछे पीछे होयीं हि आशिक, रूहें उनके चलती

मसताना जी सतसंग वास्ते, थाँहाँ जिस जिस जाते
पीछे पीछे टोले दोउ ही, चलते नारे लाते

दूर निकट कहीँ जहाँ हि संगत, मसताना शा लाते
पैदल चलते दोउ ही टोले, पहुँची बेशक जाते

सतसंग हिँ मसताना बार इक, शाहों के जो शाहा
बूंदी का परसाद थे अपने, हाथ रहे बरताहा

चौदह पंद्रह बरस उमर रही, सन तरेपन की बात
थी मै किसमत वाली पायोह, बख़शिस उनके हि हाथ

बहुता डर और भय था होता, शा मसताना साईं
होती नां रही मज़ाल किस ही, बोली चूँ जो पाईं

मसताना जब मस्ती लुटावते, मस्ती हीँ आइँ सारे
नाचते गाते ख़ूब लगाते, धन धन सतगुरु नारे

खेल हि खेलते मसताना फ़िर, एक अनूठाह साथ
बुलवा कर लोगों को अमीरों, और ऊँची कुल जात

कहते भइ ये सांसी भेडकुट, बावरिये बेसबूर
करते हैं हमें तंग बड़ा ही, राखो हमसेह दूर

देखना चाहें शक्ल नां इनकी, बात न सुनना चाहें
चाहे रोयें चाहे हि चीखें, चाहे यें भरिं आहें

उकसाह देते उधर ग़रीबां, खूब लगाओ नारे
लैनां की असीं इन बड्डयों से, खड्ड हिँ पड़े ये सारे

कौमें हम ही ग़रीब वहाँ सब, लाईं - लाईं नारे
धरती से आकाश तलक सबू, देते कर गुंजारे

साधु काटके मूंछे हि आधी, फाड़िं आधे पजामे
बीबियाँ बंदे अलग अलग ही, लागे रूप बनाने

सर मुंडवाता आधा कोई, मुखहिं काली लकारें
औरतें बांधती चुन्नी सर पे, लेइँ टुंग सिलवारें

गलियों गाँवों शहरों जहाँ भी, शा मसताना जाते
पीछे - पीछे हि चलते उनके, नारे बर गुंजाते

ऊँची कौमें तथा कथित यहाँ, और जो लोग अमीर
रोकते हमकु पीछे हटाते, हो हो जाते अधीर

पर हम आगे हो कर अपनी हि, मस्ती नारे लगाते
हल्ला मचता आते बना जबू, रूप अजूबे सारे

देख के शा मसताना जी थे, अंदर से मुस्कुराते
आईं मस्ती शाहा कभी - कभी, येह वचन फ़रमाते

ऊँची जात के लोग अमीरों, से नां लगता नारा
काम मशहूरी ज़िंदारामा, करत ग़रीब हि सारा

सत्संग में इसी मसताना शा, हाथों दिया परसाद
पा परसाद शहनशाह हाथों, खुल गये मेरे भाग

ले परसाद हटी जु मैं पीछे, देखा पिछली हि ओर
कुतिया दुबली इक बीमार सी, बहुताअ थी कमज़ोर

लपकी मसताना शा चरन महिँ, रहयो बार ही बार
पीछे क्रोध हिँ उसको हटाते, सारे सेवाहदार

देखीं सब शाह मसताना जी, थे ये तब फ़रमाये
आ करके वरी इसको आगे, बूंदी कोइ खिलाये

सुनके मसताना की बात को, एक ही पल के बाद
मसताना की तरफ़ बढ़ा दिया, अपना वोह परसाद

मसताना शाह जी खुद आई, था परसाद खिलाया
कुतियाअ चलके कदम वहीं कुछ, छोड़ गयी निज काया

इस पर शाह मसताना जी ने, मुझ ग़रीबनी जानी
बखशा मुझको रुतबाअ उस दिन, तु पंझाह मसतानी

रामधारी समाज

राम धारी समाज की स्थापना

नूरी बचन हिँ शाह मसताना, जी अक़सर फ़रमाई
सावन शाही मौज तो है ये, वास्ते मुफ़लिस आई

ख़ास लगाव था मसताना जी, का इन लोगोंह साथ
सेवा भारी इसी सबब वोह, देत ग़रीबांअ हाथ

उनकी नज़र थे लोग धनी औ, ऊँची जातों वाले
रहते चूर नशे में अहम के, अरुझे काल हिं जाले

जत्थेह धूनीदास औ रोशन, सच्चेह सौदे सारे
देते सारा गुंजा आसमां, लाईं लाईं नारे

कर नां सकत बराबरी कोई, इनकी सेवा माहीँ
कौम न कोइ जैसा ग़रीब ये, सेवा भाउ दिखाहीँ

खुश हो मसताना जी इक दफ़ा, देख ग़रीबां सेवा
फ़रमाये की आओ पुटर हम, देइँ बर तुम्हें मेवा

बोलिं मसताना जी हो जाओ, एक तरफ़ ये ग़रीब
भेडकूट बावरिये व सांसी, आके सब ही क़रीब

होये सब इक तरफ़ खड़े वोह, शेष उधर बा अदाब
ले आओ परसादा लगाया, हुकुम मैनेज़र साब

मसताना जी हाथों हिँ लेकर, बूंदीह का परसाद
करयो बांटना शुरू ग़रीबां, होई कै बड़ा शाद

हुकुम दीया तब मैनेज़र जी, जाई दूसरी ओर
बांटो ये परसाद जो बैठे, धनी उधर हि के छोर

मसताना जी लागे बांटने, हाथ लेई परसाद
भेडकूट सांसीह बावरियों, बीच में नेक निहाद

देख के लोग अमीर जु बैठे, सनमुख दूजी कतार
लागे आने उठ - उठ सब तबू, उधरे बा एतबार

पर मसताना शाह थे देईं, सिर्फ ग़रीबांअ दात
मिलया आ जो पंगतां दूजी, ख़ाली रख दिया हाथ

परसादा फ़िर शहनशा जी ने, देन दफ़ा फ़रमाया
पुटटर आज से सतगुरु ने तुम्हें, राम धारी बनाया

मिल गई वरी आज से तुमको, दरगाहि राहदारी
जिसने धारया राम हुआ वो, आज सु राम हि धारी

फ़रमाये फ़िर मसताना शाह, सुनियो देईं धिआन
दी कुर्बानियां कितनी सिखों ने, गुरु पीरों हि ने आन

कौमां सब हुइँ फ़ना गरीब ही, उनके सेवाअदार
कुर्बानी की नींवां दफ़न हुये, लोग यही ख़ाक़सार

पहले सेवाहदार पाँच जिन, गुरु चरनों रखा सीस
लोग बेचारे सारे ही वो, थे ग़रीब औ रफ़ीक

लोग कहाँ हैं आज सभी वोह, पूछता उनको कौन
उनको तो घुसने भी घरों में, देत नां ऊँची कौम

लगता है कुर्बानी तो बस है, किसमत मुफ़लिसां ख़ास
पूछता कौन है बाल्मीकि या, मीरां गुरू रविदास

नाम की इन हिं ग़रीब जातियाँ, तंग हाल तंगसार
लेखा कुरबानी का नहीं पर, छोटीह अक़ल शिकार

दान व पुन है लेखहिँ न कोई, भगती नां ही गफ़्फ़ार
इन बेचारों की तो बस हवै, चार दिसाउँ हीँ मार

पर ये मौज तो आई है बस, वास्ते इन ही ग़रीब
खोले सावन शाही मौज ने, इनके सोये नसीब

मसताना शाह ख़ुश हो बोले, आज की संगत माहिँ
इनको हम बना राम हि धारी, करने ऊँचेह जाहिँ

कर दिया आज हमें मालिक ने, नीचे सेह ऊँचान
भूल न पाये शाह मसताना, कर गये जो अक़राम

बात है येह उन्नीह सौ छप्पन, वाकिया खुश अंजाम
फ़र्शी से दीये अर्शी बनाई, रामधारी दे नाम

औगुण

अवगुण - बुराइयाँ

थे मसताना बेपरवाह के, ऐसे खेल पढ़ाई
प्रेमियों का सच्चाह सौदा में, बाजा डंका जाई

खेल थे ऐसे - ऐसे उनके, चल ही सका नां पता
भरयो अपने प्रेमियों में सब, जाने गुन नाहीँ क्या

सेवा बहुत थी लोग ग़रीबां, मसताना करवाई
मस्ती मौज-ए-सावन शाह जी, बर करिश्में दिखाई

प्रेमी पारटी बावरिया के, बुल्ला और मसतानी
नाचते गाते भजने सुनाते, इश्क चुनरिया तानी

वास्ते मस्तानी के शहनशाह, बा तदवीर ही ख़ास
रख़ा हुआ था डेरे हिँ दरजी, और था एक शराफ़

गहने कपड़े रोज़ नये - नये, बनवाये थे जाते
कपड़े ज़ेवर मस्तानी को वे, रोज़ पिन्हाये जाते

डेरे में सतसंग मज़लिस में, मुज़रे लाये जाते
मुरशिद को ख़ुश करने परेमी, मस्ती नाचते गाते

बातों को इन बाहर डेराह, समझा और हि जाता
लोग बाज़रिया बाहर के कुछ, मतलब उलटा आता

बाहर समझ सु था ये नमूना, लोगों को दुनियावीं
इसी लिये ये लोग नां समझे, औगुण बहुत उठावीं

कहते लोग कि साचाह सौदा, बीबी जाती नचाइँ
खबरें ऐसी पहुँच ही जातीं, मसताना शाह ताइँ

ख़ूब शहनशाह हँसते पहले, बाद हिँ ये फ़रमाते
कहता कौन कि नाचती बीबी, इश्क यहाँ है नाचे

मस्ती और परेम हैं नाचते, साज़ हीँ बजता नाद
वरना भीड़ हज़ार हुँ नाचता, कौन है तज कर लाज

ये तो प्रेमी ग़रीब जो तजहिँ, लोक शर्म नचें गावें
बीबी घराने ऊँचे की इत, होइँ खड़ी नां पावैं

फ़िर मसताना जी सत्संग महीँ, सबसे थे फ़रमाते
लोग वरी दुनियावी भी येह, घर ख़ुशी तो मनाते

अपने प्रियतम की खुशियों महीँ, सबसे थे फ़रमाते
लोग वरी दुनियावी भी येह, घर ख़ुशी तो मनाते

अपने प्रियतम की खुशियों महीँ, नाचते और गाते
हम भी मुरशिद अपने ख़ुशी में, मुज़रा गान सजाते

मुज़रा करने में क्या बराई, लोग बुरा क्यों मानें
करते मुज़रा याद हुं सोहणा, मुरशिद यार मनानें

डेरे की इस बात का ज़िकरा, दूर - दूर तक जाता
कि डेरे महीँ औरतों को है, नचवाया नित जाता

कुछ तो ख़ास ही तौर लोग थे, देखने येह आते
कि मुज़रे नित बीबियों से यहाँ, करवाये हैं जाते

बात बड़ी मशहूरी पा गयी, लोग कहत न अघाते
मसतानी को नित नये गहने, बसन पिन्हाईं जाते

डेरा में ये तमाशा देखन, रोज़ बहुत ही आते
पर जब नूर जलाल ए शाहा, दरसन थे हो जाते

लोग जो आते ले के औगुण, शा मसताना ख़िलाफ़
हो जाते सतसंगी उसी पल, छोड़ कै मन के पाप

मसताना शाह के मुख़ नूरी, से नां हटता धिआन
तक़ते शाह जलाल को रहते, सतसंग के दौरान

ज़िंदाराम की करिं मशहूरी, खेल थे ये बनाये
जीव बुला मुजरे हि के मिस सब, सतगुरु लेखे लाये

जीवों को करिं असर शहनशाह, रहयो अपुन बनाते
जाते हो सबू उनके अपने, जोइ मुख़ालिफ़ आते

होने लगता असर ही उलटा, लोग जु सत्संग पाते
भूली सब वे लोक लाज वहीँ, नाचन ही लग जाते

हर कौम में गुरु की उपाधि

हर जाति में गुरू की बख़शीश

महात्मा बालू गुरुमुख और ज्ञान खेड़ी वाले की ज़बानी

मसताना शाह के खेलों को, समझिं सकया न कोई
जा पै कीयो नज़र शहनशाह, बूझहिं सकया सोई

फ़रमाते थे आम हि शहनशा, बात यही हर बेला
बाज़ीग़र का खेल तो समझे, बाज़ीगर या चेला

छोड़न तक शाह नूरी चोला, ऐसे खेल दिखाये
परेम बीज दिल दिल में बोयीं, सबू रफ़ाक़त लाये

सच्चाह सौदा धाम के अंदर, लगभग बारह हि साल
दीया नां कोई साधु सोने, सेवा लयी हर हाल

भजनो सिमरन और बंदगीह, इतनी कठिन कराई
अपने सेवादारों को दिया, पारस हि था बनाई

शाह सावन जी परम संत के, हुईं गयो बचन हरे
कि नां मरे यूँह बलूचिस्तानी, सौअ मसताने करे

सच्चाह सौदा और अब दूजे, डेरोंह सेवादार
पैमाना ए मस्ती शहनशाह, छलकावईं मतवार

शाह मसताना जी ने कर दी, वोह जमात तैयार
लागे लगने रूप रंग सबू, मसताना सेउदार

धूनीदास वा रोशन के अब, जत्थेह दूर से दूर
डेरों में सब लागे होन थे, बहुते येह मशहूर

जत्थों में दोनों के ही इनके, प्रेमी सेवाहदार
रहते सरवदा थे तादाद हिँ, पंचस चाली मँझार

एक दिवस महीँ उन्नीसौ छप्पन, सरदी जोर की बात
मसताना जी उन दिनों अक़सर, ख़ास हि प्रेमियों साथ

गद्दी की किया करते थे चर्चा, किसको ये दी जाये
पर नां करते बात थे खुलकर, रख़ते राज़ बनाये

सेवा भाव को देख ग़रीबां, खुश थे शा मसताना
पास सभी को बुलाई बोले, देंइँ तुम्हें नज़राना

सेवा सु बड़े खुश हैं तुम्हारी, सतगुरु देवै असीस
देंगे मालिक खुश होकर तुम्हें, आज ही बर बग़सीस

पास खड़े हुए भगत सिंग जी, भेडकूट संग जाइ
बोले मसताना शाहा मस्तीं, सुनो भगत सिंग भाइ

सेवा लोग तोहारे की से, ख़ुश हैं बहुत हि वारी
दीया हमने तुमको बनाई, सच्चा राम का धारी

हर इक कौम हिँ देंगे तुम्हें हम, गुरु तुम्हारा ही ख़ास
कौम बावरिया दिख़लायेगा, रास्ता धूनीहदास

पर हम रख़त तुम्हारे हि आगे, भगत सिंग ये सवाल
कौम तिहारी किसको बनायें, गुरु ये मसला महाल

छोरे तीन हैं कौम तुम्हारी, रोशन गुरुमुख़ गिआन
सेवादार है उमर बख़्श सब, साचाह सौदा शान

करने सेवा ईमां नीयत सु, एक से इक हैं बढ़े
हीरे तीनों में से बताओ, किसको ये तिलक चढ़े

इतना कर दीया प्रशन बड़ा कि, बन ही सका न जवाब
बोले क्या ये सोच भगत सिंग, हो गये ला अलफ़ाज़

कशमाकश हिँ बोले भगत सिंग, ये तो मौज हि जाने
तिलक चढ़ाया जावे ये किन्नूँ, वस न ग़रीब निमाने

फ़िर मसताना शाह हँस कर ख़ुद, वचन अलाही लाये
आख़िर आप ही तीनों बारे, लेखे करम बताये

बालू गुरुमुख़ के बाबत रही, येह बचन की साख़ी
बोले लेखा मुकया न इसका, अबहूँ कर्म हैं बाकी

ज्ञान के बारे सतगुरु साईं, बोले सोच बिचारी
आँखें नांअ गुरुआई वाली, आँखें इसकी भारी

देकर ज़ोर शहनशाह ने फ़िर, येह बचन फ़रमाये
बारे रोशन सिंग थे बहुते, करिं ख़ुलासे बताये

इसने है वरी छड्डयाह लड्डू, थाली वाला कोरा
जाने बस इसकी तो अलाही, क्या हि करत ये छोरा

नाम तुम्हारी कौम का सारी, करे तो ऊँचा करे
भर गये दिल सबके हि ख़ुशी से, बचन ईलाही कहे

दीया बख़्श है आज गुरु अभी, कौम अपन भी ग़रीब
ले जायेगा सतमारग हमें, बनहीँ सबका हबीब

रोशन जी का अपने ही जत्थे, में था नहीं इत्तिहाद
बलके सारे ही सच्चा सौदा, प्रेमियां नेक निहाद

हर प्रेमी के दिल महीँ रोशन, का था असर जु आई
बात है बाहर ब्यां के ये अब, जाती नां बतलाई

धूनी दास थे बावरियों में, साध कमाई वाले
रोशन भी थे कर रहे उस ही, तर्ज़ हिँ नूरी उजाले

साधो उमर बख़्श के रूप में, रोशन जी थे आई
भेडकूट जाती के साथ ही, सोये भाग जगाई

प्रेमी इक बिसनोई पे रोशन, का प्रभाव ये देखा
लांघ गया वो इश्के हक़ीक़ी, की ही सीमा रेखा

विरहा में आई रोशन की हि, अपने आग लगाई
धन धन सतगुरु नारे लगाते, काया हि ली जलाई

विरहा आग हुँ इश्के बुलंदी, जल गइ काया फ़ानी
परवाना औ शमां की इश्क हिँ, दुहरा हि दी कहानी

चलया जब मसताना को पता, घटना पेश जु आई
सोचहिं मसताना जी वचन ये, ततछन ही फ़रमाई

अपने साथियों में रोशन ने, विरहा आग जगाई
करती काम ये ताक़त अंदर, जान न रौशन पाई

अंदर से ख़यालात बहुत ही, मौजे सावन शाही
जानिबे रोशन के हि रही थी, सदके मर्ज़ी अलाही

बाहर रूप ही रखयो रोशन, जी को धाम से दूर
येह नमूना भी थे बनाने, बेपरवाह मज़बूर

शाह मसताना जी ने बारह, सालों के हि दौरान
सेवा राखी चार साल रही, लाल पुरा के गराम

धन्ना जाट के खेतों में वहाँ, काम किया ब ईमान
आयो न कभी शिकवा शिकायत, बाबत उनके हि काम

उस पर मार कुटाई व फ़तवे, लगते रहे इलज़ाम
प्रेमी समझते नाखुश इनसे, शहनशाह ए जहान

पर अंदरूनी रूप हिँ रोशन, को रूहानी खुराक़
ग़ैबी रूप से बख़्श रहे थे, शाह मसताना आप

पर मसताना शाह अक़सर थे, जुम्ला येह फ़रमाते
समझन एक इशारा हि वाले, समझी सब कुछ जाते

लागती बड़ी बात भी सीधी, नां था कोउ झमेला
खेल ये बाज़ीगर का समझे, बाज़ीगर या चेला

इन दोनो हिँ बीच जो चल रहा, कोई समझ न पाया
ऊपर क्या रहा भीतर क्या था, पायीं भेद न थाँहा

कीये वचन पुट्टर हम तुमसेह, लेंगे इक बड़ा काम
सेवाअ लावेंगे बागड़ में, परयौ जो राजस्थान

भेडकूट कापड़िये व साँसी, और रहें बावरिये
अनपढ़ और ग़रीब ये सबही, काम हिँ लगत गडरिये

ऊँची जात के लोग ज़ियादा, रहते शहर बड़े हैं
जयपुर बीकाहनेर जोधपुर, इनहीँ भरे पड़े हैं

गंगा नगर व जैसलमेर में, इनका बोल हि बाला
तेरा इनसे जुदाह गरीबां, पड़ने वाला पाला

तुमको तो सतगुरु दिया हुक्म ये, बाहर उमर बितानी
तेरे पाउँ सफ़र ही सफ़र है, ये ही हुक्म रूहानी

डेराह में इस दौरां निस दिन, चरचा इक ग़रमातीं
बार अनेक हीँ हालते मस्ती, शाह ज़बां फ़रमातीं

आगे गद्दी होगी ये किसको, कौन होईं हक़दार
पर नां होती साफ़ बात कभी, रह हि जाती मंझार

मसताना शाह कबहुँ – कबहुं तो, बात बात कह जाते
बॉडी दो हि नज़र में तीसरी, खुफ़िया है न बताते

तीसरी बॉडी मिलिं मैनेज़र, साथ ही करसीं काम
बैठ के हाथी देगी दरसन, देखेगा ये जहान

बागड़ देस को तारेगी वो, सतगुरु करेगी नाम
उसकी तो बस जाने वोह ही, कौनो करेगी काम

एक झलक संकेत शहनशाह, औचक देई जाते
पर ताक़त उस तीसरी बारे, खुल के नां फ़रमाते

गद्दी नां कभी करयोह घोषित, शहन शा थे ज़बानी
साफ़ न क्यों बतलाया कभी ये, राज़ तो वो हि जानी

अल्हड़ता

मस्तमौलापन

मस्ताना गरीब का प्यार बालू गुरुमुख की ज़बानी

एक बार गट्टूह गुरुमुख़ और, पलटू कोहड़ी राम
बतलाये बिन धूनी दास के, पास चले गये धाम

मैनेज़र और ख़ुशी राम जी, देयीं बात बताई
की ये तीनों बिन ही बताये, भाग खड़े हुइँ जाई

जान परीं मसताना शाह को, उनकी जब येह बात
गुस्सा मसताना जी बहुत हुये, देखी इनकी ख़ुबात

बुलवा भेजा झटपट इनकोह, वापस तीनों आये
पूछया इनसे शहनशाह ने, कित से तुम हो आये

डर के मारे ज़बां ख़ुली नाहिँ, तीनों ये घबरायें
बोले मसताना जी भैणया, लट्ठ के नीचे आयें

ज़ोर से मारा लट्ठ पलटू को, पड़ा पछाड़ी खाई
बोले मसताना जी भैणया, फ़िर लट्ठ के नीचे आई

आज इश्क हिं पलटू भी पूरा, बन ही गया मंसूर
खाने लाठियाँ फ़िर आ जाता, भागता नाहीँ दूर

बार बार आइ लाठी खाता, चूकती न थी बारी
लाठी इस तरह पूरी उसको, अस्सी शाह ने मारी

फ़िर गट्टूह और गुरुमुख बारी, लाठी खाने जाई
पूछा कि गये कैसे वहाँ पर, दुविधा क्या थी आई

बोला गट्टू साईं गया वहाँ, इश्क हिँ तेजी लाने
बात यही आई थी मन महीँ, माने न कोइ माने

मसताना जी हँस पड़े सुनकर, गुस्सा सब हुआ पानी
फ़रमाये है पास तु भैणया, अग्ग विरहा की जानी

अब डर काहे का

अब किसी का डर नहीं

प्रेमी कबीर सेवला रामधारी की ज़बानी

साख़ी महोम्मद पुर रोही के, साथ कबीर बतायी
वो कबीर जी परेमी जिनकी, होइँ सदा हि बढ़ाई

काम कबीर ने किया बहुत शुभ, जामें नाहिँ दो राय
जिस दिये बालू गुरुमुख़ रोशन, शहनशाहा मिलवाय

उन ही कबीर सेवला जी की, साखी येह ज़बानी
कीया महात्मा रोशन जी ने, वो ही जो दिल ठानी

होई सवार इश्क के घोड़े, दिल में जज़बा आया
शा मसताना तेरा आसरा, नारा उसने लाया

धाम हीँ नारा लाने पर ये, होती थी रुसवाई
हाथी व ख़ुशीराम मैनेज़र, करते ख़ूब पिटाई

क्योंकि हुकुम था मसताना शाह, सख़्त बड़ा ही भारी
सेवादार करे नहीं कोई, कबहूँ सिफ़त हमारी

फ़रमाये मसताना शाह ये, सिफ़त करे जु हमारी
घोर नरक का जीव वो होगा, बेशक ही अधिकारी

कहे जो हमको जोड़े झाड़न, वाला सेवाहदार
होगा दरगाहों में वो उच्ची, कुरसीह का हक़दार

पर ये कहत हैं दीवानों को, डर हि नां कोइ होता
साचे आशिक हँस - हँस सूलियाँ, चढ़ते न कोइ रोता

फ़ितरत में रही रोशन के भी, बस ये एक ही बात
इश्के मसताना जी था बोलिं, सर पै दिन और रात

रहयो डर नां अब कोइ उसके, तन मन दिल औ दिमाक़
उसको रहयो जलाईं इशके, मुरसिद अग्ग दिने रात

देख लिया मसताना शाह को, रोशन जी ने अथाह
लागी देर न समझने उनको, शाहा पूरे ख़ुदाह

कहती इसलिये ज़बां न फ़िर क्यों, मसताना शहनशाह
खींचते चमड़ी मार मार पर, टस से वो मस न हुआ

''देखो मार वहाँ ये न पड़ती, बल्कि यहाँ मिरे तन पे''
''देखने में तो पिटते रोशन, पर निशान ये बनते''

मसताना ज्यों लिखयो थे चिट्ठी, सावन शाहा साईं
वाक् लिखा चिट्ठी में जो उसने, कोई समझ न पाई

''मेरे लिए राधा स्वामी और अनामी सब मर गये बस एक मेरा मिठन मलाई सावन शाह ही सब कुछ है''

रोशन जी भी मानिंद उस ही, जानत इक मसताना
समझु मर गये उनके लिये सब, काईनात ज़माना

कंडों की बाड़

कांटों की बाड़

कबीर की ज़बानी

डेरा अमर पुरा महोम्मद पुर, रोही के ही गराम
कंडों वाली बाड़ की सेवा, का था चल रहा काम

मसताना शाह जी अक़सर ही, होइँ सेवा जु भारी
सौंप दिया करते थे सदा ही, हाथ राम ही धारी

झाड़ियाँ व कांटे थी ज़रूरत, डेरा बाड़ लगाने
खेतों में सड़कों के किनारे, चाले कंडे लाने

कंडेह छापे काट - काट कर, बाड़ गइ थी बनाई
करते सेवा बाड़ की डेरा, प्रेमी सब हरसाई

भेडकूट चन्नन सिंग उन दिनों, बीर बडालवा ग्राम
से आया हुआ खेती करने, पास अमर पुरा धाम

राम धारियों हम ही सबू ने, खेत सु उसके छापे
कंडों वाले पेड़ों कीकरों, से भी टहनें काटे

इतने हि आ गये थे वहाँ, चन्नन सिंग सरेदार
बोले छापे खेत के मेरे, दे वा इत ही उतार

बोले सेवादार थे उनको, डेरा लगेगी बार
बोले चन्नन छापे हैं मेरे, मैं ही लेउँगा जार

छोड़ दो इनको यहीं हि सारे, अबहुँ छापे उतारो
ले न जाने दूंगा में कंडे, चाहे जान सु मारो

सब ही राम धारियों ने उसे, समझाया बहुतेरा
बाड़ लगेगी डेरा महीँ ये, लगसी पुन ही तेरा

हमने कहा कि झाड़ - झँकाड़ ये, काम हि क्या आयेगा
सेवा लाइ दो इन कंडों की, वैसे हि जलायेगा

इस पर बिफ़र के चन्नन बोलया, मेरा है येह माल
आग जलाऊँ या कुछ भी करूँ, तुमको कैसा मलाल

चन्नन पूरा नशाअ शराब में, माल लिया उतराई
शा मसताना जी को प्रेमियों, ने जा दिया बताई

लागा मसताना जी पता जब, उसने येह था कहा
ले नाहिँ जाने दूँगा कंडे, चाहे मैं देउँ जला

सुनकर बातें मसताना शाह, बोलयो नां कुछ बात
रात उसी देइँ चन्नन को सज़ा, करवाया एहसास

देइँ रूप अलख़ थे सज़ा बड़ी, देखने जो न आयी
पर हुआ हाल जु चन्नन सिंग का, भूल कभी नां पायी

चन्नन सिंग करिं नशा शराब का, रात को सोया खाट
खाट उठाईं पटकी ज़ोर से, थैड़ जमायोह लात

जोर जोर डंगोरियां तगड़ी, पाँच वा छह दी फाँट
ऐसी पटकियां देइँ चन्नन की, थर थर उठयोह काँप

खाइ मुक्केह लात डंगोरियाँ, अपने सकल हीं गात
चीखें निकल गइ थी चन्नन सिंग, निकली आये बबाट

डर गया जब बुरी तरहा चन्नन, खा खा ज़बरीह मार
बाबा मार न बाबा मार नां, चीख़ता बार हि बार

टुकर - टुकर था देखता सबको, रोवता ज़ारों ज़ार
रख दीया चिल्ला चिल्ला जगाईं, सारा हि घर बार

झटके एक में उतर गया था, नशा शराब हि सारा
पहुँचा दो बजे रात हुँ सीधा, डेरे मारा मारा

चिल्लाता हुआ डरा डरा सा हि, गेट पे आ दिलग़ीर
फ़टेह गले सहमा घबराया, बोला कबीर – कबीर

आऊँगा सब छोड़ के डेरा, कंडेह छापे आप
हरक़त ऐसी अब न करूँ कभी, कर दो मुझको मुआफ़

देखा सेवादारों ने उसे, उतरन लगयाअ नशा
पूछा उससे भाई कहो है, माज़रा आख़िरी क्या

बोलयो चन्नन सिंग तब उनसे, सहमे डरिं घबराये
आये मसताना शाह मुझको, मारा है पटख़ाये

लगयो कहन तू बनता रोड़ा, डेरा अमर पुर धाम
लगने नां देता है बाड़ तू, डेराह सतगुरु धाम

छुड़ावत अभी चोला तेरा, जम्मोंह की पड़े मार
तुमको तबहीँ पताअ चलेगा, काल का बनहिं सिकार

डेरे की तू बाड़ लगा चली, नंगेह पग दिन सात
कंडेह छापों की कर सेवा, तबहुँ करें तुझे माफ़

अगली सुबह वो कंडे छापे, ख़ुद ही ले कर आया
सात दिवस ताइँ काम बाड़ का, नंगे पाउँ कराया

बाकी सेवादारों ही संग, मिल कर सेव कराई
समझयो चन्नन मसताना शाह, पूरन रूप ख़ुदाई

किकरां वाली शाह मसताना, का सत्संग रख़वाया
वाकिया सारा चन्न सिंग ने, संगत माहिँ सुनाया

नाम दान बख़शीश चन्नन सिंग, कीयो शा मसताना
मसताना जी ने दिया ख़ुश हो, दु सौ रुपया ख़ज़ाना

दे नज़राना दो सौ रुपयाह, मसताना फ़रमाये
जाई अपने गाँव बडालवा, हलवा इनसु बनाये

सारे गाँव हि बांटना हलवा, असां वहां आयेंगे
और वहाँ डेरा भी सतगुरू, जी का बनवायेंगे

बाद ही लगभग मास छैह के, जव बडालवा ग्राम
से सच्चा सौदा में थे आये, लेने नाम का दान

आदमी गिनती में पच्चीस थे, भेडकूट रहीं जात
एक हि रंग और एक किस्म के, पहन के कपड़े गात

रंग सफ़ेद की पहन कमीज़ें, लाल हि रंग की पाग
पहनीं बासकटें रंग सावा, मोराकीन बेदाग़

बाँधि चादरें ख़ास सफ़ेद वो, लागिँ बोलियाँ गाने
साज़ भी लाये साथ हि अपने, माहिर सब हिं बजाने

मुख़िया था इक आदमी इनका, राम दित्ताह था नाम
गौतर घमडी जात भेडकूट, बीर बड़ालवा ग्राम

गा गा करके साचाह सौदा, सबद मचाया धमाल
नातोंह भजनों ने सतगुरु की, संगत कीयो निहाल

मसताना बड़े खुश हुये इनसु, देख के इनका काम
कंबल बांटे नोट दिये और, बख़सया सबको नाम

खारा मीठा होय

खारा कुएँ का पानी मीठा हो गया

उन्नीसौ अड़ताली सु साठ का, दौर बड़ा हि निराला
सच हिँ सुनहरी आखरों में हैं, लिखया जाने वाला

मसताना ने हर इक जीव को, जो सोहबत हिँ आया
उसकी समझ वा समरथ माफ़िक, इक संदेश सुनाया

इन संदेसों ने ही असल में, जड़ से भरम मिटाया
आइना दिखलाया जीवों को, फ़र्क असल और माया

बात गूढ़ से गूढ़ शहनशाह, भाव सरल कह जाते
जीव को एक हि समझाने मिस, सबको ही समझाते

देते ऐसा बना नमूनाअ, हैरां सब हो जाते
सुन संदेस अमोलाह उँगली, दांत तले हि दबाते

गहराई को सोचन बात की, होइ बिबस थे जाते
देख शहंशाह की दानिश को, घटहीं घट मुसकाते

गाँव से गुज़रे मसताना इक, है इक बार की बात
पंचायत खड़ी रास्ते माहीँ, कुआँह एक के पास

कीया अरज़ कि पानी गाँव का, पीया ही नहीं जात
ख़ारा बहुत हि पानी यहाँ का, भरया नमक बहुतात

इनसाँह ढोर वा जंतु सबही, मरते रोज़ हि पिआस
शहनशाह मसताना जी साइँ, पूरी कर देउ आस

मसताना जी हँस पड़े सुनकर, लोगों को कही बात
बोले रे भई माँगा भी तो, मामूली अतीयात

मांगना था तो मांगते कोइ, शैअ सतगुरु से ख़ास
मांगते उसका प्यार तड़प या, मालिक से मुलाक़ात

मीठा कूआँ आत्मा करन कू, मांगते ये सौगात
जीव करोड़ों काल की एड़ी, नीचे हीँ मरी जात

मांगना है तो मांग काल को, केहिँ पछाड़ा जाई
मांगो की अंदर के कुँएँ को, उजला केहिँ बनाई

कुआँ आत्मा वाले महीँ पड़े, कोष बड़े हैं छिपाइ
हिम्मत मांग लो करने साफ़ की, कूआँ येह आत्माइ

जिस दिन कूआँ ए रूह तेरा, साफ़ स्वचछताह पाई
ज़िंदारामा छिपे हुये इसीं, दरसन तुझ हो जाई

मूरख़ जैली चोर बेईमां, बूझीँ बात इक मूल
डुबकी कुआँ देख लगाई तू, आत्माअ के बहलूल

कूँआँ कर तू आत्मा मीठाअ, छोड़ी ये मख़्लूक़ात
मीठा हो जायेगा कुआँ ये, अबही से बा इफ़्रात

भूली सब कुछ जाये प्रानीह, मिलसी तुझ वो मिठास
उभरी माया जाल से प्रानी, दरग़ाह पहुँचे ख़ास

घूमी इधर उधर मसतानाअ, आये कूआँह पास
पूछया क्या इसी कुँएँ का जल, ख़ारा लागता ख़ास

वायस राय बोले भाग सिंग, साथ बड़े ही बिसास
जी है इसका हि ख़ारा पानी, काहू बुझै नां प्यास

नूरी नज़र से निरख कुआँ को, बेपरवाह फ़रमात
हमकू तो वरी पानी इसका, लागता मीठा साफ़

भाग सिंग फ़िर मसताना शाह, को था ये फ़रमाया
जी नहीं इसका पानी पीने, लायक बहुत हि ख़ारा

मिट्टी की डली डाल के देखीं, हम अब नीर नज़ारा
पास खड़े हुये प्रेमी सुंदर, हाथ डली धरहारा

हँस कर देखा झट से डली को, कुँएँ में था गिराया
डोंग की सुन आवाज़ शहनशा, ख़िल ख़िल कर मुसकाया

वंज भणैयाह कुआँ तो येह, डोंग अवाज़ सुनाया
कुएँ की दिलकश ये अवाज़ तो, पानी भी मनचाहा

बस दरग़ाही हुक़ुम था होया, नूरी नज़र जु पाई
होया पानी पल उसी मीठा, सबकी प्यास बुझाई

कुँएँ निकट से जब भी निकलते, देख उधर मुसकाये
इक दिन कुँएँ पास हि शहनशाह, मज़लिस ख़ूब लगाये

अपने मुख से सिंग प्रताप ने, था उस दिन फ़रमाया
भागों वाली जगहा बड़ी ये, चरन परिं शहनशाहा

रोज़ लगेगा मेला इस थाँह, मचहीं नित हलकारा
देखो बनयाअ यहीं विद्यालय, सच हिँ मेला लगावा

बचन गये होइ पूरे सतगुरु, एक न ख़ाली जावा
इस हि माफ़िक साख़ियां शाह की, क्या ही क्या बतलावा

संतां ग्रंथां सक़ल फ़कीरांह, एक हि बात बताई
बोना बीज परेम का सबसे, काम कठिन बहुताई

बीज को जैसे पत्थर में हरा, कर के फूल खिलाईं
मसताना शाह जहाँ जहाँ थे, नूरी वचन लगाईं

आत्मा रूप कुँएँ अंधले में, प्रेम मशाल जगाईं
कीयो नूर जगत सबू माहीँ, तम से बाहिर लाईं

तंज़ीम - ए - आनंदपुर धम

आनंदपुर धाम का निर्माण

देख अदायें करिशमे कौतुक, बोल मिठास धराईं
देख - देख सुन सुन परेमी जन, मस्ती अजब थे पाईं

बचन क्यों की संत शाह सावन, भरयो अटल सच्चाई
सच्चे होये शाहा बचन सभी, जो भी वचन लगाई

कहया मसताना नां मरै यूँ, लख मसताने बनाइ
मसताना जिस जीव को देखे, मसताना किया जाइ

सत्संग साचा सौदा बाद मइ, दोह चव्वन मसताना
कीयो मसताना जी शहनशा, रुख जानिब गुदराना

संगत की बड़ी चाहत रखते, जीव वहाँ के सारे
मसताना जी बाबत इस लगीं, उनको बहुत हि प्यारे

चाहते जीव सभी थे डेरा, एक वहाँ बनवाना
पर पानी की बहुती कमी थी, ख़ास उसी ही थाँनां

शहनशाह मसताना रहिं वहाँ, वजहा इसी ही ख़ास
लेकिन तोड़ते नां जीवों की, प्रेम भरी कभी आस

देख तड़प और प्रेम वहाँ का, शहनशाह-ए-जहान
गुदराना में बनाने डेरा, ज़ारी किया फ़रमान

डेरे वाली थाऊँ वहां था, आवा बहुत पुराना
चाहते मसताना शा डेरा, उस हि थाँह बनवाना

आवा पच्चीस फुट रहा लंबा, चौड़ा करम पंचाास
हुकुम लगायो मसताना शाह, करने का उसे साफ़

कर दी सारी धरती समतली, सेवा कर दिनों रात
मौज-ए-सावन शाही अलख हि, कीयो ये करामात

देखी सेवा भावना सत्संग, होइ शहनशा निशात
नूरी नज़र सु बग़सयो सबको, सतगुरु मोख़ की दात

डेराह समतल करीं चहुँ दिसा, बाड़ लगाईं भारी
ख़ुद बनवाते बाड़ शहंशाह, साथ बड़ी हुशियारी

बाड़ अग़र मज़बूत तो डेरा, होवता ख़ुद मज़बूत
मतलब पाई सका नाहिँ कोउ, माहीँ साधू उलूफ़

मसताना जी आने सु पहले, गुफ़हा एक बनाई
खुदवाया गया खड्डा एक था, चार फुटी गहराई

गुफ़हा आगे कमरा एक था, अंदर जातें जाना
वास्ते गुफ़हा जाउने भीतर, पड़ता सिर कु झुकाना

छत इसी लिये गिरवाई गुफ़ा, ऊँची थी करवाई
क्या था सतगुरु जी का नमूना, समझ कछु नहीं आई

काम को इस पूरा होने में, वक़्त लगा न ज़ियादा
एक भी पूरा मास लगा नां, तक़रीबन लगिं आधा

कीया निसचित हाकि़म था वहाँ, आनंद पुर के धाम
अफ़सरान सब के थे ओहदे, बख़शे सबको हि नाम

जग सिंग को दिया बना गवर्नर, मुंशी सिंग जज साब
नाहर सिंग कु मोदी बनायो, जनरल सिंग परताप

मोहतमिम था बनया कर्म सिंग, राय साहब ज़ागीर
नंद सिंग बनिं नंदर दार तो, हुकुम सिंग थे बज़ीर

भोना सिंग बनाया चौधरी, वायस बनिं सिंग भाग
ओहदे नां थे थी ये रहमत, बगसीं जीव साहाब

कंसा सिंग बना करनैल था, मल्ल सिंग हुईं प्रधान
पाइँ कै ये रुतबे रूहानी, होये सब ही अनाम

इसके बाद परेमियों ने की, बिनती जाई शाहा
की हैं वे भी बनाना चाहत, अपनी नियारी गुफ़ा

सेवादार छतीस ने अपने, नाम वहाँ लिख़वाये
पर बंद कर दिये खड्डे सबहू, ताइँ गुफ़ा जु खुदाये

मुसकिल काम गुफ़ा में बैठना, शहनशाह फ़रमाये
पुट्टर चलते फिरते ही घंटा, लेवो भजन बनाये

पाँच गुफ़ायें डेरा महीँ तब, फ़िर सु गयीं खुदवाई
साधुओं पाँच पुराने को ही, करन भजन सौंपाई

लाला राम जु देहली वाले, देहली सु मक्ख़न लाल
राम हुलासी भी देहली के, रोहतक देवी लाल

और गुफ़ा जु बच गई पाँचवीं, रखा उसको बा नाम
की है सौंपना गुफ़हा इसको, लाला नेकीह राम

देत हिदायतें ठोकर बहुती, शहनशाह की तमाम
लेकिन जीव भी काम बड़े थे, लेते जोश में ठान

पर शाह मसताना जी दयालु, जीअ अपने ततकार
लेत बचाई औसर होन से, काल बली का शिकार

बैठ गुफ़ा में करना भजन है, बिरले जनों का काम
बात सभी के बस की नहीं है, जिस पै नज़र अक़राम

जो इसी मंज़िल का अधिकारी, गुफ़हा में वहीं बैठ
कर सकता है भजन व बंदगी, में गहरी वोह पैठ

ऐसे जीवों कु भी है लेता, साफ़ ही साफ़ निकाल
शहनशाह इस लीये कदम हर, करते जीव संभाल

होने कारन बहुत ही ज़्यादा, अंदर डेराह काम
वास्ते संगत हो नां सका इक, दिन लंगर इंतिज़ाम

सेवा ज़ोर था वैसे तु वहाँ, हर दिन और हमेशा
पर नां फ़ुरसत अब थी इन दिनों, काम से येह देखा

जौं हि मल्ल सिंग मुखी की पतनी, पूछा शा मसताना
क्या वो अपने घर से बना कर, ला सकती है ख़ाना

शाह मसताना जी के दिल में, रहमत थी बर आई
रोटी उसको बनाई लाने, मंज़ूरी फ़रमाई

मारे ख़ुशी के अधिक ज़रूरत, से वो रोटी लाई
मसताना शाह हुक़ुम दियो ये, रोटी शेष सुखाई

प्यार बहुत से रोटी बनाये, प्रेम ख़ुराक़ निराली
बाद में हम खाते हि रहेंगे, इसके से हि निकाली

रोटी इसमें से कुछ भेज दी, साचा सौदाअ धाम
रोटियाँ उनमें से भिजवा दी, बाकी अमर पुर धाम

फ़िर फ़रमाये सावन शाह का, ये ख़ज़ाना अलाही
करने को बरबाद नां नूरी, निधि ये सावन शाही

देते खरच हैं हम लाखों हीँ, वास्ते सतगुरू नाम
पर मालिक का बख़्शा खज़ाना, खर्च न करते बेकाम

रहत उसूल फ़कीरों का सभी, सरवदा येह आया
सावन शा इक औसर रोटियों, सूखी दलिया खाया

एक महीने में हुआ जितना, गुदराना महीँ काम
देख उन्हें रह गयी दुनिया की, अक्ल हैरां परेशान

ताज्जुब था बड़ा इतना आवा, मास हिँ एक उठाना
ईंटें लाइ ऊँटों पे इतनी, जल्दी डेरा बनाना

कहते थे कइ लोग कि काम ये, संगतों ही ने किया
पूछे उनसे ज़रा सी संगत, कर ही सकती है क्या

बीत गयी थी उमरें हि जिनकी, करते हुये ही काम
कर नहीं सकती सरकारें भी, काम हि नां अफ़सरान

ग़ाइबी ताक़त ही है कोई, धार के संगत रूप
छुप के अंदर उनके कर गयी, काम बड़ा ही अनूप

कौन सी है वो ताक़त ग़ैबी, कौन सा है वो नाम
और नां कोइ ताक़त बस येह, संत के न्यारे नाम

ये वो ताक़त जिसने महल था, रात हि के अंधारा
बना हि रख दिया नामदेव का, पलकों के झपकारा

ये ताक़त है प्रेम बिसास की, रहमतें साईं नाथ
मसताना सेवाह धारी गुरु, की होयी करामात

ऐसे हि मसताना ग़रीब का, धन धन सतगुरु राखा
प्यारा धन धन सतगुरु ही रहा, दिखला जगत तमाशा

साल सु दस हैरान है दुनिया, करत है तहक़ीक़ात
बड़े बड़े आक़िल वा अफ़ाज़िल, के चकराये दिमाक़

भेद मिला नां कौन है इसका, करन कराने वाला
मिलहिँ भी तो कैसे क्या कोई, इंसां इतना आला

ये तो है बस संतों के उसी, न्यारे राम का काम
काइनात है सब रची जिसने, उस ही येह अक़राम

''सबदे धरती सबदे आकास, सबदे सबदु भईया प्रगास''
''सगली सृष्टि सबदी के पाछे, नानक सबद घटे घट आछे''
(नानक साहब)

''तेरा कवन गुरु जिसका तू चेला, सबदु गुरु सुरती धुनी चेला''
''यह तो पातशाहों का पातशाह है, नानक का पातसाहू दिसे ज़ाहिरा''

है ये उसी मालिक का छोटा, सा मामूली हि काम
हो गयी दुनिया सारी इसी सु, हैरां वा परेशान

खेल मामूली मालिक के इस, चक्कर दुनिया हि खाई
हो रहा क्या ये कैसे होई, समझे नां पगलाई

मग़र सतगुरु अपने की ताक़त, देखते शहनशाहा
होता ऐसे मालूम उनको, धन धन सतगुरु प्यारा

क्योंकि सतगुरु अपने की ताक़त, जानत हैं मसताना
देखी ताक़ते सतगुरु दुनिया, तुमने सरसों दाना

ताक़त क्या धन सतगुरु की रही, बाहर है ये बख़ान
समझो ताक़त दरग़ाही येह, काइनात औ जहान

इसलिये लोग जो कहते हैं कि, उसने किया है काम
या संगतों या मसताना ने, जायेंगे नर्क़ तमाम

दूसरी बात है ये जु कोई, बाहर गुरु बोलेगा
समझ लो वो बेशक द्वारे ही, नरकों के खोलेगा

बाहर गुरु नहीं हुआ है कोउ, नां होगा ही कोई
सबद गुरु धुन सुरती है चेला, अंदर ही है सोई

मसतानाह ग़रीब उस मालिक, का है सेवाहदार
और सतगुरु के हुक्म से जिसको, रस्ता बताता पिआर

बोलेगा जोइ बाहर का गुरु, करत हूँ ये इक़रार
जायेगा वो अवस ही नरकों, के खोलेगा दुआर

गुरु बनावन वाले बाहिर का, और समझने वाले
तरखां काल के तेसा बेशक, जावैं छीले सारे

जैसे कोइ कसाई उतारे, बकरे की रहै ख़ाल
उतरेगी नरकों महीँ यों ही, खाल ये हाथ सु काल

‘‘गुरु कीया है देह को, सतगुरु चीन्हां नाहिँ’’
‘‘भव सागर की धार में, फ़िर फ़िर गोता खाहिँ’’
(कबीर)

जिंदाराम ये हाज़िर नाज़िर, मंदिर देह करतार
ज़िंदा शब्द को समझे जु अपना, सतगुरु और दातार

धन धन सतगुरु न्यारे राम को, जपैगा जो बनसीब
पहुँचेगा वो हि रब्ब का प्यारा, दसवां दुआर करीब

सबद रूप ये राम ही उसको, काल पसारा टाले
किस ही सूरत होन नां देगा, उसको काल हवाले

सबद रूप जु जपैगा राम का, भवजल तर वो जाये
ताक़त काल पड़ै नहीं उसकू, हाथ भी आ लगाये

जैसे ख़ाविंद अपनी पतनी, देत है सब ही कमा
ज़िंदाराम भी जीव कु अपने, सबू कुछ लेईं खड़ा

ताक़त सब सिमटी है इसी में, बेहद वा बेहिसाब
ताक़त ने सतनाम की ही इस, राखी कबीरा लाज

ऐसे हि मसताना ग़रीब इस, सेवादार की लाज
रख रहा धन धन सतगुरु मेरा, साचा ख़रा दमसाज़

सारी दुनिया को है तमाशा, देता बस दिख़लाई
पर नां समझती ताक़त ज़िंदा, राम येह भरमाई

बाहर के रियाकार गुरु ख़ुदी, लटकत मैं की फ़ाँसी
दूसरों कु भी लटका रहे हैं, ये पाखंडी पापी

लाई रहे हैं आत्मा अपनी, ख़ुद ही वोह इक घात
दूसरों की भी आत्मा पै वो, रहते करत आघात

पेट गुज़ारा को हर जीव ही, करता है मज़दूरी
उन लोगों ने भी है चला दी, अपनी दुकां हि पूरी

लूट रहे है माल हराम का, मज़े मज़े ही खाई
कर रहे गुमराह दुनिया को हि, अंधे हो हरजाई

सुंदर रूप भगत बगुलेह का, टांग इक जल हिँ छिपान
मन हीँ आस हो मीन गहिन की, मिलहीं किते भगवान

खाते ख़ुद अंधकार हिँ ठोकर, औरों कु भी खिलाते
पेट और माया के हि लालच, कुछ भी देख न पाते

बांधी होयी फ़रेब की पट्टी, आँख सु दे न दिखाई
धोखा धड़ी वा कपट कदूरत, पार हि देख न पाई

जानते हैं नां ऐसे गुरु ये ऊँट बनें ख़ुद जाई
ख़ून पियेंगे चेले हि उनके, अगले जन्म में आई

समझत हैं ये अपने आपको, जिसम का एक वजूद
अगर इन्हें गुरु वक़्त का कोई, क़ामिल मिलि रहै ख़ूब

उनको चेताये की जिसम के, मंदिर रूप अलाहीं
में होते ये नूरीह तोते, बानी इनहि जगाहीं

अंदर वाला ज़िंदाराम वो, शब्द गुरु वो दातार
सब कुछ इनकोह वास्ते देन, बैठा हि है तैयार

रचनाअ सब ही करने वाला, सब्द सरूपी वो राम
हाज़िर नाज़िर अंदरे बैठा, नियारा ज़िंदाराम

फ़िर वो मांगता किसी से कुछ न, करता नां अहंकार
नाहीँ उसको शै की किसी भी, काहू सेह दरक़ार

तन मन धन अपना सबू कुछ जो, समझहीं सतगुरु माल
सतगुरु भी खुश होइ है करता, उनकी बहुत संभाल

जब रहबर ख़ुद रहि गयो फ़ँस कै, झूठहिँ और हंकार
दल - दल में ख़ुद फँसे ये जीवों, का करीं केहिँ उद्धार

फँस के झूठे फ़कीरां फंदे, होवते लोग शिकार
भोले भाले जी रहे होईं, नैयाअ नरक सवार

मसताना मुफ़लिस को बड़ा है, बात इसीह अफ़सोस
बशर यही हर आ कर पूछता, आत कहाँ से हि नोट

सीधा सादा अरथ है इसका, है वो अंधर माहीँ
अपने ही अंदर गुरू समरथ, चीन्ह सके वो नाहीँ

नां ही उनको मिलयाह ऐसा, क़ामिल गुरु अब ताँईं
अंदर के उनके जोइ समरथ, गुरु की दीठ कराईं

मिल जाता उन्हें कोई समरथ, गुरु जो क़ामिल साईं
पूछते न यूँ आकर के कभी, नोट कहाँ से आईं

उसके लिये नां मुश्किल कुछ भी, मुमकिन होइ हर बात
दुनियाह जिस सिरजाई सगरी, औ सारी काइनात

अपने गुरु के मरने पै जोइ, मूर्ख लोग है रोते
पाते बैन वो मारत ढ़ाढें, होश अपन ही खोते

मर जाये गुरु वोह तो होता, पाखंडला जगसाज़
ऐसा गुरु करने सु तो बंदा, आइ ही जाये बाज़

करना है तो गुरु करीं ऐसा, सदहा रहै दमसाज़
अंग संग तेरे रहे प्रगटे, जैसे करे तू याद

कर ले गौर है मुरशिद सतगुरु, असली ही ताक़त वो
कदम कदम होने का साथ ही, एहसास ए मन हो

जंगल में मंगल

उजाड़-सूनी जगह पर लोगों/संगतों का मेला

पूरा सतगुरु अपने बालकों, की है राखिं संभाल
बांका होन देत है नाहीँ, वाकाह कबहूँ बाल

ज़िंदाराम सबद के रूप में, अंदर वो हि दातार
साथ खजानाअ अनगा उसका, जिस नाहिँ पारावार

पत्ता एक भी हिल सकता नहीं, हुकुम से उसके जुदा
सोना चाँदी बाँटना हि भला, उसको है मुश्किल क्या

करते क्या हम करना हमें क्या, कबहूँ नाहिँ बिचारा
सारी उमर चंडूल जानवर, माफ़िक किया गुज़ारा

जैसे है चंडूल हर इक की, करता नक़ल नक़ारा
यूँ ही बोलियाँ बोल पराईं, हम हैं करत गुज़ारा

है अजग़ैबी इलम तेरे इक, पूराह चोर मक्क़ार
बैठा है छिप तेरे हि अंदर, और भी साहूकार

ढूँढ तू उसको देईं हौका, अंदर खोजीं निकाल
ख़ोजना तो अंदर हि पड़ेगा, बाहर नाहिँ तू भाल

अंदर अपने लीया बसाई, तूने काल पसारा
काम तलब बिसयों की गंदगी, अपने को है मारा

राखी नाहीँ कहानी दिल में, सबद गुरु ही दातार
कीया खुलासा अंदर वाले, न्यारे राम का द्वार

संत फ़कीर सभी औ पोथियाँ, बन के कहते गवाह
सुनते न अरहद जो रूहानी, मिलती उनहूँ सज़ाअ

बाहर बात बयान के सारी, होइ सके नां बख़ान
हो जायें सबू ख़तम सजायें, जपहिं जो ज़िंदाराम

बानी मसताना जी ग़रीब हि, बारहाअ फ़रमाती
जिस्म के मंदिर हीँ रब्ब सोहना, खुल न गाँठ क्यों पाती

सच्चाह सौदा बन ही रहा था, शख़स एक दिन आया
बोला हाल फ़कीरां नां अच्छा, देखने में जु आया

दुनिया कु दिख़लाते फ़कीर ये, दरगाहों का सपना
करते राम हि राम ये जपना, माल पराया अपना

होगा बात कहीं पे और ये, शाह ने दिया जवाब
मसताना मुफ़लिस के हक़ महीं, दूजी बातें जनाब

जपहीं ज़िंदाराम अनाम को, अपने है पाकरना
अंदर सोहने साहुकार की, गाँठ को है कुतरना

पूछा बंदे ने ये कौन है, साहुकार बीचाला
मसताना जी बोले होइँ ये, बेगा बहुत उजाला

अबहूँ तमको हम क्या बतायें, होगा आगे ही क्या
जब जंगल महीँ मंगल होगा, तबू लग जाये पता

पाछै साल दो चार आदमी, डेरा माहीँ आया
बन ही चुका था डेरा तब तक, देखीं वोह मुस्काया

देख के रौनक डेरे की उस, शाह से की फ़रियाद
हमको गुर जोइ मिले अभी लौं, सबहीं ज़माना साज़

कहते हैं कबहूँ करो तुम ये, और कहते कबु येह
ऐसा गुरु बतलाओ जु जंगल, में मंगल करीं देह

आफ़त का जंगल तिरे अंदर, डंक हैं बिछुये भरे
इस लिये मसताना तो जैली, चोर हरआमी कहे

तेरे जंगलों में तो मंगल, होगा तब हीं जाई
नौ सुरत से खींच के दसवांह, दरवाज़ा खुलवाईं

बैठा है दरवाज़े के पीछुँ, असल वो साहूकार
झोलियां भर देता है सबकी, जोइ गया उस दुवार

पर खुलता दरवाज़ा ये तबहिँ, साफ़ करें नों द्वारा
सुरत फंसी हुई है जु तेरे, अंदर कूड़ पसारा

अपने अंदर कूड़ झखाड़ का, जंगल कर देइँ साफ़
चोर औ डाकू बैठा बन तू, जंगल महीँ खुद आप

काटी माया जगत के जंगल, साफ़ तू कर गुलज़ार
आयेगा दरवाज़े सु निकसीं, साइयाँ साहूकार

जंगल माहिँ करना जो मंगल, सांची कर तू पुकार
आई सकता निकल के बाहर, बैठा दसवें जु द्वार

मूरख़ लोग अनेक हि उस समय, उलटी समझते बात
मसताना तो करता कराता, अपनी सिफ़तो सिफ़ात

मसताना को समझी सके नां, पर मूरख़ हि नादान
मसताना जी ग़रीब कराते, किसका गुण और गान

सिफ़तें अंदर वाले की करें, उसकी सिफ़त कराते
ज़िंदाराम वो न्यारा राम हि, मसताना जपवाते

देख नज़ारा ज़िंदाराम का, दुनिया ही ने तमाम
एक महीनां देखा तमाशा, आनंद पुर के धाम

बाकी नां करी सकता कोई, इतने महतेह काम
बस की बात है ये उस ही की, अंदर वालरा राम

बैठा मालिक सबके हि अंदर, करतब वो हि दिखाये
औगुन उठवाये वो किसी से, किसहीं गुन उठवाये

रूह उठाने वाली हो जोइ, मसताना हो कुर्बान
सदके जाऊँ रूहाँ जनम सौ, जपयौह ज़िंदाराम

दादू राम उरफ़ हरनेक था, आनंद पुर के धाम
घर से आई रहे जब डेरा, करने सेव औकाम

पूछा उनके चाचा ने तबू, तुम हो कहाँ पै जाइ
डेरा में हूँ जा रहा अब मैं, दादू तबू फ़रमाइ

इसहीँ चाचा कीयो कनोखी, है तू गधीपुर जाइ
ख़ान दान के होईं बड़े भी, लाज नां तुमको आइ

लेंडे बुइयाँ खेत से चुन चुन, बेचन ताँई जाते
जाइ मिरासियों माफ़िक डेरा, नाचते और गाते

बहना दादू की थी बड़ी जो, ऊँचे घर हिँ बियाहीं
चाचा ने दिया उसको भी था, तरह बुरी बहकाहीं

बहकावे चाचा के हिँ आई, डेरे इक दिन आई
दादू के चुपकेह डेरा से, बिसतर बसन लिजाई

चलया मसताना को पता जब, फ़रमाया तभी आप
दाँव लगाई बैठा काल था, कर गया अपनी घात
कहता काल था दादू को तो, घर ले जा कर छोड़ूँ
पर रख़ने का ख़्याल था अपना, डेरे में ये छोरूँ

पर अब बाज़ी काल हि ले गया, अब कैसा पछताना
उलटा देना हमको पड़ेगा, काल हि को हरज़ाना

मंगवा कैंची फेर कबीर सु, हल्की मूंछें कटाई
हरज़ाना भरी दिया काल को, इस ही तरहा जाई

फ़रमाया की निकलयो भागी, असल हिँ लेइ अभागी
भागी ही था नाम बहन काअ, दादू की जो सागी

ऐसा राज़ न खोले कोई

वचन की लाज (ये रहस्य कोई न खोले)

साचाह सौदा पाँच सितंबर, चौवन दिवस हीँ आम
करके रद्द सतसंग गुदराना, रखिं आनंद पुर धाम

साध लिया था मसताना शाह, मौन ही इसके बाद
बेला कुछ हो सतसंग नां अब, कर दीया ये इआज़

बाद इस सतसंग के रात को, लालाह देवी लाल
राम रखाह वा राम हुलासी, लालाह माख़न लाल

मैनेज़र भी संग ही इनके, अपने पास बुलाये
बात बहूती गहरी रही जो, इन से थे फ़रमाये

ऐसी ताक़त ले ही चले जो, हिंदुसतान उड़ाहीं
पर हैं चेरे हुक़ुम के सतगुरु, नां है हुक़ुम अलाहीं

सख़त मौन रख़ने का लगा है, हुक्म ये हम पे भारी
सतसंग न रख़ने देना हमें, लो येह ज़िम्मेदारी

सतसंग रखने दिया हमें ग़र, तोड़ दी ज़िम्मेदारी
कटवा देईं इसके लिये ही, दाढ़ी पूर तुम्हारी

हुकुम मान कर मसताना शाह, बाहर आये सारे
ज़ोर हि ज़ोर लगे सबू हँसने, बात इसी के मारे

मूँछ वा दाढ़ी नाहीँ अबके, होयीं बचत हमारी
मैनेज़र साहब ये समझ लो, दाढ़ी गयो तुम्हारी

दीया रख सतसंग अगर कहीं, होईं गज़ब ये बड़ा
दाढ़ी मूंछें साब मैनेज़र, सोच लो होगा हि क्या

जोश हिँ आई रख दिया सत्संग, डेरा अमर पुर धाम
पहुँचा देयी ख़बर ये सबहूँ, जगह सब ही ऐलान

क़ामिल साचे फ़कीर का फ़िर हि, वचन खड़ा हुआ आइ
था वचन मसतानाह शाह का, टूटने मौन न पाइ

टूटा मौन रखा सतसंग नां, ज़िम्मेदारी निभाई
तो हम देंगे तुम्हारी दाढ़ी, मूँछें हि मुंडवाई

छोड़ मैनेज़र जी कु वहाँ थी, नाहिँ किसी की दाढ़ी
क्या होगा और कैसे होगा, चिंता थी ये गाढ़ी

करता है हर वचन को पूरा, रखता है हर धिआन
पूरे क़ामिल है ये फ़क़ीरों, संतोंह की पैछान

आज खड़ा था वचन हि सामने, एक बनी कै हि काल
कैसे जाइ हराया काल को, था ये महता सवाल

फ़िर मसताना बेपरवाह ने, किया अनूठा हि काम
जाने पहले सत्संग मंच पै, डेरा अमरपुर धाम

मसताना जी शहनशाह तबू, नाई इक बुलवाये
दाढ़ी मूंछों सहित ही अपने, बालों कु भी कटाये

जो भी रहा अब अंदर जाता, वापस बाहर आता
पूछत मसताना जी कहाँ हैं, पर पैछान न पाता

बैठे हुये थे मसताना जी, चादर तंबू में जा
पूछते सब पहरेदारों से, कित मसताना शाहा

एक गुज़र गया दिन ऐसे ही, कोई नां पहचाना
पहुँचे रूप इसी ही नये में, मंच शाह मसताना

हँसते ख़ेलते आइ मंच पै, सत्संग दी मसताना
पूरे गाँव प्रेमियों में सबू, मच होया हंगामा

देख रहे थे लोग वहाँ सभी, हो हैराँ परेशान
भेद ये शा मसताना जी का, कोई सका नां जान

किसी जमात ने संत फ़कीरों, रखने वचन की लाज
इतना कदम बड़ा हो उठाया, नाहीँ येह इतिहास

खाली बचन नां जाने दीया, कर न ऐसा जु पाते
काल बली हरज़ाना रूप किस, न जाने वो चुकाते

सच्चा सौदा मैनेज़र साहब, थे उस वक़्त मौजूद
पास नां पहुँचे मसताना जी, घबराये रहे ख़ूब

चालिँ जब पता देहली वाली, संगत को अफ़साना
बचन निभाउने मसताना का, दाढ़ी मूँछ मुँडाना

हो गये हैरां और परेशां, साधू परेमी आम
पहुँची संगतें मसताना के, पास अमर पुरा धाम

सतसंग में बुधराम राम सर, गाँव हिँ रहने वाले
सोशोलिस्ट थे पारटी के वो, नेता बहुत निराले

बोला सबद तारीफ़ हिँ उसने, साचे सावन शाहा
ऐसा गाया सबद था मानो, अमरित ही बरसाया

गुरु मिले भुलावण हारा आज सुरता नार झूल रही है आखिरी कड़ी
किंगरे किंगरे रूप अपारा, यह है बाबे सावन शाह का दरबारा

पूजनीय मसताना शाह ने, जस में सावन शाहा
सबद सुना तो प्रेम में ऐसा, लटका उनने खाया

गरदन टूट हि पड़ी हो जैसे, मस्तीह इतनी छायीं
हो गये बाहर आपे से ही, इतना सुन ही आयीं

बोले मक्खन सिंग को हि आकर, मस्ती शाह मसताना
सिफ़त में ग़र नां लुटायें गुत्थी, जिसका होइँ खज़ाना

आग लगानी है तब क्या हमकु, गुत्थीह को इस जाई
ये तो खज़ाना सावन शाही, साईं लेखे लाई

हार डाल दिया गले हिँ नोटों, का तब बे ही शुमार
फ़रमाये पतराम को कर दो, बुद्धू सिंग होशियार

ऐसा राज़ न खोले फ़िर कभी, सावन शाहा साईं
उनके नाम की मस्तीह आके, सुध बुध देहिँ गँवाई

सिफ़त पै अपने मुरशिद की ग़र, जाँ नां करें कुरबान
तो करें किस पर और खज़ाना, लुटवायें किसूँ नाम

लेकिन जों हि लुटाते खज़ाना, हम शाह सावन नाम
होते फ़िर मालूम हैं हम भी, बाहरी मुख़ इनसान

गोल गुफा गिरवाई

दस नवंबर उन्नीस सौ चौवन, पूरनमासी आई
सत्संग सात तारीख़ रखा था, वजह तिथि थी बढ़ाई

सात तारीख़ को सत्संग होया, करता हि माहवारा
वजह तारीख़ चौदह रख़याअ, मसया का भंडारा

सत्संग इस तरह करके पूरे, किये नियत जो तमाम
आयो शाह मसताना वापस, आनंद पुर के धाम

आते ही वहाँ मसताना जी, हुकुम दिया फ़रमाई
गोल गुफ़ा जो पहले बनाई, देउ उसहीं गिराई

सरदी बहुत ही सख़्त थी उस दिन, बारिश मूसला धार
सेवा चलत रही दो बजे तक, रात्री को लगातार

काँप रही थी संगत ठंड से, बहुत बुरी तरह जाइँ
रात बजे दो मसताना शाह, गुफ़हा बाहरे आइँ

खिलवाये संगत को ख़ूब सब, काजू दाख़ बादाम
खिलवायीं अख़रोट ख़ूब रहे, संगत उस को तमाम

सुबहा आठ बजे से हि पहले, बाहर न कोइ जाये
घर भी जायेगा नहीं कोई, मसताना फ़रमाये

घर वोही बस जाये जु भूले, सच्चाह सतगुरु साईं
सतगुरु का जो सच्चा है आशिक, बाहर हुकुम न जाई

गोल गुफ़ा की जगह हि दूसरी, गुफ़हा शुरू कराई
नाम दिया सतलोक तीस फुटी, लम्बी गुफ़हा बनाई

जिस पर चार कड़े या बंद की, डाटें थी लगवाई
दरवाज़े पर शेर वा हाथी, दोनों ओर बनाई

बाहर छोटे छोटे जंगले, ख़ातिर पवन रखाये
प्रेमी करन गया जो सफ़ाई, अक़सर बिछुए पाये

डेरे में उन दिनों में सेवा, चलती बहुत हि भारी
तुड़वाइँ बना हुआ शहनशाह, और नया हि उसारी

बाड़ियों जानिब कच्ची सड़क के, साथ ही की दीवार
गिरवाइ किया दरवाज़े संग, घंटाह घर तैयार

रोशनी ख़ातिर खंबा वा जल, वास्ते टंकी लगाइ
जानवरों के बिबिध तरहा के, रूप दिये बनवाइ

हर ही तरह के आदमियों को, वास्ते ही समझाने
रंगों से बनवाये थे चित्तर, जंतुओं के सुहाने

इक्कीअ जनवरी सन चौवन में, दिल्ली मैनेज़र आये
एक बड़ी घड़ी चौक चाँदनी, सु थे ख़रीदी लाये

प्रीमियम थी घड़ी की कंपनी, मोल जिस का चुकाई
इक सौ अस्सी रुपये वा आने, सात और छहपाई

घंटा घर के ऊपर ये घड़ी, इस बाबत लगवाई
पानी नहर का लाने वालों, को नां हो कठिनाई

पानी की टंकी थे शहनशा, इस ही लिये लवाये
आने जाने वाला पथिक नां, प्यासा हि चला जाये

लोक लाज न मानी

किसी की बात न मानी (मौज का हुकुम)

काम जो गुदराना डेरे में, बनके होइँ तैयार
कर नहीं सकता एक महीने, में कोइ ठेकेदार

गुदराना की संगत प्रेम औ, थी यकींह की मिसाल
सावन शाही मौज की मेहर, किरपा का था कमाल

देखया संगत एक मास जो, खे़ल तमाशा भारी
बस थी एक झलक हलकी उसी, ताक़त की इसरारी

गुदराना की संगत में बड़ा, प्रेम था और विश्वास
बन गया गाँव हि सारा था अब, अंग दयाल का ख़ास

पर शायद हंकार ने भी था, अपना जाल पसारा
काल बुरी तरह सड़ जु चुका था, डटया आ पैकारा

पड़यौ फूट परेमियों अंदर, टूटा आपसी मेल
दीयो खे़ल शैतान काल ने, आख़िर अपना हि खे़ल

करता दयाल जहाँ पे अपनी, मेहर और अक़राम
रूहानी मक़सद में रोड़ाह, डाले काल शैतान

डेरे माहिँ विरोधना इतनी, प्रेमी जनों में आम
करके प्रेमी रोज़ शरारतें, धाम कीयो बदनाम

चलते इसके शाह मसताना, हुक़ुम था सख़्त लगाया
जनवरी पाँच अठावन डेरा, था हुक़ुम से गिराया

कामयाब हुआ चाल हिँ अपनी, ज़ालिम काल शिकारी
पर डेरा गिरने से दुखी थी, गाँव हिँ ख़िलक़त सारी

बीबियाँ सब थी दुखी गाँव की, रूप से बहुत बिसेख़
डेराह गिरवाये जाने से, लागीं मन बड़ी ठेस

हिम्मत पर नहीं किसी की पड़ती, अरज़ें जा मसताना
ज़ाहिर कर सकें ख़्वाहिश अपनी, डेरा फ़िर सु बनाना

औरतें सब हिं गाँव की जाके, जगह उस हि रोज़ाना
करने सिमरन बंदगी लागीं, भजन शब्द और गाना

इस उम्मीद पे की शायद कभी, साइँ नज़र हो जाये
बीबियाँ करती विनती इक ही, धाम बहाली पाये

झगड़ा लागी करने रोज़ ये, संग पति निजि साथी
अब भी वक्त है मसताना शाह, सु जा मांगो मुआफ़ी

पर डरते हुये किसी की हिम्मत, पड़त न बंधयौ आस
जाता मांगने माफ़ी किस मुँह, मसताना शाह पास

गाँव के लोग बड़े पछताये, लाज शरम के मारे
की उनका ही बलुआ चलतेह, खेल ये बिगरिं सारे

होता प्रेम का असर जहाँ है, काल वहाँ घबराता
भाई चारा प्रेम जहाँ नहीं, काल अघात लगाता

वैर विरोध कु काट हैं सकते, साथ ही प्रेम कटार
काल नसै जबू नीचे आवै, प्रेम कटार की धार

गुदराना की औरतों ने थी, ताक़त बहुत लगाई
कि जो गाँव के मरद अरज़ करें, होइ ज़रूर सुनाई

पर नां डरता गया कोई भी, शाह मसताना पास
लागिं डर था जाने से उनके, नीरे बहुत ही ख़ास

अंत जनवरी बारह अठावन, पिंड मौजा जल्लाना
रखया सतसंग गया वहाँ पर, मर्जी शाह मसताना

गुदराना की बीबियों ने वश, परेम सतगुरु आई
मसताना जी की संगत महीँ, हिम्मत ख़ासी दिखाई

बाँध के पगड़ियाँ मर्दों की सिर, वेश बना मरदाना
रो रो माफ़ी मांगती पहुँची, सम्मुख शाह मसताना

देख नमूना हँस पड़े साईं, और येह फ़रमाईं
वंज भैणया देखो बीबियाँ, बाँध पगड़ियाँ आईं

हा हा हा इनके बंदे वरी, डरते नां हैं आते
लख लानत कही ज़ोर हिं हँसने, लागिं लाने ठहाके

नूरी नज़रां फ़ेर शहनशाह, मसताना फ़रमाई
लोक लाज सब तज ये बीबियाँ, बाँध पगड़ियाँ आई

सत्संग में भरी आई करने, परेम संग मनुहार
प्रेम वरी है ग़र जो येह तो, प्रेम सु गये हैं हार

देखीं प्रेम भरोसाअ इनका, मसताना फ़रमाये
हुक्म बनाने डेरा वहीँ पर, फिर से दिया लगाये

बीबियों अंदर बैठे सतगुरु, ने ये धाम बनाया
सतनाम पुरा धाम इसी लिये, डेरा नाम रखाया

सरकारी जाँच

सावन शाह जी ने पंजाब हिँ, सतसंग दीया रखा
प्रेमियों ने करने मशहूरी, परचेह दीये छपा

कियो सावन शाह जी मनाही, अपना नां येह काम
काम है निंदकों का येह तो, करना हमें बदनाम

दिल और जान से साधु सभी हि, संगत करिं तैयारी
होता था शाह सावन का उस, वक्त विरोध भी भारी

थे इलज़ाम लगावते निंदक, बाबु अपनी ज़बानी
नाहीँ करता सही बख़ान है, सतगुरु की गुरुबानी

सीख़ है देता मानन की गुरु, व़क़त के देहधारी
उलटी राह चला रहा है ये, राह सही सु उतारी

क्योंकि गढ़ सिक्खों का पंजाब है, इसी लिये ये पाया
करने ताईं कलंकित निदकां, पूरा ज़ोर लगाया

घर घर जाइ के आम जनों के, निंदक किस्से सुनाये
कि बातों महीं इस बहरूपिये, की हरगिज़ नां आये

कसबों शहरों गाँव गली गली, बाँटन पर्चे छपाये
बांटया उनको की मुनयादी, साथ हि ढोल बजाये

घर घर जाई लागे कहन की, संगत कोइ न जाये
अख़बारां भी लोग ये सारे, बातें थे छपवाये

फ़रमायाह सावन साईं जी निंदक येह हमारे
काम के कितने मशहूरी करिं, सतगुरु साईं सारे

इनकी निंदा ही है सबन सों, पूंजी महत हमारी
सेवादार थे पर घबराये, हो नुक़्सान नां भारी

थे सब फ़िकर में जाने संगत, वाले दिन होये क्या
पर संगत के दिन पंजाब में, अजब नज़ारा ही था

संगत वाले दिवस पै इतनी, उमड़ी भीड़ हि भारी
रख़ने पाँव जगहा नां मिलती, ख़िलक़त बे हि शुमारी

दिन तारीख़ जगह सतसंग की, नगर गली पहुँचायी
वजह इसी ख़िलक़त बे हिसाबी, सुनने शाहा आयी

मसताना शाह की खबरें भी, निंदक हैं पहुँचाते
रोज़ शिकायतें मन हि गढ़त हैं, हाकिम आला लाते

पी एस मुल्तानी जी सिरसाअ, एस डी एम हि ख़ास
उन्नीह सौ छप्पन माहीँ डेरा, आइँ शहनशाह पास

मक़सद था उनका बस डेरा हिँ, ये तफ़तीश कराना
बँटता इतना धन है कहाँ से, डेरा में रोज़ाना

पंडित राम दास जी बावरी, पहरा गेट लगाये
एस डी एम जी उस हि औसर, पूछने उन सु आये

मिलतना है उस आदमी सु हमें, करताअ जो गुमराह
बाँट के भोली जनता में धन, कंबल रुपया अथाह

करनी है तफ़्तीश कहाँ से ये, आया माल असबाब
लेना चाह रही सरकार है, इसका पूरा हिसाब

बोला पहरेदार ने ठहरो, पूछहिं अंदर आते
हम बिन हुकुम नां बेपरवाहा, भेजी तुमको पाते

और भी अफ़सर थे उनहिं संग, शहर सेहि थे आये
जानत नाहिँ हम एस डी एम, रौब से हि फ़रमाये

कर दिया साफ़ मना जाने से, अंदर पहरुवेदार
बाहर रहयो खड़े वो अफ़सर, होईं वहाँ लाचार

पच्चीस मई सन सत्तावन को हि, मंत्री जी खुशीराम
के यहाँ रख दी सत्संग साईं, कर ही दिया अक़राम

एस डी एम सत्संग के हि इस, पूरी होवने बाद
फ़िर डेरे में आ लगा करने, साईं सवाल जवाब

पूछा शाह से इतना रुपया, कंबल बसन लुटाते
सकल बाज़ार मिठाई व फ़ल, के नित हि बंटवाते

बूँदी हलवा ख़जूर जलेबी, जनता को खिलवाते
दे परसाद आवाम हिँ भोले, लोगों को बहकाते

खोतों के भी आगे सुना है, बूंदी ढेर रख़ाते
नोटों की भी माल नयी - नयी, लोगों को पिनहाते

लागी येह भी ख़बर बीबियां, सतसंग हिँ नचवाते
गहने कपड़े रोज़ नये नये, उन ख़ातिर बनवाते

आख़िर माज़रा हि क्या बताओ, बहुती बात संगीन
गुफ़हा में है सुना कि तुम्हारी, नोट छपन की मशीन

ये सब हो रहा क्यों वा कैसे, क्या मक़सद और बात
पाक़िस्तान के हो जासूस तो, कौन इरादाह ख़ास

लगते तुम दिखने में बड़े हो, सादे भोले भाले
जूती पुरानी और फ़टी सी, बसन पुराने डाले

जनता इतनी पीछे तुम्हारे लागी वजह किस काम
खेमा मल है असली तो सुना, हमने तुम्हारा नाम

कहते फ़िर तुम्हें सब मसताना, क्यों ये बलूचिस्तानी
आख़िर क्या है असली हक़ीक़त, कौनो हि ये कहानी

क्या जासूस हो बलूचिस्तान हि, बोलो अपुन ज़बानी
जुर्म ये गहरा है कानून से, कोई बात छुपानी

शानदार इतनी ये इमारत, बनवाइ क्यों गिराई
आता ख़रच कहाँ से हि इतना, है वो कौन कमाई

करते नित परचार सुना है कि, है कोइँ ज़िंदाराम
कौन शख़्स ये रहता कहाँ है, वास है कौन हि थाँन

कहने पर क्या उसी के सारे, करते हो येह काम
क्या तुम हो जासूस उसी के हि, ज़िंदाराम जो नाम

देखनी हमकु अबहीं गुफ़ा भी, तुमने जो बनवाई
छापने कु नये नोट जहाँ है, वोह मशीन लगाई

अफ़सर की सुनी बातें शाहा, पूरा ध्यान लगाके
बीच बीच में शाह मसताना, मंद हि मंद मुस्काते

जानत थे मसताना शाह जी, अफ़सर हुई लाचार
आदमी बेचारा दुनियावी, सोचों का है शिकार

सरकारी नौकर है येह तो नाहीँ इसका कसूर
वो हि करेगा जो हि कहा गया, करने येह मजबूर

सोचा मसताना शाह इसका, इतमीनान करायें
दिया हुकुम मैनेजर साब को, गुफ़हा इस दिखलायें

देना होगा तुम्हें जवाब जा, हुकुम तुम्हें सरकारी
बिन तफ़तीश गये जो चले ले, दिक्क़त हो बड़ी भारी

जो तुम हमसे पूछो सभी ही, देंगे तुमको जवाब
कोई बात छुपाएंगे नहीं, तुमसे हम भी जनाब

फ़िर मसताना शाह ने उसकी, परदा अक़ल उठाया
ख़ोला राज़ कि ज़िंदाराम के, हम जासूस बताया

गिरज़ा मसज़िद या मंदिर नांअ, मिलते ज़िंदाहराम
हर घट हिँ मौज़ूद है हिंद नां, पाक़िस्तां या ईरान

ज़िंदाराम तलक हमें जिसने, कर अक़राम पुँचाया
हैं वो मिठन मलाई हमारे, साईं सावन शाहा

ये जो सकल ही खेल तमाशा, बूंदी नोट लुटाना
सोना चांदी कंबल है सबू, ज़िंदाराम खज़ाना

इसमें देखो सोना न चांदी, व नोटों का लुटाना
ये है अलाही और अनामी, एक अकूत ख़ज़ाना

नाखूनों की मैअल बराबर, भी है न ये खज़ाना
असल ख़जाना भजन व बंदगी, कर सतगुरु को पाना

प्रेम पिआर व हक़ो हलाल का, औ मस्ती का ख़जाना
पाया जो ये धन दरग़ाह उस, है बेशक़ ही जाना

नाचे है ग़र कोई यहाँ तो, उसकी मसतीह आप
जाते लेईं यहाँ सेह मस्ती, कई अभाउ भी साथ

जैसा होवता भांडा जिसका, वैसा ही ले जाता
जिसका साफ़ है भर ले जाता, मैला ख़ाली जाता

कहती दुनियां बीबियाँ नाचें, सारी सारी हि रात
हम कहते यहाँ कोउ न नचता, नाचत मस्ती है आप

कहने वाले कहते लुटाते, हम सारा हि बाज़ार
बनवाइ बर महंगी इमारत, गिरवाईं उसी काल

लुटते ये बाज़ार हैं जैसे, आसीह दिन इक काल
लेईं जाये लूट बे दरदी, बंदेह तुज्झ हर हाल

गर है संभली सकता अब भी, अपना आप संभाल
जायेगा रहीं वरना मलता, हाथ होईं कंगाल

जायेगा जो साथ वो तेरे, सिमरन भजन हि जाये
यादे मालिक उसकी कमाई, धाम अमर पहुँचाये

खेला सब येह उस मालिक का, ख़ातिर देने पयाम
जाता कीया भटकेह जीवां, पहुँचाईं ता मुकाम

सतगुरु की मशहूरी हि ख़ातिर, सब येह जाता करा
ये बाज़ार तो सब उस मालिक, के ही ख़ज़ाने भरा

ख़ेल मसाला आपुना लेकर, है वो साथ ही आइ
वरना जोड़े झाड़ने वाले, पास ग़रीब क्या पाइ

टाकियों वाले बसन हमारे, अपनी क्या ही मज़ाल
टूटी फूटी जूती पहनते, बोदी पंज सत साल

बोरियों का है बिसतर अपना, रोड़ी का सिरहाना
सब्ज़ी बेचहीं राम राम करीं, काम हि गुज़र चलाना

ये सब बरकतें तो हैं उसी हि, मालिक ज़िंदाहराम
वरना है औक़ात क्या अपनी, और क्या अपना दाम

बूंदी भोले ग़रीबों को इन, और जलेबी खिलाइँ
मौज है ख़ातिर इन हि ग़रीबों, सावन शाह ये आइँ

नां भगती न सेवा ही इनकी, नाहिँ पुन्न कोई दान
अनपढ़ समझें पोथी ग्रंथ क्या, जीव ये सब नादान

तो क्या काल की चोट पै जन्मों, जन्मों पिटते हि जाईं
क्यों नां सतगुरु इनको दरग़ाह, मारग में फ़िर लाईं

नोट वा सोना इनकु वरी हम, कंबल रजत बटाईं
याद रहे इन कैसे फ़कीरां, सच्चा सौदा बुलाईं

देता सतगुरु का संदेसा था, मंदे करम कटाईं
धुर मंज़िल पे जाने का राह, इनको है चेताईं

भाई हमें इक बात बताओ, चंगा कौन सा यार
मौके का जु जैली छुडाइँ या, बाद का थानेदार

पुट्टर कोई कसूर नां तेरा, मैल तोहिँ दुनियावी
सरकारी है मुलाज़िम फ़िर तू, समझ वरी नां आवी

अंदर अपने मारे न झाती, मैल ये निकले नाहिँ
जीव शिकार करोड़ों मैल के, इस दुनिया के हि माहिँ

फ़ैली रोशनी खुल गइ आँखें, पर्दा उठ गया सारा
मिलया भेद ख़तम हुआ संसै, निरखिं साईं नज़ारा

मन हिँ आनंद का लगा साग़र, उसके मारन ठाठें
क़ामिल संत के दर्शन पा मिली, शांति ख़िल गई बांछें

पूरा शांत हुआ घट जीव का, संत सरन में आयीं
देह सु ऐसा होइ विदेह था, जाना कि कहाँ जायीं

आ गया कोसों दूर हि जंगल, से ही सवाल जवाब
पैर न नाचें पर मन घुंघरू, बाजे बाजीं रबाब

''हो गया अब शर्मिंदा कि करना, क्या ही था कीया क्या''
''करनी पर मन ही मन आपुनी, अब था रहा पछताअ''

एस डी एम जु लागे जाने, शाह मसताना शाद
दीया अफ़सर को तरबूज़ का, डेराह के परसाद

मिलने मसताना सु जात समय, आया वोह बा ग़ौर
थोड़ी सी सोहबत ही साईं, दीया बदल ही दौर

उसने मैनेज़र जी सु बोला, मज़बूरी थी आई
सेवाह उसकी पूछताछ की, थी सरकार लगाई

क्योंकि मसताना जी विरोध में, अर्ज़ियाँ बहुती आईं
जेहिँ निंदकों ने शाह जी की, अनिक शिकाइत लाईं

ख़ास इनायत

विशेष कृपा (संगत का परसाद)

सिरसा शहर में जो थी पूरन, ताक़त डंका बजाइ
अपने सतगुरु पियारे का थी, हुकुम औ वचन निभाइ

दात से उसकी मसताना ने, संगत को था तारा
ऐसी ताक़त क़ामिल ने जोइ, वो हि किया जो चाहा

अपने मिठन मलाइ के सदके, कीयो जीवां उद्धार
छोड़ी कसर नां सावन शाही, मौज के सेवादार

करने वालों के भी ख़िलाफ़त, मुँह थे बंद कराये
कौतुक कीये रहयो बड़े ही, बहुते खेल दिखाये

चलता ज़ोर न काल का कोई, हो हि जाता नाकाम
करती थी जहाँ पूरन ताक़त, सावन शाह जी काम

एक बार चौबारे पे खड़े हो मसताना शाहा
चारों और थड़े के लगाओ, चक्क़र येह फ़रमाया

बोलते दूर करो चलो दुई, कुछ भी तो नहीं और
साधो ही हैं साधो कहा सब, कोई नहीं है चोर

माना हुकुम था सारी संगत, साधु प्रेमी जु आया
बच्चे बूढ़े छोटे बड़े सबू, हुक्म शहनशा बजाया

लागयो चक्कर थड़ा लगावने, दूई भी दूर करो
कोई चोर नां सबही साधो, सबनांह साधू कहो

लगभग तीन बजे तकरात के, यूँ ही चलत थे रहे
सावन शाही मौज ने मस्तीह, आई कै बचन दिये

कथयो बेपरवाहा वरी जिन, प्रेमी नारा लाया
तर गये सबहुँ गाँव के प्रेमी, पहुँच गये दरग़ाहा

फ़रमाये जिस जिस ने भी सुने, धन सतगुरु के नारे
नारे लाने वाले तर गये, औ सुनने भी वाले

फ़रमाया फ़िर शाह मसताना, ने मस्ती महीँ आईं
कि लाये जिन नारे है उनके, ढोर पसु भी तराईं

फिर दोबारा शाह शहंशाह, बेपरवाही आये
बोले उनके पडौसी रिश्ते, दार भी हैं तराईं

तीसरे बारी जोश हीँ फ़िर सु, आये वचन लगाये
बोले इनके खेत के दाने, खाइँ जो भी तराये

छायीं लहरें ख़ुशी की बस फ़िर, संगत माहीँ सारी
निकला दम था काल का जैसे, धरी रही बलकारी

अब क्या करता काल वहाँ रहीं, बे ही बस बेचारा
पलटे खंड ब्रहमंड न पलटे, संतां बचन उचारा

रातीं तीन बजे होइँ परगट, शाहा सामने काल
बोलया खेल ख़त्म किया तूने, मसतानाह फ़िलहाल

मसताना शाह कर दी हद ही, कीया क्या ये क़माल
तेरा खेल मसाला इस लिये, तू ही आप संभाल

जोश औ मस्ती आई सबकोह, जो ले जाइँ तराईं
पल्ले ही क्या रहसी यों मेरे, हाथों हीँ क्या आई

मसताना जी सोच कै तब कुछ, काल सेह फरमाईं
काल जोश में आइ कै अब नां, ऐसे बचन लगाईं

सीमा न कोई संत बचन की, जाये टल किसी रूप
ज़बसेह पूरन ताक़त मुख श्री, निकसेह बचन अटूट

ताक़त ऐसी पूरन सनमुखा, हावै काल बेहाल
होवता सत कमज़ोर तभी ही, पाईं सफ़लता काल

करने को बलवान ये सत ही, शाह मसताना आप
तोड़ू हड्ड करवाई सेवाह, सिमरन भजन के साथ

सेवा से भुगताये कर्म दंड, भजन से सत बलवान
सेवादार परेमियों में दी, फूँक शहन शाह जान

पूरन ताक़त का इक पूरा हि, बजर समान ही वार
होईं मुमकिन परेम कटारी, के असलीह हथियार

अपने आप है जात बुनत ही, काल निगोराह जाल
पर न परेम कटारी सामने, टिक पाईं येह काल

दरवाजे नौंवे हि ताईं है, पहुँची पाइ ये काल
पहुँच नहीं है पाता काल भी, सत के दसवां दुवार

आगे देस है सतगुरु जी का, दुवारों नौं ही पार
चालिं इसलिये काल भी अपनी, नौं हि दुवार लौं चाल

नौं दरवाजों तक हि है सीमित, जीव वोह बेचारा
फँस ही जाता काल के जाल हिँ, जाई आख़िर मारा

मसताना शा बेपरवाह थे, ऐसा बचन लगाते
बस इक छोटा खेल सा होता, जीव रहिं दंग जाते

शा मसताना जी ने इक दफ़ा, बोला कुछ हो जाये
सतसंग को चलो आज अभी हि, जाई ख़ीर खिलाये

मसताना शाह चरन सिंग को, थे ये हुक़ुम सुनाये
कि वोह अपनी भैसों का अभी, दूध निकालीं लाये

आज हमें संगत को अभी ही, खीर बनाइ खिलानी
फ़रमाया शाह मसताना ने, नूरी मुख़ सु ज़बानी

भैंस है देती एक समय ही, दूध अरज़ मसताना
बोले महात्मा चरन सिंग ये, मुमकिन दूध न लाना

इस पर बेपरवाह मसताना, जी थे ये फ़रमाये
भैंस को थापी मार बोलना, तुझ जो सबद बताये

कि मसताना ग़रीब ने है अब, तुमसु दूध मंगाया
ख़ीर बनानी है सतसंग की, ऐसा वचन लगाया

कहकर बात ये नीचा होकर, पास भैंस के आना
बाल्टी लेकर बैठ ही नीचे, उसका दूध दुहाना

महात्मा चरन सिंग से शाहा, करते थे बड़ा प्यार
उनकु बहुत भरोसा था उन पर, बहुता था ऐतबार

हो गया वचन शहनशा का अब, कर ही सके क्या काल
होने देइँ न वचन ये पूरा, काल रही क्या मज़ाल

कर दिया चरन सिंग न वैसे, जैसा था फ़रमाया
बाल्टी भैंस भरी दी दूध की, हँसता दूध वु लाया

बढ़ गयी मात्रा दूध की तब सु, भैंस की उसही ख़ूब
भैंस लगी उसी दिन से देने, दोनों पहर ही दूध

कर्म भार

कर्मों का भार (काल को जीतना)

बेपरवाह मसताना जी की, बात हर थी निराली
हर इक बात हिँ राज़ इक होता, संदेसा भी आली

परग़ट किये विचार न मंच पै, अपने जीवन माहीँ
बल्के हरपल इस्तेमाल कीया, दे पयाम जो चाहीँ

हर पल हर दिन सबहूँ समय ही, क़ामिल संत हिँ पूरा
हाज़िरी सतगुरु की राह भरता, संत रूप महिँ नूरा

बात ये दीग़र है कि आपने, ज़ाहिर नां किया राज़
रूप में क़ामिल संत हि आई, करते नूरीह काज

उठने नां दिया राज़ से पर्दा, सनमुख जनताह आम
कहने गुरु का भी नां देत थे, हक़ जीवों को तमाम

करने से हंकार बचे रहे, सारी उमरिया आप
जोड़े झाड़न वाला बोलने, लाईं हुकुम थे ख़ास

होइ जो संदेस था आपका, होत बहुत ही बिसेस
जुड़या होउता जीवन जीवां, आवता हर दम पेश

प्रेमी एक ही रहे भैंस के, कीड़े पड़ सिर सारे
रहती तडपत रात व दिन वो, तकलीफ़ों के मारे

प्रेमी उस थे गुज़ारिश लाई, मसताना के जाईं
साईं जी क्या भैंस को इस हम, गोली मार मुकाईं

कहते सब उपचारक ढोर ये, मर्ज़ है ये लाइलाज
मार के गोली कर दो इसको, तक़लीफों सु आज़ाद

अब तक़लीफ हमारे से नहीं, इसकी देखी जाती
सारी सारी रात है रहती, दर्दों सु ये रंभाती

मसताना शाह कहयो तुरत कि, गोली क्यों इस मारे
करम भार क्या तुमको उठाने, इसके सिर सु उतारे

भैंस तुम्हारी कु चलो देख के, अबहूँ ही हम आयें
आठ या दस लिये साथ प्रेमी, मसताना फ़रमायें

पहुँचे घर तो देखत सर में, कीड़े भैंस पुराने
देख के नूरी मुखरा शाहा, भैंस लगी रंभाने

नूरी रसनाह से मसताना, जी ने ये फ़रमाया
अब क्यों रोती और रंभाती, तब ये समझ न आया

कहयौ जब तुझे काम न ऐसे, कर नां तब तू मानी
अब पछताती मांगती माफ़ी, बनयो जान हिँ आनी

फ़िर मसताना जी ने प्रेमियों, को था ये फ़रमाया
पिछले जन्म थी ये पंडितानी, ख़ूब चढ़ावा खाया

पड़सी इक दिन भुगतना सब ये, बहुता था समझाया
माल उड़ाती पर मस्ती माहीँ, कछु न समझ हीँ आया

कीड़े बन सब ले रहे बदला, दिया जिनने चढ़ावा
उसका ही भुगतान ये करती, मालिक खेल बनाया

मसताना जी कर दिये उस पै, मिहर अलाही नूरी
छूआ डंगोरी से छुड़ाया, चोला कर दी पूरी

हौंसला अफ़ज़ाई

साहस का बढ़ाना

मई बाइस उन्नीस सौ पचपन, के सतसंग के बाद
खिलवाई मसताना कबड्डीह, होईं मन महीँ शाद

शौक़ कबड्डी खेल का शहन शा, को था बर खिलवाने
अगली बगली गाँव से आते, खेलन के दीवाने

संगतें कुछ जगमालां वाली, से भी तब थीं आयी
खेल कबड्डी होयीं ज़बर बड़ा, सनमुख शाहा साईं

नोटों के थे पाँच हि पाँच के, शाहा हार बनाये
जीतने वाले लोगों को थे, सबहूँ हार पिन्हाये

हार भी दस रुपयाह शाह, उतने ही बनवाये
लोगों हारने वालों को थे, दस के हार पिन्हाये

सारी संगत देख के हैरां, हो गयी ये ही बात
दिये पाँच थे जीतने वालों, हारों दस दी सुगात

ज़ोर सु फिर हँसे मसताना जी, इक ठहाका लगाया
ज़्यादा अपन सू ताक़तवर से, भिड़ के ज़ोर दिखाया

आज इसी तरह भइ तुम सारे, बांधोह गठ फ़िलहाल
होना है निज मन से मुक़ाबिल, चेरा है जोइ काल

हारने वाले जीतन वाले, दोनों देइँ ईनाम
खेल बहाने समझाई दिया, भोले जीवां तमाम

इस ही मानिंद सतगुरु तुमको, देईं बर नज़राना
कट ही जाई फ़ेर चौरासी, मुकहीँ आना जाना

ये भी कह दिया पूरन सतगुरु, करहिं तुम्हें इत्तिकान
काल बली से करने सामना, देईं तुमको अमान

मसताना शाह बहुत सहजता, जीवों को इसी देस
बात हिँ बात देइ दिया करते, कीमती इक संदेश

गौर से सुनें

ध्यान से सुनिए

मसताना जी की ज़बानी

सत अट्ठावन पंदरह जनवरी, मसताना मन आया
लिखवा करके सबके सामने, संगत में पढ़वाया

धन धन सतगुरु केहड़ा सतगुरु, सबसे हि सोहणा तू
सबसे समरथ रहता जिसम के, के मंदिर में ये प्रभु

तू निरभउ है तू निरवैर है, निराकार तू जाना
जोड़े झाड़न वाला अर्ज़ यही, करता है मसताना

जिनने सिमरया नाहीँ उसको, पा के ख़ुशी न पाई
जाउता उसका जनम अकारथ, लोक जहाँ इस आई

कूकर बिल्लियां भी करीं लेते, सोना खाना पीना
सिमरी उसको पल पल पाउना, है ये असली जीना

रहत है ज़िंदाराम जिसम महिँ, करले उसको तु याद
कर ले सिमरन पाँच हि निमिख तू, पूछहीं गुरु उसताद

पहचाने बिना क़ामिल मुरसिद, रूह नां अपना राम
क्योंकि पड़्या मोतिया बिंद इस, अंधी जैली नदान

अंदर वाले राम सिवा कोइ, सकता नाहीँ छुड़ाइ
बाहर करम करेंगे ज़रूरी, जाये अहम भी आइ

जनम मरन की फाँसी नहीं है, छुड़वा सकत हंकार
जीव नां माने जब आँखों से, खींच लई उसे काल

औसर उस फ़िर इनको पड़ेगा, बहुता ही पछताना
रखले याद ये दिन इक आसी, दुसमन हथ पड़िं जाना

समझ नां इसको दुसमन छोटा, बैरी बहुता दाना
ज़िंदाराम सरन महीँ आई, काल सु जान छुड़ाना

हीरे जैसा जनम नां खो तू, बदले कौड़ियां दाम
करले भजन तू जो धन धन है, सतगुरु का येह राम

लोक सयाने कहयौ हक़ीक़त, भजन बिना ये बंदा
जब लौँ घट में उतारे न उसे, होता है बस गंदा

घूम रही है मौत तुम्हारे तु, पाछै ये लगातार
कुछ तो लाज अक़ल कर जानाअ, इक दिन तजी संसार

अजर अमर तू वतन का तोता, रूह तेरी तु बिसेस
लीया समझ पर तूने फ़ानी, रैन बसेरा हि देस

नाहीँ घर ये तिहारा बेशक, साथी नहीं तुम्हारा
भूल के सब अपना ले बंदे, सतगुरु साईं न्यारा

कर ले सतगुरु नाल पिआर तू, हो जायेगा निहाल
आवागमन से जनम मरन के, हो हि जायेगा पार

ख़ास बात

इकती जनवरी एक फ़रवरी, उन्नी सौ उनसठ साल
रख दिया सतसंग एक बड़ा हि, जाई कै हरिदुवार

माहीं मारग मोटर, पुल सेह, जोर बड़ी टकराई
नीचे गहरा खड्ड पर मिहर से, बचयौ सतगुरु साईं

मसताना मसताना करत क्यों, मिलता इस न सहारा
बलूचिस्तानी में करिँ काम है, शाहा सावन प्यारा

ऐसे तो हजारों हि बने, फिरते यहाँ मसताना
पर सावन शाह के हुकम का तो, एक बिलोचिस्तानी जाना

सतसंग बाद हुई थी इकठी, संगत लेवने नाम
फ़रमाया मसताना शाह ने, आइ अलाही पयाम

पुरुख़ अकाल का हुक्म हुआ ये, देने नाम का दान
छोटी ठेहड़ी पर जायेंगे, जीव सभी ही तमाम

क्योंकि हैं दबी रूहें वहाँ पर, कब से ही बे शुमार
प्यासी रूहों की है हो रही, दिल से बहुती पुकार

फ़िर ले जाकर मसताना शाह, पाकीज़ा किया काम
जीव प्रेमियों कु दिया जा वहाँ, सतगुरु साइँ का नाम

एक फ़रवरी उन्नी सौ उनसठ, सतसंग करने बाद
डेरे बाहर निकल बज़ार की, ओर कीया रुख़ शाद

एक से बढ़ कर एक सजी थी, अनिक वहाँ पै दुकान
लुटवाया बाज़र दे ख़र्च से, ज़िआदा उनको दाम

पाछै इस मसताना शाह जी, मस्ती आई इलाहीँ
नूरी रसना वचन दिये करी, निरखि कै वोह थाहीँ

साईं सतगुरु की किरपा यहाँ, दरवाज़ा बनिं शाही
इतना होइ बुलंद जो देखे, पगड़ उतरी जाही

बलूचिस्तान से साल उन्नी सौ, चौवन के हि मंझार
सिरसा आये प्रेमी अनेक हि, औसर इस लगातार

जो भी परेमी सिरसा आता, इतना मस्त हो जाता
देख हीं मस्ती साचा सौदाह, का होई रह जाता

मस्ती खोईं जाता वो इतनी, उसका मन लग जाता
बलूचिस्तान कु जाने कभी मन, उसके नाहीँ आता

शास्ती तालुक़ात भी ऐसे हि, हिंद और पाक़िस्तान
मरज़ी से यहाँ रहना सिरसा, था नां बहुत आसान

जब भी कोई आत था सिरसा, साधो सेवाहदार
बंधती आस सभी कु आन की, मसताना परीवार

मसताना शाह के घर वालों, या फ़िर रिसतेहदार
हाथ लगे कोइ ख़बर कुशल की, लगिं सबकोह थी दरकार

क्योंकि कुटुंब की मसताना जी, जब भी बात चलाते
चलते बात के मसताना जी, मन सु उखड़ से जाते

मसताना जी बारे हि उनके, बात न चाहिँ चलाना
चाहते मैनेज़र जी उनके, बेटे को थे लाना

पर ना हिम्मत पड़ती किसी की हि, सनमुख बात निकाले
डरते मसताना जी से सबू, बात करन इस बारे

घर वाले तो सारे ख़िलाफ़ हि, आपके रहे जाते
मसताना शाह आमतौर ही, अक़सर ये फ़रमाते

घर वालों से बोला आपने, लेने नाम का दान
शाह सावन के दरशन करके, पहुँचने देस अनाम

पर न माने घर वाले कोई, मसताना शाह बात
मसताना शाह सबब इसी ही, रखे नां तालूक़ात

आया बलूचिस्तान सु इक दफ़ा, सिंधी था पोहुराम
बियास आ फ़िर पहुँचा सिरसाह, साचाह सौदा धाम

देखा उस जो वहाँ तमाशाअ, होई गया हैरान
एक सु एक था बढ़ के हि किया, हर कौने महीँ काम

चारों तरफ़ से लीपा डेरा, रंग रोगन हिँ कमाल
आँखें रह गयी फटी हि उसकी, देख यहाँ का जमाल

देखा बांटते नोट व कंबल, सोना चांदी धमाल
भानजों, मसताना जी को जा, मुम्बई बरनया हाल

मुम्बई आ लगे मसताना के, रहने रिसतेहदार
सिरसा डेरे में नां ख़बर थी, बात की इस फ़िलहाल

रिसतेदारों को जब आपके, पोहूराम बताया
रह गये थे वो हैरां सब ही, सुन मसताना माया

चलता आपके रिसतेदारों, का मुश्किल हिँ गुज़ारा
उनकी सुन रिसतेहदारों को, था बिचार ये आया

की जायें चलो सच्चाह सौदा, देखी आँखों आयें
ग़र कुछ मिल सकता है तो जाइ, उत ही लाभ उठायें

लिख़ के ख़त मसताना शाह के, नामे डाक हिँ पाया
चतरा बाई बहन का उसकी, फ़ोटो भी भिजवाया

पतरी देख के मैनेज़र जी, मन ही खुशियां समाइ
कि परिवार की मसताना शाह, आख़िर ख़बर तो आइ

सच्चाह सौदा खड़े शहनशाह, शाम को डिग्गीह पास
देखया मौका मैनेज़र जी, चिठिया की कही बात

और फ़िर फोटो बहन आपकी, की भी थी दिख़लाइ
सुनते कड़क के बोले शाहा, जोश हिँ पूरे आई

फ़ाड़ो रन्न की फ़ोटो हि फ़ैंकों, बहुता इस समझाया
लेने नाम कहा था पर नांअ, इसकी समझ हि आया

परम संत से भाग ही नां थे, ले भी सकी नां नाम
देख के फ़ोटो उसकी करना, हम को कौन सा काम

अब मसताना जी के हुकुम की, करता कौन अदूली
फ़ाड़ के फ़ोटो मैनेज़र जी, फ़ैंक ही देइँ धूली

लेकिन बाद में वो ही टुकड़े, लिये उठा थे तमाम
सोच के शायद बाद में कबहुँ, पड़ जाये इसे काम

दुनियादारी

घर परिवार के झमेले

माता चतरा बाई का आना

लागी ख़बर थी रिसतेदारों, बम्बई ही में तमाम
पहुँची जाइ ये रिसतेदारों, माहीं बलूचिस्तान

सच्चे सौदे रहे थे होइ जो, खेल तमाशे सारे
खबरें सबको लग ये चुकी थी, हो रहे खेल न्यारे

आपकी सबसे बड़ी बहन जो, माता चतरा बाई
बहन का दूजी लड़का बिशुमल, सच्चाह सौदा आई

सच्चाह सौदा बाहर गेट पै, दोनों बैठे उदास
पाइ ख़बर मैनेजर जी गये, भागे हि उनके पास

खोज में थे मैनेज़र साब कि, कैसे ही मसताना
मिल जाये परिवार से अपने, चाहे किस हिं बहाना

माता चतरा बाइ की तबियत, रहयो बहुत नासाज़
मुख़रे पै रही घोर उदासी, मन भी रहयो ख़राब

बेपरवाह मसताना को जब, लागी ख़बर हि जाये
कि उनकी चतराह बहना और, भानज विशु हैं आये

कर दिया साफ़ मना मिलने से, और हुक्म ये लगाये
भेज दो वापस उनको अंदर, आने दिया न जाये

शायद ये उन दोनों की रही, कठिन परीख़ा माना
दरसन बिनू मसताना जी ही, पड़या उनकू जाना

पर ठहरावने का मैनेज़र, जी ने किया था काम
सिरसा शहर में करवाया था, सारा ये इंतज़ाम

आत रहे ख़त पतरेह उनके, घटना इस के हि बाद
पर नां दीया जवाब ही कोइ, मसतानाह नाशाद

चाहत नां परिवार से मिलना, अपने शा मसताना
बीच की बात रही क्या केवल, मसताना ही जाना

शायद वास्ते अपने लाभ ही, चाहत मिलना सारे
या फ़िर सावन शाहा जी के हि, होन ख़िलाफ़त मारे

शाह सावन महाराज सु नाहिँ, लीया उन सबू नाम
नां ही कीये दरसन संत के, जाई बियासा धाम

शायद इसलिये ही मसताना, जी मिलना नां चाहा
होवै दीपक तले अंधेरा, शाहा रास न आया

संग मैनेज़र दुखी सकल थे, साधु प्रेमी बिचारे
कि रहे वंचित मौज ही सावन, शाह कुटुंब हि वाले

ठोकर दुनियावी रहा खाता, सारा ही परीबार
काल की माया का रहा बनहिं, हर पल ही वो शिकार

इसके बाद महंत व परेमी, दास किशन पोहुराम
आये बलूचिस्तान से सब ही, साचाह सौदा धाम

किशन दास रहे मसताना के, सख़्त ख़िलाफ़त धारी
मसताना की मुखालफ़त महीँ, उसने उमर गुज़ारी

डेरे दिखलाये पोहुरामा, प्रेमियों ने ब पिआर
जाके बम्बई बात की फ़िर से, मसतानाह परिवार

उन्नीसौ उनसाठ जुलाई में, आपके रिसतेदार
सिरसा मिलने आये आपसे, आपका ले परिवार

सत्संग था बड़ा उस औसर पै, लकड़ां वाला गराम
पूजनीय मसताना शाह थे, निरंकार पुरा धाम

संगत खुश हुइ देख के सब ही, मसतानाह परिवार
जाने मिल गयी चीज़ हि क्या थी, ख़ुशियों का नां शुमार

करता कोई हाथ हि जोड़ के, झुक ही कोई सलाम
कोई हाथ लगाता पाँव को, करता कोई परनाम

सारे हि परिवार को आपके, पाँवड़े पलक बिछाइँ
पर थे आप नाराज़ सभी से, इन ही बातों खिजाइँ

आपने फ़रमाया की संगत, पूजा इसहिं करेगी
झुक हिं करेंगे इनकू सलामें, पैरों हाथ धरेगी

मान बढ़ाइ देंगे सबू इन्हें, देंगे सबहीं सम्मान
बोते क्यों यहाँ बीज बढ़ाई, के और मिथ अभिमान

शहनशाह नाराज़ थे बहुते, देह के रिसतेदार
भेजना चाहत वापस थे इन, डेरा सेह ततकार

पर नां मानयो संगत सारी, उतरी जिद्द पर आये
की रिसतेदारों को सिरसाह, हिँ रहने दिया जाये

फ़िर फ़रमाये मसताना शाह, हम तो सेवाहदार
जोड़े झाड़न वाले दीन औ, सबके ताबेहदार

तुम न जानते रह के यहाँ ये, क्या क्या काम करेंगे
सब ये इस हि ग़रीब़ फ़कीर का, चम्म ही यहाँ पट्टेंगे

कल कु मैनेज़र जी की औरत, और बच्चे आयेंगे
पूजा पाठ शुरू होइ जाईं, मान हि बढ़वायेंगे

ये मसताना तो है चाहता, देस हिँ जाओ अनाम
बाहर से लेइ जाने अंदर, होईं रहा ये काम

पर ये चाल है काल बली की, समझोगे नहीं चाल
पीछे पछताओगे उमर तक, रहसी ये ही मलाल

रख लिया सिरसा में हठ करके, आपका सब परिवार
काम शुरू करने में मदद की, छेड़न को बयौपार

काम नहीं पर कोई जम सका, पड़या उठाइँ घाटा
देखी हाल सकल परिवार का, सककु अभाव हि काटा

रिसता ताक़त से बड़ी इतनी, फ़िर भी चलत नां काम
बरक़त क्यों नहीं आती काम हिँ, कैसी रही उलझान

बात फ़कीर ग़रीब की इस नां, माने संगतें साध
देते उल्टा दुःख ही ग़रीब को, दुख की गिराते गाज़

क्या हि करे बेचारा फ़कीरा, संगत हिँ सेवादार
जैसा संगत कहेगी हमको, मानेंगे बा पिआर

फ़रमाया करते थे वो अक्सर, ही हर रोज़ ये बात
समझी नां सके रमजें उनकी, आख़िर कौन था राज़

चलता नांअ था उधर आपके, परिवार कोई काम
हो हि रहा था काम में हर ही, घाटा और नुक़सान

बीज पनपने लगे अभाव के, संगत बीच हिँ सारी
काल ने जाल बिछाइ दिया था, करहिं ख़िलाफ़त भारी

देख नज़ाकत मौके की शाह, मसताना जी कीया
लिया दिल रख संगतों का भी, काल हटक भी दीया

डेरे में बनवाइ दी उनको, कई वहाँ दूकानें
और रुपये दिये पिच्चासी सौ, सौदा दूकां पाने

करने बात की हि ताक़ीदगी, संगत अंदर सारी
मसताना शाह बातें पूरी, नूरि रसना उचारी

फ़ैल गयी ये बात आग की हि, माफ़िक सिरसा सारे
इससे मास दसम उन्नीह सौअ, उनसठ सुबह सकारे

दी टरीब्यून छपा अख़बार जु, पन्नेह मुख पर आयो
लोगों ने वो उठाये अभाउ, शहनशा जु चेतायो

दीनता

विनम्रता (गाँव धुंकावाली का सत्संग)

बेपरवाह शा मसताना का, रंगो मस्ती तमाशा
बाज रहा था डंकाह चहुँ दिस, बांधता सबकु आशा

शहरे सिरसा और उस वक्त के, माहिँ पंजाब सुदूर
ख़बरें सारी अफ़सरां आला, रहियौ करीं मज़बूर

सच्चाह सौदा माहीँ देखसों, आख़िर होत है क्याअ
रोज़ ही रोज़ तमाशा होता, एक से एक नयाअ

जो ही आता करने वहाँ पै, तफ़तीसी अधिकारी
मन हीँ काल तमाशा लावता, मत ही जाती मारी

देखया लिक्खी पढ़ी ज़मात भी, अक़ल हि की मोहताज़
तोलत हैं ये लोग तराजु ए, तर्क पे ही सबू बात

माना बहुत है अक़ल कारगर, दिखलावैह जो पथा
पर है देत ये कबहूँ कबहूँ, बेराह पूरा डुबा

हों मूरख़ या होंइँ हंकारी, डूबे लोग चालाक
आते हैं संतों के नीयरे, काल की लेइँ खुराक़

पर है होता जब भी सामना, साथ रुहानी शीशा
घटना हो जाती वो रुहानी, वक्ती साख़ी हमेशा

हो जाते हैं दिल भी साफ़ वा, भरत वहम भी उड़ार
रास्ता मुश्किल है पर बहुत ये, साईं दया दरकार

अपने अधिकारी सबू जीवां, करता वोह संभाल
लेता कदम कदम पर है वोह, पकड़ से काल निकाल

क़ामिल एक फ़कीर को अपनी, थाउँ बनाउन मारा
बहुता परत है ज़ोर लगाना, देस हिँ काल पसारा

करने सामना परती मुसकिल, काम नां ये आसान
आती है जो रूप बना कई, करती है परीशान

क्योंकि जेल है काल की ये तो, खोलन इस थाँ दुकान
करनी पड़ती ख़रच है भगती, दयाला कु यहाँ आन

दो अक़तूबर उन्नीसौ पचपन, साचाह सौदा धाम
सत्संग आये बंसी लाल जी, लाला संग अक़राम

मांग ली सत्संग लाला जी ने, वास्ते धूकांवाली
पहली अरज़ में मसताना शा, बात न उसकी टाली

मालिक का वहाँ खेल भी क्योंकि, था हि कोई मंज़ूर
कारन इस मसताना शाह ने, की सतसंग मामूर

धूकांवाली में हुआ सत्संग, नीयरे इक तालाब
आया आनंद चोखा सत्संग, होईं चित आहलाद

करने बाद रूहानी संगत, शहनशाह ने सारी
लाला बंसी लाल के घर ही, निसि चुबारे गुज़ारी

घर हीँ लाला बंसी लाल के, रहती बड़ी बलाई
रात बड़ी मसताना शाह ने, बा मुसकिल हि बिताई

अगले दिन पंचैती जमीं पर, सत्संग फ़िर सु लगाया
डेरा शाह ने होइ खुश वहाँ, मंज़ूरी फ़रमाया

डेरा लेकिन सिरजाना वहाँ, था न इतना आसान
करता काल सदाह संतों को, दांव पेंच परीशान

सच्चाह सौदा करन नां देता, देत चलन न दूकान
बहकाअ देता जीवों को है, अपना करहीं ग़ुलाम

मोहरा अपना बनाइ उनको, मनमानी करवाता
संतों सामने देइँ खड़ा कर, ऐसी अक़ल फ़िराता

डेरा जब वहाँ लगा निरमने, लोक भटकने लागे
और ख़िलाफ़त करने लगे वो, करने बलुए आगे

लागे लोग भड़कने कुछ वहाँ, डेरा लागिं बनाने
खुल कै लागे करने ख़िलाफ़त, बातें लागिं बनाने

उनमें एक शराबी आदमी, ऐसा भी था आया
धन धन सतगुरु नारा लगाने, पे हि झगड़ा बनाया

प्रेमीह इक गुरदेव सिंग को, उसने चांटा मारा
और बहुत भी लोग थे भड़के, कि नां चले ये नारा

डेरा बनने देंगे यहाँ नां, फ़ैलीं आर या पार
मर जायेंगे आप ही हम या, देईं किसी को मार

वाकिया इसी बाद लिया वहाँ, ऐसा वक़त ने मोड़
निकला बदन पे उस हि शराबी, भीषन बहुत ही कोढ़

अबहूँ तो वहाँ गये ही न हम, बचन हिँ कढ़या कोई
देख लो उस मूर्ख को हि कैसी, रहयो सज़ा हि ढाई

फ़िर भी होता रहा विरोध ही, मानयौ काल न हार
चालें चलता रहा वो अपनी, ऐसी ही लगातार

बाहर मुख़ से अंदर मुख़ ताइँ, खुलता है जित दुवार
उन चौख़ट पर देत है पहरा, दिन औ रात ये काल

देई नां वो चीज़ ही कोई, जाने द्वार के पार
जन्मों की लिये सेवा अनिक ही, विरला लांघता द्वार

नेक कमाई भजनो बंदगी, रहयौ जिसके हि साथ
पाउँ दरवाज़ा पै धरै वोह, जिस पै दयाला हाथ

लोगों ने कुछ किया विरोध था, तब तो इतना हि ख़ास
लेने जाते जब थे परेमी, पानी ताल के पास

पानी भी लेने से देत थे, रोक ये कई हि दफ़ा
फ़रमाये मसताना शाह जब, चालया उनको पता

है अफ़सोस नहीं ये जानते, की रहे कर येह क्या
नुइयाँ वाली सु लाओ पानी, करना नहीं झगराअ

अंदर सु हुआ हुकुम की डिग्गीह, खोदो पानी ताज़ी
पानी डेरा माहीँ होन से, होइँ ख़त्म मोहताज़ी

पानी के मोहताज़ तुम्हारे, ही ये हो जाएँगे
डिग्गी से ही ये भर भर पानी, लोग लेइ जायेंगे

बने हुये हैं पानी हि ख़ातिर, जो ये सबके रक़ीब
इनके ताल से नां हो पानी, चिड़िया को भी नसीब

होयी डिग्गी सेवाह शुरू जब, लोग दिया नहीं साथ
उल्टा लागे कहिने ख़िलाफ़तां, मिलसीह पानी ख़ाक

अव्वले तो पानी महीँ डिग्गीह, इनकी नां आयेगा
आया भी तो लेने हि पानी, कौन वहाँ जायेगा

डिग्गीह बनते होया ताल का, पानी सगरा ख़राब
मज़बूरन डिग्गी से ही डेरा, लागी बुझने पियास

होये पूरे बचन ही सारे, शहनशाह मसताना
गाँव सकल का पानी बहाने, होया डेरा आना

गाँव में उस धनी ग़रीब और, छोटी औ बड़ी जात
रहते लोग थे सगरे हि वहाँ, गाँव हीँ मिल कर साथ

लागे डेराह आवन ज्यों ही, पानी लेन बहाने
सोबत का रंग लागा चढ़ने, अनबन लागिं ठिकाने

वैर विरोधना अंदर की उन, ऊँच नीच महीँ जात
होईं ख़त्म गइ अबहू पंगतां, ख़ान लगे सबू साथ

मस्ती ने मसतानाह शाह की, ऐसा असर दिखाया
गाँव के सब लोगों को एक हि, घाट पानी पिलाया

बो दी गई इक फ़सल गाँव हूँ, आइँ प्रेम का रेला
नाम रखा खुश मसताना शाह, डेराह साधु बेला

शा मसताना जी का देख लो, कैसा खेल निराला
सेव कठिन लइ रात औ दिन की, डिग्गी पानी निकाला

डिग्गी डेरा वाला वो पानी, धो गया सारा वैर
हो हि गई थी पानी बहाने, गाँव में ख़ैर हि ख़ैर

साधु बेला डेरा महीँ इसी, सतसंग में दिन रात
फ़रमाते मसताना शाह जी, ये ही वचन थे ख़ास

की नहीं मांगत तुमसे कछु भी, ये तो ग़रीब सफ़ीर
जोड़े झाड़ने वाला ही ये, सतगुरु जी का फ़कीर

माँगता बस ये तुमसे दिलों हिँ, फ़सले प्रेम उगाओ
फ़सल परेम को सतसंगों का, नित हि पानी लगाओ

सतसंगी सोबत का जहाँ ये, लगता नीर रहेगा
लहलहाईं फसलें परेम की, ख़िलता बाग़ रहेगा

फ़ूल ये उसकी ही खुशबू की, रहसीं महक लुटाते
मिलती सरवदा रहत ये मस्ती, रहसीं हँसते गाते

जैसे हि हट जाईं ये सौबत, ख़तम सबू हो जाईं
महक लुटाने वाले बाग़ हीँ, पतझर जाईं छाईं

चेरा काल का बनना नाहीँ, अंग नां बनना काल
होइ जाये ये जोनि सफ़ल बस, बन रहो अंग दयाल

ठोकर लगती है बड़ी भारी, सतसंग आने बाद
होता भान कि जनम ये हीरा, कर ही रहे बरबाद

सत्संग हिँ इस सिंग करतार भी, गुदराना से आये
ख़ूब भजन सिमरन करो मालिक, उसको हुक़ुम लगाये

बोलया उस कि करके जतन भी, बनने भजन न आता
दुश्मन बहुत हि हैं यहाँ मेरे, दिल से ख़्याल न जाता

बोले कड़क के मसताना जी, दुश्मनों सु तो तेरे
माँ भी नाहिँ पाईं बचा तुझे, करले जतन बतेरे

कोई ग़र सकता है बचा तो, सिमरन भजन बचाये
कहता हूँ कर सिमरन बंदगी, शांत रिपु होइ जाये

उसके बाद न उसके रकीबों, ने उसको धमकाया
होइ गया बेसास उसे बड़ा, ख़ूब हि भजन बनाया

जीव हो कैसी ही फ़ितरत का, मन का कैसा कठूर
भारी असर होई संगत का, ठोकर लगती ज़रूर

नज़र का उसकी एक हि होता, दिल पर ऐसा जादू
रहता जीव नां बस में अपने, हो जाता बेकाबू

थे वो दिलों के ऐसे मौला, रंग हर दिल की जाने
बंदों में बंदा ए ख़ुदा वो, था जो दिल से माने

मारच अठाईस उनसाठ को, गाँव हिँ धूकांवाली
डेरा साधु बेला में दीया, सत्संग इक था आली

साधु सतसंग आया एक जिस, चौटालाअ देहात
संग बहादुर चौधरी लाया, पतनी बाल माँ साथ

कह दिया उसने सतसंग माहिँ, वास्ते लेन बढ़ाई
कि हम गाँव चौटाला हिँ डेरा, बनवाने के ताई

बीघाह चार वहाँ पर ही हम, देना डेरा चाहीँ
कौन सका बच नज़र से उसकी, मसताना फ़रमाहीँ

अंदर से तो चाहता है तू, इंच न इक भी जाये
झूठा फ़िर ये तमाशा लोगों, को काहे दिख़लाये

धूकां वाली गाँव में उस दिन, इक बरात थी आई
हुरदंगी अक्सर जों बारात हिँ, बलुआ रहत मचाई

बाराती सारे रहे पी पी, ज़्यादा बहुती शराब
होईं सकल ही लोट पोट वो, लागे करने ख़राब

उलटे सीधे लागयो करने, बीबियों से हि मज़ाक
आ गये थे जानिब ए डेरा, भूली अपन औक़ात

चलती संगत में हि वो करने, मस्ती ही के इरादे
बैठ गये वोह सत्संगियों में, बेवड़े जु धुत ज़्यादे

शान्ति वा आराम यूँ बैठयो, जोंहिँ प्रेमी पुराने
सत्संग चुप से रहे वो सुनते, मस्ती सी लगी आने

अभिमान गया उतरी हि सारा, और नशा दुनियावी
नज़रे मसतानी का नशा अब, होइ रहा था हावी

होया सामना अबहिं हक़ीक़त, मिटयौ भरम संसार
पर्दा जोत रूहानी गया उठ, होया खुलहिं दीदार

रूहानी शीशे में हि आया, दीयाअ अक्स दिखाई
पछतावा हुआ ठोकर खाई, औ लानत भी पाई

होईं मनहिँ अरज़ औ बेनती, मनहिँ कबूले गुनाह
जलयौ रूहानी थीं मशालें, फ़ैली उजारा गया

संग मिला सतसंग में सत का, होइँ नज़र अधिकारी
मस्ती सोबत नूरी जलाल की, जागी जोत नियारी

आये काल की हद से बाहर, होये शिकंजा पार
आइ बाहिर शीशे रूहानी, होयाह साछतकार

छिटकी बाहिर निकल हि गयी जो, गंदगी फहश शराब
अब तो थे बस नूर के अमरित, जाम हि लबहो लबाब

जैसे नूरी रसना अलाही, बरसायोह उपदेश
मारग कान जो धरती हिरदय, जाई गिरयौ बिसेस

पछतावे के आँसुओं की तब, ऐसी हुई बरसात
अंदर भी और मुख़रे पै भी, बरसयो पसचाताप

बरक़ती बरसात ये इस महीँ, फ़ूटे प्रेम के बीज
साधुता की बूंदों से जैसे, सबके दिल गयो भीज

दुनियावी वो उतर गई सबू, झटके इक हिँ खुमारी
मिलयौ भेद था काल फ़ँसाई, का वो दुनियादारी

पाछै सत्संग हुआ जो लंगर, भूले वो देहभान
मस्ती नूरीह रहा ही नां था, खाने पीने धियान

उठ कै वापस गये जो घर तो, पूरे होईं साधू
जैसे जानत पीना शराब न, होया मन था काबू

सेवादारों ने जा बोलयौ, शहनशाह मसताना
वोह शराबी सकल गये बिना, खाये लंगर दाना

मसताना शाह फ़रमाइ रहे, पीयें अब नां शराब
नाहिँ कहो उन्हें कोइ शराबी, होईं गये मुमताज़

जीव गये हैं कुछ तो यहाँ से, बन ही कै अधिकारी
बात रही लंगर की तो वोह, ले गइँ बरक़त भारी

आयेंगे वोह जल्द ही डेरा, लंगर भी यहाँ खान
पाछै सच्चाह सौदा हिँ इनको, बख़शा नाम का दान

आई जाता बार जु एक था, सोहबते मसताना
लिखया नार्हीं भाग में उनके, खाली फ़िर है जाना

फ़रमायो मसताना शाह थे, देने बाद ये नाम
प्रेमी ऊँचा दरज़ा बनेंगे, सगरे भागयावान

भोगी रहयौ करम कांड येह, अपने बहुत पुराने
हो गया लेख़ा जोख़ा ख़त्म अब, तर गये ये निमाणे

जुड़ना लाखों जीवों को अभी, संत मते इस आईं
मसताना शाह अक़सर ही ये, बातें थे फ़रमाई

करता असर यहाँ ताईं लीया, बचपन मर्हीं परसाद
इक दिन जीव बनेह अधिकारी, रखना बात ये याद

रूहानी ख़ुराक

ईश्वरीय भोजन

चार सितंबर उन्नी सौ पचपन, डेरा अमर पुर धाम
चौधरी बलदेव जी आयोह, डाबड़ा जिनका ग्राम

तीस नवंबर सन पचपन महीँ, धाम अमर पुर आये
अपने गाँव में सत्संग की वो, अर्ज़ मंज़ूर कराये

पच्चीस बारह सन पचपन महीँ, उसके हि यहाँ जायी
होया सत्संग ज़बर बड़ा वहाँ, मस्ती अज़ब थी छायी

संगत हिँ बड़ी सेवा चौधरी, साहब ने दिख़लाई
बैठाई मेजों और कुर्सियों, लंगर थे खिलवाई

पूरियां हलवा औ मिठाइयां, देईं खूब छकाई
बनवाने डेरा तभी अपनी, दीयो अरज़ लगाई

फ़रमायाअ मंज़ूर बनाने, उनकी धरत पै धाम
थाँवा डेरा वाली गया हो, डेरा का शुरू काम

धरती सख़्त रही बड़ी भारी, रोडियों भरी सारी
आती कसियां उछली मुँह पैह, जिस जिस रहयो मारी

सेवा कठिन ली सेवादारों, से शाहा मसताना
सर्दी सख़्त की रातें थी पड़ती, तंबू माहिँ बिताना

घंटे चौबीस में मिलिं फ़कत हि, घंटे दोइ आराम
ओस टपकती तंबुओं से थी, पूरी रातें तमाम

लंगर बनता था अठ पहराह, रातो दिन हि तक़ाज़ा
आवता राशन लंगर का था, चौधरी घर हिँ ताज़ा

गुरुमुख़ दादू को गया सोंपा, लंगर लावने काम
बेपरवाह ने दिया बनाई, राशन का भी मिज़ान

पर दादू गुरुमुख रहा अपनी, मरज़ी राशन लाई
चलया मसताना जी पता जो, नाराजी दिखलाई

चौधरी थे बलदेव बहुत ही, पक्केह अपने उसूल
रहयौ करते सहन वो फ़िर भी, जान के नां थी भूल

कीये सारे प्रेमी हि इकठे, राखीं शाम को बात
चौधरी घर से लाना राशन, काम ये किसके हाथ

आदमी ऐसा हि चुनो कोई, लायक जो इसी काम
मसताना जी दादू बागड़ी, लीया चुन उसी शाम

दादू बागड़ी से फ़रमाये, शरतें शा मसताना
बर्तन रख खड़े चौधरी घर जा, पीठ घुमा हो जाना

जितना राशन घर की बीबियाँ, डालें वो ले आना
साधो हों कम या फ़िर ज़िआदा, सोच न मन में लाना

औसर डेरा बनते न होई, पाता था अंदाज़ा
जाते होई साधू कभी कम, हो जाइँ कबू ज़्यादा

कीयो बस वैसा हि थे दादू, फ़रमाये ज्यों शाहा
डालें बीबियाँ राशन जितना, ले ही जाता वो आ

सेवादारों का उसी राशन, सु लंगर थे बनाते
सरदी ज़बर के मौसम में भी, निसि दिन सेव कराते

ऐसी सेवा करना होत है, वीरता का ही काम
बोना मुसकिल बीज परेम के, नाहीँ काम आसान

फ़रमाते शाह मसताना जी, अक़सर ये ही बातें
अड़चन पैदा करता काल है, ज़ालिम करने घातें

होने फ़सल नां दे रूहानी, नित अटकाव लगाता
कारोबार फ़सल से हि ऐसी, ख़त्म काल होइ जाता

मांगे है कुरबानियां सतगुरु, होईं बरे इम्तिहान
नाहीँ सकते निकली सभी इन, पहुँचें जाईं मुकाम

जाई बीच हूँ भाग छोड़ कै, बहुते जीव मैदान
पाते बड़भागी ही मंजिलें, पहुँची धुर रहे धाम

सेवा ऐसी चाली रात दिन, बारह माह का काम
सेवादारां कर दिया सगरा, दिन में कुछ ही तमाम

मसताना जी शहनशाह के हि, हुकुमीं राखयौ नाम
राखीं डाबड़ा के डेरे का, नाम अगम पुरा धाम

दौरां इस ही फैहफ़ाना से, प्रेमीह इक मुख राम
भोजन कम और सेवा कठिन सु भागे छोड़ मैदान

बाकी प्रेमी मसताना शाह, ले रूहानी ख़ुराक़
डट ही रहयौ धरहिं भरोसाह, साईं ही पै बिसास

ईंटें और सीमेंट दिनों उन, मिलते नां आसानी
चिठिया पड़ती एक सिफ़ारिशी, अवसि ही लेइ जानी

करने चिनवाई सीमेंट से, ईंट भिगोईं पूरी
बीच में थे ईंटों के रोड़ेह, होये फूली चूरी

चाला मसताना को पता जब, बहुते ही दुख आये
मैनेज़र साहब को कुरताह, खोलीं बटन दिखाये

छाती की चमड़ी पे खींच के, चुंडी ज़ोर हि लाई
येह परमारथ सेवादारों, ख़ून पसीने आई

परमारथ से भजन व बंदगी, नूरी नज़र इशारा
माँगता कोई नौकरी बच्चा, और दुख हिँ छुटकारा

ख़ून हीँ हथ करने है पड़ते, ये मुफ़लिस मसताना
सोची समझी करन ख़रच ये, यूँ हि नाहीँ गँवाना

टिकना काम बहादुरी हि बड़ा, परमारथ मैदाना
काम बड़ा रहिं भूखे पियासे, पुष्प रुहानी ख़िलाना

टिक सकता है बस परमारथी, भजन ही इस मैदान
शहनशाह ने सेवा ली जहाँ, संग हि भजन सिमरान

चांदी सोना और नोट बड़े, संगत माहिँ लुटाये
सब ये सेवाह परमारथ के, धन ईलाही आये

फकीरी लताड़

फ़कीर की फ़टकार/प्रताड़ना

चोर, चमार, जैली और पशु

छोटे भाइ सिंग बलदेव के, रंजीता जी आये
सोना धन और चांदी संगत, देख बहुत हरसाये

होये हैरां देखीं नज़ारा, वोह थे साथ हि साथ
विदयालय रहे कन्या बनाई, कीयो शाहा मज़ाक

माहीँ इस देउ मदद करीं मुज्झ, बहुताअ हो उपकार
लाख रुपैया देइ दो मुझको, आपके इस भंडार

बोले शाहा करी तेरी हम, इज्ज़त और अफ़ज़ाई
क्योंकि है बलदेव ही चौधरी, का तू छोटा भाई

रहना नाहीँ घमंड वजीरी, सुनहिं धियान लगाई
तेरे जैसे लाखों वज़ीर हि, रुलते फ़िरते जाई

आने की अंदर भी मिलत है, उनहूँ जगहा नाहीँ
आ ही जायें इक पल भी वोह, सच्चा सौदा हि माहीँ

सोचा क्या कभी तूने तुझ पर, इलज़ामात हैं चार
लाये किसने और कहाँ कहाँ, सोच कबहूँ बीचार

अबतरी ये लाये हैं तुझ पै, सुआमी ने दरग़ाह
तू है चोर चमार वा जैली, और चौआ भी निरा

कबहूँ येह इलज़ाम उतारै, कैसे ही उतरेगा
खात पशु करिं देते हैं मल वो, तू भी तो है ऐसा

तूने भी बस खाया किया मल, सब कुछ किया बेकार
बनया ही है तू पशु निहायत, हो तोताअ इसरार

करते गंदा चौआ हि जैसे, बच्चे करत हैं पैदा
तूने भी तो जामा ए इन्सां, काम किया न अलैदा

नाहीँ इस अनमोल जनम महीँ, जपयाह साईं नाम
चौआ ही हुआ या नाहीँ फ़िर, जगहा कौन इनसान

दूजा है तू चमार भी पक्का, क्योंकि चम का ही यार
चम्म को चाहता सेवा इसकी, करता है लगातार

देही को हि सजाये सँवारे, रोज़ ही तू हर हाल
काम मलिन बड़े करता इसका, हर पल इसतेहमाल

चमड़े के इसी जिस्म को नित दिन, चम के जंगल माहीँ
काम पिपासाह करने पूरी, भटकत है तू जाहीँ

कारन इस तू हर ही हाल में, चमड़े का हि है यार
बोल तू फ़िर आदत से इसी हि, होइ नहीं क्या चमार

तीसरा तू है पक्का हि जैली, देह के इस नौं द्वार
मूरख़ नाहीँ ख़बर है तुझको, भटका योनी हज़ार

दरग़ाही है जेल ये पगले, मौत हि इसको तोड़े
फिर हिं तुझको जेल और योनी, दूजी जाई छोड़े

तरहा इस ही जेल कभी येह, और कभी उस जाई
रहयौ जनम जनम ही भटकता, बनहिँ जैली सदाई

करीं जतन ले वरना पिरानी, जिस्मानी इसी फ़ानी
बनया रहसीं कैदी सदा ही, हीरा जनम गँवानी

चौथा है तू चोरटा पुख़ता, दरग़ाह मालिक चोर
आया था तू करके वादाअ, साईं संग कछु और

गुफ़हा गरभ में लटका उलटा, अंधेरेह नौं मास
साँसें रहयो लेता गंदगी, बीच पख़ाना पिसाब

बदबूह और घुटन में उस तू, परया हौंसला तोड़
डाला साईं उदर था तुझको, हाथ वा पाउँ मरोड़

मालिक सु वहां किया था तूने, एक ही महता बचन
कर दे मुझको बाहर इत सेह, रहयो घुटत यहाँ दम

तूने उससे किया क़रार था, बाहिर आ जपों नाम
याद रहेगा दिल हि दिमाग़ से, मालिक सुबहो व शाम

पागल सोच ले बात एक तू, बूंद से गंदी बना
इतना है हंकार तुझे कि तू, होईं ग़रब से तना

करके ऐसा चलत जौं होई, चीज़ बहुत ही कमाल
फ़ानी है तू बुलबुला पानी, करले इसको ख़याल

पर उस मालिक को भी देख लो, दिख़लाई क्या धमाल
कितनी की हमदरदी संग तुज्झ, कर दिया माला माल

दूसित बूंद सु तुझको बनाया, दिलकश बहुता हसीन
ज़ेहन सोच सभी जीवांह तुज्झ, कीयाअ बेहतरीन

मौका तुझको ही दिया इनसां, जीवांअ में अनमोल
ताकि जेल सों बाहर आवैह, आवागमन की खोल

समझत अपने को ही बड़ा तू, शूल ए पाँच शिकार
था जो घट नां उसको बसाया, उलझा बिसयों बिकार

लेईं अपने साथ लोभ मोह, काम क्रोध अहंकार
फ़िरता भटकत जोनि हि जोनि है, मूरख और बेकार

हुकुम इलाही लेइँ था आया, अब करे आत्मा घात
दीये करम इसी में गुज़ारी, जीवन के दिनो रात

आतम घाती महा ही पापी, बे समझाअ इनसान
आवागमन सु जिसने किया नां, छूटन का इंतिज़ाम

साहूकार वो जिसने जोड़ी, आत्मा उसके हि साथ
बाकी आये तरहा चोर ही, उठ भी गये चुपचाप

खाली आया और चला गया, खाली दोनों हि हाथ
दुनयावी सब छुट हि यहाँ गया, लिया इलाही न साथ

मांगता है बस लाख हि तू तो, देऊ तुझ दोअ लाख
पर न होइँ कलयान समाज से, रखना याद ये बात

साचाह सौदा टुंडी मुंडी, आत्मा का हो इलाज
कहते कारिखाना रूहानी, सबब यही इसे आज

जाती रूह कराई पढ़ाई, आत्मा होईं कल्यान
कर न जो सका अपना भला ही, करहीं किसी क्या ध्यान

जब तू तेरा राम जंजाई, अंदर तुझ हि समाहीँ
खोज ले मालिक अंदर बैठा, गहरे पानी जाहीँ

सुन कर सब हुआ वो शरमिंदा, निकसिँ गये थे विकार
देखा मसताना जी पड़्याह, ढीला था अहंकार

सतसंग में तुम आना अवस हि फ़रमाये मसताना
कर दिल साफ़ी देना मुआफ़ी, दिल हिँ क्लेश नां लाना

फ़िर फ़रमायो मसताना शाह, करहिँ क्या आख़िरकार
राखें वरि नाराज़गी तेरी, या फ़िर यारा पिआर

हमने तो नाराज़गी का वो, राह दिया रख थैला
रखते नाहीँ और किसी से हि, दिल में अपने मैला

लुटा दिए बाज़ार

बाजार ख़रीद कर लुटा दिए

एक परेमी राव नारायन, गाँव डाबड़ा आया
सतसंग जिलहा हिसार रखने, एक दो अर्ज़ लगाया

देख भरोसा और परेम को, सतसंग की मंज़ूर
संगत के दिन मसताना शाह, देखयो अजब सरूर

बीच जु शहर हिसार के गुज़रे, देखी भीड़ आवाम
रखने पैर जगह नां मिलत थी, मंज़र था येह आम

उचकी उचकी पंजों पैर के, दरस करीं मसताना
कर रहे लोग जतन थे भीड़ हिँ, जाने क्या क्या नां नां

सारा ही का सारा शहर सा, हो गया मानो जाम
लगता था कि शहर में आ गया, हिंद वतन ही तमाम

आगे जगहा मिलती न पीछे, देखो जिधर आवाम
बावरियों ने नारों सु ऊँचे, गुंजाया आसमान

मसताना शाह देखयौ रुकहिं, मंज़र वोह बाज़ार
भीड़ नां जाने देती आगे, पीछे सबू लाचार

मैनेज़र जी लागे सोचने, कैसे निकला जाये
बोले मसताना जी से अजी, अब क्या करीं उपाये

करना है क्या मसताना शाह, झट ही से फ़रमाये
ख़ूब लो इस मस्ती का मज़ा अब, वर हि आनंद आये

मैनेज़र साहब तबू कहयौ, भीड़ न हट पायेगी
संगत में ही पहुँचना हमको, मुसकिल हो जायेगी

फ़रमाया मसताना शाह ने, सोचिं ज़्यादा न जाके
देखो अब हीं थोड़ी देर में, भीड़ को हैं हटाते

फ़िर मसताना शाह हुकुम दियो, मैनेज़र जी आओ
पूरे फ़ल व मिठाई दुकानों, से हि ख़रीदी लाओ

जितने पैसे मांगे कोई हि, ज़्यादा उससु चुकाना
सबहिं चीज़ें पिछली तरफ़ शुरू, कर दिया था लुटाना

लागे फेंकन फ़ल और मिठाई, अपने ख़ुदहि थे आप
संगत भीड़ में पीछे भागी, लूटने को परसाद

इस ही तरहा फ़ल व मिठाइयाँ, पिछली ओर लुटाते
बढ़ते गये आगे ही आगे, पीछे भीड़ हटाते

फ़ल बाज़ार हीँ और मिठाई, लुटवाइ हुये खाली
निकलन जाम से धीरे–धीरे, जगह अपनी बना ली

नटखट लड़कों ने सतसंग में, कर दी बिजली हि बंद
फ़ेंके पत्थर शोर भी करयौह, लागयो करने तंग

सोचा काल ने शा मसताना, संगत सकल तराहीं
ले जायेगा इसलिये उसने, बाधा डालन चाहीं

जरियाह उन ही लड़कों चल दी, काल ने अपनी चाल
थानेदार जो सेवा में था, औसर लिया संभाल

परबंध सारा करी हि उसने, सतगुरु का यश पाया
थानेदार भी वो था असल हिँ, सुनने सत्संग आया

होया सतसंग ज़बर बहुत था, ख़ूब ही बांटा माल
फ़रमाये मसताना कि देखो, सड़ता बहुत है काल

कैसे ये इसरार के काम हिँ, अपनी ख़लल हि डाले
चाहता जीव रहे यूँ फँसया, सतगुरु नाहिँ निकाले

अंदर से ये हुक़ुम है आया, साड़ दूँ शहर तमाम
पर मसताना ग़रीब ने किया, वापस हुकमे अनाम

कि ए मालिक कर दे माफ़ इन्हें, बच्चे हैं ये नादान
माया काल शिकार हैं सब ये, दुनियावीह इनसान

अन्तर्मुखी गुरु प्रधान

अंदर का गुरु का बड़ा होता है

मारच चौथाह उन्नी सौ छप्पन, सत्संग डाबड़ा ग्राम
बहुताह भारी ज़बरदस्त हुआ, ख़ुश थे ख़ास औ आम

जेल हिसार के बड़े अधीक्षक, सिंग सरदार मज़ाल
के यहाँ आयौ कुल मरदाना, के कुछ ख़ासे कव्वाल

ले आने सतसंग उन्हें शाह, मसताना अरज़ाये
मसताना जी अरज़ को उनकी, मंज़ूरी फ़रमाये

आये जब सतसंग कव्वाल तो, थी कव्वालियाँ गायीं
बाहरी मुख़ गुर की ही जिसमें, उसतत थी फ़रमायीं

पूजाह का भी भाव प्रबल था, राग़ हिँ साफ़ बताते
कि गुरु बाहर देह धार के ही, दुनियां में हैं आते

लेकिन शाह मसताना करत न, बाहरी मुख़ परचार
अंतर मुख़ गुरु को ही मानते, भगतीह का आधार

तोड़न भरम ये मसताना जी, मैनेज़र कु बुलाई
भाग एक गुरुमत हि सिद्धांत का, संगत में पढ़वाई

जो मन की सीमा से परे हैं, मंडल वे रूहानी
संत महात्मा साईं सदां हैं, मंडलों के अजानी

जिनको कर ही सकत है अनुभौ, रूहें पाक़ औ अमर
बतलाईं येह मंडल हैं सब, थूल दुखों का ही घर

अनगिनते अस्थूल और कारन, इनके पार आबाद
नूर हि नूर है केवल उस थाँ, सतगुरु हि बा नाबाद

जातरा करते मंडलों इन हिँ, सतगुरु इंछाह रोज़
देत गवाही होने वजूद हिँ, लोक की इस बा खोज

जीव जो जाते हैं रूहानी, संतों तजुर्बा शाला
वो सब देखते हैं वैसे ही, लोक स्थूल ज्यों आला

सारा कुछ वैसे हि है आता, अनुभव और बीचार
जैसे होते हक़ीक़त माहीँ, दो और दो हैं चार

करते सफ़र रूहानी गुरु हैं, मंडल इन रोज़ाना
फ़रमाया येह बचन सुनाईं, शहनशाह मसताना

कारन और अस्थूल के अंदर, सतगुरु जो हि समाया
बाहर है गुरु बोलो कहाँ हीँ, अंदर से वो आया

अंदर रोज़ रोज़ गुरु अपने हि, बच्चों के इंतेज़ार
बैठा कि कब आयें वो उनको, ले जावैह भवपार

फ़िर कव्वालियाँ सुनी कव्वालोंह, सतगुरु बगसयो ओट
होई पुलकित बांटयौ उनको, सोना कपड़े व नोट

पाखंडियों की बंद दुकान

पाखंड करने वाले भागते बने

गाँव डाबड़ा मारच चार को, सन छप्पन में हि जाई
होइँ सतसंग बहुत बड़ा यहाँ, ख़िलक़त बहुत हि आई

जगहा जगहा सतसंग डेरे, बनने से बेशुमार
लागया होने संत मते का, तेजीह वर परचार

जीवन अपना सफ़ल बना रहे, लोग थे लाख हज़ार
जुड़ के संत मतेह की धारा, लागयौ करन उद्धार

जाइ दी रही पटखनी काल कु, हर हि कदम पे जाई
अपनी चाल और कोशिश माहिँ, नाकामी उस पाई

धूम बड़ी मसताना शाह की, जस था पूरे उफ़ान
गूंज रहा था चारों दिसाओं, नाम था ज़िंदाराम

लाखों सहसरों जीव साधारन, जीव बनीं अधिकारी
बाहर मुख से अंतर मुखताह, सफ़र रखे थे ज़ारी

निकली अंधेरे मनमुख़ताह, गुरुमुख़ताह परकास
बाहर मुख़ से अंतमुख़ी सबू, जीव सफ़र थेह ख़ास

हौसला हर ही कदम शाह थे, जीवों अपने बढ़ाइ
अंग हि संग बने हुये उनके, पल ही पल वो सहाइ

बंद दुकानें पाखंडियों की, लागयौ होइँ जाई
होई गये सब ख़त्म ही साधन, हुई ख़त्म थी कमाई

चाकी ईरखा जाइँ रहे पिसिं, पाखंडी दिनो रात
पर क्या करते रियाकार नाहिँ, चारा था उनूँ पास

की वर कोशिश पाखंडियों ने, करने शाह बदनाम
पड़ जाती पर चाल ही उलटी, हो हि जाते नाकाम

चार तीन छप्पन को हि डाबड़ा गाँव की संगत माहिँ
पारटी लेई सात रोड़ का, आइँ इक ब्रहमचारी

करने शहन शाहा मुक़ाबला, पूरे मन ही आया
घूमा चढ़या मंच इधर सेह, चक्कर उधरे लगाया

बोला फ़िर वो उलटा हि सीधा, जो ही मन में आया
सेवाहदारों ने था उसको, सबक सिखाना चाहा

रोक दिया मसताना शाह ने, सारे सेवाहदार
फ़रमाया कुछ कहो नां इसको मरज़ी येह इसरार

पूछे मसताना शाह उससे, कि चाहता है वो क्या
बोला शासतरों का ज्ञान है, वरना वोह चाहता

कहयौ मसताना शाह हँसके, हमसे करो क्या हार
वरी न हम लिख पढ़ ही सकेंगे, हम अनपढ़ औ गँवार

नाहीँ हम हैं पढ़यो शासतर, रखया उस भी है क्या
पाखंडी इस पर ये बोलया, तू अभी डर है गया

इस पर मसताना शाह बोले, क्या येह तुमकू पता
काम पराये दख़ल है देना, दोष बड़ा और खता

पास जो तेरे होता कुछ तो, काहे तू इत आता
लाइ अपना मंच तू बोलता, मारग तू दिखलाता

पर जो यू तू डालने कु यहाँ, है ख़लल अभी आया
करसी तुझ ये ख़राब बहुत ही, रुख़ है जो अपनाया

नाहीँ बोलन की है इजाज़त, दूजे कु यहाँ आही
मंच तो इस बैठना भी हवै, सख़ती साथ मनाही

दूर बहुत की बात है ये तो, बोले मंच हिँ आई
फ़िर काहे तूने येह इतनी, मूरख़ता दिखलाई

सुनते ही ये लग गया जैसे, उसकी जबां कु ताला
तू हमसे करने को लड़ाई, है हि यहाँ पै आया

पर नां चाहते हम हैं कोई, तेरे संग बहसान
क्योंकि टूटे होते फ़कीर के, दोनों हथ वा ज़बान

क्योंकि है ये जबां तो अलाही, उसका करे गुनगान
हाथ हैं वास्ते कारज सेवा, और सबके आवान

उनके पास तो केवल होता, दीनता का हथियार
करते मालिक से हैं दुआएं, सबके लीये पिआर

बाकी सब थे चाहत परेमी, उसको सबक सिख़ाना
चाहत रहयौं पाखंडीह को, सीधे रास्ते लाना

पर शा मसताना जी रोकयौ, की नांअ ख़बरेदार
कुछ भी करे ग़र ये नां कहना, आना पेश ब पिआर

हुक़ुम हमें शाह सावन जी का, दीनता हि दरसाना
आदमी को न इस कुछ बोलना, प्रेम से हि समझाना

हैं ये सब ही प्रेम के भूख़े, इनका नाहीँ कसूर
क्योंकि हैं येह दुनियावी अभी, सोच ईलाही दूर

पाखंडी वो डर हि गया और, चालीं गया मन हार
अख़बारों ही उसने निकाला, शाह विरुद्ध इश्तहार

इश्तेहार

क्या सच्चा सौदा सच्चा था नही झूठा था?

जनता सगरी को हि है सूचित, ये ही कीया जाता
सच्चा सौदा बलूचिस्तानी है, जिसको बोला जाता

भोली जनताह ढोंग फैलाइँ, करत है निज परचार
कि मुझ देत हैं ज़िंदाराम ये, मालोज़र बेसुमार

ढोंग ये राम सरूप सवामी, सिरसा रोड़ीह सात
चार तीन सन छप्पन दिवस येह, कर दिया पूरा साफ़

मसताना ने झुक कर के उसे, जनताह समुख तमाम
मांगी माफ़ी साधु ग़रीब के, रूप हिँ बीच आवाम

बोला उसने नहीं है कोई, ताक़त उसके हि पास
रख दी पोल सुवामी खोल के, चोट पै डंके ख़ास

साथ चले वो मंडली अपनी, नारा जीत लगाते
होईं खुश थी जनता गाँव की, लागे बाजिं पटाखे

पैसे लेने के थे जु लोभी, उनको ख़ुशी रही क्या
वो तो चाहते भाषण नां हो, उस थाँ सुवामाह का

लेकिन सुवामी ने भी इसकी, करते नांअ परवाह
रख़ते कदम इलाका-ए-इल्म हिँ, पटका बुरी हि तरहा

कर दिया ढोंग प्रगट दुनिया के, सामने उस दिन आम
धन्यवाद करत हम सुआमी का, करने पे सही काम

सत्य न्याय है कर सकता वोही, सत का हि जो पुजारी
भोले भाले लोग नां इस तक, बेचारे बीचारीं

वो तो घर हीँ बैठ भला बुरा, कहते बात बनाते
आनंद पाखंड घर हिँ करते, नाहिँ सामने आते

सामना करना जनता नाहीँ, बच्चों का कोई खेल
वीर ही केवल पाखंडियों कु, सकते हैं यूँ हि ठेल

भोले भाले भाई व बहनों, कु सूचित किया जाता
आपके हि हित काम किया येह, इसीलिये हि बताता

बारह मारच सन छप्पन को ही, छपवाया इश्तहार
रहयो नाम वक्त की आवाज़ हि, था जो वोह अखबार

हरफ़ों हरफ़ ही दिया जा रहा, लिखयां जो इश्तहार
आप बचो व बचाओ दूसरे, करके ख़बर ही दार

सेवक आपके डाबड़ा हि सब, वासी ताबेहदार
चौधरी तेजा सिंग और थे, माईधन जी सुनार

ग़ैबी नज़र

छुपी हुई ताक़त

मसताना जी की इक आँख में, दिक्क़त तनिक सी आई
आँखों के किसी उपचारक को, लाने की फ़रमाई

जाओ ढूँढो पता लगाओ जु, जल्द ही आँख बनाये
खेम चन्द जी एक उपचारक, भिवानी का बताये

ज़िकरा होया माना हुआ ये, बहुता इसका हि नाम
पर वहाँ ठहरने भिवानी में, होया नां इंतज़ाम

करने को इंतज़ाम ठहरने, खेम चन्द भिजवाये
होने पे प्रबंध भिवानी में, शहनशाह बुलवाये

अमर लाल मुलतानी जी के हि, सबंधी घरे ख़ास
ठहराये गये मसताना जी, घर में उनके हि पास

रास्ते में खेतों ही कुछ महीँ, लागिँ मटर थे सावे
बाबत इस ही गये ख़रीदेह, काम वक़त पै आवे

रात भिवानी हिँ समय दो बजे, खेम चंद फ़रमाये
जी क्या सब्ज़ी बना दूँ कहो तो, साथ मटर जो लाये

छील मटर अभी चूल्हा चढ़ाइँ, शाह कीया फ़रमान
निकली चालो यहाँ से ततछन, बाँधि अपना सामान

निकलो इस घर से इसी औसर, बाजे रात अढ़ाई
जायेगी हो मुश्किल बहुत ही, वक़्त कहाँ इस जाई

खेम चंद ये करयौ अरज़ की, सब्ज़ी तु बन जाने दो
चलते हैं अभी खाअ कर सब्ज़ी, दिन तु निकल आने दो

फ़रमायाह पर मसताना ने, सब्ज़ी चूल्हे हिँ छोडो
जल्दी घर से ही निकलो बाहिर, नाता थाउँ सु तोड़ो

घर वाले भी सोचन लागयौ, हमसु हुआ क्या गुनाह
बात अचानक छोड़ने की घर, गई है कैसे हि आ

पर न हिम्मत कर सका कोई भी, सकता पूछ ही बात
छोड़ के घर किस बाबत जाई, साई आधी हि रात

जैसे तैसे हि बांधा सामां, सड़क हिँ बाहर आये
दूर सड़क पै कुछ ही आउने, पाछै शा फ़रमाये

ताज़ा दूध मिले जो गाय का, और जाई हो चाय
मन भी शांत हो जाये साथ हि, दिल चंगाअ हो जाय

लागा सोचन खेमा रात के, बाजन तीन हि आये
वास्ते ताज़ा दूध हि गाय के, बरतन कत से लाये

पर ये होना ही था चाहिये, मरज़ीह थी इसरार
कर ही खेमा प्रेमी रहे थे, बात अभी ये बिचार

औचक ही तबू एक आदमी, सतगुरु दिया पठाई
राम राम करीं सिंधी भाषा, शाहा अरज़ लगाई

चालो घर में सुवामी मेरे, आरामी करो जाय
पूछा खेमा ने क्या मिलेगा, ताज़ा दुध वहाँ गाय

दीया उसने था ये जवाब कि, सामने ही घर गाय
मिल जायेगा दूध वहाँ से हि, घर जो जायाअ जाय

फ़िर इक बर्तन साफ़ में ही गई, चाय उत ही बनाईं
चाय पी मसताना जी बैठे, बस हिँ देहली जाईं

खेम चंद को लागयो रास्ते, बहुती भूख़ सताने
चाले गाज़रें ले डेरा से, दे दी थी वो खाने

शांत हुई तबू भूख़ गाजरें, ख़ाइँ शहनशाह हाथ
पूछा खेम्मा मसताना शाह, घर क्यों छोड़या रात

आँख खुली नां तीसरी तेरी, बेपरवाह उचारी
देख सके नां इस लिये तुम ये, लोग वु माँसाहारी

काट रहे हैं गरदनें निस दिन, ये मुर्गे और कुक्कड़े
उस ही मानिंद इनके करसीं, जम भी टुकड़ें टुकड़े

ऐसे घर में एक भी पल ही, रहना नां है आता
साया हर पल हो जहाँ काल व, जम दूतों मँडराता

उतरिं रोहतक आँख के वैद कु, आँखें थी दिख़लाई
लड़के को उसके रुपे पंचस, की माला पहिनाई

पूछा आपसे डाकदार ने, साचा सौदा माहीँ
करके खर्च बनाई इमारतें, अगले दिन गिरवाहीँ

इस पै फ़रमाये मसतानाह, बाज़ीग़र का खेला
यो तो बाज़ीग़र ही समझयो, या बूझीँ बस चेला

अब तेरा तो बहाना था ये, पर ये प्यारी माला
बात है क्या कि उनके गले ही, जाई इसको डाला

बात समझ न आयेगी तेरे, इमारतें बनवाना
सोना चांदी डालर बांटना, भवनों को गिरवाना

जो इस तीसरे तिल का मालिक, उसकी समझ हिँ आवे
जो दुनयावी आँख से ऊपर, होइँ देखने जावे

प्रेम बड़ा बलवान

प्रेम में बड़ी ताक़त है

नूरी नज़र का उस किया जिस हि, किसमत से हि दीदार
बस वो समझो हो ही गया फ़िर, जग सरमाया हि दार

ले लिया जिस हाथों ही उनके, ईलाही वो प्रसाद
मिटती तिरसाह भूख जनम की, होईं रहै चित शाद

कर ली जिसने पालना हुक्म की, पा गया दर्ज़ा बिसेख
ईहलोक और उस परलोक हिँ, पावै जगह वो नेक

पियाला ऐसा प्रेम पिलाया, होये सब मतवाले
लेईं जो दिल साफ़ गया वहाँ, खुलहिं नसीबां ताले

नूरी चरन जगहा जो पाईं, रहयो न वो कंगाल
पाईं दौलत अनगा प्रेम की, हो गया मालो माल

बोले चेहरा परेमियों का, अंग प्रेम सराबोर
जोश परेम का अंदर बाहर, मारे लहरें व ज़ोर

जोश परेम अंदर आ जाये, रहयो इस न ठिकाना
प्रेम हि प्रेम है छलकत फ़िर तो, दात शाह मसताना

हो ही जाई मौला मस्त वो, मस्ती प्रेम की आई
दुनिया की है वो नज़र पागल, दीवाना शैदाई

पर उस मस्त की नज़र हीँ है सब, दुनिया एकैह ख़्वाब
नाम खुमारी जिसकी अँखड़ियां, रहत सदा ही सवाब

शाह इनायत एक थे माली, रूह थी पहुँची ख़ास
खोदी कर रहे जिस समय बुल्ला, आयोह उनके पास

दोनों की ये मुलाक़ात रही, पहली पहली हि बार
इनायत ने कहा तू आ गया, था तेरा इंतज़ार

बोलयौ चाहता क्या तू बुल्ला, कर दे सिरफ़ इज़हार
बोले बुल्ला बस मैं चाहताअ, मालिक का हि दीदार

हँस के बोले ईनायत भई, रब दा वी की पाना
ऐत्थों पट बस उत्थेह लाउणा, ऐहो ही समझाणा

महात्मा बुद्ध ने बस ये कहा कि, डाकू अंगुलीमाल
बस अब ठहर जा ठहरा वो यूँ, हो गया भव जल पार

रविदास था रंग रहा चमड़ा, भाव हिँ आ एतिज़ाल
पास ही बैठी मीरा बाई, ओढ़े सवछ ही शाल

खोईं ऐसी हरि रस बातों हिँ, रहयौ नां कछू ख़्याल
गुज़रीं पहर गया रंग चमड़ा, पड़ गये छींटे शाल

दोनों डूबयौ थे हरि रस हीँ, मुकया वारतालाप
तंदरा टूट होइँ अस्थूल से, दुनियावीह रविदास

शाल सफ़ेद पै नज़र पड़ी तो, बोले होइ वो दंग
अरे गयी हो मीरा आप तो, रंग साँवरिया रंग

रंग हि गयी बस मीरा ऐसी, रंग गयी चूनरिया
रंग नां उतरा उसका धोई, धोबी सकल उमरिया

प्रेम दीवानी होई मीरां, उतरी न ये ख़ुमारी
साँवरिया के इश्के हक़ीक़ी, सगरी उमर गुज़ारी

रहता नां आपे में जीव जो, अंदर प्रेम समाता
बिन मस्ती और खुमारे प्रियतम, नाहिँ नज़र कुछ आता

सूली था मंसूर चढ़ा और, मीरां बिस का प्याला
जीसस को कीलों से छेदया, पलटू जिंदा जाला

तेल गरम हीँ गुरुओं साड़्या, आरों से चिरवाया
चिनवाये दीवारों हिँ ज़िंदा, हाथियों सु कुचलाया

चिमटों हिं नुचवाया माँस किया, हड्डियों का कंकाली
पी रखा था इश्क का पिआला, आह न मुँहों निकाली

इश्क मजाज़ी हो या हक़ीकी, बेपरवा हो जाता
धियान रहे न दुनिया स्थूल का, सूछम हिँ खोइ जाता

स्वामी जी महाराज जु काफ़ी, दिन ही डेरे आये
बीबी जिसका नाम था राधा, थी उस वक़त नहाये

परयो जान ये स्वामी जी का, डेरा में हुआ आन
प्रेम हिँ हुई वो पागल ऐसी, भूल गयी देह भान

लोक लाज सब भूल के बाहर, आई बिना परिधान
बस उसकी हुइ ऐसी सुहागिन, ऐसी हुई कुरबान

सुवामी जी ने वचन दिये वर, आज हि लो ये जानी
राधा नाम लगाना पहल ही, बाद हिँ उनके स्वामी

जोश परेम का अंदर का हो, या बाहर का हि जोश
कर सकता है आशिक सबू कुछ, खोई हि अपने होश

घर वाले हो गये ख़िलाफ़ थे, साथ ही रिश्तेदार
जोश जो आया बीबी ज्वाली, हुई आपा के पार

कहयो बुरा भला पर रुकत नां, डेरा सत्संग आती
रोकता शौहर पीटी पाटी, ज्वली रुक हि न पाती

बस की बात न उसके रही थी, नां रही उस परवाह
डेरे से भी जाती निकाली, वापस जाती थी आ

हुकुम दिया मसताना जी ने कि, पकड़ो इसको जाई
बीबियों ने की कोशिश पकड़न, पर काबू नां आई

फ़ेर वज़ीर साहब औ प्रेमी, ख़ुशीराम जी आये
पकड़ के उसको पास हि वाली, कोठी में पहुँचाये

ताला लाई पहुँचे थे अभी, दोनों परेमी ख़ास
बीबी ज्वाली उनसे हि पहले, पहुँची मंच के पास

मस्ती की हालत में वो लागी, नाचन हो बे काबू
देख के उसकी मस्ती इलाही, खोये सारे साधू

देखो नाचे मस्ती है कैसे, लोक लाज को तियाग
फ़रमाये मसताना शाह जी, परेम यही साछात

लागे फ़िर दिन रात थे उसकी, करने को निगरानी
बेकाबू हो जाती दीद कर, शहनशाह दीवानी

दिन हीँ रोज़ वो आकर सुबहा, झाडू लाई जाती
सच्चाह सौदा देखते सुबहा, पूर सवछता पाती

फ़रमाये मसताना शाह तब, करने को निग़रानी
पकड़ जो लाया उसको निकली, ज्वाली नेह दिवानी

पूछा मसताना शाह क्यूँकर, करती हो येह काम
बोली चाहत हूँ मैं सतसंग, मौअज पुरा के धाम

सुन हुये मसताना जी काइल, प्रेम कु उसके नूरी
चार और पाँच सितंबर छप्पन, सत्संग दी मंज़ूरी

सिरसा शहर की हरिजन बसती, सतसंग घर था आम
छोटे से इस डेरे का रखा, नाम मौज पुरा धाम

मसताना शाह पता चला जों, मेहर वर दिखलाई
धाम मौजपुरा दो दिन की थी, सत्संग नज़र कराई

मोहल्ला सारे में ही दौड़ी, लहर ख़ुशी कुछ ऐसे
पागल हो गये हरिजन सारे, करते क्या औ कैसे

क्योंकि इससे पहले तो संगत, होई नांअ उस धाम
नाहिँ था पता इसलिये कुछ भी, करना किस तरह काम

बरसा प्रेम शहंशाह ऐसा, मोहल्ले के ही पास
बाहमन बनिये और घरानों, के सभी ऊँची जात

बीबियाँ उनकी आईँ मोहल्ला, हरिजन में बा पिआर
भेडकूट वा सांसी बावरी, संग हरिजन चम्मकार

सत्संग वाली जगहा मिल सभी, की गोबर लीपाई
मालिक प्रेमियों का मज़हब ही, देखा अदबुद जाई

जात धरम का भेदभाउ हि नां, सेवाह के दौरान
छुआ छात सभी मुक जाते हैं, आई हि सतगुरु धाम

पंगत इक में बैठ के जब हैं, लंगर प्रेम सु खाते
जान न परता लंगर कौन है, खाते कौन बनाते

बस प्रेमी ही प्रेमी थे वहाँ, इसके सिवा नां और
जात धरम भाषा और मज़हब, वर्ग नां करत थे गौर

ऐसी थाँ क्या लगभग हर जगह, दक़िया नूसी होते
लागयौ करन विरोध कि नीचों, बैठीं धर्म क्यों खाते

पर सतगुरु के परेमियों ने न, जानिब उन दिया ध्यान
होये दूसरे लोग भी देखिँ, हैराँ वा परेशान

क्या ये सब हो गये हैं पागल, रहयो कुछ नाहिँ भान
सतसंग वाले दिन लोगों ने, पूछने की ली ठान

मसताना दिन सतसंग वाले, मंच ही वाले स्थान
बैंड सहित लाये गये साहिब, साथ बड़े ही सम्मान

सारा सिरसा शहर था मानो, नारों से गुंजाया
भीड़ थी इतनी भारी कि वहाँ, मुँह से मुँह टकराया

उन दिनों उस मोहल्ला हिँ हरिजन, मोती राम कविराज
दीया बाद मे जिस था छह सौ, मसताना का ख़िताब

मोतीराम बजाइ था डफ़ली, अलख सरंगी बजाइ
गायाअ सबद उन्होंने ऐसा, मनवांअ सब ही भाइ

''क्यों नइ जपदा अन्दर वाला राम तेरे कम आएगा''

सतसंग में इस मसताना जी, सोनाह चांदी ख़ूब
बाँटे डालर प्रेमियों मंझा, नोट भी बांटिं अकूत

बहुत प्रेमियों के ही गले में, डाली थी तब माला
सतसंग भी हरिजन बस्ती हिँ था, हुआ बहुत ही आला

हरिजन सारे सतसंग करने, के अनुभव से हि हीन
भागत रहयौ पागलों माफ़िक, पर अंदर ले जकीन

था सतगुरु पे उनको भरोसा, पूरा हि था बेसास
काम बख़ूबी चलता रहा सब, सत्संग हो गया ख़ास

मस्ती बीबी ज्वालीह की और, प्रेम का नां मीज़ान
मसताना शाह इसी लिए उस, रखते ख़ुद बड़ा ध्यान

क्योंकि वोह मस्ती की ही हालत, बोलन कुछ लग जाती
कह जाये वोह बात क्या मस्तीं, सोची भी नां जाती

फिर औचक चलती संगत में हि, पकड़ी माइक बोला
सामने ऐहो रब्ब बैठा है, राज़ सभी को ख़ोला

पकड़ा साब वज़ीर ने फ़ौरन, वा प्रेमी ख़ुशी राम
पकड़ी कर दिया बंद कोठरी, में अंदर सरे आम

लोग पुलिस के जो थे कर रहे, निगरानी व संभाल
डाली उनके गले भी साँईं, नोटों की कई माल

सतसंग में हुइ वहाँ प्रेम की, रहयो वोह बरसात
बरसा प्रेम सभी दिसा, था सब ठाठ ही ठाठ

संगते पाछै हुआ जो लंगर, हो गये सब हैरान
शक्ल नां देखते जो इक दूजे, जातियों के अभिमान

आज वो इक दूज के संग हिँ, पंगत इक ही विराज
मिल के सब थे खा रहे लंगर, बिन कोई ऐतराज़

साथ हि साथ लगा रहे नारे, मस्ती पूरी हि आई
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, आस्मां थे गुंजाई

मौजपुरा डेरे के हि अंदर, इक कमरे में आई
बैठ गये शाह मसताना जी, नीचे टाट बिछाई

कट्टर एक विरोधी जो ख़ासा, सेठ बड़ाअ उच्च जात
बंदों के संग वो तीन चार, आ गया शाहा पास

मसताना शाह वास्ते उनके, एक दरी बिछवाई
दीया हुकुम ये इन सब हीं को, चाय जाई पिलाई

आदमी सोच के बाहर से हि, कहने थे कुछ आये
कि ये कहेंगे औ वो कहेंगे, अंदर सब घबराये

बात हुईं नां एक भी अंदर, खुलयो नां थी ज़बान
अंदर का रहा अंदर उनके, भेदोभाव तूफ़ान

इतने में इक बालमीकि हि जो, चाय था लेइ आया
पूछा मसताना जी ने उससु, चाय कहाँ से लाया

दीया ये था जवाब घर सेह, लाया चाय बनाई
शा मसताना जी ने हुक्म दिया, डाली चाय पिलाई

सेठ ने उस पीने से चाय हि, दीया करीं इनकार
मूरख चाय इस को हैं तरसत, देवता औ दिलदार

वचन ये मसताना जी ने जब, उसको था फ़रमाया
पी गया चाय झट से पता नां, मन क्या उसके आया

पीकर चाय निकलयाअ बाहर, सेठ रहाअ चुपचाप
आकर बाहर बोलया़ कि लगा, आज तो बहुत हि पाप

नीच वो चाय बना कर लाया, करता है जु सफ़ाई
रोज़ हमारे घर हि है करता, मल की आइ धुलाई

हाथ से उसके घड़ों हिँ पानी, भी हैं नाहिँ भराई
नाहिँ पता हुआ क्या कि पी गया, चाय उसकी बनाई

नां जाने क्यों उसकी बनाई, लागयो चाय सुवाद
आज तलक नां पी कभी ऐसी, चाय जो पी है आज

भेद भाव ही मिट गये सारे, मिट गया छूआ छात
नां हमसे कुछ पूछा न पूछी, हमने हि कोई बात

तुम ही बोलो हुआ ये क्या सब, ज़ेहन जो कुछ आया
हो गया क्या सब कैसे होया, समझ न मै तो पाया

ऐसा हि होता है ये क़ामिल, संत की है पहचान
पास फ़कीर के जाय जो पूर्ण, आतमा हो बलवान

भीतर के सब वहम वैर और, ख़त्म विरोध हो जाते
निरमल हो हि जाता है अंतर, मैल सभी धुल जाते

सिरसा बजरिया डाक

सच्चा सौदा शा मसताना जी, शक्ल जलूस में आये
बाजा बैंड के साथ हि जन थे, गान जलूस बढ़ाये

रात के नौं बजे खुल्ले मैदां, संगत किया दीदार
उमड़ी भीड़ थी दर्शनों ख़ातिर, गिनती कई हि हज़ार

मौका ख़ास पे प्रेमी एक जु, भजन रहा बड़े गाइ
मसताना जी की ही बंदगी, मस्ती गये कई आइ

एक भगत तो आई कै मस्ती, नाचना चालू किया
खुश हो मसताना जी ने उसे, दो का था नोट दिया

बच्ची इक छोटी को शहनशाह, नोटां हार पिन्हाया
लोग हैरान कि मसताना जी, धन कहाँ से हि लाया

माया का मुँह काला

माया हमेशा हार जाती है

पंदरह सोलह सितंबर छप्पन, सन था जब से आया
टेक चंद व बीरू मलोट में, सत्संग था रख़वाया

सतसंग था बड़ा इसीलिये हि, ख़ास किया इंतज़ाम
सोना चांदी ख़ूब था बांटा, साईं करीं अक़राम

प्रेमियों ने सत्संग में गाया, शब्द बड़ा हि लासानी
जानी हम माया महाठगिनी, झूठी वा लामानी

मसताना जी हँसयो शब्द सुनी, बातें ये फ़रमाते
पूछत लोग ये मसताना से, माया कित सों लाते

माल औ ज़र भंडार कहाँ हैं, मसताना जी छिपाइ
गिरवा देत इमारतें बनवा, कैसे खेले रचाइ

लंगर औ परसाद मिठाइयां, इतनी हैं बनवाते
सबहिं रेहड़ी बज़ार दुकानें, दीये लुटाइ जाते

फ़िर मसताना जी संगत हि में, सबको ये फ़रमायो
वरी महाठगिनी येह माया, संत कबीर चितायो

किया तंग इस माया ने बड़ा, वरी ये चेरी काल
जन मुनियां रिषि पीर पैंगबर, होये तंग बेहाल

कर दिया इसने बड़े बड़े ही, साधुओं को बरबाद
जो भी फँसया जाल में इसके, होईं ख़ाना ख़राब

इसके चक्कर से नां निकल सका, आज तलक भी कोई
माया दुष्टा ये महा ठगोरी, झटके सगरा खोईं

सांप भयानक काला है ये तु, पक्की दासी है काल
इस माया की जान हि कढ़ रहे, करहीं इसे बेहाल

माया का करिं इसतेमाल हम, बूंदी बंड परसाद
मस्ती हीँ हम जाते लुटाइ हैं, सतगुरु लबहे लबाब

जीव ये इन बाँटे नोटों पर, दिखला यकीन सारा
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, लिख देते हैं नारा

माया का मुँह होते हि काला, सिमरन बनता जाये
माया रूपी सोच हमें तंग, करती दिस भटकाये

माया करने देत भजन नहीं, है ये बहुत ही नीच
हमने तो है पकड़ ली इसकी, मज़बूती से ही घीच

बनती और गिराते इमारत, मन सेवा हिँ लगाने
रोती माया गिरती इमारत, मिट्टी हिँ मिट्टी मिलाने

बना गिराते इमारत मक़सद, मन सेवा हिँ लगाना
तब हीं जाई निकल माया का, समझ ही लो बिसठाना

पिटती माया गिरते इमारत, जावती पड़ कमज़ोर
तंग किया माया ने बड़ा है, जगत में इसका शोर

सेवादार प्रेमियों के गले, नोटों की मालाएँ
डालते देते शाबासी निस, दिन माया कु रुलाएँ

माया ने किये साधु बहु तंग, रिषी मुनि भी सताये
खाये भजन पैंगबर मुनियों, उल्टे सूली चढ़ाये

बच्ची चढ़ जा सूली पै अब तू, बन के गले का हार
खेल ये माया सच्चेह सौदे, से करीं देंगे पार

धीरे धीरे कर यूँ हि बाहर, साचाह सौदा धाम
होगा सतसंग निरोल शाही, लंगर हो सुबह शाम

उनतीस तीस सितंबर छपन हिँ, साल का दिन जु आया
साचाह सौदा संगत मासिक, साईं ने फ़रमाया

अब हम माया खेल हि धाम से, रहत अभी हैं निकाल
नाचना गाना ढोल कबड्डियां, कर दीया ख़त्म ख़याल

सत्संग ख़ालिस चलेगा बस अब, होगा लंगर शाही
खुले तौर पे वचन सभी हि ये, सत्संग में फ़रमाही

बोला मसताना तू यहीँ से, जा तो सही इक बार
मसताना जी को परगट होइँ, रात किया तंग काल

देखना तेरे जाते ही हम, करते क्या अफ़साना
रख देंगे साचा सौदाअ का, कढ के हम बिसठाना

अगली सुबह मसताना जी ने, साधु सब ही बुलाये
काल हमारे पीछे पड़ा है, हाथ धोइ फ़रमाये

मौके की है तलाश हिँ अब वो, चोला छुड़वायेगा
कहता है कि जा तेरे पीछे, नक्शा बदल जायेगा

याने चोला तजने हमारे, के बस कुछ समय बाद
कढ़ दूँ मल ही साधुओं का इन, करके इन्हें बरबाद

रहना इसलिए ख़बरे दारी, मन की करी पकयाइ
बुल्ला सुन रहा है नां वरी तू, पहरा इसका लगाइ

भूल नां जाना करना मन की, अब तुम चौक़ीदारी
वरना मुफ़लिस मरसी फ़कीरा, हुशियारी हुशियारी

बहुती सतसंगों में वचन मन, सत्तावन दोहराये
ले जायेगा काल ये बाज़ी, देते हम चेताये

पर मसताना जी ने न रोका, खेल हि माया निसाब
ज़ालिम काल को देने ख़ातिर, भाषा उस हीँ जवाब

माया का कीया ज़बरदस्त था, साईं ने मुँह काला
सोना चाँदी नोट बँटे बड़े, काल लगा मुख़ ताला

बूंदी और जलेबी बनाईं, लंगर शाही लाई
बनवाई इमारतें आलाह, उनको दिया गिराई

सतगुरु ज़िंदाराम का जस था, बहुत वहाँ पे गाया
चारों दिसि हुई बल्ले ही बल्ले, खेल वहाँ जु रचाया

संगत में सेवाहदारों से, फ़रमातेह हर हाल
ताक़तवर है काल बड़ा वोह, चलसीह गहरी चाल

भजन करो बस मन को न बेल्हा, छोड़ो ज़रा हि वारी
वार करीं येह जागो मन की, छोड़ न चौकीदारी

हुशियारी से रहना सभी जन, सारे हि सेवादार
वरन फ़कीर ग़रीब ही मारा, जाये लगे नां वार

कोई कौरै न बिसास

कोई विश्वास नहीं करेगा

तरफ़ से बागड़ काफ़ी प्रेमी, धाम लगे थे आने
सच्चा सौदा और संगतों में, प्रेम लगे दरसाने

शाह सावन ने मसताना जी, की थी सेवा लाई
काम तुम्हारा मसताना येह, बागड़ देस तराई

दौरान ए बागड़ के दौरे, मसताना जी मुफ़ीद
रंगे हुए थे मस्ती में शाह, सावन जी की अजीब

लागा हुक़ुम था क्योंकि तराने, बागड़ को दरग़ाही
इस हि लिये शाह मसताना ने, सेव निभाइ अलाही

मस्ती की हालत में हीँ छल्लीह, जब थे खा रहे आप
खाते होये छल्ली था माँगा, पीन का पानी साथ

हाथ में इक छल्ली थी एक में, था पानी का ग़िलास
मुख़ड़े पे रही झलक थी मस्ती, अफ़शा नूरीह साथ

दरग़ाही मुसकान और मस्ती, हालत में फ़रमाते
कर सकता क्या कोई यकीन हि, धरती हि ख़ुदा आते

कोई करेगा बिसास काहे, आदमी रूप खुदाअ
पानी पी रहयो है यहाँ पे, और छल्ली रहा खाअ

मसताना जी रात नौंअ बजे, कोठी उस ठहराये
ठहराने संगत का भी जहाँ, थे परबंध कराये

महाराज गंगा सिंग ठाहर, थी कोठी बनवाई
मानक चंद जी सेठ हि सारा, थे परबंध कराई

मूल चंद जी सेठ का था जो, अच्छा जान ही कारा
देख कै इतनी संगत घबरा, होया नौं दो ग्यारा

मानक चंद का लड़का था कुछ, राखता अलग मिजाज़
करने लागा निंदा कि कैसा, रचया पाखंड आज

गाँव महोम्मद पुर रोही के हि, रूपा राम हज़ारा
ने समझाया कुफ़र न तोल यूँ, ये इलाही नज़ारा

लगभग रात बजे साढ़ेह दस, सत्संग था करवाया
मंच पे आ मसताना जी बड़े, जोश हिँ ये फ़रमाया

लोग हमें हैं कहते मुसलमां, काल के हि बहकाये
मुफ़लिस मसताना नेरे नांअ, ताकि कोइ ही जाये

हिंदू हो या मुसलिम हि कोई, है क्या फ़रक परभाव
जीव यहाँ से जाये उठाई, फ़िर हि भला क्यों अभाव

इन बातों से जाल चौरासी, फँस न निकल पाओगे
राम व गुर सभी अंदर पकड़ो, भव जल तर जाओगे

सोना चांदी नोट वा कपड़े, संगत में बरताये
नाम दान से बगसीं बहुत ही, मारग सूधे पाये

बातिन साफ़ ज़रूरी

मनुष्य का मन रूपी बर्तन साफ़ होना अनिवार्य है

धन्ना राम परेमी जो रहता, लाल पुरा हि में पास
कीया मसताना का सुआगत, उसने घर पै हि ख़ास

छींट का कपड़ा गज सत्तर हि का, उसने धरत बिछाया
झाड़ू बांधि दाढ़ी से अपनी, कपड़े पै हि लगाया

मसताना शाह वास्ते धन्नाअ, प्रेम बहुत दिख़लायो
देख प्रेम थे बागड़ी का ये, शहनशाह हरसायो

बंदे बीबियाँ होये इकट्ठे, सतसंग हिँ बड़े आन
सत्संग बाद हि दिया गया वहाँ, नाम का भी था दान

शा मसताना जी ने वहाँ पर, सबको था फ़रमाया
बतलाओ संगत में किसी ने, मांस तो नहीं खाया

पूछया दो या तीन बार था, कोइ बाल नां पाया
कीया आदमियों को खड़ा दो, पूछा तुम कब खाया

फ़िर मसताना शाह ने पूछा, सच बोलो कब खाये
इस पर बोले जी तबू खाया, जब दिवाली मनाये

आइ किरोध हिँ गाली निकाली, बोलिं कत यहाँ आये
बोले चूसने खून चोर तुम, मसताना मन लाये

दिवाली तो थी अभी परसोंह, गेट करो इन्हें पार
कर दिया बाहर उन दोनों को, मन हि की देईं मार

खाने वाले मांस औ पीने, वाले हि का शरआब
हो नां सकता माह छह ताईं, मन का भांडाह साफ़

सावन शाह जी किसी जीव को, इतना अविलंब नाम
देते नां थे फ़रमाते रहो, सत्संग आत मादाम

संत मते को ही समझु पहले, मन को टिकाओ थान
वरना होगा फाइदा नां कछु, देने नाम का दान

सिंग जगत सरदारे बहादुर, जी को सावन शाहा
साँइ ने खुद अपने सुपूत भी, नाम नहीं बख़शाया

हालांकि कोई ऐब न उनमें, था दुनिया है साख़ी
सावन शाह जी फ़रमाते थे, कर्म हैं इनके बाक़ी

आपके दूजे पूत चरन सिँह, जी सरदारा साईं
सु कहा आप परम संत सावन, शाहा अरज़ लगाई

वो हैं दयालु बहुते करेंगे, बग़सिस नाम का दान
रात उसी कियो बेमिसाल वर, शाह सावन जी काम

सिंग बहादुर जी सरदार को, सपने ही में आई
नाम दान दरगाही इलाही, की बख़शीस कराई

घटना है येहदो दिन पहले, सावन शा जब साईं
छोड़ी झूठी दुनिया दरगाह, ज्योत हिँ ज्योति समाईं

ज़िकर है मिलता राधा स्वामी, सतसंग डेरा ब्यास
सन चौवन में हि हुई प्रकाशित, पुस्तक छापयोह बात

संतों परम का है ये क़लमा, पाक़ बड़ा और साफ़
रह नहीं सकता बिन भांडे के, हो जो पवितरो पाक़

ये फ़रमा कर उन दोनों को हि, दिख़ला दीया निकास
भीड़ में बैठी बीबियों सु थी, पूछी गयी ये बात

अगर किसी ने पहले ही सेह, गुरु है कोई धारा
उठ जाये वो यहाँ से अब ही, नाम मिले ने दुबारा

जानते थे मसताना जी इक, बीबी ने गुरु धारा
हुक़ुम था उसको देने नाम हि, था दरग़ाह इशारा

बीबी एक जो थी ठकुराइन, कुल गाँवों की सताइ
भीड़ में उसने होइ कै खड़ी, बातें येह फ़रमाइ

जो गुरु धारण किया है मैनें, नाम है बौघड़ नाथ
पूछा उससे गुर कहाँ तेरा, दूर है या है साथ

उसने बोलया गुरु तो रहता, उसका है हरिदुवार
फ़रमाइँ मसताना जी हँस के, आये ग़र अभी काल

कौन बचाने आयेगा तुझे, तेरा गुरु हरिदुवार
बाहर तो कोई गुरु हि नाहीँ, गुरु अंतर रूह तार

लेई लो हम देत हैं तुझको, अंदर ज़िंदाहराम
अंग संग जो तेरे रहेगा, सगरेह करसी काम

अजर अमर है ज़िंदाराम ये, ज़िंदाअ रहता सदा
दे रहे तुझको आज यहाँ हम, बोल तू लेगी हि क्या

जी मैंने तो धारी लिया गुरु, उसने दीयो जवाब
शाह कहा लेइ नाम दान तू, पाइँ इलाही सवाब

फ़िर सु कर दिया उसने मना था, कर ही दिया इनकार
नां लेती तो तेरी है मर्ज़ी, दीया बाहर निकाल

मसताना जी फ़रमाये कि हम, बनते गुरु न बनाते
अंदर वाले गुर सतगुर से हि, पल्लोंह पल मिलवाते

सोंडी गाँव के चौधरी हि तब, अरज़ी शाह लगाई
दया करो मसताना जी येह, मालिक गाँव सत्ताई

मसताना जी ने फ़रमाया कि, ये निभागी नादान
इसके कर्म हैं बाकी अबू तो, शेष को बग़सा नाम

अनामी टिब्बा

ईश्वरीय मिट्टी का टीला

धन्ना राम के गाँव लाल पुरा, दो या तीन ही कोस
दूरी पर एक ऊँचा हि टिब्बा, पड़या हुआ ख़ामोश

जगह खुली व शांत माहौल को, करत पसंद थे आप
इसलिये गाँव से दूर यहाँ हि, ऊँचे टीबेह साथ

रोज़ बनाते इक नइ झोंपड़ी, औ थे रोज़ गिराते
जब भी बनाते और गिराते, नित परसाद खिलाते

रहते मस्त थे आप सदाअ ही, मस्ती एक ईलाही
संगतों की अब दूर दूर से, होईं आवा जाही

किकरां वाली गाँ नज़ीक था, संगत हुइँ शुरु आना
नोट व सोना चांदी बहुत ही, बाँटे शा मसताना

सरदी बहुत सख़त थी उस समय, जाड़ाह था बहुतात
ओस टपकती रहती झोंपड़ी, सारी सारी हि रात

सारी रात हि जाती निकल थी, यूँ ही बातों हि बात
था मुसकिल बड़ा बैठना धुएँ, लंबी सरदीह रात

रखते अंदर जला के लकड़ी, पर सरदी से गीली
आग जलाती कम धुँआ ज़्यादा, ओस हिँ लकड़ी सीली

कुरता पहन के रख़ते लंबा, सर्दी हिँ शा मसताना
मस्त बड़े ही रहते थे नीचे, पहनत नां थे जामा

दाढ़ी मसताना जी की धुएँ, हो जाती थी काली
पर हर सूरत मसताना शाह, लगहीं सरूप आली

धन्ना राम को घर से बुलाते, कबहूँ कबहूँ साईं
मैनेज़र साहिब की हि ख़ातिर, चिठिया निज लिखवाईं

गीली झोंपड़ी और धुएँ में, ख़त सर्दी में लिखाते
बस लिखते ही सतर एक वोह, खोई मस्तीह जाते

रात हि सारी जाती निकल थी, यूँ ही बात ही बात
मुसकिल था बड़ा बैठना धुएँ, पूरी-पूरी हि रात

आँखों से यूँ पानी निकलना, होइ शुरु वहाँ जाता
मसताना जी हाल इस रहते, कैसे जानिं विधाता

जुटनी हो गइ वहाँ पै संगत, अगिन थी उस दौरान
ऐसी रढ़ मची धन धन सतगुरु, से गूंजा आसमान

प्रेम से इक से पूछे साईं, कैसे पता ये चला
बैठे यहाँ हम टिब्बे हि ऊपर, इतनी ऊँचाई आ

उसने बोला साईं आपका, चालया ऐसे पता
होत जहाँ भी आप हैं बाबा, ख़ुशबू आती है आ

वंज भैणया कही तभी लगे, हँसने बेपरवाहा
देखो इंतहा धन्ना राम के, प्रेम न दीखन आवा

सतपुरुख़ को परेम से अपने, बाँध के रख ही लिया
प्रेम पाश से हमको आपने, बैठाह टीबे दिया

छाई मस्ती टीबे पै ऐसी, होइँ बयाँ न हालात
मसताना शाह मस्ती इसी हीँ, कह दी राज़ की बात

बोले जी में आत है ऐसे, टिब्बे को ही उड़ाई
संगत सहित ही बैठे बैठे, सच्चा सौदा लि जाई

हुकुम नहीं करामात दिखाना, देह हो जाइ पूरी
जीवों के उद्धार की सेवाह, रह हि जाई अधूरी

दस या बारह साल है लेना, अबहु शरीर से काम
मस्ती में टीबे का रख दीया, टीबा अनामी नाम

मस्ती यहाँ की देखयो जो भी, रंग हिँ रंगा अजीब
प्रेम इश्क की बातों से हुआ, सहराअ नूर नसीब

परेम से देते शहनशाह सु, बाजरा सिट्टे पकाइ
आप भी ले लेते थे प्रेम सु, जाते हि उनको खाइ

खा लेने से बाजरा इक दिन, पेट हिँ हुआ आज़ार
साब मैनेज़र को बुलवाया, कुटिया गया ततकार

होत फ़कीरां तो माफ़िक बच्चा खेलते सब सह प्यार
प्यार से रखते नाम बहु ही, करते उनसे पुकार

वैसे ही संगत ने प्रेम से, हमकु जो भी खिलाया
खा लिया क्योंकि हम तु हैं बालक, ध्यान हमें नां आया

पर बालक की माता हमेशा, रख़ती है ये धिआन
क्या उसे देना क्या नां देना, हो नांअ उस नुक़सान

मतलब साथ रहन का तुम्हारे, रखना ख़्याल हमारा
सेवादार गुरु की है माता, पतनी और सहारा

जिस्मानी सेवा में फ़क़ीर की, रहे जो सेवादार
बड़ी अदायगी भाव हिँ इस है, उसका बनत किरदार

भाव हिँ जिस गुरु आना चाहता, सामने इस संसार
गुरु को सामने ले के आता, सच्चा ही सेवादार

सबसे बर पहचान है गुर की, उसका हि सेवादा
सेवादार गया ग़र डगमगा, खोईं फ़कीर वक़ार

दीये हुकुम लखन रहे अपनी, पत्नी उरमिलाअ ख़ास
चौदह बरस के लिए लगे थे, जाउने जब बनवास

उनमिला मुज्झ तू आन न देना, ख़्वाब में भी तिहारे
दूर हुज़ूरी होना पड़े उन, पल स्वामी सु हमारे

लखन खड़ा रहा सेवा स्वामी, पूरे हि चौदह साल
धनुष बान लेइँ हाथ बाँध के, साथ में खड़ग कटार

इधर उरमिला चौदह बरस तक, जागत रही न सोई
न सोऊँ न आएगा सपन ही, पिया मिलन का कोई

भंग नां होगी सेवा उनकी, वचन रहे न अधूरा
सेवाह अपना करम निभाया, अंत समय तक पूरा

सेवादार है करम निभाये, अपना हि किस किस हाल
इसकी कोई सीमा नहीं है, न हि तो कोई मिसाल

योगदान उरमिला के तप का, सरवदा रहसी याद
ये पत्थर है लखन की सेवाह, के हि महल की बुनाद

पर ये किसी को दिया नहीं है, आज तलक दिखलाई
लखन का सेवा परचमे महल, इसी सबब लहराई

सेवादार की तुलना की गइ, अरबी घोड़ेह साथ
स्वामी सेवा रहयो खड़े ही, दिवस हो या फ़िर रात

न जाने कब मालिक साईं का, हो हि जाये आदेस
नींद भूख़ और तिरसा का तो, नाहिँ प्रशन हवै सेस

बड़ी दूर की बात है ये तो, करना ऐश आराम
ये तो सबू इस मारग में है, एक बड़ा बेवधान

मस्ती ख़ूब लुटाई

खूब मस्ती छाई रही

भाई मरदाना

धन गुरु नानक संग जी के ही, पूरे हि बारह साल
चलते रहे भाई मरदाना, बिन ही कीये सवाल

कर ली यातरा पूरी लगभग, कोअस चाली हजार
पूछा मरदाना जी ने नहीं, गुरु से एक भी बार

गति हिँ इस छिपा इतना भरोसा, और छिपा बिसेवास
हद ही नहीं है जिसकी कोई, पूछने की नां बात

एक फ़क़ीर को पहुँचाने में, सतसंग में दरबार
पाठ बड़ा ही करता है अदा, गुरु का हि सेवादार

ऐसे सेवादार कु भी कभी, पड़ती सबू की मार
सुननी पड़ती गुरु की भी कभी, संगत की कभी झार

क्योंकि इन दोनों के हि बीच में, कड़ी है सेवादार
इसी सबब ही उसको निभाना, पड़त है ये किरदार

होत फ़क़ीर तो इक है कागज़, दोनों फ़लक से साफ़
इस ही लिये है कहा गया ये, शीशा संत है पाक़

दिख़लाता है सामने वाले, जीव को उस तसवीर
अक़्स दिखावता करम का उसके, कोई करन तदबीर

पर जैसे ये जीव रूहानी, शीशे सौबत आते
उनके सारे करम सुकरम में, बदल वहीँ हैं जाते

जागत उसमें सेवा भाव है, जज़्बा सेवा आता
लालसा पैदा होती सिमरन, ताबेदार हो जाता

मिट जाते हैं भरम ही सारे, निरभउ है हो जाता
हो निरबैर वो जग हिँ सभी का, ही प्रेमी बन जाता

सेवादार हो जाता मुक्क़म्मल, एक भरोसा पाता
बन अधिकारी जीव ईलाही, बिसवासी बन जाता

हो जाइ अब वो है रूहानी, आइना वाकिफ़गार
बंधन से सभी मुक्त हो वो अब, चल पड़ता एकसार

बहुत हि मुश्किल काम है बनना, संत का सेवादार
वो भी क़ामिल कोइ फ़कीर हो, संत रूप निराकार

सेवादार कोई बन जाये, ग़लत बात ये कहना
ख़ुद हि सेवादार बनाये वो, बने न कोई वरना

चाहे तो वो लेई सकत है, किसी से कोई काम
जीव के बस की बात नहीं ये, सतगुरु शाह अक़राम

लालपुरा में टिब्बाह अनामी, काफ़ी चिर रहे आप
गाँव में लगभग हर घर ही में, डाले चरन थे पाक़

ख़ुश होते थे जाके गरीबां, घर में बहुत ही आप
क्योंकि परेम गरीबों हि से था, आपका बहुता ख़ास

धन्ना राम के घर से रहा कुछ, ख़्याली का घर दूरी
ले गया मसताना जी कु घर हिँ, चरन डालने नूरी

लेई बेपरवाहा बिठायो, ऊपर चार हि पाई
प्रेम से सारी संगत को थी, चाय उसने पिलाई

निकल के बाहर आपने तब हि, येह वचन फ़रमाया
करम बड़े हि थे भारी इसके, वजन जिसम पै आया

धन्ना राम के घर हुई मज़लिस, बतियाँ बताई ज्ञान
सुरत सबद का ज़िकर हुआ वहाँ, पढ़हिं सुनाया तमाम

रूह के रास्ते आते बड़े हि, जंगल वा बियाबान
आत रुकावटें राह सैकड़ों, नाहीँ रहत है भान

संत बड़े बड़े और महात्मा, धोखा इसमें खाये
और भी बातें गहरी गहरी, मज़लिस में बतलाये

कान लगाये खुंब की माफ़िक, सुन रहे बातें ध्यान
इस पर दादू ने सीधा बड़ा, पूछया प्रसन अजान

ग़र ये मारग इतना दुहेला, भरया कठिन हालात
साधारण इक जीव के बसकी, लगती नां जहाँ बात

अगर रिषी मुनि बड़े बड़े वहाँ, हो ही गये नाकाम
है ही कौन मज़ाल फ़िर अपनी, पहुँचें नूरी मक़ाम

तोड़ सकें चक्कर ये चौरासी, और जाएँ दरगाह
हम जैसों के बात नां बस की, फ़िर तो ऐ शहनशाह

इस पर मसताना जी ने येह, जोश हिँ आ फ़रमाया
वरी फ़िकर क्यों करत है जबकी, प्रेम का हड़ हि आया

तर जायेंगे परेमी सारे, मन में लो येह सोच
एक लात यहाँ और दूसरी, होगी वहाँ सतलोक

कबहूँ लाल पुरा और कबहूँ, संगत टिब्बा अनामी
चलती रही बस रोज़ हि सत्संग, गहन बड़ी रूहानी

बेला काफ़ी मसताना शाह, जगह इस हीँ गुज़ारी
ले गये इक दिन टिब्बा अनामी, शाहा संगत सारी

धन्ना ख़्याली और पतराम को, साथ बहुत ही सम्मान
सोने के दिये पतरे डालर, उनका बढ़ाया मान

फ़रमाया कि न ख़रचना इनको, रख़ना इनकु संभाल
हैं ये निशानियाँ मुरशिद दिया, बाँट तुम्हें जोइ माल

मेरा क्या होइँ मसताना जी, से कहा ख़्याली राम
मेरे करम हैं सख़्त बहुत ही, मुझपे करो अक़राम

संगत साध की सेवा तेरे, कट गये करम तमाम
फ़रमाये शाह मसताना जी, धुर पहुँचोगे मक़ाम

''एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध
कबीर संगत साध की, काटे कोट अपराध''
(कबीर)

लगे हुए थे देने हिदायत, बात बात में साईं
कि अब आप हैं जलदी यहाँ से, ज्योति हि ज्योत समाई

होई आपको गया भान ये, अब है बहुत जरूरी
कीमती चोला पड़े छोड़ना, अबके अपना नूरी

ख़बरेदारी आप थे करते, जीवां बार ही बार
वार करेगा काल ये पीछे, रहना तुम होशियार

डेरा किकरां वाली

लालपुरा डेरा के निकट था, गाँव किकरांह वाली
जहाँ सु काफ़ी जीव अधिकारी, प्रेमी होये आली

होया हुकुम वहाँ पर मौज का, धाम बनाने ताँई
पहले दिन गुरुमुख सही राम सु, कुटिया इक बनवाई

दिया भैंस ने उसको गिरा इक, जाने कत सों आई
दूजे दिन इक छपरीह उस पर, फ़िर से हि दी छवाई

भैंस उसी ने उसे गिरा दिया, फ़िर सेह दूजी द्फ़ा
तीजे दिन छपरी के डालने, शाह ने पहले कहा

छपरी डरल के उसे लगा के, आग लगाना नारा
जीत गया है दयाल हमारा, ज़ालिम काल हि हारा

बाद में लाइ ईंटें व सामां, धाम बनाना चाहा
पहले धार ही रूप भैंस का, छपरा काल गिराया

धार के रूप काल वो फ़िर से, अब इक नर का आया
काम हिँ डेरा बनने के वहाँ, आई बिघ्न था पाया

राम चंदर विधायक किकरांह, वाली गाँव पधारा
होइँ मुक़ाबिल होया खड़ा वो, बोला गाँव हमारा

बोला तुमने भोले हि भाले, लोगों को बहकाया
जाने क्या क्या ढोंग बनावते, अच्छा खेला रचाया

ढोंग न चलने देंगे तुम्हारा, सुन लो हो होशियार
डेरा बनन न देंगे यहाँ हम, करने को बयोपार

गाँव मेरा और मैं गाँव का, मेरा हुआ अधिकार
और कहीं जा डेरा बनाओ, मेरे इलाके पार

फ़रमाये मसताना जी जहाँ, होईं अवस सरकार
लेती है सरकार वहाँ से हि, पथ और सड़कें निकाल

सतगुरु को मंज़ूर खेल जहाँ, करनेह सत का कार
इसीलिये मंज़ूर हुआ यहाँ, खेल ये सब इसरार

खेल मंज़ूर जहाँ ही होगा, गाइबी उस सरकार
डेरा बनवा लेगा वहाँ ही, नाहीँ रुकै संसार

ताक़त ही न दुनिया की कोई, रोके उसको जो आ
हुक़ुम जहाँ हो खेल ख़त्म का तो, देत हैं डेरा गिरा

हुकुम अटल है ये तो अलाही, बनो न इसमें बाधा
इस बॉडी को पकड़ नां सकते, मालिक हि इसे साधा

बाज़ीगर के खेल को समझे, बाज़ीग़र या चेला
पर है समझ से दूर तुम्हारी, उसका नूर ख़ेला

वह बोला कि डेरा तो ये है, बहुत हि दूर की बात
रहन न देंगे तुमको हम यहाँ, राखियो इसको याद

चला गया वो आदमी कहता, शाह जी को ये बात
शाह के नाम इक आइ पत्तरी, उसकी कुछ ही पछात

भक्ति का स्थान

सच्चे सेवादार परेमी ही, रहत हैं मुरसिद पास
पूछा महात्मा दादू ने तब, हो के गहरे उदास

शा मसताना जी से हि पूछा, कृपया ये बतलायें
करनी भगती छोड़ के घर पर, क्या बाहर को जायें

इस गंभीर सवाल शहनशाह, दिया गंभीर जवाब
फ़रमाइ घर बार अखारा है, ऊँचा और नायाब

अपने घर ही रह के जीव जो, ऊँचे विचारों साथ
ईमांदारी से जु पाई कै, चोरों पंज सु निज़ात

तन मन धन सब अपने हि गुरु को, अरपन करत सदाई
मालिक की है हाज़िरी रहता, हरपल है सिमराई

सबसे उत्तम है ये भगती ही, उस मालिक हि का नाम
ऐसी करना होत है भगती, गाज़ी का किसी काम

दूसरी बात हुकुम में रहना, किसी फ़क़ीर के साथ
होता काम बहादुरी का औ, होता काम ही ख़ास

क्योंकि एक फ़कीर के साथ में, हुक्म में उसके रहना
कम नां होता उससे कि जितना, शेर दहाड़ कु सहना

सीधे काम को बोलता पुट्ठा, उलटाह सीधा काम
पानी बहता उल्टा फ़कीर का, लेकिन दिसि औ मकाम

पुट्ठी सीधी बातें है पड़ती, सुननी झाड़ वा मार
पर फ़ल बहुत ही मीठा मिलता, होत है भव जल पार

इसलिये भगती वहाँ की अच्छी, जहाँ हि मन टिक जाये
चोर पांच से बच के कहीं भी, याद उसे कर पाये

प्रेम वेफ घोड़े की रफतार

प्रेम की गति बहुत तेज होती है

मसताना शाह ने हर प्रेमी, सेवाहदार सवाल
दीये ऐसी अदा जवाब की, जुग जुग रहसी मिसाल

जीव जो जैसा मसताना जी, के हि सामने आया
ख़ूबी थी मसताना शाह की, वैसा उस समझाया

उसकी ज़रूरत और हिसाब सु, देइँ पयामे जकीन
कोई गया नां जीव कभी ही, बिन होयोह तसकीन

पूछया मक्ख़न लाल ने शाहा, हमने सुनया साईं
रास्ते हिँ सचखंड के मुसकिलें, बहुती ज़्यादा आईं

कठिनाई बड़ी हर हि कदम है, पहरा काल लगाई
हैं गहराइयां बहुत सुना है, बहुत कहीं ऊँचाई

बहुत बड़े ऋषि मुनी पैंगंबर, अउली डगमग जाये
सिमरन करके देखिं ये पापी, मन काबू नां आये

सिमरन ही नहीं होता है तो, उसको क्या पायेंगे
आप हमें फ़िर सचखंड कैसे, ले कर के जायेंगे

दीनता बहुत व प्रेम साथ ये, बात उन्हें समुझाये
देहली से तुम बागड़ के इन, टीबों कैसे आये

प्रेम तुम्हें यहाँ खींच हि लाया, घोरे परेम सवार
आने इतनी दूर की वजहा, केवल प्रेम व पिआर

घोरे प्रेम हि होइ आरोही, फांदी बिसै दीवार
पहुँचोगे सचखंड ही सीधे, धुर उसकेह दरबार

एक लात यहाँ दूजी वहाँ हि, पूरी होइँ हर आस
एक सांस यहाँ दूजी वहाँ हि, पर सब प्रेम के साथ

रूहानी लिबास

ईश्वरीय वेश भूषा

सदके शाही मौज के जाईं, सदके मुख़ रूहानी
बस की नाहीँ किसी बशर जोइ, करियो बरन ज़बानी

आपके नूरी जिस्म सरूप का, बहुत ही अनभो राज़
बरनन बाहर सबद के है ये, सबद का न मोहताज

पुर मस्ती और तड़क ये देही, अनुपम और नायाब
देखा न कबूँ आपसे पहले, नूरी हुस्त ख़ुदादाद

आई नज़र न आपके नूरी, चोला छोड़ने बाद
अपनी है रहा मिसाल आप हि, आपका हुस्नो शबाब

सावन शाह जी अक्सर आपके, बारे करते ब्यानी
बाकी मसताने सबू नकली, अंदर तक हम जानी

सिरफ़ यही तो एक है असली, ही वुशाक़ नूरानी
नाम है जिसका मसताना औ, तख़ल्लुस बलूचिस्तानी

शान व शोभा बे परवाह की, रहयौ बर लासानी
मुख़रे दमकते के था ऊपर, अफ़शाँ नूर रूहानी

ख़िले हुये जूँ नील कमल होइँ, मनिक चमक लाफ़ानी
कोटि सितारों की जू रौशनी, नील फ़लक झलकानी

महेरुनिशा बन आप चमकते, कोई हि नहीं सानी
ख़बरू की ख़ुद ही मिसाल हैं, देखा जिन वो जानी

गुल ए गुलान ख़िले सा मुख़रा, दीसे वर रहमानी
लबों की दो पंखुरियों पे है, बालक सी मुसकानी

ख़िलती साफ़ ललाट पे चौड़े, नूरी धूप ख़ुदाही
रौशनी सूरज बारह की ही, ख़िलती जों ईलाही

प्यारी बहुत ही आँखें जिन पर, भौहें भारी भारी
आँखों की गहराई हि अंदर, राज़ छिपे जुँ हज़ारी

दाढ़ी चमकत सफ़ेद रजत सी, छूती मनवा बाढ़ी
ख़िलती वो मुसकाहटें जिस में, हर सूँ दिल को काढ़ी

दाढ़ी मूँछें आपकी पड़ती, बिल्कुल ऐसी दिखाई
जों साछात परम संत शाहा, सावन जी हों साईं

ख़ुद ही आप ले कैंची जिसको, लेत छाँट ये मानीं
ख़ुदा करै नां कह दे कोई हि, धोखे में कुछ आनी

कह नां दे इसरार है झलकत, संत परम शा साईं
लेंगे पैछानी मसतानाह, है जु जोड़े उठाईं

आपके आदम कद में भी था, अजब रहस इक जाना
जिस्म सुडौल तनिक सा ही भारी, रूहानी मसताना

था सवरूप तेजस्वी ओजस्वी, मनमोहक और कमाल
अधिकारी जीवों कु था करता, मोहित वोह ततकाल

जो भी आपके करता दरसन, बन जाता वो मुरीद
करने दरसन फ़िर सु दोबारा, रहत तरसता ग़रीब

भूलता नां था मुख नूरानी, जीव कु आख़िरी स्वास
होता आपके दरसन में इक, ईलाही एहसास

संगत में गुदराना की देखि, मुख़ जलाल वो नूरी
ओत प्रोत इक प्रेमी बोलयौ, सतगुरु आइँ हज़ूरी

मसताना जी आपके नूरी, मुख के दरसन माहीँ
दरसन होत है साक्षात मुझे, मालिक के हि अलाहीँ

ईलाही मौज का पर्दा

ईश्वरीय मस्ती का रहस्य

कभी किसी भी सेवादार या, प्रेमी के मुख़ राहीँ
वचन तारीफ़ न सुनना चाहीँ, करते सख़त मनाहीँ

साधु ऐसा करता जो कोई, बाहर धाम कराहीँ
बातों ही बातों थे खींचते, परदा भी फ़रमाहीँ

मानेगा इस बात को कौन कि, ख़ुदा मतीरा ख़ाहीँ
वरी ख़ुदा तो बीच तुम्हारे हि, देख ज़रा घट माहीँ

जाता इस ही लीये पुकारा, आपको बेपरवाह
मस्त मौलगी व बेपरवाहियाँ, भरी हुई थी सुभाव

देखन माहीँ फ़कीर थे फ़क्कड़, करनी हिँ शहन शाहा
बेपरवाहा बहुत थे बेशक, थे नां लापरवाहा

होये नां मोहताज किसी भी, ख़ास भेस परीधान
बंधन सामाजिक नां बंधि किसी, मानयो कत न बिधान

रस्मों रवायत प्रथा शरीयतों, दीया कबहुँ न धियान
धन धन सतगुरु सावन शा जपा, और जपायाअ नाम

लिबासे ज़ुहूर

वेशभूषा का नूर (फ़बन)

जब भी आपको आती जैसी, मस्ती जैसा बीचार
कर लेते बदलाव सरूप में, लेत वो वसतर धार

काटी छाँटी कबहूँ मूंछ वा, दाढ़ी लेते सँवार
पूरी ही कर लेते सफाचट, दाढ़ी मुछ कई बार

केश कटाये न बेपरवाही, यूँह कोई परस्तार
होइँ मुसलमां, फ़कीरों जैसे, कबहूँ चलें सरकार

टाकियों वाली कबहूँ वास्कट, कुर्ता संग पयजामा
जूता पहनत पाउँ में थे जो, बरसों चार पुराना

हाथ हिँ लेइँ लंबी डंगोरी, आँखों पे शाहाना
चश्मा पहनत फ्रेम जो काला, शहनशाह मसताना

लगत फ़कीर ग़रीब और फ़क्क़ड़, भेस रहिं फ़क़ीराना
बोरी का बिसतर थे लगाते, रोड़ी का सिरहाना

साफ़ हि रंग का कोट जु लंबा, लेते पहन सरकार
डील डौल रहा लंबा चौड़ा, जेबों हाथ ज्यों डार

बादशा लगते बिन हि ताज़ तब, शख़सीयत रोबदार
नूरी मुख़ पे शाही जलाल न, रहता कोई शुमार

जाम छलकता आता नज़र था, दीनता प्रेम पिआर
मसताना निगहबान लगत थे, मिहर दया का निग़ार

आपके आदम कद के भेद सु, सब हि रहे अनजाने
लेइँ बढ़ा थे कद कबूँ अपना, लागिं कबुँ दरमियाने

आपके हाथों की करतल थीं, चौड़ी बहुत व भारी
दोनों हाथ में जब बूँदी का, देइँ प्रसाद इब्रारी

सामने वाले की भर जाती, थी करतल ही सारी
मजबूरन फ़ैलाता साफ़ाह, शाल व चुन्नी पसारी

आपके पैरों के पंजे की, उँगलियां दर मियानी
लगती बड़ी ही सुंदर थी वो, दिखती शै रूहानी

हाथ पाँव के नाखूँ आपके, चमकीले व ग़ुलाबी
न कोई सानी सुंदरता का, थी यही इस्तेज़ाबी

कपड़े पहन के रहते ख़ुश थे, आप सदा ही सादा
सुख़दायी आराम देह खुल्ले, बस्तर पहनते ज़्यादा

भारी भरकम और तंग बस्तर, आपको नां सुहाते
आपके कपड़ों कारन सरदी, मैनेज़र अकुलाते

भाग व दौड़ सी पड़ जाती इक, बसन ख़रीद जु लाते
क्या सिलवायें और वो कैसे, समझ ही न कुछ पाते

जर्सी अगर कोई हि वो लाते, आपकु जब पहनाते
पहले कहते ठीक है भइ ये, बाद हिँ ये फ़रमाते

क्योंकि जरसी तंग जो लागती, कुछ पल में उकताते
आ तंग देत उतार हि कपड़ा, बसतर तंग न भाते

बार कई तो होता हि यूँ भी, जरसी रात पिन्हाते
सुबह उसी हि जरसी की दोनों, बाजू ग़ायब पाते

हो जाता गला चौड़ा इतना, धागे सब खुल जाते
लंबे लंबे लटकते धागे, नज़र ज़टा से आते

भइ ये कैसी दे दी मुसीबत, मैनेज़र सु बताते
इससे तो हम यूँ ही भले थे, नां अज़ाब मंगाते

लाइ इतने तंग दिये कपड़े, पहनी लगता ऐसे
कर हि दिया संदूक में मुझको, बंद किसी ने जैसे

कपड़ों से इन चंगेह यूँ ही, आपां ते मुँह मोड़ा
लग्गे भा जर्सी को ही भैणया, कैदी बनाइ छोड़ा

हो जाती दो दिन में हि जरसी, कट फ़टी ख़तम तमाम
भाग दौड़ पड़ जाती फ़िर से हि, करने नव इंतिज़ाम

कटवाई कंबल को कभी किसी, लंबा कोट बनाते
लेत पहन उसको खुश होइ कै, मंद मंद मुसकाते

कंबल जब न सुहावता भारी, नीचे से कटवाते
ऊँचा जो होइ जाता उसमें, थेगलियां जुड़वाते

फ़िर भी आता जो न पसंद तो, कैंची फ़िर लगवाते
कभी जुड़ाते टाकियां पट्टियां, कबहुँ उनको हटाते

जर्सी कोट या कुरता पजामा, रूप कई हि बनाई
टाकी जोड़ के फ़टी पुरानी, देईं शक्ल बदलाई

अल्ला जाने शाहा मसताना, कैसे खेल दिखाते
भेद नां पाई अब लौं कोईं, जलवे जो दरसाते

पोशाकों उन्हीं फ़टी पुरानी, पहनें जब थे हज़ूर
रब्ब है गवाह कि दिलकश कितना, होत ज़माले जुहूर

जो भी एक नज़र हीं देखता, लुट हि बशर वो जाता
लायक देखन होता नज़ारा, कथया सबद न जाता

कबहूँ पहनते कुरता लंबा, कबहूँ पहनत धोती
चादर कुरते पे हि लपेटते, धोती ये भी होती

घूमते रहते दिन सब डेरा, शै हर ग़ौर निहारी
सेवा लंगर और हर साधो, रख़ते निगहा डारी

सर पै अपने परना ही ख़द्दर का टुकड़ा
पगड़ी रूप थे बांधत जब वो, दमकीं नूरी मुख़ड़ा

जाड़ों में जब पहनते टोपी, ऊनी गर्म अलीशान
लगते फ़कीर मुसलमां जैसे, शहनशा गुल अंदाम

रूप इलाही फ़बती जु टोपी, होइ सकत नां बयान
ओढ़त चादर सस्ती मलेशिया, कोराअ लट्ठाह आम

रंगवा कर चादर को उसी हि, ओढ़ते सर्दी माहीँ
बस्तर कोई कभी भी भूल के, कीमती पहनिं नाहीँ

करके जिद्द या प्यार से कोई, देता अगर पिन्हार्हीँ
एक आध दिन पहनते केवल, देत किसी को जार्हीँ

पर वो जो भी लिबास पहनते, लगते माशा अल्लाह
दिलकश साहिबे दिल थे बहुत हि, दिखते शाहा वल्लाह

कबहूँ किसी का कपड़ों पर तो, जात ही न था धिआन
मस्त मौलगीह और कद काठी, नूर शहनशा जहान

सूरज जैसा तेज़ वो मुख पे, देख के हर इंसान
रह जाता था ठगा सा कुछ पल, निरखिं खुदाई शान
ऐसे हिँ कोइ देखता कैसे, पोशाकेंह परिधान
फ़रमाते शाह कई बार ये, बातें नूरी ज़बान

''थी इश्क दा, तूँ फ़कीर वे''
''पा भावैं लीड़, कथीड़ वे''

यानी जपने नाम को मालिक, और भक्ति को बचाने
गुज़र करिं खाई रूख़ा सूख़ा, पहनिँ फटहे पुराने

भेस हो शाहज़ादों का ढोंग, हो साधु है बेकार
भेस ये साधु सत हि का बाना, कर तू इसका हि जार

संत फ़क़ीर भी करते हैं इस, बाने को नमोकार
कोटि कोटि ही करते हैं साधु, बानेह का सतकार

बन के साधो सत के भेस की, राखना जीवों लाज
रखना पाक़ औ साफ़ इसे तुम, लागै नां कोइ दाग़

पा जाओगे साधुता इक दिन, सुनोगे अंतर नाद
हो जाओगे असल हि नक़ल से, करम से नेक निहाद

मेहरबानियाँ

भलाइयाँ

आप दिया करते थे ये अक़्सर, जीवों सब को नज़ीर
दोहराते थे आप हमेशा, बात कही जो कबीर
बालक रूपी साईंया खेले
जो चाहे सो करत है, सब घर माहिँ
भय काहु का नाहिँ

असल हिँ आप भी खेल रहे थे, बालक की ही नाईं
छू जाती थी आपकी ये ही, मस्तीह बेपरवाईं

आपकी मस्ती मौला चाल के, मुक़ाबिल नांअ कोई
भागती पीछे नज़र हि आती, संगत प्यार हिँ खोई

हाथ हिँ लंबी लेइँ डंगोरी, बांकी मस्ती की चाल
मस्ती में आ चलते ही जाते, कीये बिन कछु ख़याल

आते जाते जो कहीं बाहर, होत समझना महाल
रूप बना लेतेह पुर हैरत, मुख़रा नूरी जलाल

लेते आँखों अपनी चढ़ाई, ज्योत का रब्बी सरूर
फ़ैलती ख़ुशबू जिस्म सु आपके, लेइँ ईलाही नूर

हो जाता परिबेस ही सारा, आबो हवा अभिभूत
हो जाती धन सगरी फ़िज़ायें, पाईं परेम अक़ूत

दुख वा तसदीह का दुनियाई, साग़र अनंत अपार
दीदे नूर रूहानी तुमरी, से हो जाइ था पार

नूर जलाल के ताकने से हि, जागते जीवां भाग
हो जाती नरकों के करम की, ठंडी दहकती आग

प्रेम प्यार दया और मिहर के, साग़र आप अथाहा
आपकी सोबत छाया साईं, आनंद बेइंतिहा

पाते आपके संग सदा ही, एक ईलाही मस्ती
रहम औ बख़्शीसों की सदा ही, बरखा़ रहत बरसती

आप बड़े हि मज़ाक पसंद थे, करते ऐसा मज़ाक
शरमा जाता सामने वाला? सूझती नां कछु बात

बहस मुबाहस कबहुँ कभार तो, अक़ल मअंद अफ़राद
सोचन को हो जाते बिबस थे, समझ नां पाते राज़

लेते उठाई औगुन थे जब, कहते कैसा फ़क़ीर
कर जाते हैं मज़ाकें ऐसी, होईं बड़ी दिलग़ीर

और कबूँ जब होते किरोधित, माफ़िक शेर ग़रज़ते
झिरकियाँ देन शुरू कर देते, सबहि डरिं जा दुबकते

जाता पड़ी सुन्न डेरा सारा, चूँ भी नाहिँ निकलती
शेर दहाड़ का करन सामना, हिम्मत नां किसी पड़ती

पर ये करिशमा क्या हो जाता, जाता नहीं बिसारा
गुस्से में भी दया ही बरसती, क्या ही अजब नज़ारा

अग़र बीमार किसी कु झिड़कते, होत बिमारी हि दूर
झिड़क दिया इच्छा वाले को तो, आरज़ू होईं पूर

बदले गुनाह जीव जो झिड़का, मिलयो गुनाह माफ़ी
तज कर गुस्साअ आप ही हँस कर, तब फ़िर ये फ़रमाती

भैणया झिड़की भी इन लगती, इसमें भी वर पाते
गाली सुन भी घूमते ख़ुश ख़ुश, समझ नहीं हैं पाते

ग्यारवां सर्ग

तेरे रंग न्यारे

आपके कर्म अनोखे हैं
कोई नहीं जान सकता

अहंकार का गिराना

अहंकार को तोड़ना

मसताना शाहा की हर अदा, हर हि खेल की माया
बन के रह गयी राज़ अबूझा, अब लौं समझ न आया

खोले अपने भेद थे आप हि, जीवों तक पहुँचाये
सतमारग पर लाउने जीवां, जतन बहुत हि जुटाये

काटने बेड़ियाँ जन्मों जन्म की, ऐसी बिधि अपनाई
दस नाख़नों से हड्ड तोड़ थी, सेवा बहुत कराइ

ज़रिया ए जिस्मानी ही सेवा, तोड़ाअ सब हंकार
और भी बहुत बनाइँ नमूने, करनेह दूर बिकार

बग़साये भोले भाले सबू, जीव रहित अहंकार
पाक़ औ निरमल रूहें बनाइ, भव सागर किये पार

सच्चा सौदा और डेरों दूजे, दौरां बारहां साल
जीव पुँचाये मंजिलों पै बस, सड़ गया ज़ालिम काल

अहंकार के रूप हिँ बस गया, काल वहाँ पर आई
डेरा जीव अनेक ही में थे, बीच अहं ऊपाई

मसताना शाह लगी ख़बर थी, जीवों के अहंकार
लागयो ठेस दिलों के मौला, हुईं तफ़्तीशे बिचार

लाई कै बलि वेदी ग़रब को, ऐसा खेल दिखाया
गिर जाये ये घमंड सभी का, निरनै वोह सुनाया

है येह सन उन्नी सौ सत्तावन, ही की अनूठी बात
गनपत और मसताना डेढ़ कु, भेजा साथ ही साथ

साल सत्तावन पच्चीह नवंबर, गाड़ी से लुधियाना
भेजा हुकुम लगाइ ही उनको, डेरा है गिरवाना

सारा ही सामान लुटान को, डेरा का फ़रमाया
हुक्म था इसलिये पूछने कोइ, हिम्मत कर नाहिँ पाया

पूछे कोई डेरा गिराया, किसकी ही थी मज़ाल
बाबत इस कर लेता कोई हि, उनसे जा ये सवाल

अपने हि मुरसिद थी फिदाइयत, होया हुकुम जो हुआ
समझो हुक्म की तखड़ी तुल गया, जोई दीया फ़रमा

डेराह गिरवाने से पहले, मुनादी ये कराए
डेरे का सामान जो चाहे, ले जाना ले जाए

देखते बस डेरे की ईंटें, चौख़ट कड़ियाँ दुवार
बातिन और शहतीर गधों पे, लोग गये लेइ डार

सामां ले गये रेहड़ियों पे, सारा लाद ही लाद
खेल चुका हंकार खेल यहाँ, डेरा हुआ बरबाद

छब्बीह ग्यारा सत्तावन को ही, मसताना लियो ठान
भेजा अलख़ परेमी वज़ीर कु, डेरा अलख़ पुर धाम

डेरा यह मलओठ अबोहर, माहीँ पाक़ बनाया
गिरवाने उसको भी मुनादी, का था हुक़ुम लगाया

प्रशासन ने धारा चव्वालीह, उन दिन शहर लगाई
पालना फ़िर भी हुक्म की शाहा, सख़्ती पूरी निभाई

थी इक बीबी भी उन पाँच या, सात जो सेवादार
गाती नाचती करत ढोल पै, मुनादी जो बाज़ार

कंधों पे लगे सच्चाह सौदा, के बिल्लेह दिखलाईं
कहते गिरेगा डेरा जिसको, चाहिए जु ले जाई

पूछया करते गश्त पुलिस ने, डेरा क्यों गिरवाईं
संत फ़कीर तो इससे उलटा, अपना था बनाईं

करते हैं कोशिश ही करन की, अपनी थाँव आबाद
वो तो अपनी जमात बढ़ाते, जिससे बढ़त तादाद

माजरा क्या अपनी ही सूरत, फ़िर अपमान कराने
ऐसी क्या मजबूरी पड़े ख़ुद, अपने धाम गिराने

सतगुरु की है मौज था दीया, परेमियों ने जवाब
दंग रहिं सब देख के मौज का, अनदेखाह अंदाज़

जायेगी ये नौकरी अपनी, जोड़े पुलिस ने हाथ
करवा दो बंद ढोल बजाना, मानो हमरीह बात

ख़बरें गिरवाने की डेराह, फैलीं शहर ज्यों आग
सेवादारों ने होइँ इकठा, भेजी येह फ़रियाद

ऊदा राम ले अरज़ी सच्चाह, सौदा भेजन ठानी
रह जाये आबाद हि कालेज, ये नूरी रूहानी

समझाया मसताना डेढ़ ने, ये तो हुकुम इलाही
टल ही कैसे सकता भला ये, खेल शहनशा शाही

औसर तीन बजे लौंअ संगत, धाम अबोहर आई
बाड़ थी जल गइ डेरा तब तक, दुआर ख़ाक समाई

लोग आस व पास के खिड़कियाँ, गाडर औ दरवाज़े
बरतन और सामान लिये सब, जाइ रहे थे आगे

दे दी बकरी डेराह की जो, रामू परेमी हाथ
पूछते अफ़सर हमकु बताओ, साधुओं तुम ये बात

सेवा कठिन सु झोंपड़ी कमरे, डेराह आलीशान
गिरवाते अब पहले बनाया, कैसा येह फ़रमान

इसकी वजह का सेवादारों, से ये मिलता जवाब
मौज है सतगुरु जी की ये तो, जाने क्या है मुराद

आके अफ़सर माहीँ अचंभा, हैरां देखिं अंदाज
ऐसी मौज फ़कीरी हि हमने, तोह बस देखी आज

निकट अलख पुर के ही अबोहर, और मलोट के धाम
सेवादार परेमी दुखी थे, गिरवाने इसे आम

लाला बनवारी जी फुटेला, शाह अबोहर वासा
धाम गिराने से ही दुखी थे, सदमा लगया ख़ासा

चिट्ठी शाह मसताना को उनसु, लिखी नां गई जाई
साथी को किसी बोल बोल के, पतरी थी लिखवाई

साल सत्तावन दिन दो दिसंबर, उनहुँ जवाब बनाया
लिखवाया पत्तर जो शहनशाह, ता में ये फ़रमाया

हुकुमे सतगुरु ये ही कि जोड़े, झाड़न वाला कहाउँ
झाड़ने वाला जोड़े बजाय, सेवादार बन जाउँ

हमको तो हर हाल में है बस, उनका हुकुम बजाना
करता सत जो पैदा ज़िंदा हि, ताक़त ज़िंदारामा

दूजा सत्संग घर जो बनाता, कायम करता निशान
कोई जतन या भजन न इस सा, जैसा पाक़ ये काम

सब दुनिया मुए राम हि पीछे, मंदिर मसज़िद उसार
राहें नरकों की ही बनाते, ले के मोल हंकार

सच्चा भजन तो बस है भरोसा, सिमरन भजन व पिआर
ज़िंदाराम निशाँ करी कायम, राखना खुश संसार

हर सूरत पर शरत है ये ही, जीव कु पड़त निभाना
मैं या ग़रब कहीं पे हि इसमें, तनिक नज़र नां आना

न मंजूर हुआ सतगुरु को ये, धाम बकायन वाला
लोगों ने किया जदपि बड़ा ही, बनवाने उपराला

फ़रमाया की अबोहर हीं ख़ुद, डेरा बनवायें
बनन ही जान पे धाम कहो जब, तब ही हम आयेंगे

पहले बनवायें इक झौंपड़ी, या तंबू हि लगायें
जिसमें ठहर के हम इक दिन आ, सत्संग तो दे जायें

ताकि ठहरना पड़े नां हमको, अंदर शहर हिँ जाई
जगह ध्यान की देख के संगत, बाद उसे हि बनाई

देना उत्तर ख़त का जल्द ही ये, करना बेगाह काम
लेकिन हो ही सका न वहाँ पर, जगहा का इंतिज़ाम

मगर अट्ठावन सन में वहाँ पर, सत्संग था हुआ ज़ोर
शायद इससे पहले हुआ नां, ऐसा कहीं उस ओर

इससे इतर हुक़ुम से मौज की, मसतानी हि फ़रमान
सचखंड चोरमार व मौजपुर, सिरसा अगम पुर धाम

जगहा जगहा गिरवा डेरेह, धाम जो आलीशान
सेवादार प्रेमियों को दिया, संदेसा वो अनाम

जैसे चूहा लगा हो बाड़ हिँ, देता घर को गिराइ
ढह जाती है गुफ़हा भजन की, जाईं ग़रब जौ आइ

काल शरारत रूप हंकार हिँ, जितना ज़ोर सु आया
पर मसताना जी ने करारा, देइ जवाब सवाया

आलीशान गिराइ ही डेरे, साध जो काल शिकार
मन से उनके वास्ते सरवदा, काढ़ दीयो हंकार

इसी हंकार बली की वेदी, पशचाताप की आग
होया भसम अभिमांह साधुआं, और घमंड परमाद

हुक्म भी सतगुरु पूरा किया शा, मसताना इसी भाउँ
कि अब सेवाहदार से जोड़े, झाड़न वाला कहाउँ

पालना करते हुक्म जो सतगुरु, शाही मौज सुनाई
थाँ थाँ धाम ढहाइ पाक़ीजा, रूहाँ सच्चियाँ ताईं

संदेसाह सतपुरुख़ अनामी, जीवों को पहुँचाई
फ़ैलयो ख़बर महामारी ज्यौं, शहरों हीँ ये जाई

हाकिमों अदना से आला की, हो गयी नींद ख़राब
ख़बर छपी पड़े सोच सभी ही, आख़िर येह क्या राज़

सवाल-जवाब

सी आई डी पुलिस से प्रश्न-उत्तर

इतना लाइ कै पैसा आख़िर, डेरे क्यों गिरवाये
दुनियावी बंधि सोच उसूलां, डेरा धमके आये

मास दिसंबर तारीख़ नौं सन, उन्नहीं सत्तावन शाम
टीम भरस्टाचार विरोधी के, ऊँचे कुछ साहिबान

छान बीन करने के हि मक़सद, दोनों सिक्ख थे आये
इधर उधर डी.एस.पी. साहिब, घूमिँ नज़र दौड़ाये

मुलाक़ात हुई मैनेज़र से, किये सवालो जवाब
दो दुनियावी एक ईलाही, देत दलील थे आज

डेरे ही क्यों गिराये तुमने?, जी है मौज इलाही
कैसी मौज ये मौज हि जाने?, कैसे हम बतलावी

इतना पैसा आता कहाँ से?, मौज को ही है ख़बर
नोट छापने का कहाँ यंतर?, जी खेतोंह जो फ़सल

क्या मतलब है इससे तुम्हारा?, सब्ज़ी बेचें गुज़ारा
सब्ज़ी में क्या इतनी है बरक़त?, ग़ैबी धन है न्यारा

ग़ैबी ख़ज़ाना से क्या मतलब?, सिमरन भजन कमाई
पकड़ के सर अफ़सर ये बोले, हमको समझ न आई?

अग़र नहीं ऐतबार हुआ तो, ख़ोज निकालोह आप
क्योंकि आप तो काम ही इसपै, कानूनी तैअनात

फ़िर दोनों ही अफ़सरों को उन, लाये शाह हुज़ूरी
खोये नां ही खुली ज़बान थी, पायी दरसन नूरी

बाहर आ बोले कि है मिलता, गुरबानी फ़रमाते
बोले फ़िर अफ़सर मालूम जो, होता न कबू आते

फ़िर मसताना शाह मंगाया, बूंदीह का परसाद
भिजवाया अफ़सरों को दोनों, होयोह अफ़सर शाद

और कहा लोगों से उन येह, सत्संग अवस हि आना
देईं तुमको नाम यहाँ वोह, है जु नूरी खज़ाना

नेक राह

भलाई का रास्ता

सतलोक धाम नेजा खेड़ा

मसताना जी सुभाउ भरी थी, मिहर दीनता आला
प्रेम अचूक से कोई बचा न, पड़्यो जिसका पाला

सच्चाह सौदा सनमुख़ सड़क से, सब थे आते जाते
पर नेजा खेड़ा के लोग नां, सच्चाह सौदा आते

भूले भटके से भी कभी ये, नारा भी न लगाते
बातों से सुनी सुनाइ औगुन, सिर पै रहे उठाते

सिर पै लेईं गठरी गुनाहां, बोझ चले ही जाते
पाखंडी बतलाइ शहनशाह, को जासूस बताते

सड़क हिँ जाते लोगों कु इक दिन, शहन शाह बुलवाया
बिन सोचे समझे नहीं तोलें, कुफ़र उन्हें समझाया

परखे बिन न लगायें किसी पे, कबहुँ कोई आरोप
निंदा सु बचो छोड़े कहीं का, न ये ऐसा है दोष

पर है दोष तुम्हारा न इसमें, मन में बैठा वकील
देता सुनन नां बात फ़कीरां, अपनी देता दलील

तेरा नाम है अंदर तेरे, देत हैं हम बिसवास
भेजना मां के पेट हिं खाना, संभाली करे ख़ास

कितने मालिक दीये पदारथ, पीने खाने ताईं
पर हम खाकर करते बिसठाह, इस हित दिये न साईं

बख़्शी उसने हमको ख़ुराक़ ये, करने भजन व गाना
करने सिमरन याद में उनकी, और उसका शुक्राना

सुन के शहनशाहा की रसना हिँ, बचन इलाही धारा
जाते होये हुई खुश लाया, धन धन सतगुरु नारा

सन सत्तावन मास था बारवां, दशम तिथि सुबह शाहा
बागड़ी दादू को गुफ़हा में, अंदर था बुलवाया

पुट्टर हुक़ुम है अंदर से हि ये, सतगुरु जो फ़रमायो
रूह बहुत संस्कारी नेजाह, खेड़ा में बतलायो

जाके तुझको उनको पकड़ना, डेरा उत हि बनाई
आ नां पाई जो सच्चा सौदा, नेजा खेड़ा जाई

लोग हैं अभी नशे हीँ माया, चूर काल की कारा
जाईं साथ से सच्चाह सौदा, लाई कबहुँ न नारा

धरम दास को भी था भेजया, दादू परेमी साथ
फ़रमाया तू करना भजन वा, बानी उत दिनो रात

दादू संत मते का करेगा, जाई वहाँ परचार
अरज़ा दादू ने कि शहन शाह, मैं रहा ठेठ गँवार

कैसे मैं परचार करूँ वहाँ, जा के शा मसताना
फ़िक़र करो नां हुकुम ने करना, काम तुम तो बहाना

कीयो वैसे ही वहाँ जैसे, कहयौ शा मसताना
मज़लिस दादू धरम दास रहे, आइँ लोग रोज़ाना

आये लोग असर माहिँ इतना, अगले दिन हि सवारे
सन सत्तावन ग्यारआँ दिसंबर, लोग गाँव के सारे

नेजा खेड़ा डेरा बनाने, अरज़ी लिखयोह आम
पहुँचे मिल सब पास शहनशाह, साचाह सौदा धाम

तक़रीबन सौ आदमी जब थे, मसताना के आये
दादू में सतगुरु रहा बैठहिं, बेपरवा फ़रमाये

दादू लेकर तुम्हें हैं आये, कर्म बहूता कमाया
चाय लंगर शाह ने ख़ूब था, जीवों को करवाया

जीवों ने सबू नेजा खेड़ा, सनमुख शाहा साईं
खेड़ा में जा डेरा बनाने, अरज़ी वोह लगाई

की अरज़ी मंजूर शहन शाह, बनवाने वहाँ धाम
भेजया दादू धरम दास को, करने को येह काम

बारहवां माह उन्नी सत्तावन, डेरा सु सेवादार
बनवाने गये भेजे डेरा, काम चलैह रफ़तार

दादू महात्मा ने जिस जगहा, डेरा का दिया दाग़
कूड़ा गोबर डालत थे वहाँ, लोग बनावने ख़ाद

सारा गाँव जगहा उस पर था, बिन बिरोध ही राज़ी
मिल कर सबने बाड़े से सबू, गंदगी थी उठादी

ले आने बेगु से ईंट रहे, हुकुम शहनशा लाईं
ईंटें लाई खाली पड़े इन, खड्डोंह में भरवाईं

राशन पानी का किया सेवा, दारों ने इंतिज़ाम
कीये प्रेमी सिरी चंद रहे, इसमें बहुत ही काम

सेवा चाली रात दिवस वहाँ, गयी पलट थी काया
पहले सबसे एक था उस थाँ, तंबू ही लगवाया

बारहवाँ माह साल सत्तावन, की तारीख़ अट्ठाई
मसताना शाह कोट पहिन कर, धारीदार हिँ आई

सर पै पहनी हुई थी टोपी, नूर पे चमका नूर
होइ कै खड़े मसताना शाह, मंच पै देखा दूर

सतसंग शाह मसताना देइँ, बहुती वहाँ निराली
भीड़ वहाँ थी इतनी पर किसी, चूँ भी तक न निकाली

खुम्बों की तरह सारी हि संगत, सतसंग सुनती रही
अंदर वाले राम की संगत, को भी समझ थी परी

उनती तारीख़ सन हिँ सत्तावन, मास दिसंबर आया
फ़िर मसताना साईं ने वहाँ, सत्संग भारी लाया

सपरा संस्था के अख़बार से, सपरा साहब आया
मालिक उस अख़बार ने शाहा, इक जासूस बताया

लिख़ दिया की हैं पाकिस्तान के, शहनशाहा जासूस
पहना अंगूठी में हि वायर, लैस कोई मख़सूस

पहनत थे न अंगूठी कभी हि, जबकि शहनशा साईं
सपरा को मैनेज़र साब थे, अपने पास बुलाईं

नोटों की इक माला गले में, उनके थी डलवाई
की मशहूरी इन्होंने बिन ही, पैसे के फ़रमाई

हिंद में पूरे मसताना शा, जी के ज़िंदाअ राम
की मशहूरी करके शहर वा, गाँव हिँ कर दिया नाम

कर दिया सपरा साहब ने हम, पे ऐसाह उपकार
दिल सु हम तहे इसलिये इनके, हरदम शुक़रे गुज़ार

उनके दोनों ही हाथों और, कानों बाँधी माला
जैसे कर दिया उसने कोई, काम बड़ा ही आला

निंदाह करने वालों से भी, रहते खुश बड़े आप
फ़रमाते निंदक बिना साबुन, करते मैल हैं साफ़

निंदक जीवे जुगों जग, काम हमारा होये
काम हमारा होये बिना कौड़ी को चाकर
कमर बाँध के फिरे तिहुं, लोक उजागर
(पलटू साहब)

कबीर निंदक न मरे, जीवे आदि जुगादी
हम तो सतगुरु पाया, निंदक के प्रसादी
(कबीर)

सोना चाँदी ख़ूब बंटा था, नेजाह खेड़ा गाँव
डाली माला नोटों की गले, बकरी के उसी ठाँव

माला में से बकरी ने लिया, नोट वहाँ इक खायीं
लोगों देखलो अजब तमाशा, शाहा तब फ़रमायीं

बख़शे यहाँ पे थे मसताना, शाहा नाम का दान
भीड़ थी इसलिये पीछु बैठे, बीच में सत्संग आम

मसताना शाह यहाँ नाम की, थी बख़शीस कराई
भीड़ बहुत हिँ पीछे बैठे के, नाम दिया न सुनाई

सोच के ये हि दादू बागड़ी, ने भी अरज़ लगाई
बैठे पीछे जीवों को नहीं, देता कुछ हि दिखाई

दादू बागड़ी को मसताना, जी ने था फ़रमाया
फ़िकर करो नहीं इन अस्थूल है, अक्स गयोह दरगाहा

कलजुग है ये महा घोर बड़ा, जिस लग जाये निशान
जायेंगे सतलोक वो सीधे, याद आ जाये नाम

डेरे की जगह बड़ा जाल का, पेड़ लगा था भारी
मसताना जी कहत कुंभ करन, रूप जाल है धारी

हुकुम हुआ संगत से गिरा दो, फ़िर जु देखने आया
देखत देखत पेड़ को जड़ से, नीचे था गिरवाया

मसताना जी हँसते हुये ने, तब था ये फ़रमाया
बल्लेह बल्ले कुंभकरण को है, ढंग बड़े सु गिराया

कुंभकरण तो सोवत रहत है, छह माही छह जागे
पर इंसान तो सोते रहते, बुद्धू मल ही अभागे

जनम जनम से सोया ही रहा, गफ़लत उम्र ही सारी
बेख़बरा रहा अंदर वाले, राम हयात गुज़ारी

कब जागेगा कौन जगावसी, समझ न जो आयेगा
बदले कौड़ी हीरा जनम ये, पगला खो जायेगा

नेजा खेड़ा गाँव के डेरे, का जब रखयोह नाम
मसताना शाह कहा इसे ये, संतलोक पुरा धाम

इसको दमदमा की दी उपाधि, और थे ये फ़रमाइ
काढ़ेंगे दम यहाँ हि जब कभी, करके सतसंग आइ

गिरवाइँ जहाँ कुंभकरण वहाँ, दफ़तर बने नायाब
संभाली करिं कागज़ात वहाँ, मैनेज़र जी सहाब

बाहर हलवाइयों हिँ दुकानों, पै था ये फ़रमाया
भई जिन्होंने जाल कुंभकरण, को नीचे गिरवाया

बनवाइ बड़ी बड़ी जलेबियां, उनको आज खिलाओ
दिखलायें चलो हम हि बनाकर, बस तुम देखत जाओ

फ़िर अपने हि हाथों बनाइ कै, बानगीह दिख़लाई
तीन जलेबियाँ बहुत बड़ी सी, अपने आप बनाई

पहली जलेबी खेम चंद को, दे के ये फ़रमाये
सेवादार जु सिरसा के लगे, उनहीँ बांटी जाये

दूजी जलेबी करके अपने, हाथों हि से तैयार
कहा बाँट दो इसको बीच में, दूजे हिँ सेवादार

तीजी दादू बागड़ी को दी, जालेबी सह पिआर
बाँट दो इसको नेजा खेड़ा, के सब हिँ सेवादार

तीन दिसंबर सत्तावन माहीँ, जो दिन थे वे आये
सर्दी बहुत ही सख़त थी पड़ती, बादल भी थे छाये

न तो बरसता हि कोई पानी, न बादल ही हो साफ़
काम रूहानी में मसताना, जी को देवने मात

बादल रूप में ज़ालिम काल हि, पूरा ज़ोर लगाही
कि नहीं कायम हो सके सत ये, रूहानी दरगाही

मौला दिलों के शहनशाह ने, पियारा सिँह सरदार
औ दूजे बेगू के प्रेमियों, को देइ लानत मार

तुम बच्चे और माया ही रहे, मांगत शाह हुज़ूरी
लेने वाले ले गये रहमत, उस मालिक की नूरी

सतआवन सन इकती दिसंबर, के दिन वाली हि शाम
आया एक सपेरा बजाने, बीन लगा वोह धाम

बीन की धुन हिँ बीबियाँ प्रेमी, मस्ती में दोउ आयीं
लागीं नाचन सतगुरु नाम पै, दीया कुछ न सुझायीं

बीबी नाचती गले दिया तब, काला नाग था डाल
बीबी को मस्ती में पता नांअ, लगया उस गले काल

सँपेरा भी हैरां गया होइ, देख के मस्ती न्यारी
दंग थी रहयो देख नज़ारा, ख़िलक़त थी जो सारी

देखिं बेपरवाह ये तमाशा, हँसयो औ फ़रमाई
देखो रन्न हो होश ही नाहीँ, कैसी मस्तीह छाई

बल्ले ही बल्ले मस्ती कमाल की, सावन शाही आई
हर कोई ही नचदा यहाँ पे, हो के बेपरवाई

कुत्ताहबड़ इक गाँव की औरत, गाँव की जु सेठानी
लागी नाचन प्रेम के बस आ, वो मौज - ए - मस्तानी

पूछा शाहा कौन है रन्न ये, है ये किधर सु आई
देखो दुनिया कहे मसताना, बीबियों को नचाई

हमने कब ये बोला कि नाचो, इत तो मस्ती नचाये
सावन शाही मस्ती ए मौज हि, सबकोह मस्त बनाये

डाली मसताना शाह तवज्जो, सबहिँ नूर ईलाही
झूमे पत्तेह और बूटे भी, मौजे सावन शाही

जादू नज़र ए मसताना शा, जाता सब पै छाई
जाती आ रही मस्ती ही मस्ती, ख़ुमारी वोह आई

धूनीह दास परेमी को ख़ुश, हो मसताना साईं
दे दी उस नयी एक बासकट, रहमत साथ लगाई

पहनी एक नई वो बासकट, जोश अनामी जाई
रहयौ नाचता घंटों ही वो, सुधबुध सकल गँवाई

धूनी दास से लेइ बासकट, देइ दी धन्नाह राम
मस्ती ए धूनी दास परेमी, छू मंतर हुई जान

धन्ना राम के पाउँ में जैसे, बंधहिँ घुंघरू ख़ास
मन ही मन लगा खेल नाचने, धूनीह दास ख़लास

होन लगा महसूस था अब ये, प्रेमी धूनीह दास
कुएँ देईं छलांग लगाइ जौं, मन था इतना उदास

भेज़ा हुक्म था तब ही गुफ़ा से, शहनशाह मसताना
पकड़ो इसको वरना लगा दे, कुएँ छाल दीवाना

किया परेमियों पेश पकड़ कै, सनमुख शा मसताना
आया साये नूर ईलाही, होश हुआ बेगाना

पहली जनवरी साल अठावन, नेजा खेड़ा गराम
से आ गये वापस मसताना, सच्चा सौदा ही धाम

नाम दान देने जीवों को व, उनके करम उठाने
के कारन मसताना जी को हि, पड़यो रोग उठाने

ख़ास मेहर

विशेष कृपा

गाँव कँवर पूरा में सतनाम पुर धाम का बनना

जीव रूहानी शीशे यानी, संत सामने आता
संत समुख पहले पहले रहै, ऐसा जीव थर्राता

सारे दीखते कर्म हैं अपने, इस हि लिये घबराता
क्या था करना सोचता उसको, कीया क्या पछताता

जीव की हर इक मनोथिति येह, पहल पहल हो जाती
संत सरन में जब वोह आता, जड़ हो अक़ल थिराती

मन ही आख़िर उस पातक काअ, होत है चौकीदार
करवाता है जो इनसान से, उसकु करके तैयार

पास संत के जान से पहले, करताअ मन इनकार
हाज़िर नां हों करत जतन येह, नां इक लाखों हि बार

मास बारहवाँ साल सतावन, नेज़ा खेड़ा गराम
चौधरी ने गराम कँवर पुरा, संगत देखी तमाम

दूजे जीवां माफ़िक वोह भी, कर्म पे गत पछताये
देखयो मस्ती नेजा खेड़ा, मन बीचारी लाये

नेजा खेड़ा की ही मानिंद, कँवर पुराह भी ग्राम
बनना चाहिये इक मसताना, जी का ऐसा हि धाम

अरज़ लगाई पर हो गयी थी, अरज़ीह नां मंज़ूर
फ़िर दोबारा अरज़ मंज़ूरी, कर ही ली थी हुज़ूर

गाँव हुआ उस काम ही इतना, साथ ही इक रफ़तार
लगभग पंद्रह बीस ही दिन में, होया धाम तैयार

पच्ची जनवरी और छब्बीस को, साल अट्ठावन जाईं
राखा सतसंग आम वहाँ था, संगत अफजूँ आईं

मरद बावरी बालक औरतें, सत्संग आईं तमाम
चाहत दरस लिये बेपरवाह, नगर देहात व ग्राम

माथा टेकने लगे करन ज़िद, चरनों शा मसताना
रोका बहुत शहन शाह ने था, पर नां कोई माना

रात को संगत मसताना जी, नाराज़ी दिख़लाई
इस मसताना ग़रीब को दुख जु, आना था अब आई

देखया कितने जीव गये वो, भाव हि आज उठाई
ये भी मानिंद अपर फ़कीरां, माथा है टिकवाई

हुये बहु नाराज़ शहन शाह, धूनी दास के साथ
क्योंकि बावरी पारटी के थे, मुखि़याह वो ही ख़ास

इस सत्संग हिँ मसताना जी ने, मन से दुख फ़रमाया
भोले भावों वाला शहनशा, भोले भाव हिँ आया

मस्ताने पन में ही हैं देते, बख़्श ईलाही खि़ताब
धूनी दास ने तंग किया हम, वापिस ले रहे आज

सूजी मरेगा अब ये इतना, जाये किया न बयान
सुनते धूनी दास का मुखरा, फ़क्क़ हुआ सुन अंजाम

लेने रुतबा वापस शहनशा, को थी ताक़त आई
बांटा ख़ुशी में सोना चांदी, धन दौलत लुटवाई

जीव बहुत ही लेन को आये, संगत नाम का दान
इनमें इक था आया आँखों हिँ, से अंधाह इनसान

क्योंकि शाह मसताना देत नां, थे अंधोंह को नाम
बनवारी पंडित ने बिठाया, उनको नियारे थान

अरज़ी लाई वासते अंधे, साईं करो अक़राम
लेने आया अंधा नाम इक, बख़शो नाम का दान

नाम दिया सुनयारों हकीमों, और चाहे मुख़तार
पर अंधों को नाम दिया नहीं, शाह सावन सरकार

पर वो अब जब आ हि गया यहाँ, सतगुरु साइँ के धाम
देंगे हम उस बशर को बेशक, दरगाही ये इनाम

अगले दिन थे आये भटिंडा, से हि दो थानेदार
कर दिया मसताना जी उनको, नाम ही से इनकार

पर आख़िर में करके सिफ़ारिश, गाँव जनों ने हि आम
दिलवाई दिया थानेदारों, कु वहाँ नाम का दान

जीवों को इन देने नाम औ, करम उठाने ताईं
बहुत बड़ी तक़लीफ़ उठाउनी, पड़्यौ थी तब साईं

रक्त लगा आने हि पेशाब में, तब शाहा फ़रमाये
जिस्म से इस बड़ा धोका कीया, नाम तुम जो दिलाये

पापी बहुत हि लोग थे दोनों, काल ने जनमों साथ
तत्ते तवे था साड़ना उनको, जल जल होते हलाक़

बारहवां सर्ग

सफ़रे-आख़िरत

अंतिम यात्रा

चेतावनी

सर्तक करना

वापस आने बाद हि जनवरी, सात अठाहवन धाम
धाम वोह सतलोक जो बनया, नेजा खेड़ा गराम

आधी रात मैनेजर साहब, को गुफ़हा बुलवाया
शहन शाह मसताना ने तबू, ख़ास वचन फ़रमाया

काल ने मैनेज़र जीवों को, लीया घेरे घाली
ये बेचारे मर गये सारे, कर लो इन संभाली

भागो दौड़ो इनको बचाओ, कर लो कोई उपाय
व़चन भरे ये दुख भरे लहजे, ठंडी आह फ़रमाय

मसताना जी सतसंग मज़लिस, जबहिं कभी थे आते
अक़सर आम ही वचन ख़ास ये, जीवों से फ़रमाते

संगत ग़र चाहेगी तो इसी, देही की यही चाल
करती काम रहेगी ये यूँ हि, दस या बारैह साल

लेकिन ग़र संगत किया हमको, तंग ऐसी ही रीत
छोड़ शरीर ये जाना होगा, तोड़ी तोहरी प्रीत

फ़िर मसताना शाह ने सेवा, दारों से फ़रमाया
मन की चौकीदारी ने छडना, माया रूप छलावा

रहना हुशियारी से हि सारे, जैसे तुमकु बताया
वरना जाए ग़रीब फ़कीर हि, ये बिन मौत हि मारा

मसताना जी करिं थे आगाह, सबको काल की चाल
मन में बैठ के सेवादारों, के जो चल रहा काल

छोड़ने जिसमानी चोला से, लगभग पहले दु साल
शाह को था आभास गया हो, डालता घेरा काल

फ़रमाया ये काल ने है अब, अपना घेरा डाला
चोला छोड़ने का जिसमानी, औसर आने वाला

ख़ास हुकुम (खास आज्ञा)

शहनशाहा मस्ताना द्वारा रोशन सिंग सेवादार को बगड़ देश राजस्थान जाने का हुकुम लगाना

शहनशाहा मसताना जनवरी, अट्ठावन के ही पास
लिखवायो जब वचन बही रहे, अपने बहुत ही ख़ास

लागे रहने अलग हि रंग कुछ, मसताना शा आईं
अनुभौ होइ रहा कुछ ख़ास ही, होने था ज्यों जाईं

लागयौ जैसे परम पुरुष के, हुकुम परम हीँ आही
जाने वाली ताकते सावन, शाही है ईलाही

बागड़ का इस लिए हुकुम तुम्हें, लाइ रहे हैं जाने
सतगुरु सदके बीज परेम के, जीवां मनहिँ उपाने

भोले भालेह जीवों के मन, फ़ूल परेम ख़िलाओ
हुकुम से साईं हि पुट्टर रोशन, बागड़ देस हिँ जाओ

मास फरवरी अट्ठावन माहीँ, देईं ये फ़रमाना
रोशन कु दियो भेजी शहनशा, बागड़े राजस्थाना

सन उन्नीह सौ साठ के दौरां, रोशन को बुलवाईं
धन्ना जाट के खेत लाल पुरा, सेवा फ़िर सु लगाईं

देहली का दौरा (लाला राम रखा वेफ घर)

लाला राम रखा जी देहली, के रहने के स्थान
तेरह से सोलह अपरैल को, वर्ष अट्ठावन आवान

ख़ूब था जमया रंग वहाँ पर, ख़ूब हि हुआ इब्तिसाम
धन धन सतगुरु के नारों से हि, हैरां सब परेशान

इससे पहले कबहूँ वहाँ पर, था न सुना ये नारा
हुआ सजान ख़बर सतसंग से, नगर हि उनका सारा

मसताना शाह सतसंग हिँ जब, कीयो जलवा नुमाइ
करके दरसन उनके इलाही, मदहोशी रही छाइ

देहली वालों ने कबु देखा, नां था ऐसा फ़कीर
न कभी ऐसा सत्संग ही सुना, न ही इलाही सफ़ीर

सिरसा से जब मसताना शाह, दिल्ली होये रवाना
लगया हुक़ुम कि पीछे हमारे, कोई भी नहिँ आना

पर बावरिया टोली चोरीह, पीछे थी गई आई
लागी जब ये बात पता शाह, मसताना को जाई

दीया हुक़्म न आने का पीछे, उसके भी येह बाद
पीछे आ गये लोग हमारे, होये शाह नाराज़

गुस्से में इसीलिये शहनशाह, ने ये हुकुम लगाया
लंगर पानी देना न इनको, नां ही छत का छावा

लंगर पानी दिया जो इनको, या फ़िर दीया छावा
नरकों का वोह होगा भागी, पहुँचे नां दरगाहा

पारटी बावरिया सु उन दिनों, चल ही रहे नाराज़
दी फ़टकार शा मसताना ने, महात्मा धूनी दास

पंदरह ऐपरिल सन अट्ठावन, लंगर का इंतिज़ाम
लाला मोहन लाल कियो रहे, बहुत ही शान व बान

ठहराया लाला मोहन वहाँ, शा चौबारे वितान
बैठा नीचे बावरी टोली, को मिले लाला आन

लाला मोहन होईं आसरे, शहन शाह मसताना
बुलवा बावरी दो दो कीया, लंगर चालु खिलाना

लागी मसताना जी ख़बर ये, बोलयौ शहन शाहा
मोहल लाला न की नरकों की, तूने है परवाहा

वो बोला की आप जो बैठे, हमको नांअ परवाह
मर्ज़ी जहाँ हो लेइ चलो वहाँ, जैसी आपकी चाह

ठंडा होया विरोध हि सारा, होये ख़ुश थे सारे
ग्राम उसी ख़ुरजा से सेठ दो, शाहा पास पधारे

लाला मुंशी राम औ सेठी, परेमी भगवन दास
सतसंग की ले अरज़ी आये, मसताना शाह पास

अरज़ी उनकी शाह मसताना, जी के पहुँची हुज़ूर
सत्संग चौथा मास की सतरह, का था होइँ मंज़ूर

जब वहाँ पहुँचे तो क्या देखा, आदमी बस दो चार
होये थे वहाँ खड़े दीखते, चेहरे से लाचार

सत्संग का इंतिजाम हुआ नां, या हुआ माज़रा क्या
पहुँची भी वहाँ आया किसी न, समझ में येह मसला

पूछा मसताना जी ने वहाँ, संगत गई है कहाँ
जोड़े हाथ खड़े हुये दोनों, सामने उनके वहाँ

अरज़ करी ये मशीन हमारी, जर्मन से मंगवाई
कीमत लाखों रुपये हि इसकी, सहसर पुर्जे बनाई

पर ये अब गइ होइ ख़राब है, नाहिँ समझ है आये
नां ही कोई मिसतरी इसका, नां ही पुरज़ा पाये

दिल्ली के हर कारीग़र को ही, दिया हमने दिखाई
पर है बात न बस की किसी के, देइँ इस जो चलाई

सुनते इतना शाह मसताना, का मन होया ख़राब
लाल हुआ था मुख़रा किरोध सु, लागयौ तन मन आग

डर के हो गये सारे हि वहाँ मसताना जी सु दूर
गुस्से में कभी इधर उधर कभी, टहलन लागे हज़ूर

खेली हमसु चालाकी तुमने, गुस्से महीं फ़ुरमाये
करवाने को मशीन ठीक तुम, धोख़े से हो लाये

ठीक हुई नां अगर मशीन तो, दुनिया कुफ्र तोलेगी
कितना हि झूठा है पाखंडी, ये फ़क़ीर बोलेगी

होग ग़र ये मशीन ठीक तो, कहसीं सारे बाकी
वाह वाह ये तु फ़कीर बड़ा हि, निकला कारामाती

दोनों तरफ़ हिँ तुमने फँसाया, दोन ही तरफ़ी मार
अच्छा नाहीँ तुमने किया येह, संग हमारे बुहार

लगभग घंटा या दोइ घंटा, यूँ ही चलताअ रहा
लाला मोहन लाल भी इतने, देहली से गये आ

उनको सारा दीया बताई, औसर उस अफ़साना
बोलिं उस कि बताओ ग़रीब क्या, अब ये करिं मसताना

इस पर मोहन लाल भी बीच हिँ, फंस गया बेचारा
समझी ही न पाया जवाब दे, कैसा सोचन हारा

बोलना था कुछ ही नां कुछ तो, बेचारा घबराया
बोला जी क्यों फ़िक़र हो करते, सतगुरु बेपरवाहा

ज़ोर से जोश हिँ मोहल लाला, ने ही लाया नारा
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, का अमरित बरसाया

लागी बिगरी मशीन चलन वो, हो गया था इक़राम
बस फ़िर क्या था भीड़ थी इकठा, हो हि गयी वहाँ आम

परया हल्ला सारे शहर महीं, ज़रमन की वो ख़राब
ठीक हुई है मशीन करम से, शा मसताना जनाब

जाते दो और आते दस थे, शाह मसताना पास
आती भीड़ खड़ी होइ जाती, सामने जोड़ी हाथ

हमने तो है कुछ किया लाला मोहन, लाल ही किया जाई
कपड़ा तख़्त पे बिछा सफ़ेद थे, कुरसी दी लगवाई

हुकुम बैठने का उसी ऊपर, मोहन कु था लगाया
अब क्या करते हुकुम था लागा, बैठीं हुकुम निभाया

भीड़ का जमघट ऐसा लागा, जो हि था वहाँ आता
हाथ जोड़ कर मोहल लाल को, सजदा करके जाता

अच्छाह मजमा होया खड़ा था, लाला जी सकुचाते
पर शा मसताना जी देख के, मन ही मन मुसकाते

ईलाका सब ख़बर फ़ैल गयी, कामिल इक है फ़कीर
के सेवक ने नारा लगा के, बदल ही दी तसवीर

जर्मन की वो मशीं नां कर सका, ठीक शहर ही सारा
लागी चालन संत इक क़ामिल, जों ही लाया नारा

दो दिन ख़ूब हुई वहाँ संगत, पूरा मचया धमाल
देख के खेल वहाँ सतगुरु का, घबराई उठा काल

देखा असल हिँ मसताना शाह, रूह यहाँ संस्कारी
शहर हिँ सारे ख़बर फैलाने, रचली रचना सारी

मोहन लाल के बैठी अंदर, खेला ऐसा हि खेल
सतगुरु ने किया कम था अपना, केहीँ कराया मेल

दौरा-ए-सोनीपत

सोनीपत की यात्रा

(19 अप्रैल 1958)

खुरजा वाले सेठ मोहन का, अपना सागा भाई
सोनीपत में रहता था जहाँ, शाहा कु वोह लाई

लाला मोहन गाड़ी का रहा, भाड़ा कुल हि चुकाया
टिकटों पर सारी संगत के हि, पैसा अपना लाया

टेशन बीच हिँ दिल्ली से सोनी, पत रुकी जहाँ गाड़ी
बावरी साँसी और भेडकुट, भीड़ उतर कर सारी

ज़ोर ज़ोर से ऊँचा हि ऊँचा, लाते खूब हि नारा
धरती रख दी हिला के मानो, लागिं ऐसा नज़ारा

सोनीपत का सफ़र हुआ येह, पूरा नचते गाते
ढोल बजाई नारे लगाते, शब्द रूहानी गाते

पहुँचे टेशन सोनीपत जबू, उतरीं घर पे जाने
दूर था घर इस लिये वहाँ पे, परयो रिक्शे कराने

मसताना शाह हुक्कुम लगायो, साथ हि संगत पूरी
एक नमूना बनाई करने, ज़िंदा राम मशूरी

रिक्शा एक पे हुक्कुम था बस इक, जायें साधु बिठाये
मीलों लंबी कतार मशूरी, जिंदा राम कराये

रिक्शा वाला पाँच रुपये रहा, लेता एक सवारी
एक हि आदमी रिक्शा एक पे, यात्रा बैठ निकाली

एक एक रिक्शा पे हि बैठ यूँ, प्रेमी सेवाहदार
गलियों सड़कों से हि जो गुज़रे, देखत रहयौ बज़ार

नारे मारत चलते हुये जब, सेवादार हि सारे
सोनी पत के लोग छतों पे हि, चढ़ चढ़ देखिं नज़ारे

उनके लीये नारा नया था, लागी भीड़ नियारी
उँगली दांतों नीचे दबाती, भीड़ शहर की सारी

पड़ गया सारे शहर में हल्ला, आया कोई फ़क़ीर
संत मते की बातें सुनाता, वो दरगाही सफ़ीर

पहुँची संगत लाला जी मक्खन, लाल रहीं घर जाये
बीबी उसकी संगत वासते, देईं बनाइ चाये

शाह मसताना दरसन करके, मसती ऐसी छाई
चीनी डालना भूली चाय हिँ, संगत सकल हँसाई

संगत ख़ातिर ख़ाना बनाने, लाला राशन लाया
रोटी दाल हैं रोज़ हि खाते, शाह ने फ़रमाया

इनको आज बनाके प्रेम की, खीर हि रज्ज करवाओ
महिमा जिंदा रामा आज ये, सोनीपत कु सुनाओ

उन्नीह चार अठावन फ़िर से हि, सत्संग भारी लायो
पाछै संगत शाह मसताना, येह हुक्म फ़रमायो

सारी संगत को बड़े प्यार हिँ, चाय पिलाई जाये
उस पर बोले लाला जी वहाँ, थोड़ा सा सकुचाये

चाये तो बन जायेगी यहाँ, बातिन कहाँ सु लायें
थोड़े से कप और गिलासों हिँ, कैसे चाय पिलायें

बोले इस पर मसताना शाह, चाय तो प्यारे बना
देते हैं हम चाय को तेरी, अबहूँ सबूको पिला

बनकर आई थोड़ी देर में, लाला जी की चाये
मसताना शाह बरतन सारे, घर सु लेइँ मंगाये

थाली लोटा बाटी कटोरी, और गिलास कढ़ाई
चम्मच कड़छी पतीले बड़े तक, भी लीये धरवाई

संगत को सबू चाय पिलाई, बाद हिँ ये फ़रमाये
जिसके पास है जो भी बरतन, साथ हि वो ले जाये

लाला से फ़रमाये कि घर में, कपड़े चद्दरें सारी
संगत को तू बाँट दे आज हि, सतगुरु के बलिहारी

कीया बिलकुल वैसा हि जैसा, साईं ने फ़रमाया
घर की सारी चादरें कपड़े, संगत को बँटवाया

पल हीँ सारा घर लुटवायाह, मौज का था इशारा
लीलाह देखीं लाला मोहन, कीयो ख़ुश ख़ुश सारा

मसताना शाह फ़िर लाला से, दोबारा फ़रमाये
रखने को जो साइकिल पुरज़े, थैले तंग सिलाये

जिन पै नाम ए कारीखाना, तोहरा ही हो लिखा
बोरी के वो थैले सकल ही, लेई यहाँ पै हि आ

आये थैलेह हुक़ुम मुताबिक़, सारे प्रेमियां पास
बूँदी थैले भरीं हुक़ुम दिया, बंटवाने परसाद

घबराना नहीं ऐ लाला जी, मसताना फ़रमाये
कौन वरि खाइ विचला मरोड़ा, इक दे दस तू पाये

फ़रमाया जो थैलाह बूंदी, खाये येह परसाद
दे आदेस वो साईकिल का, लेने के लिये आज

ज़रिया इस परसाद के ही हो, धंधे की मशहूरी
फ़िर चद्दर लाला जी को अपनी, ओढ़ा दी थी पूरी

होईं खुश मसताना जी तभी, लाला से फ़रमाये
कंड नां नंगी होने देंगे, चाहे कुछ हो जाये

लालाह मक्खन लाल ने दोनों, हाथों चदर उठाई
आँखों पे किया अपनी सजदा, सतगुरु को सिमराई

दिन इक्की माह चौथा अठावन, औसर बीच हिँ जाये
मसताना दिन तेइस ऐपरिल, सोनीपत थे आये

मोहन लाल मेहर चंद के हि, साइकिल के बाज़ार
देख शहन शाह मोहन उठ कर, लागे आने बहार

उससे पहले मसताना शाह, अंदर आये दुकान
गद्दी पर जाइ बैठयो ऐसे, उनका ही ज्यौंह थान

जैसे चौकड़ी मार यहाँ ही, बैठत रोज़ हि आई
रोटी कढ़ के पास हि टिफ़िन से, खान लगे हरसाई

बाकी संगत जिनमें भेडकुट, साँसी व बिशनोई
बावरी सब बाहर हि रुक गये, गदगद सारे होई

मोहन लाल ने संगत को सब, सोडा था पिलवाया
होये खुश मसताना जी बड़े, संगत से फ़रमाया

दुनिया की आँखें ही नहीं है, देख नहीं ये पाते
सोडा नां इनको हो पिलाते, रब्ब को ही पिलवाते

इस हि तरह बांटी गई खुशियाँ, लाला जी की दुकान
लगते ऊँचे हि ऊँचे नारे, गूंजाते आसमान

चौबीस अपरिल दिन को सुदर्शन, सूद के हि घर जाई
बीबी द्रौपदी ने संगत को, सारी चाय बनाई

भूल गयी चीनी ही डालना, मस्तीह सतगुरु आई
भई है प्रेम निरोल चाय हीँ, मसताना फ़रमाई

शाम उसी सतसंग मसताना, शाह ने मोहन लाल
पूछयो कि हैं मालटे कितने, बाकी करते सवाल

मोहन लाल बताइँ बचे अभी, बाकी सिरफ़ ही चार
फ़रमाया मसताना शाह ने, कर लियो दस तैयार

वजहा बाहर से है शाम को, कोई आने वाला
करना है परसाद का उनके, वास्ते ही उपराला

शाम को संगत मसताना जी, मंच पै जब बिराजे
पास के थाना के ही ज़रिया, आये गुप्तचर प्यादे

करने को वो आये पता थे, ऐसा कौन खज़ाना
सावन शाही मौज का है जो, लुटत यहाँ रोज़ाना

बैठ गये वे बीच हिँ परेमी, कपड़ों में आ सादे
ताकि कोई पैछाने ही नां, सी.आई.डी. प्यादे

मसताना जी ने तब मंच से, ज़ोर से हि फ़रमाया
बाहर के हि वे सी.आई.डी., हम हैं अंदर काया

बाहर की सी.आइ.डी. है इक, दुनियावी यहाँ काल
अंदर की येह सी.आई.डी., सतगुरु साईं दयाल

वरी महकमे दोनों ही येह, होईं इक इसी नाम
इसलिये अपना काम करो तुम, और हम अपना काम

पड़ गये मुख़रे फ़क्क़ थे उनके, हैरां सबू इस बात
लागयौ कैसे इनकु पता ये, करनीह तहक़ीक़ात

टोकरी लाने माल्टों की उन, साईं जी फ़रमाये
करके इशारा हाथ से सब हि, बंदे दिये बताये

बोले कि वोह आदमी बैठे, छह वो बैठिं हैं चार
पूरे दस हैं दे दो मालटे, इक ही इक बा पिआर

अट्ठाईस अपरैल की मजलिस, चली हि रही वो आम
लागी औचक होने बरखाह, झम ही झमा झम झाम

लागयौ पुस्तक साज संभारन, मैनेज़र जी सहाब
भीग नां जाये पोथी कोई, हो नां जायें ख़राब

फ़रमाइँ मसताना जी तब हट, डरे काल की माया
फ़िर देखा आकाश तरफ़ और, ज़ोर से हि फ़रमाया

देख तू नौकर हाकिम अपने, हम अपनी हि सरकार
नौकर इक है करता हि दूजे, के लीहाज़ की पाल

इतना कहने पे हि छंट गये, ऊपर बादल सारे
रुक गई बरख़ा ततछन ही तब, सदके सतगुरु न्यारे

क़र्ज़ अदायगी (क़र्ज़ उतारना)

लाला राम रक्ख़ाह पाकिसतां, सु था जब हिंद आईं
लीया करज़ बशर से किसी था, अपनी मदद हि ताईं

चौथा मास तारीख़ तीस का, ऐसा दीया जवाब
कर दिया मसताना शा लाला, के करज़ों का हिसाब

पूछा लाला जी ने शाह से, कर्ज़ मिरे क्यों चुकाये
तुम अधिकारी जीव हि ख़ास हो, शहनशाह फ़रमाये

पीछे हम अपने नहीं कुछ भी, छोड़ यहाँ पर जायें
अपना ख़ुद हि निकाले ख़ज़ाना, डेरा जो हि चलाये

सन उन्नीस सौ अट्ठावन से ही, होये काल इशारे
पीठ शाह की निकलयो फोरे, एक नहीं कइ सारे

सामने होईं काल नां हिम्मत, पीठ हिँ वार चलाया
बेपरवाह मसताना शा ने, काल कु ये फ़रमाया

शुरू हुए जब फोड़े निकलने, पीठ हिँ शा मसताना
आई मन मलख़ान मरोड़ ये, मारयो वहाँ ताना

बोला कि ये फ़क़ीर है कैसा, रब्ब कहिं दुनिया सारी
रब्ब को भी कभी निकले फोड़े, आती कबहुँ बिमारी

काल का घेरा

काल (मौत) का घेराव

दौराह ख़तम करी सोनीपत, यू.पी. दिल्ली सथाना
पहुँचे रोहतक अट्ठावन मई, दस को शा मसताना

कंधा अपना दायाँ मनैज़र, जी को था दिख़लाया
पीछेह दाना फुंसी का इक, छोटा नज़र जु आया

सोलह मई लेईं मसताना, शाह भाड़े की कार
सच्चा सौदा धाम ही आ गये, फुंसी लिया विसतार

मई अट्ठारह मसताना शाह, ने ये किया फ़रमान
निकलाई डेरे का रख दिया, सारा हि था सामान

फ़रमाया है प्रेम की दौलत, इसको है लुटवाना
ले जाये सतगुरु का पिआरा, चाहे जो ले जाना

मई उन्नीस फैफ़ाना वालों, बरतन रुपया हज़ार
तंबू सिलाई मशीन स्पीकर, कपड़े देइँ उपहार

बहुत हि कपड़े रुपया पाँच सौ, और कछु शामियाने
बीस मई गुदराहना वालों, दीये कर नज़राने

डेरे के दिया हुक़ुम साधुओं, को रखने का समान
रोड़ी का सिरहाना व बोरी, वास्ते करन आराम

माटी की इक पिआली दे दी, पीने घूंट दु पानी
रखने का बस यही हुक़ुम दिया, सामां हिँ जिंदगानी

और लगाया हुक़ुम कि अब से हि, बैठिं मौन रोज़ाना
नाहिँ दिया तुम्हें कुछ भी ऐसा, मन में भी नां लाना

सतगुरु ने दिया सक कुछ तुमको, नाहिँ कमी कहीं आइ
देखता सतगुरु पक्के तुम्हें बस, बंदगी भजन कमाइ

नाम सबद हि है बड़ा पदारथ, कदर न केहिँ दिखाई
नाम की ही महिमा है महती, सोते पुरुष जगाई

जाग वो पड़ता है जु पुकारे, बस उस पल उसी काल
और जगाता पुरुष है जो वो, सुनत है अंतर ताल

नाम पुकारो लेइ कै उसका, अवसी हो सुनवाई
देखत है बस वो तो तुम्हारी, पकयाई व सच्चाई

देखता है जब दीठ तुम्हारी, हिरदे होईं जु साफ़
लायक हो हिरदा जब बैठने, परगट हो जाइ आप

इतने ही में जो घबराइ कै, देवै उसको हि छोड़
हो जाता है चुप वोह भी बस, लेता मुख़ हि है मोड़

जिसने समझी लिया ये मंतर, जब तक साँसें आई
छोडूंगा नां तब तक नाम मैं, अवस मिलिं उसे साईं

जब ये वचन सुनाये गये थे, मसताना जी द्वारे
कौंध गये बिजली की हि माफ़िक, वचन कहे जो सारे

जनवरी में मैनेज़र जी से, मसताना फ़रमाये
घेर लिया जीवों को काल ने, कोइ कीजो उपाये

गये बेचारे ये तो मारे, बस की जुगत नां कोइ
भागो दोड़ो मैनेज़र सोचिं, जुगत बचावैह जोइ

जब दिल्ली से जाने लगे गजा, तब मसताना जनाब
कर गये राम रखा के चुकता, सगरे हिसाब किताब

फ़रमाया ये छोड़ के पीछे, हम न बकाया जायें
ख़ुद मैनेज़र काढ़े ख़ज़ाना, डेरा जब हि चलायें

फोड़े निकलन होइ गये शुरू, दीया सामां लुटाइ
जिन जिन सेवादार परेमियों, को गइ समझ थी आइ

बैठत जा रहे थे दिल उनके, होयेगा हि क्या हाल
वक्त है कैसा आउने वाला, डालता घेरा काल

इसके बाद ही मसताना शा, हुकुम सख़्त था लगाया
बैठेंगे सब साधु मौन अबू, सामां लुटवा सारा

इस लिये आदमी कोई हि अब, सच्चा सौदा न आये
हुक़्म बिना आने की ही अंदर, हिम्मत नाहीँ दिखाये

बाबत इस लाला मेहर चंद, को थी जो लिख़वाई
चिट्ठी गंगाह नगर थी भेजी, इश्तेहार छपाई

धन धन सतगुरु तेरा आसरा, मेहर चंदा भाई
मक़सद से येह ख़ासे ही इक, पतरी हैं भिजवाई

धन धन ज़िंदाराम के बाद हि, अबहिँ अरज़ की डेरा
का सब माल निकाल के बाहर, लगवा दीया ढेरा

जिसकू चाहिये माल यहाँ जो, वो हि उठा ले जाये
तंबू स्पीकर औ शामियाने, बरतन सब हि लुटाये

साधुओं वास्ते बोरी गद्दीह, रोड़ी का सिरहाना
मिट्टी का बस एक ही पिआला, दिया उनको ख़ज़ाना

भजन मंडलिया अब है बैठी, धारी मौन हि सारी
प्रेमियों सबसे इस हि लिये है, बिनती येह हमारी

जब तक तरफ़ से सतगुरु हि नहीं, मिलता हुकुमे अनाम
बंद है सत्संग करें न कोशिश, आने की कोइ धाम

आप परेमियों को दी जाती, इतलाह है मख़सूस
आप अगर आ गये डेरा तो, नाहिँ भला हो सुलूक

बिल्कुल बंद है आना इस समय, साचाह सौदा धाम
दी जाती है इतलाह फ़िर से, ये ही ख़ास औ आम

पत्तर है लिखवाया गया येह, द्वारा शा फ़रमाना
ज़रिया क़लम गुरुबख़श दास ही, हुक्मेशाह मसताना

असल तस्वीर

वास्तविक बात

सोलह मई मसताना जी जब, रोहतक सु थे आये
तब से अलग हि एक रूप और, रंग सा था बनाये

औ फ़िर मौन भी रखा हुआ था, उस के ऊपर जाये
दिल्ली यू.पी. व रोहतक जीवों, के बारे बतलाये

करम बड़े ही जीवों इन सभी, लीये सख़्ती औ भार
ले के भार करम इस जिसम से, देने पड़यौ उतार

करने फ़िर तफ़तीश लोग रहे, सी.आई.डी. आये
सावन शाही मौज का पर ये, भेद हि ले नां पाये

राम नाम के सिवा ही नां थी, दूजी ही कोइ बात
काल का और तो ज़ोर चला न, की जिसमानी हि घात

टोहाना बुधवाली की तरह, ही फोड़ाह बनाया
फोड़ा बढ़ना चालु हुआ तभी, शाहा नूरी काया

मसताना शाह ने जब अपना, फोड़ा था दिख़लाया
देखे मैनेज़र कि वो फोड़ा, बढ़ने ही को आया

उपचारक बड़े वैद हकीमों, फोड़ा जाँच कराया
पर नां हुई तसकीन कहीं पे, न आराम ही पाया

मई उन्नी को मसताना शाह, घुटने ऊपर दाईं
सूजन सी महसूस होयी कुछ, बढ़ती थी जो जाईं

देखी हालत शाह मसताना, देख के उनका हाल
देईं मशवरा जाने ततछन, किनहीँ बड़े अस्पताल

एक तबीब रहा जगदीश जो, सरकारी व सयाना
बोला फोड़ा कार बंकल ये, शल्य पड़ेह करवाना

मई उनतीस को सिरसा हिँ इक, रुगनालय सरकारी
करवाया आपरेशन शाहा, थोड़ी होइ सुधारी

पर फ़िर मई इकतीस हिँ हालत, होन ख़राब हि आई
क्योंकि फ़ोड़ा घुटने भी वाला, लागा देन दिखाई

आस्पताल में वहाँ पे काफ़ी, दिन रहिं शा मसताना
सत्रह जून को अफ़सरों का कुछ, मिलने होया आना

हालांकि हालत नां थी ऐसी, कि मिलवाया हि जाये
पर मसताना जी का हुक़ुम था, दूर सु कोई आये

मिल के पूरी ले तसकीन वो, दिल में अपने जाये
आये को नां मिलना किसी को, नां अख़्लाक की राये

तीन चार अधिकारी जु आये, उन बैठावन ताईं
बाहर से मसताना शाह ने, कुरसियाँ मंगवाईं

पूछा फ़िर गया उन कि कौन हैं, करते काम क्या आप
किया इशारा एक ने की हैं, सब हि बड़े ये सहाब

ये हैं सेशन जज व वकील ये, वोह हैं अफ़सर माल
तीनों ओहदे पर हैं ऊँचे, नौकर येह सरकार

पूछा मसताना शाह फ़िर से, सेशन जज जो हिसार
क्या है इसका काम जु करत ये, वास्ते यहाँ सरकार

बोले धारा तीन सौ दो पै, देत हैं ये सजाईं
इतना होन हीँ इस हि दफ़ा पै, फाँसी तक लगवाईं

एक काम ही क्यों नहीं करता, शहन शाह फ़रमाईं
इस पे बोला वकील कि देखहिं, मिसले सजा दिलाईं

देख के जानिब सेशन जज थे, मसताना फ़ुरमाई
ऐ जज तूने देखीं अभी तक, मिसलें सकल पराई

पर क्या तूने अपनी मिसल भी, देखी लाई धियान
खल्लीह जांदी खल्ल जोंइ बकरा, बिन जपे मालिक नाम

बेशक हो कोइ जज हि यहाँ पर, या हो कोई नरेस
बच न पाईं तेग से काल की, ज़ालिम काल के देस

फ़रमाये फ़िर पढ़ के सुनाओ, आ हि जाये जो होश
अब नां समझे ग़र कोइ बंदा, नां किसी जावै दोष

कबीर गुरु की भगति बिन, राजा गरदभ होय
माटी लादिं कुम्हार की, घास न डारे कोय
(कबीर)

बनना पड़त है ख़र राजा को, मसताना बतलाये
सेशन जज का भला लिहाज वो, क्यों ही करसी जाये

बहुता जज अभिभूत हुआ वोह, मसताना शाह बात
शायद चाहता लेना नां था, पर उस दिया परसाद

तरसत हैं परसाद के वास्ते, ब्रहमाह बिसनु महेस
फ़रमाये मसताना शाह तो, लागी जज बड़ी ठेस

चंदा फंड न आता यहाँ है, दान वा दख़ना दूर
है सतलोक अनामी का येह, असल ईलाही नूर

पूछा फ़िर सेशन जज से येह, रन्न तेरे को है क्या
और दिया इक सेब जो उसको, मन हीँ भरम था हुआ

बोले तुरत हि मसताना शाह, कढ़ दे तेरा ख़्याल
दिये इस परसाद में सेब दो, करना ना हीँ मलाल

ग़र हो रुपया इक सौ किसी से, मुच्छांह इठ्ठीह रखदा
देखा क्या मालिक को किसी ने, ठोकदा कच्छाँह बड़ा

देखीं ओहदा सेशन जज ये, आउता है हंकार
जिसके देना फ़ाँसी मारना, छोड़न है इख़तियार

मौत का मन ख़ौफ़ ही डाल के, सच्चाह सौदा लाया
काम बहादुरी का हि किया है, मन कु नीचे ढहाया

दिया ये परसाद दोबाराह, इस ही बात ईनाम
काम बहादुरी है ये भी इक, अफ़सर होइँ हैरान

मसताना शाह दाखिल थे जब, सिरसाह के अस्पताल
धूनी दास महात्मा ने लिखी, पतरी एक बीसाल

हाज़िर नाज़िर ज़िंदाराम जी, शहन शाह मसताना
जुग जुग तेरी रही आशीष तु, काम किये थे नां नां

सुनकर बातें ख़ुशी हुई बड़ी, जो भी करोगे नाथ
दसवां द्वारा अनामी सचखंड, मेरे लई सब आप

नक़ली था क्या वोह मसताना, आता मेरे जु पास
जो कि जंगल धरती औ परबत, आसमां ब्रहमँड ख़ास

जो सब देखा सारा ही वोह, करता था बड़ा काम
वो क्या मन में थे सबू झूठे, दिख़लाये जो सथान

इसका पता नां मुझको है कुछ, निरनय ये करो आप
क्या था ठीक और गलत क्या था, आप हि ये करो साफ़

पर वो जो आवाज़ें बोलते, पास न मेरे आईं
पर साईं की किरपाह से कम, सबरे बनते जाईं

बात मग़र महोम्मद पुर रोही, की है येही आई
रहयौ पंद्रह दिन मैं इकांत हिँ, रोटी भी नां खाई

फ़िर बुलवाया मुझको आपने, मैं इक कीट पखाने
आपकी जैसी रहयो रजा हि, मानें आप न मानें

बगसीह दो ग़र मच्छर को इसी, कर सकता येह काम
फ़िर है खेल औ रज़ा आपकी, आपका ही अक़राम

सुनकर ख़त ये मसताना शाह, तब थे ये फ़रमाई
धूड़ का था मसताना फ़िर वो, जब आवाज़ न आई

जिस सवरूप के अंदर ही से, नूरी आवाज़ां होईं
मसताना समझो वोहि असली, दूसरा तो मसनोईं

नाहिँ मसताना का सरूप वो, समझो सब हिं ज़रूरी
रिद्धियाँ और सिद्धियाँ तो देईं, मंजिल सु करै दूरी

दौलत देगा कम भी करेगा, बरहामंड दिखाईं
होगा मग़र न मसताना वोह, इत ही उत भटकाईं

काल की आवाज़

मृत्यु की आहट

लगभग हो ही गया था तय ये, कि अब शाह मसताना
छोड़ के चोला दुनियावी ये, देस चाहते जाना

क्योंकि डेरे ही अंदर अब कुछ, हो चुकी ऐसी बात
शहन शाह मसताना के होइँ, आहत गये जज़्बात

इक दिन मसताना शाह ने खुद, नूरी ज़बां उचारा
उदासी भरे बहुत सुभाउ हीँ, भारी मन फ़रमाया

सावन शाह के सदके हौका, बहुतेरा था मारा
माना नाहीँ मगर कोई बस, माने दो ही चारा

आशिक निकले शाह सावन के, बहुते कम दीवाने
सावन शाह को कहेंगे गल न, मसताना की माने

बोले फ़िर बलदेव चौधरी, से शाहा मसताना
इस चोले हिँ सतपुरुषों को भी, पड़ता करम उठाना

करता इस देही की भी नहीं, माफ़ी वोह फ़िलहाल
अल्लाह जाने होगा वहाँ क्या, बाक़ियों सबको हाल

(शाह मस्ताना जी बिलोचिस्तानी को काल की आवाज़)

सच्चाह सौदा के दरबार में, शा मसताना आये
बीच तमाम ही संगत के वो, बेबाकी फ़रमाये

सच्चा सौदा से थे रेवाड़ी, जब गये नेक निहाद
वास्तेह करवाने देहानी, फोड़ों का थे इलाज

साधो संगत रही थी कर जब, सोते होइँ आराम
दी आवाज़ थी रात बजे दो, काल ने तब इक्तिहाम

बोला मसताना कहाँ तेरा, सच्चा सौदा है धाम
साधु संगतें तेरी कहाँ हैं, बतला मुज्झ इसी जाम

इस पर हमने कहा ये भाई, सुन ज़रा इतमीनान
देही में इस संतों परम का, बखशा रब करे काम

करेंगे ख़ाली नां ये देही, तेरे हुक़ुम से काल
होइ हुक्म से ख़ाली ये क़ालिब, सतगुरु साचा दयाल

तब तेरे को सौंप ही देंगे, माटी की ये काया
क्योंकि देह को तेरे देस हीँ, जल व दाना खिलाया

फ़िर है तुझे इख़्त्यार दफ़न तू, करना या कि जलाना
पर मरज़ी से तेरी न बातिन, ख़ाली करके जाना

अंदरूनी भेद

दो अप्रैल उन्नीस सौ साठ में, सच्चा सौदा के धाम
सिरसा जिला पंजाब वक़्त उस, मज़लिस हुई इक शाम

सन उन्नीस सौ अड़तालीस में, सावन शाह जी आप
इस दिन ज्योति में ज्योत समाये, धाम जैमल सिँह ब्यास

अठरा चार बरस सन साठ में, नूरी अजिर जिस्मानी
छोड़ने पहले सोलह दिन ही, शाहा बलूचिस्तानी

दो अपरैल बरस सन साठ में, मज़लिस की एक आम
नीचे हुइ डेरे जो बना था, थड़हा इक वहाँ थान

हाज़िरी हिँ चाली पंचास ही, साधो सेवाहदार
खींच रहे थे पर्दा रूहानी, भेद से इक सरकार

मसताना शा जी ने वचन जो, मज़लिस में फ़रमाये
नूरी रसना से वोह गहरा, भेद रहे प्रगटाये

परम संत सावन शाह जी की, ताक़त अलख इलाही
सेवादार इस जोड़े झाड़न, वाले में हि समाही

साथ ही शा मसताना जी ने, येह वचन फ़ुरमाये
बातों को इन जैसे कहा है, तों हि निभाया जाये

झाड़ने वाले जोड़े मुफ़लिस, सेवादार की राय
जनम दिहाड़ा फ़कीर का इस हि, दिवस मनाया जाये

मसताना जी बेपरवाह जब, भेद गहन प्रगटाहीं
ध्यान बड़े से सेवादार थे, सुनते भेद अलाहीं

सेवादार परेमियों में था, भांडा जिसका जैसा
घट हिँ वचन को उसने उतारा, रूप हिँ बिलकुल वैसा

नाहीँ दिलवाने की ज़रूरत, रहयौ उन बिसेवास
पूरन ताक़त सतगुरु रूप हीँ, ज़िंदाराम थे आप

पर फ़िर भी इक परदा जु उठता, गिरते परदे हज़ार
गाँठ खुली जब भेद रूहानी, अक्ल हुई थी लाचार

जब भी संतों फ़कीरों ने गठ, भेद इलाही खोली
दुश्मन तर्क के परदे लेइ कै, अड़यौ अक्ल ये भोली

सेवादार भी बेचारे तब, कर ही सकते थे क्या
जैसी जिन की समझ थी वैसा, उनने वो काम किया

अगर समझना ही नहीं चाहे, कोई किसकी मज़ाल
कुछ भी समझा उनको ही सके, माहीँ घट देइँ डाल

बातें थीं परे सेवादारों, की ही समझ से दूर
कि अब मौज यहाँ से है जाने, वाली लेइ ये नूर

था नां इलम किसी को मौज ये, सावन शाही आली
तोड़ी पिंजरा चौरासी ये, जाने ही है वाली

खोल दिये थे आज राज़ सबू, मसताना शा सारे
पर सुन वचन ईलाही भी ये, उठयो अक्ल के मारे

जैसे कुछ भी हुआ ही नां था, होने का एहसास
सेवादारों को रहा जैसे, पहले से बिसेवास

या उनको समझाउने की ही, रहयो गरज़ ही क्याह
कौन है क्या था होने वाला, पड़यो अक़ल परदाह

लेकिन आज शा मसताना ने, बस ये पहली हि बार
अपनी नूरी रसना से किया, राज़ अथाह इज़हार

सदके सावन शाही मौज के, करते आज ऐलान
की हैं वे ही अलाही ताक़त, हाज़िर ज़िंदाह राम

इससे पहले मसताना शाह, बारह साल दौरान
अपने लेईं वचन कबु दीये, आता नां ये धियान

बलके मस्ती में भी अगर कोई, बोला सिफ़त अलफ़ाज़
हो जाते थे मसताना शाह, उनसु ख़ासे नाराज़

आख़िरी वचन (सन 1960)

मसताना जी अक़्सर मज़लिसों, औ सतसंगों मँझार
प्रेमी सेवादारों कु करते, रहते थे होशियार

देते हि होये बचन इलाही, सदहातन फ़रमाया
तंग करें नां जीव जो हमको, काम करे ये काया?

सतगुरु की सेवा में रहेगी, देही ये लगातार
शाह सावन के सदके सगरे, दस या बारह हि साल

लेकिन ग़र दुनियावी हि झंझट, फँसयो सेवादारी
चौक़सी मन बेईमान और, छोड़ी चौकीदारी

मजबूरन तब हमकु ये देही, छोड़नी है ततकाल
चोला छोड़ के जाना परसी, तोड़ चौरासी जाल

वरना काल की हिम्मत ही नहीं, चोला ये छुड़वाये
छोड़ेंगे मर्जी से ही चोला, सतगुरु सदके जाये

प्रेमी ग़र मानेंगे हमारे, करते रहेंगे प्यार
तो मौज़ूद रहे इसी सूरत, काया महीँ इसरार

सेवादार अगर मोह बिसयां, लोभ काम अहंकार
फँसयो फेरे माहिँ कुरीतियाँ, दुसकरमों अनाचार

देही का फ़िर इस रही जाये, बतलाओ क्याह आम
छोड़ी चोला जाना हि होगा, हमकु बतन - ए - अनाम

क्यों भई बुल्ला तुम ही बताओ, कहत है क्या इसरार
मन की करना चौकीहदारी, रहना ख़बरेहदार

कोई भैंस के थन में जैसे, लिपटिं लोंक है जाती
दूध नां पीती है वो ज़ालिम, चूस लहू हि लगाती

उस ही तरहा प्रेमी कुछ यहाँ, विचलित और मदअंध
चूसत खून हैं माफ़िक जोंक हि, करते हैं हमें तंग

सन सतावन से ही शहनशाह, करते थे येह बात
फ़रमाते रहे अपना चोला, छोड़न तईं सन साठ

चाल बहुत चली काल बली ने, सच्चाह सौदा माहीँ
रंग ए शोहरत सच्चाह सौदा, काल भरे था डाहीँ

बैठीं घट माहिँ सेवादारों, प्रेमियों काल बलात
की कोशिश मसताना ग़रीब कु, देने को बड़ी मात

लागा भटकन सेवाहदारों, का मन होइ नासाज़
मसताना शाह बातों से इन, ख़ासे हि थे नाराज़

फ़रमाते मसताना शाह थे, बात ये संगत आम
की बातों इन्हीं सच्चाह सौदा, जावै होइ बदनाम

ऐहिँ जीव उठाईं अभाव तो, झिलना होता काया
भार करम जीवों का शाह ने, अपनी देह उठाया

और जु भार अब मसताना जी, रहयो झेलने जाइँ
होने वाले इतना भयानक, जाकी नां इंतिहाइँ

बीच इसी घटना घट गई इक, थी नां जो सुख़दाई
पीठ पे मसताना जी की इक, फोड़ा दिया दिखाई

उपचारक इक फ़तेह बाद से, पट्टियां करने आता
करके बेपरवाह की पट्टियां, साफ़ ज़ख़म कर जाता

लेकिन जख़्म तो धीरे हि धीरे, था आकार बढ़ाता
गहरा होया इतना देखने, वाला ख़ुद घबराता

उसमें काफ़ी सारी हि पट्टियाँ, भर के मरहम लाते
मसताना जी अक़सर तब यही, बातें थे फ़रमाते

जोड़े झाड़न वाले ग़रीब कु, अपने सेवाहदार
प्रेमियों के पड़ते उठाउने, कैसे करम के भार

देखो वरी नां काल की हिम्मत, करता सामने वार
पीछे से ही इसलिये उसने, डारी चल येह चाल

पर हम उनको अपना जिसम ये, देईं नां इसी रूप
छलनी ही करी देंगे इसको, पोट ही पोट कुरूप

मसताना जी बात करत रहे, गहरी घुमाऊदार
पर न समझ सका कोई प्रेमी, न कोई सेवादार

सबकी अक़्ल पे पड़ गया परदा, होये ज़िहन बीमार
समझ सके नां रमज शहन शाह, सब हि सिगारो किबार

रहयो चलत महीना चौथ ये, सच्चा सौदा ही धाम
सेवा तो रहती थी चलत ही, रात दिवस और शाम

खड्डे खेत में रहे थे खुदवा, शहन शाह मसताना
चाहते थे वहाँ मसताना जी, फ़सले ईख लगाना

रोशन और बालू गुरुमुख जी, उन दिन सेवाहदार
निबहाइ रहे सेव थे अपनी, हुकुमे शाह अनुसार

भेजयौ शा मसताना उनको, लाल पुरा जोइ ग्राम
काटने पिछले करम खेत करिं, धन्नाह जाट के काम

डेरा तु चुका डाल था अपना, कबहिं से ज़ालिम काल
मसताना जी दियो थे पहल हि, होने वाला हवाल

कि जो चाहिँ परेमी अगर तो हि, देही ये करीँ काम
वरना देही कभी की हो गइ, बूढ़ी और नाकाम

कहते देह रहीं नाहिँ काबिल, नां इसरार दे साथ
थे शाहा मसताना परीशां, डेरा चलिं ख़ुराफ़ात

थी परेशानी ज़िहन बड़ी इक, पेचीदा व संगीन
कि किसको डेराह का बनाया, जाये हि गद्दीनशीन

बुल्लाह जी का नाम भी आता, ज़ेहन शाह मस्ताना
मसताना संग प्रेम गहन था, उनका जानिं ज़माना

रहत रहे नज़दीक बहुत हि थे, बुल्लाह जी मसताना
रोक रुकावट बिनही शाह के, पास हि आना जाना

साधु इत सतनाम सिंग जी ने, भी था अच्छा कमाया
इस ही लिये था गद्दीह ख़ातिर, नाम रहा उन आया

चरचा–ए–गद्दी मैनेज़र भी, आई रहा था नाम
पर नहीं बन सकी राय मुक़म्मल, पहुँचत कोई मुकाम

महात्मा श्री सतनाम सिंग जी, थे घर बार लुटाये
मसताना जी बचन इसी लिये, ये थे तब फुरमाये

''राई से किया परबत बुल्लाह, परबत से राई सतनाम''
''इक हुआ ख़ाक ए इश्क, और दूजा हुक्म ए बदनाम''

बुल्ला जी थे बहुत ग़रीबी वा, छोटी ज़ात सु आईं
शाह मसताना जी सु नज़ीकी, बहुती थी उन पाई

इतनी और किसी भी शख़्स ने, नज़दीकी नहिँ लाईं
आछी कीन्हीं कमाइ थी साधु, भजनो सिमरन साईं

सेवा तन मन लाई करत थे, शा भी थे हरसाई
नूरी देही शाह मसताना, जी सेवाह कमाई

दूजीह ओर श्री सतनाम जी, थे ऊँचे ज़मींदार
मसताना शाह जी का उनसे, ख़ासा ही था पियार

ऊँची जात भजन औ बंदगी, तोड़ीं घर ही सारा
चौख़ट ईंटे सतीर सभी कुछ, डेरे लाईं डारा

घर सामान सभी सतनाम जी, संगत माहिँ लुटाया
बाबत दोउ ही मसताना इन, वास्ते ये फ़रमाया

''राई से किया परबत बुल्लाह, परबत से किया राई सतनाम''
''इक हुआ ख़ाक ए इश्क, और दूजा हुक्म ए बदनाम''

सेवा भगती अपनी अदा से, बुल्लाह जी था पाया
देह ईलाही की सेवा का, रज के इश्क कमाया

इसी सबब हो गया वो परबत, पहले था जो राई
कुछ नहीं था पर सब कुछ कीया, अरपन सेवा साईं

इधर श्री सतनाम जी प्रेम में, सब ही कुछ लुटवायो
परबत से हो गये थे राई, पर शा हुकुम निभायो

लेकिन शायद शूल गयो चुभीं, किसहीं मान बढ़ाई
घोषित नां किया गद्दी नशीं ही, छोड़न चोला ताईं

तीन चार सालों तक चरचाह, चलत रही लगातार
दी गद्दीह किस बशर को जाये, कौन बनेह हक़दार

सन उन्नीसौ साठ बरस ताईं, होइ सका न ऐलान
रहयौ अघोषित गद्दी नशीनी, साचाह सौदा धाम

क़ामिल संतों फ़कीरों का भी, रहया येह इतिहास
गद्दीह अपने पीछे कभी ही, की नाहिँ घोषित आप

क्योंकि संत हर एक ही क़ामिल, अपना थान बनाता
गद्दी ख़ुद ही करत ईज़ाद वो, बन के ख़ुद का दाता

और जहाँ सतगुरु को होत है, करना अपुन तमाशा
लेइँ खेल मसाला वो अपना, साथ रहीं है आता

चरचाए गद्दी महीँ नाम की, चलते अटकल बाजी
सच्चा सौदा धाम में हो गई, आगाज़े गुटबाज़ी

सन अट्ठावन में ही शहनशाह, करयौ ख़ुद ये बयान
की चाहेगी संगत तो रहीं, देही करत ये काम

क़ामिल संत फ़कीरों का बयां, खाली कबहुँ न जाये
ज़ालिम काल था बात इसी हीँ, नफ़हा ख़ूब कमाये

मोहरा प्रेमी बनाइ बहुत हि, काफ़ी सेवाहदार
लाइ खड़े किये शा मसताना, सामने एक कतार

तारिख़ अपरिल चौदह साठ सन, सच्चा सौदा के धाम
फ़ैसला मसताना लियो करीं, जाउने देस अनाम

अपना कीमती चोला छोड़न, वाले थे जिसमानी
अंतिम कर चुके तय हि यातरा, करने धाम नफ़ानी

मैनेज़र जी को इसलिये ही, मसताना जी बुलाइ
सेवादार सभी ही बुलाने, का दिया हुकुम लगाइ

बुलवाये मैनेजर जी जबू, सकल ही सेवादार
गिनती चाली या पंचास में, हाज़िर रहीं दरबार

रोशन सिंग औ बालू गुरुमुख, दोउ ये सेवादार
हाज़िर नां थे क्योंकि ये दोनों, डेरा सु थे बाहार

हुकुम से मसताना हि शाह के, सेवा हिँ थे तैनात
गाँव लाल पुरा काम करत थे, खेत में धन्नाह जाट

लाइँ सामने शहा मसताना, सारे सेवाहदार
डाला परदा शाह ने अक्ल पे, बैठहीं नेक शियार

बैठे सनमुख मसताना शाह, थड़हे सेवाहदार
लागे शाह मसताना करने, वचन सुधाह बौछार

फ़रमाये शाह मसताना जी, रब्ब के सुनो फ़रज़ंद
करते सच्चाह सौदा धाम ये, आज से सेवा बंद

रह गई आख़िरी सेवा इक हि, सामने हि करवायें
खोदे बीजने ईख जो खड्डे, बंद करि दिये जायें

सच्चा सौदा में तुम सबकी ही, की गइ सेवा अकाम
हो मंजूर गई दरगाह में, देस हिँ उसके अनाम

रहना चाहे जो डेरा वोह अपनी हि मरज़ी रहे
करवाना जो चाहते शादी, जाये घर और करे

पर जो चाहते रहना डेरा, काम उन येह करना
जैसा हुकुम लगाईं मनेज़र, माहीँ उस हीं चलना

सेवा प्रेम सहित वो करे औ, सिमरन भजन बनायें
काम करें न अभाव का कोई, भारी कर्म हो जायें

सेवा समझा दी गई सबहूँ, सेवादार बुलाये
बंद दिये करवा सबू खड्डेह, पहले जो खुदवाये

औसर उस बालू गुरुमुख और, परेमी रोशन लाल
डेरे में नां थे लगी सेवा, नाहीँ थी इसी ख़्याल

सिंग हज़ारा कु लगे भेजने, ले के जीप बुलाने
रोक दिया मसताना शाह ने, बाद हिं देखन लाने

फ़िर मसताना शाह ने गाड़ी इक वहाँ मंगवाई
देखा उसमें लेट के अंदर, और वचन फ़रमाई

लेटी ही के हमको पड़ेगा, आना लौटत बारी
देह नां आती इसमें पूरी, और मंगाइ गाड़ी

फ़िर देखा शाह मसताना ने, लेट के ऊपर सीट
लागी गाड़ी सही तो बोले, ये ही रहेगी ठीक

आती इसमें देह हमारी, लेटी पूरी सारी
वापसी में आते समय भई, ये हि अपनी सवारी

दिल्ली होन से पहले रवाना, मसताना जी शाहा
लिखने आख़िरी बचन मनेज़र, को था हुकुम लगाया

मसताना शाह मैनेज़र से, लिखने को फ़रमाये
बोलयौ लिख जो कहत रहा मैं, वक्त नां बिरथा जाये

''प्रेम रूप में गुलबहार, जुगों जुग से''
''दोनों जहां का साथी, हर घट में मौजूद रहता है''

बाद में लिख लूंगा मैं साईं, मैनेज़र अरज़ाये
नहीं अभी लिख कुत्ता किरोध में, शहन शाह फ़रमाये

मैनेज़र झट काग़द कलम से, बचन लिखे जु लगाये
सामने अपने ही दीवारों, पर उनको लिखवाये

"प्रेम रूप में गुलबहार, जुगों जुग से"
"दोनों जहां का साथी, हर घट में मौजूद रहता है"
(शाह मसताना जी)

लिखवा कर ये वचन शहन शाह, संग में सेवादार
दिल्ली वासते होये रवाना, साईं आख़िरी बार

पहले बैठन से गाड़ी महीँ, बोलिं शाह मसताना
चप्पाह टुक्कर सच्चाह सौदा से, जा कोई ले आना

टुक्करा पाक़ ये सच्चाह सौदा, इस मसताना ग़रीब
को दोबारा होवे न होवे, शायद फ़िर ही नसीब

मसताना जी इस नाईं किये, बात हि बात इसारे
सेवादार ही समझ सके नां, रमज अक़ल के मारे

पड़ गया परदा अक़्ल पे सबकी, बूझ न कोई पाया
मसताना शाह नां आने का, वापस देइँ इशारा

बातें समझना सेवादारों, के नहीं बस की बात
क्योंकि चाहा खुद नां शहनशाह, ज़ाहिर होइँ हालात

ज़ाहिर ग़र ये बात हो जाती, होती ये कोताही
कि मसताना जी का सफ़र येह, आख़िरीह दुनियावी

तो फ़िर सेवाहदार परेमी, जाने ही नां देते
कैसे दरगाहों के हि पूरे, होत लिखे जो लेखे

पर मसताना शाह तो अपना, फ़ैसला लियो ठानी
तजना है तत पाँच का फ़ानी, चोला ये जिसमानी

उपचारक वो जिससे शहनशा, को ईलाज कराना
के मिलने से पहले प्रेमियों, अर्ज़या शा मसताना

आख़िरी अव़फराम

अंतिम भलाई (कल्याण) मोक्ष

आये हैं जब देहली साईं, घूम ही लिया जाये
मसताना शाह ने की पूरी, इच्छा सबको घुमाये

पहुँचे लाल किला जु शहनशाह, देखा वहाँ का हाल
देखी गंदगी वहाँ बेशतर, मंज़रे बदबूदार

देखा हाल तो सेवादारां, शहनशाह फ़रमाये
बादशाह टप्प गये सत सत, फ़िर भी दुर्दशा पाये

दिख़लाते हमीं चलके तुमको, चौखटी एक फ़क़ीर
मिलती शैअ दिलदोज़ वहाँ हर, दिल निहाद औ पजीर

प्रेमियों को सब वहाँ ले गये, अपने साथ ही शाह
सूफ़ी निज़ामुद्दीन औलियाह, आलीहशां दरगाह

औसर उस चल रही कव्वालियाँ, रूहानी था धमाल
मस्ती शोभा माहौल देख सब, प्रेमी होये निहाल

फ़रमाये हुइ शाद शहनशाह, देखो है ये नज़ीर
पाछैं नौं सौ पचास बरस भी, शौक़ते दीन फ़कीर

लागत मेले हि यहाँ आज भी, नात सुनाये जाते
सज़ती महफ़िलें दाम हिँ उसके, कीये सजदे जाते

मसताना जी यहाँ सु चांदनी, चौक की गयो दुकान
वास्ते सेवादारों ख़रीदे, कपड़ों के कई थान

करवाने फोड़े का थे आइँ, जिसके पास ईलाज
फ़िर सीधे दूकां हिँ तबीब की, पहुँचयो नेक निहाद

जब आयो चारागर देखते, बोला जांच करायें
करके जाँच कहा लगे टीका, लेटिं ज़रा लगवायें

सुनके उसकी बात शहनशाह, उसको ये फ़रमाये
आया बेशक लेटन का समय, बस तुझ पकड़न आये

औसर लेटते शहनशाह जोड़ी, हाथ किया नमोकार
धन धन सतगुरु तेरा आसरा, बोले आख़िरी बार

धन सावन निराकारा तेरा, आसरा हि फ़रमाये
देखा जानिबे सेवादारों, मुरसिद तार मिलाये

चाराग़र थे मसताना शाह, ज्यों हि टीका लगाये
लेइँ आख़िरी साँस शहनशाह, ज्योत हिँ ज्योत समाये

वो मनहूस तारीख़ अठारह, बरस उन्नीस सौ साठ
दूकां पे चाराग़र देहली, बरपा हादसा ख़ास

वो दरवेश की जिसने सावन, शाही मौज हि सदके
लगभग पूरे हिंदुस्तां में ही, बजवाये थे डंके

तीस सु पैंतीस बरस क़रीबन, रूही नूर दिखाया
झूठे जग रहीं जीवां सच्चाह, सौदा करन सिखाया

सूरमां जोधा बहुत बड़े भी, मान हि गये मन हार
होश भूल गये सामने जिस हि, माने होये मक्कार

जो भी आमो ख़ास था उनकी, नूरी नज़र हिँ आया
रखदी उसकी बदल फ़कीर ने, दुनियावी वो काया

गहरी शान्ति अजली ख़ामोशी, चिर निदराह गंभीर
लेइँ पड़ी है सामने नूरी, देह इलाही फ़क़ीर

करना है बिसवास ही मुश्किल, हैं ये वो दरवेसा
जिसने तारी दुनिया हि भव से, बनहिं ग़रीब हमेशा

जिनकी सोबत सजती बहारें, जाते जहाँ बा नूर
दुनिया देखीं झलक इक जिनकी, जाती होइ मसरूर

क्या वो खोईं बहारें खिज़ां में, या गया लूटी काल
क्या न सोबत नूरी मिलै हमें, अब ये किसी हीँ हाल

सहसर अटके सवाल ज़िहन में, एक भी नाहिँ जवाब
उजड़ा गुलशन लुट गई खुशियाँ, परयो आई अज़ाब

सेवादार परेमियों का उस, वक्त का हाले बयान
साख़ी हादसा रूहफ़र्सा ये, काल हि बदी लामान

झटके में इक बैठे बिठाये, निकलया सब कुछ हाथ
बेपर बेज़र बेदर बेघरे, होये बिन शा अनाथ

समझ न आया हो ही गया क्या, क्या ये ग़रदिस आई
होत भरोसा आँख पे नां था, गुल जो काल ख़िलाई

पिछले कुछ दिन हिँ जो शहनशाह, मसताना फ़रमाये
वचन सभी बिजली की हिँ माफ़िक, ज़ेहन दिल पे छाये

संत अनिक औ महान फ़कीरां, अपना वो जिसमानी
चोला छोड़ा आ देहली में, तजयो क़ालिब फ़ानी

इसीलिये देहली को कहत हैं, लोग नरक का दुवार
जाता देहली कु कहा संतों, हि सहरा ए संहार

संत फ़कीरों अनिक हि देहली, ज़ुल्म बड़े गये ढाये
ख़ौलत तेल किसी को डाला, केहिँ सूली चढ़ाये

आरे से चिरवाया किसी को, बहुताअ ज़ुल्म कमाया
हाथी पाँव हि नीचे किसी को, ज़िंदा कुचलेवाया

शा बू कलंदर शा मसताना, और अलीह मनसूर
नां ही जाने कितने खा गया, काल बलीह मग़रूर

करते संत फ़कीर हैं तुलना, देहली अंत मुकाम
बरपया दिल्ली उसका किसी को, था नां तनिक भी भान

सच्चा सौदा में तो किसी को हि, ख़बर नां कानों कान
अबहूँ लागयो पता किसी नां, होया सूना जहान

सिरसा में न लागा पता अभी, दर्दीलाअ अफसाना
मांझी कश्ती मौज रूहानी, शहन शाह मसताना

छोड़ गये रोते हुये सबको, काल देस मायावी
निकल गये इक सफ़र पे लंबे, क़ालिब तज दुनियावी

रत्ती भर नां गुमां था किसी को, ऐसे पल भी आने
देख सकेंगे न मुखड़ा नूरी, जायें गुज़र ज़माने

ईलाही परवाज़

सत धाम की ओर उड़ान

सच्चह सौदा में रहे पीछे, परेमी सेवादार
सोचा होगा सपने भी नाहिँ, पड़्योह ऐसी मार

दरसन होइँ न शाह मसताना, कबहूँ उन उसी रूप
जैसे तकते आये अभी तक, नूरी वोह सवरूप

देख सकेंगी न आँखें अब कबु, नूरी वो मुसकानें
करम काटती गारियाँ मीठी, आईं कौन सुनाने

हाय ज़लम सितम होया भारी, बिन आइ गये मारे
तरसेंगे सुनने वो अनामी, बोल इलाही सारे

कौन कहेगा अबू हमें पुट्टर कुत्ता संग ही पिआर
एक बार वो झिड़कियां देना, सब दिन करना दुलार

सच्चाह सौदा प्रेमी तक रहे, होंगे शाह की बाट
आयेंगे मसताना शा जल्दी, होईं सेहतेयाब

देखेंगे बेचारे वहाँ क्या, होया क्या उनू साथ
शहन शाह मसताना की लगी, हाथ तो नूरी राख़

क़ामिल संत फ़क़ीर रूहानी, दुनियां तारने हार
हाय नां कभी आवसी ऐसा, होईं मुद्दतें हि पार

हँसता होगा काल वोह ज़ुल्मी, कामयाब होइँ चाल
छीना ग़ुलशन हारा ग़रीबां, ज़ालिम पातकी काल

काश ये दिन न देखना पड़ता, हाय न दिन ये आता
अतिआचारी काल हमें शाह, से पहले ले जाता

शाह मसताना का जो पहुँचा, जिस्म अनामी वो धाम
सच्चा सौदा गेट पे मच गया, लोगों में कोहराम

डेरा अंदर लगते ख़बर ये, मच गया हाहाकार
इधर उधर लगे लोग भागने, होईं अक़ल बेज़ार

जैसे मसताना शाह नूरी, देहि नीचे उतारी
देख के नूरी देही शाहा, होश ही गये मारी

आया न समझ ही किसी को, खेल क्या खेला काल
रो रो सेवादार परेमियों, होइ गया बुरा हाल

फ़ैल ख़बर गई माफ़िक बिजली, मच्च गया हल्ला सारे
हो गया हादसा सच्चा सौदा, जीव नसीबां मारे

मचयो ख़लबली कुल हि इलाके, हो गया सब थाँ शोर
छाये बादल सच्चाह सौदाअ, गरदिश के घनाघोर

होया हादसा बहुत भयानक, दीया कलेजा चीर
फ़ैलते ख़बर ये सच्चा सौदा, होयी भीर ही भीर

आँखों पर नां हो रहा अपनी, आज किसी को बिसास
सामने मसताना शा नूरी, देही पड़ी थी पास

पर ये सच था उतना ही बड़ा, जेताह ज़ालिम काल
मुँह नां मोड़ा जाता हक़ीक़त, किस ही सूरते हाल

सच्चाह सौदा के इतिहास में, दिन था सबसे काला
नाच दिखाया काल ने नंगा, ख़ूँख़ारी बिकराला

हाल कुकारा चीखो पुकारी, चीत्कार, हाहाकार
आसमान सातोंह लोगों ने, चिल्लाइ दीये फार

आपस में गले मिल मिल रोते, थोड़ा चुप हो जाते
देखी मंज़र फूट हि फूट के, रोने फ़िर लग जाते

सूख़ गये थे आँख के आँसू, होइँ गले थे भारी
बोल न सकते रूँधे गले से, देखत आँखे फ़ारी

हो नहीं सकती बयां अवस्थाह, देखी डेरा माहीँ
बच्चे बीबियां जवां औ बूढ़े, रो रो भरते आहीँ

हालत ए बदहवासी सारे, होश ही अपने खोइँ
जगहा जिसको मिली धाम जहाँ, बैठ खड़ा पड़ा रोइँ

मैदाने जंग माहीँ जैसे, बिख़र पड़ी हों लाशें
हाथ किसी के न पाँव किसी के, निकली काहू आँखें

कोई सिसके घिसटता कोई, मांगे पानी कोई
मरता कोउ तड़पता है कोउ, चीख़ता कोइ रोई

ठीक था वैसा ही ये मंज़र, सच्चा सौदा भी आज
सुन के कुछ कइ देख के घटना, खो हिं बैठे आवाज़

ऐसा आया ज़लज़ला सच्चाह, सौदा सिरसाह धाम
होईं जैसे शिकार ए प्रलय, सारा ही था जहान

जहाँ भी जैसे जिसको कहीं सु, मिलयो ख़बर मनहूस
सच्चाह सौदा भागा उसी पल, छोड़हीं काम ख़ुसूस

मानो आज हर इक पग डंडी, सड़क हि सिरसा जाई
भाग पड़ा हर तरफ़ सु हर कोइ, जिसको ख़बर सुनाई

लगते ख़बरी संगतें प्रेमी, उपराअ और ग़रीब
भागे सिरसा बिलख़ते रोते, कोसत अपने नसीब

सांसी बावरी बालमीक औ, कूचबान चरमकार
भेडकूट बिसनोई व गूजर, बानिये सेवादार

जिस भी हाल थे उसमें उठकर, दौरी पड़े सब आज
गली सड़क पगडंडी बसतियां, शोरो गुल बे हिसाब

गाँव के गाँव गये हो खाली, सूने होइँ मुंडेर
भौंके कूकर चहकी न चिड़िया, चहुँ दिस छाइ अंधेर

खेतों छोड़ के पानी सूना, फ़सलें और ख़लिहान
रोते मरते आहें हि भरते, भागे सिरसा किसान

माटी नूरी मसताना तबू, सच्चा सौदा लियाहीं
उमर बख़श दो सेवादार थे, डेरा माहीँ नाहीँ

शाह मसताना सेवा इनकी, बचन से अपने ख़ास
लाई दियो थे लाल पुरा महिँ, खेत में धन्नाह जाट

इसलिये दोनों कुकर्म काल के, व शैतानी आमेज़
बेख़बरे बेचारे बाबते, घटना सनसनी ख़ेज़

मैनेज़र साहब ने हज़ारा, चालक जीप बुलाया
जीप से दोनों सेवादारों, को लाने भिजवाया

दे दी सख़्त हिदायतें ये भी, उनको हुकुम के साथ
ख़बर नां होवै सेवादारां, सच्चा सौदा हालात

साथ ही ये भी कहा वहाँ हैं, कुएँ कुंड व तालाब
दिया अग़र बताइ कि शहनशाह, छोडिं चोला नायाब

देई डूब वहीं पै हि रोशन, ततछन अपनी हि जान
इसलिये बहला फ़ुसला कर ही, ले आना उन्हें धाम

लागिं पाये न भनक ये उनको, कोई भीह तरक़ीब
ले आना बस उनको यहाँ पे, आज बनी कै रशीद

जीप करी तैयारी वक़्त उसी, लाल पुराह रवाना
जाने किस था हाल हज़ाराअ, और क्या मन हिँ ठाना

कैसे अपनी जुटाइ वो हिम्मत, कैसे कीया जाना
पछने पे बतलायेगा क्या, करसी कौन बहाना

हौसला दिया शायद येह भी, शहन शाह मसताना
रूप से अंदरूनी हज़ारा, कि नहीं तुम घबराना

पहुँचे होंगे पास वहाँ जभी, सेवादार हज़ारा
उनके सामने ही टिकने का, कित सेह हिम्मत धारा

इतनीह ख़बर बड़ी देने से, रोकी कैसे ज़बान
आज तु रोता ख़बर ये देता, जर्राअ जर्राअ जहान

कुदरत की हर शै थी आज तो, करती चीख़ पुकारी
था ये इक ही सवाल ज़बां पे, काल की क्या मक्कारी

कन कन बूटा हि बूटा रोता, रोइँ जगत ये सारा
हाल में इस रोके थे तूने, आँसु कैसे हज़ारा

आज का भी दिन था कोई दिन, सालिम होइँ कंगाल
डाका मारया बेरहमी से, निरदयी निरदट काल

बेरहमी दिख़लाई अधम वो, बात हि बाहर बयान
कर दिया बिन माँ बाप हि सारा, साचाह सौदा धाम

जैसे कैसे पहुँचे हज़ारा, लाल पुरा महिँ गराम
खेत में धन्ना जाट के दोनों, लग रहे करने काम

देख हज़ारा को औचक वहाँ, दौड़े दोनों जाये
लिपट गये कहतेह मुरशिद के, हैं दरबार से आये

जोश में दोनों सेवादारों, ने था लाया नारा
पर कहीं दूजी दुनिया में ही, गुम था आज हज़ारा

दे नांअ पाये जवाब नारा, बोल सके ये हि बोल
डेरा सच्चाह सौदा चल रही, सेवा बहुत ही ज़ोर

मसताना शाह ने तुम दोनों, को है वहाँ बुलाया
बालू गुरुमुख बोले चलत हैं, पी के चाय पिआला

तबहूँ कर दिया मना हज़ारा, नां ही वक़्त है यार
चलना इस ही वक़्त हमें अभी, होइँ झटपट तैयार

बात परे हुइ समझ से सारी, मुख था आज हज़ारा
आख़िर बात थी कौन हि जा पै, इतना था मुरझारा

बालू और रोशन उस वकत हि, दोउ ही सेवादार
साथ हज़ारा हो गये ततछन, माहीँ गाड़ी सवार

सिरसाह डेरा सच्चाह सौदा, होये धाम रवाना
दोनों सेवादार थे ख़ुश जा, मिलिहिँ शाह मसताना

मिलिसों डेरा साधुओं सब से, करसों दरसन नूरी
पायेंगे सुख सेवाह नित ही, साईं रहीं हुज़ूरी

लेकिन दुनियाँ अलग ही खोये, होइँ प्रेमी हज़ारा
गहरी लेईं उदासी दिल में, देखेंगे जु नज़ारा

तक़रीबन लेइँ जीप वहीं से, गुज़रीं रोज़ हज़ारा
थाने पास से जीप गुज़रती, कच्ची नहर ही द्वारा

जीप निकालन नहर ढलान से, बचते बचते सारा
अच्छा बहुत ही अनुभव था रहा, चालक जीप हज़ारा

लेकिन उस दिन ख़्याले हज़ारा, सगरी समझ हि दारी
खो गइ जाने सारी कहाँ थी, उनकी वो हुशियारी

उस ही जगह आई ढलान पे, रुकयौ जीप की चाल
रुक ही जाती जैसे वहाँ पे, जीपें कइ और कार

कीयो जतन पै जीप न निकली, सोचा सेवादारा
रोज़ निकाली जाता था लेइँ, आज हुइँ क्या हज़ारा

वापस थी आ जाती ढलान हिँ, गाड़ी बार ही बार
बालू गुरुमुख रोशन दोनों हि, हैरां सेवाहदार

आख़िर बालू गुरुमुख बोलया, भाई आज क्या बात
रोज़ यहाँ से हि जीप निकाले, बैठता क्यों ना हाथ

जीप कदे हि न इत्थे सी रुकदी, अज हि की गल की ज्ञान
जीप वी ओही तूँ वी ओही, कित्थे है तेरा ध्यान''

जानते थे सब कुछ वो ही है, दोनों सेवाहदार
पर न जानते बदल गया समय, खो गई मौज बहार

ले ली करवट बड़ी ही वक्त ने, लुटया सारा जहान
बाग़ बगीचे लुट गये सारे, रहि गया बस वीरान

माना फ़िर आ जाती बहारें, रहिँ आबाद सँवारा
पर है यहाँ तु छोड़ चला गया, ख़ुद ही गुलशन आरा

बार बार करने से जतन थी, गाड़ी हो गयी पार
चल दिये तीनों होकर जीप हिँ, फ़िर दोबारा सवार

ले पहुँचे जब हम दोनों को हि, सच्चा सौदा हजारा
जान निकल गइ देखी वहाँ का, दरवाज़े हिँ नज़ारा

डेरे में थी मची कुरलाहट, सब हिँ ओर था रोना
चारों ओर थी भीड़ खचाखच, खाली न कोइ कोना

दौड़े भीड़ कु चीरते पहुँचे, हम दोनों उस थाहा
नूरी देहि लिटि थी जहाँ पर, मसताना जी शाहा

ख़िसकी पाउँ तले की ज़मीं थी, नैन हुआ न बेसास
जानत देर लगी नां हज़ारा, था क्यों इतना उदास

हाय आज ये दिन हुआ कैसा, वासते देखिं नसीब
ख़्वाब में भी न सोचा काल यूँ, बदला लेईं रक़ीब

बाहर इतना शोर था ऐसी, मचयो चीख़ो पुकार
भीतर मायूसी थी वो छाइ, घोर स्याह अंधकार

किससे जाईं अरज़ करें यहाँ, अक़ल ही थी ख़ामोश
अंधेरा इतना कि जो ले ले, बरहामंड आगोश

होय बिधना लुटयो हमारी, मौजे सावन शाही
शिकवा कैसे किससे करें जा, रोके कौन तबाही

सेवादार प्रेमी थे सारे, छाती पीटते हाथ
फूट फूट और लिपट लिपट ही, रोवते मिलहीं साथ

सारा हाल परे था समझ से, समझीं नां कछु पाये
रोत बिसूरते धीरज आपस, इक दूजे हि बढ़ाये

पर था हौसला कैसा कहाँ सु, था रोना ही रोना
खुद ही देते तसल्लियां मन को, कि होवै जोइ होना

फट के मुँह को आता कलेजा, याद जु आते बयान
कौन बुलायेगा पुट्टर हमको, प्यार सु नूरी ज़बान

प्यार से अब कहि कुत्ताह हमको, कौन बुलावैह पास
काटेगा अब झिड़कियां दे के, कौन जनम के हि पाश

किसके हुक़मीं सेवा करेंगे, किसके हुकुम निबाहीँ
देने वाले हुक्म तो सो गये, गहरी नींद अलाहीँ

देइँ अब हमें कौन वो लंगर, परेम भरा परसाद
किसकी सौबत करेंगे अब हम, आप सा जो पुरताब

कौन मिले अबू हमको मुरसिद, जो दो जग का वाली
जिसकी हो हर बात अदाअ हर, नूरी और निराली

बात हि बात में वरी कहेगा, वंजो भैणया कौन
बल्ले बल्ले वाहा वाहा करके, देगा हौंसला जौन

ले डंगोरी चलन की तोरी, डेराह माहीँ अदा
रूहानी दरसन तोहरे अब, लेंईं कहाँ से हि पा

पूछेगा येह कौन अब पुट्टर, रज्ज क्याअ होई गया
देना कौन हुक़ुम यहाँ साचा, सौदा कही छोहरा

माफ़िक रहते ख़िला गुलाब जो, डेरा हिँ आलीशान
नां नां रंगों हिँ रंगा जाता, डेराह जित कुल धाम

सारी सारी रात हि था जहाँ, सिमरन भजन ही काम
बटता बूँदी जलेबी का था, जित परसादा तमाम

सोना चाँदी नोट औ कंबल, डालर बसन वा थान
और भी जाने क्या क्या हि यहाँ, बांटाह जाता धाम

सूने उनके बिन हैं आज ये, फ़सलें और खलिहान
वीरां डेरा पड़े बने सबू, गुफ़हायें वा मकान

रंग इमारतों के जु चमकते, पड़ गये फ़ीके आज
खड़े बुलंदी बुरज वो आली, लगते कितने महाब

खो गई सेवा की वोह मस्ती, नारों का खोइँ नाद
जाने खोइँ कहाँ वो मिठास हि, थी जो कभी परसाद

हाथियों वाला द्वारा भी अब, शान न पहली दिखाइँ
वो मायूस झुका हुआ जैसे, आज नज़र हि था आइँ

सच्चाह सौदाअ हालत सबकी, होइ पागलों वाली
हाय रहा नहीं बगिया सच्चाह, सौदा का क्यूँ माली

करने कोठरियों हिँ पड़े बंद, साधु कुछ वहाँ लाई
डर था वो कुछ ऐसा करे नां, हो नां जो सुखदाई

एक महात्मा पलटू ने तभी, लिया ज़हर था खाई
करके बहुती दौड़ो धूप था, उनको लिया बचाई

ऐसे ही जब सावन शाह जी, देह तजी दुनियावी
प्रेमी एक ने आइ बियोग हिँ, छाल रेल से मारी

कूदी बियास नदी के अंदर, अपनी जान गँवाई
ऐसा ही माहौल था बनया, इसलिये की सख़्ताई

पर हालात को करना काबू, मुश्किल होया भारी
इस ही वजहा डेरा लगाई, पुलिस हि काफ़ी सारी

डर था अनहोनी घटना नहीं, कोई भी घट जाये
क्योंकि काल तो चाहता ही था, आफ़त बढ़ ही जाये

जैसे तैसे करहिं मैनेज़र, आख़िरी इक संस्कार
करने की तैयारी शुरू की, होइँ ख़त्म हाहाकार

भारी भरकम लगा था पहरा, भीड़ बहुत थी आई
रखने पाँव जगह नहीं मिलती, ख़िलक़त न थी समाई

होये गाँव के गाँव हि खाली, शहर भी सून सुनाड़
जैसे लग गयी आग हि दुनियां, टूट पड़ा हो पहाड़

नूरी देही शाहा मसताना, तख़्ते पै था लिटाया
आख़िरी दुनियावी अस्नान था, उनकु यहाँ करवाया

चोल सफ़ेद पाजामा नूरी, देही को पहनाया
बांधा साफ़ा गया सफ़ेद था, नूर न रूप समाया

पहना होया पहले सु चोला, साफ़ा व पायजामा
जूती चश्मा डंगोरी रखा, संभाली सब सामां

पहरे बहुत ही भारी अंदर, मसताना जी शाहा
की नूरी देही को था अबू, चित्या अंत लेटाया

दरसन मसताना शा आख़िरी, वास्ते ही इंतिज़ाम
भारी बहुत ही किया हुआ था, लाईं सेवा तमाम

लंबी लंबी लाईं कतारें, अंतिम दरस कराईं
देखीं नूरी सरूप शाह का, रोते मारी धाईं

दरसन पाछैह मैनेज़र जी, देखिं होता हंगाम
नूरी देही शाह मसताना, देइ दी अगनी दान

चार ही ओर मची कुरलाहट, दीया रोई जहान
रो रो मिलने गले हीँ आपस, उतरिं जमीं आसमान

चिल्लाहट दिलग़ीर वो साधुआं, सुनहीं चीखो पुकार
होगा रोइ दिया करतूत पे, अपनी शरम से काल

आँख हमारी सामने जलता, शाहा नूरी शरीर
धू धू उठती लपटें चिता की, रहियौं ज़िगर को चीर

सारा सच्चा सौदा हि जल रहा, आग चिता के माहीँ
मसताना जी की सोहबत की, यादें सबकु जलाहीँ

चित्या थी हमदम की ये विरहा, या मुरसिद की परस्ती
सतगुरु साचेह की यादें थी, या बख़्शी थी जो मस्ती

प्रेमी रोशन विरहा चिता की, अंतर अगनीह लांघ
चित्या जलतीह मसताना शाह, मार हि गइँ थे छलांग

साथ खड़े हुये साधुओं ने हि, ब मुश्किल था बचाया
पकड़ीं मुश्किल से इक कोठड़ी, अंदर बंद कराया

मसताना शाह नूरी देही, समुख हि नज़र हमारे
अगनी सागर मौजां सिमटती, बूड़त लपट शरारे

दिल हिँ गहरी मायूसी सबके, सीने माहीँ गुब्बार
दिल शिगाफ़ मंज़र रहे देखत, हौसले कु सभी हार

रोते रहयो मारे नसीबां, बिलख़ते सारे साथ
बेकस बेबस होकर अपने हि, माथे पै धरी हाथ

परम संत शाह सावन जी ने, मसताना जी लीये
पूरे उतरे वचन सभी वोह, जो ही उनने कीये

मसताना न मरे यूँ बचन था, बहुता कुछ हि करेगा
सैकड़ों मसताने ये बनाइ, तबहिं जाई मरेगा

साधुओं में मसताना जी ने, अपने भरया क़माल
कि हर इक रहा साधु अपनी ही, केवल इक ही मिसाल

साधुओं को देते शहनशाह, ऐसे रहे उपदेस
सारे परेमी साधु हो गये, रूहानी वफ़ाकेश

सेवा लेइँ कठिन थी साधुआं, भूख़ा रहन सिखाया
हालत का हर करने सामना, डटहिं रहना बताया

क्योंकि देत चुनौती हि हर समय, संत फ़कीर है काल
इसलिये मसताना चेताई, की रहना होशियार

फ़रमाते मसताना जी पुट्टर, तुमकु ये ज़िंदाराम
अंदर ही गुरु दीया तुम्हारे, जपहुँ इसे सुबो शाम

हर घट माहिँ मौज़ूद गुरु येह, पल पल रहत है साथ
जब भी याद करोगे इसे तुम, करके हिरदाअ साफ़

वरना रोवसीं बाद हमारे, गुरु गयो हमें छोड़ी
अंदर वाला रहता गुरु सदा, जात न नाता तोड़ी

जल के रूहानी चित्या होयी, अंगारों सेह राख़
छोड़ गयी यादों के शरारे, करते दिल जोइ ख़ाक

कीये जिसने दरसन मौज के, उनका संग है किया
जलत चिता है आज भी उनके, अंतर फुंकता हिया

आज भी उनके दिल हिँ चिताहे, याद न ठंडी होई
सोबत रहयो जोइ शहनशाह, बुझने न दिया कोई

रोम रोम उस जलती चिता से, परेमी सेवादार
सुलगाये हुये रखे अभी तक, इश्क ऐ साइँ मशाल

हैं ये शोले इश्के इलाही, बुझ नां सके ये आग
सीने उनके रहसी सुलगती, रब्बीह बन ये रुदाद

सच्चा इश्क और सच्ची सोहबत, जो हि कमाने वाले
साधु सेवादार थे गये सुन, साईं वचन निराले

नूरी रसना और श्री मुख से, शहनशाह मसताना
वचन जु आख़िरी निकले थे वो, रहयौ बनहिं खज़ाना

''प्रेम रूप में गुलबहारजुगों जुग से दोनो''
''जहान का साथीहर घट, हर घट में मौजूद रहता है''
(शाह मसताना जी)

वचन बलूचिसतानी के येह, परेमी सेवादार
बैठे शिद्दत के संग बहुत ही, इनहिं बनाइ आधार

आख़िरी वचन शहनशा जी का, लाउने को ब्यौहार
जान भी देई पूरे करने, अटल हैं सेवादार

साधू कुछ हैं समेटे अब तक, उनकी महोब्बत साथ
कहते चिराग रहेंगे रोशन, जब तक है काइनात

रहिं मशाल ए इश्क ये जलती, बजते रहेंगे साज़
फैलती खुशबू बनहिं रहेगी, सोहबत की वो याद

चलते रहसीं इलाही लंगर, नाम पे उनके सदा
जब लौं दुनिया ये रहीं कायम, नाम ये जाईं लिया

वचन आख़िरी शाह मसताना, का जन जन पहुँचाने
मक़सद अपना चुकायो बनाई, आशिक सच्चे दिवाने

बहुत परेमी साधो आज भी, सतगुरु के दीवाने
साथ रहे जो शाह मसताना, गाईँ उनके तराने

जिनने सीखी करनी महोब्बत, सीखें ली रूहानी
प्रेम पयाम ए शहनशाह हैं, घर घर देईँ अनामी

आज के काल पसारा दरिया, जीव को करत सचेत
लागे सेवा साचे हैं साधु, एक नहीं हैं अनेक

सावन शाही मौज के सदके, संत हि उस रूहानी
परेम कियारी पुष्पे नियारी, बोईं बलूचिस्तानी

फ़ूल ख़िले दरगाही अलाही, उपवन बे ही शुमार
मौज ए मसतानी जिस रहती, हर मौसम नौं बहार

पाईं जिस महकास रूहानी, शाह मसताना सार
भूल नां पाईं जनम जनम वे, साचा इश्क औ प्यार

इश्के हक़ीक़ी के घोड़े पै, साधु परेमी सवार
उनकी महोब्बत सोबत यादों, रहत हैं दीपक बार

कशिश तड़प उनकी वो अनामी, नूरानी वु अदायें
मीठी गारियां ख़िल ख़िल हँसना, मस्ती भूल नां पायें

आँखों में जब आयेंगे आँसु, विरहाअ जलायेगी
नज़र शहनशाह हर आँसु छवि, तेरी ही आयेगी

साधु कुछक पुराने दीवाने, दुनिया मानिं न माने
देह तकलीफ़ न परवा करते, लागे बचन निभाने

करते बचन शहनशाह पूरे, करम बचन मन लाईं
परवाह नाहीँ मुसकिल बाधा, सतगुरु जो जु सहाईं

बेपरवाह बनाइ जु सैकड़ों, मस्ताने ही कहेंगे
प्रेम चिराग जला गये ऐसे, रौशन नित हि रहेंगे

''रखी ताज़ा ज़ख्म मुहब्बत दा कित्थे प्रीत नां पुराणी हो जावे''
''क्यों गुर चरणा तों दूर होया गुर सिख वि आवारा हो जांदा''

अरदास

क़ामिल मुरशिद शाह मसताना, आयो तुमरे दवार
काटि चौरासी फ़ेरा सतिगुरु, अबकेहु तारो पार
कामिल मुरशिद----

थान बलूची किया परगासा, परगट रूप औतार
ओट लअई बाबा जयमल सिँह, सावन शाह छतवार
थाँव-थाँव दिया हिंद में साइँ, दीवा नाम का बार
बेद कतेब बिनु कियो सतसंग, जीव देईं सबु तार
कामिल मुरशिद----

धन - धन सतिगुरु तेरा हि आसरा, नारा अर्सुं लिआयो
आछर - आछर मसताना शाह, मुरसिद साँइ धियाओ
शरियत - रीत - रवायत की नाहिँ, समुझे कोउ दरकार
मुरशिद हीँ हस निरिखियो अपने, धन धन धन निराकार
कामिल मुरशिद ----

जोड़े झाड़न वाले बने जो, कमतर नांअ करतार
देखहिं बेपरवाही तोहरी, भौचक होइ संसार
मस्तमौलगी मुख़रा नूरानी, मीठी बानी पिआर
दिखा रिसाइ ढिग ही बैठाईं, ततछन करिहौं पिआर
कामिल मुरशिद ----

करम भार सब लेइँ औगुनियाँ, मुकत कियो उनु भआर
भुगत गये ख़ुद पातक उनकेह, देहि लेइँ आजआर
बेपरवाह नां देखा ऐसा, गुज़रे कलप हज़आर
सुनि–गुनि संत जगत हीं बहूते, तमसा नां भरतआर
कामिल मुरशिद––––

रात दिवस लइ सेवा साधुआँ, होईं फ़ना हंकार
मनमुख़ जीव लखायो करिश्में, लायोहु गुरुमुख तार
बात हीं बात बनाइ नमूने, सत मारग दियो डार
पलभर की सोहबत ही साईं, तारयो पार अपार
कामिल मुरशिद ––––

ताक़त क़लमा ए नाम अनामि, बगसी जीवां तमाम
उतरे नाम अनंत अथाह जो, पाअईं ज़िंदाराम
राचे सिमरन नाम जो साईं, राम रसु पीये जाम
अनुभौ हाज़िर नाज़िर यान हीँ, पहुचे सचखंड धाम
कालिम मुरशिद ––––

तुमसाह ठाकुर और नां कोइ, पतित ग़रीब दयआल
बेपरवाहा छंडहि महाजन, मुफ़लिस दियो ख़ियआल
राई से कर डालेहु परबत, साहिब कियो निहआल
अपने जैसे आपे एकले, उपमा नाहिँ मिसआल
कामिल मुरशिद––––

जो तेरी सरनागता सतिगुरु, ताको भौउ न भआर
हौं इक कामी फँसाह कामुकी, माया कारी जआर
वैद रूप आइ पीर उबारो, फ़ेरि उबारन हआर
मैं बदबख़्ता जीव हूँ जड़मति, सोचा नां इक बआर
कामिल मुरशिद----

बेदियानता औगुनी गाफ़िल, हिरसिया अरु बदकार
फ़ेरी तसबी मूअरत तीरथ, कीयो बिपर नमकार
ज़िंदाराम बिसारी गंगाह, गहियो कीच की नार
खिमहा करु मुज्झ शाह मसताना, जनम की औगुन हार
कामिल मुरशिद----